0
2166

८९ मानसिंहके पोते महासिंहका वगश्र७)
जाना, वर्षगाठकी तुला, शाह ईरानखानआलमका खि
सगर और मनोहरके मनसबोंकी वृद्धितुलादान, परवेज
जहांके पति) शेर अफगनखांके हाथ
कुतुबुद्दीनके नौकरोंका उसको मारनो जाना, दूध देने
९१ काबुलसे कूच। जा मानसिंहके वास्ते
९२ बामियामें पुरानी लोथकी जांच, भेजना।
हुसैनको बुलाना, महासिंह और राी सहायता, परवेज
खर्च, बाला हिसारमें नये मकान। , राजा जगन्नाथको
९३ मिरजा शाहरुखकी मृत्यु, हाकेका , शहरयारका गुज
९४ बाबर बादशाहका सिंहासन, काबुा, राणाका विकट
कैद करना, हकीम मुजफ्फरके मर
९५ शाहरुखके बटे मिरजा बदीउज्जमांसेरका किला दिया
भाइ मिरजाहुसेनका तूरानमें मारा सक्रान्तिका दान,
९६ दिलजाक और गक्कड़ोंकी घर गिनन।
तुला, सलाबतखां लोदीको खानजहा देनेका प्रबन्ध,
और रामदासको काबुल और बगशमें र सूबा हयातीका
९७ राय रायसिंहके अपराध क्षमा होना,
९८ खुर्रमको ८ हजारी मनसब, आसफा जाना, मेवाड़में
लालकी अंगूठी, काबेका प्रसाद, मिर० वगैरहकी दक्षिण
का अच्छा बन्दोबस्त करनेसे ठट्ठा जागे
९९ खानखानाकी भेट, राय दुर्गाकी मृत्यु,
को मरवाना और मुहम्मद अमीनसे मिर पर एक जलोदर
ा कटवाना।
१०० लाहोरसे कूच, दिल्लीमें प्रवेश।
१०१ राजा मानसिंहका बंगालेसे आना।
तीसरा नौरोज।
१०२ सफेद चीता, रावरतन हाड़ाको सरबुलन्द शिकार खेल
सिंहका मनसब, राजा सूरजसिंहका हा
चारणको हाथी।

वर्ष (संवत् १६६५—६६)

और उसकी माकी विचित्र मृत्यु।
ाकी घोडा देना।
ो मृत्यु, करनाटकके बाजीगर, देवनका पत्र,
नौबुन्निसा बेगमकी मृत्यु।
न ; बादशाहका विवाह ; महाबतखांका
ाना।
ाम ; संगेयशमका प्याला ; संग्रामका देश
लिये बिहारके सूबेदारकी इनाममें दिया
ांका राणाके ऊपर विदा होना और साथी

ाना ; बङ्गालेके दीवानका हाथी भेजना ;
: ; दलपतके कसूर बखशे जाना ; खान-
नजर।
देनेवाली हरनी ; राजा मानसिंहका आमेर
ाकी पेटीको ३ वर्ष पीछे देखना ; खानखानां
ििवा जीतनेकी ; पेशरोखां और लालखां
ाना ; खाजासरा बनानेकी मनाही।
ीड़े हाथी देना ; किशनसिंहका राणाकी
ामी होना ; मिरजा गाजीको कन्दहार जाने
ना।
शाहका रोजा (कबरस्थान) १५ लाखमें तय्यार
ीमअलीके अद्भुत होजमें जाना ; खानखानाका
कूच करना।
ा सूबा आजमखांको देना ; खुसरोके बेटे बलन्द-
ा पैदा होना ; अमीर तैमूरकी तसवीर।

चौथा नौरोज।

पाचवा वर्ष (सवत् १६६६—६७)

११५ हकीम अलीका मरना, बरखुरदारको खानआलमका खिताव, ३३॥ सेरका एक तरबूज, सौमतुलादान, परवेजका दक्षिण भेजना।

११६ राणाकी लडाई पर अबदुल्लहखाका भेजा जाना, दूध देने वाला बकरा, सूरकी हुकूमत, राजा मानसिहके वास्ते तलवार भेजना, दक्षिण पर लशकर भेजना।

११७ राणाकी लडाईमें उदयपुरके लशकरकी सहायता, परवेज और खुर्रमको लाल तथा मोती देना, राजा जगन्नाथको ५ और जयसिहको ४ हजारी मनसब, अहदयारका गुजरातसे आना, परवेजका दक्षिण जाना, राणाका बिकट घाटियोंसे लडकर निकल भागना।

११८ परवेजको खानदेश बरार और आसेरका किला दिया जाना, भाग गाजेका निषेध, वृश्चिक सक्रान्तिका दान, दक्षिण पर नई सेना, खुर्रमकी सगाई।

११८ दक्षिणके युद्धको फिर एक फौज, नक्कारा देनेका प्रबन्ध, चन्द्रग्रहण, रामचन्द्र बुन्देला, दक्षिणसे मुल्ला हयातीका खानखानाकी भेट लेकर आना।

१२० खानजहाको भी दक्षिणमें नौकरी बोली जाना, मेवाडमें जो फोज थी उसमेंसे राजा बरसिहदेव वगैरहको दक्षिण जानेका हुक्म होना।

१२१ शिकारमें नीलगायके भडककर भाग जाने पर एक जलोदार (आरदली) को मरवाना और कहारोके पांव कटवाना।

पाचवां नौरोज।

नौरोजका दरबार, अमीरोंकी भेट।

१२२ मारगड्डेवका दक्षिण भेजना, परगने बाडीसे शिकार खेल कर रूपवासमें आना।

छठा वर्ष (सवत् १६६७—६८)

सातवां वर्ष (सवत् १६६८)

छठा नौरोज।

१४१ नोरोजका उत्सव और भेट।

१४२ ईरान्का एलची मोहरो और रुपयोंका तोल, काबुलमे शहदाद पठानका फितूर।

१४३ महाबतखाका दक्षिणसे आना, हाशमखांका उडीसेसे काश्मीरकी सूबेदारी पर बदला जाना, एतमादुद्दौलाको समग्र दीवानीका मिलना।

१४४ अबदुल्लहखाकी गुजरातकी सूबेदारी मिलना राजा बासू का उसको जगह राणाकी लडाइपर नियतहोना, खानआजमको मालवेकी सूबेदारी मिलना, अबदुल्लहखाकी गुजरातसे दक्षिण जानेके लिये ४लाख रुपये देना, एक विचित्र चित्रका वर्णन।

१४५ रामदास कछवाहेको राजाकी पदवी, राजा कल्याणको उडीसेकी सरदारी, तूरानसे उजबक सरदारो और सिपाहियोंका आकर नौकर होना, दक्षिण पर एक और सेना।

१४६ शिकार, बादशाहको कविता और धर्मनिष्ठा अर्थात् जमीन चूमकर मुजरा करनेका निषेध, शिकारमे रविवार गुरुवार को गोली नही चलाना, धर्मशालाए बनाना, राजा बरसिहदेवका मनसब बढाना।

आठवां वर्ष (सवत् १६६८—६८)

१४८ बदीउज्जमाका राणाकी लडाइपर जाना जहागीरी आईन सातवां नौरोज।

१४८ नौरोजका उत्सव और उपहार, बगालमें फतह उसमान पठानका मारा जाना।

१५१ फरंग देशके पदार्थ।

१५२ दलपतका दक्षिणसे आना और बादशाहके हाथसे टीका पाना।

१५३ कमाऊ के राजा लक्ष्मीचन्दका आना, दक्षिणमे हार।

१५५ खानखानाका फिर दक्षिणमें भेजा जाना।

१५६ ग्रामसिंह और धर्म्मांङ्गद भदौरियेके मनसब बढ़ना, आसफखां वजीर और मिरजा गाजीका मरना, एतमादखांको खवासखांकी पदवी और सरकार कन्नौजकी फौजदारी पाना, खुर्र्मका दूसरा विवाह।

१५७ प्रवर्द्धखांका बंगशोंका मूंके ठट्ठाकी रक्षा पर नियत होना और दयानतखांका मनसब बढ़ाना, फसद खुलवाना, किशनदासको राजाकी पदवी, ताजखांकी पदवृद्धि।

१५८ गुजरातखांकी विचित्र मृत्यु, बंगालेके १६० हाथी, कमाऊंके राजा त्रिलोचन्दको विदा, अबुलफतह दक्षिणीका बीजापुरसे आना।

१५९ मिरजा रुस्तम सफवीकी मूंके ठट्ठेकी हुकूमत मिलना, राय दलपतका मिरजा रुस्तमके साथ नियत होना, अबुलफतह को नागपुरमें जागीर मिलना, तुलादान, उसमान पठान के भाई वल्लीका बंगालेसे आना।

१६० मोतमिदखांकी भेंट, राय मनोहर और बरसिंहदेवके मन सब बढ़ना, भारत बुन्देला और अमीरुलउमराकी मृत्यु, नफरखांको विहारकी सूबेदारी, शिकार, सलीमासुलतान की मृत्यु।

१६१ काबुल, राना रामदासकी भेट, दक्षिणका हाल, खान-आजमको राणा पर जानेका हुक्म।

नवा वर्ष (संवत् १६६९—७०)

१६२ बादशाहका आगरेमें, शिकारकी संख्या।

आठवां नौरोज।

१६३ नौरोजका उत्सव, मोतमिदखांको एक नये मकानमें रहने से कष्ट होना, मकानके शुभाशुभ देखनेका नियम।

१६४ मग जातिके लोगोंका हाल जो पेगूसे आये थे, बादशाहका खुर्र्मके घर जाना, मेख संक्रान्तिका उत्सव, सोमयाग्की नाच।

तेरहवां वर्ष (संवत् १६७३—७४)

—

॥ श्री ॥

सूचीपत्र ।

(दूसरे भागका)

पन्द्रहवां वर्ष (सं० १६७५—७६)

३७३ राना विक्रमाजीतको न्वारा, जगासिंहको मृत्युसंवादको जगद्द, नूरमहल बाग।

३७४ चोटन्वा जोरोज।
शाहजहाको गढिया भेट।

३७६ एतमादुद्दोलाको शाही मजलिस ग्रोर भेट इकरामखां ग्रोर मनोराय सिद्दहलको मनसव बढना, शिरजा राजा भाव सिहको भेट।

३७७ ग्रासफखाको जियाफत ग्रोर भेट ठेमीसे ग्रोर भेटे, परवेज का २० हजारी होना, सूव वंगरमें ५००० सवार भेजा जाना।

३७८ हुमायूँ बादशाहको हस्तलिखित पुस्तक, हुनरमन्द फरगी, १५००० रुपैये इनाम।

३७८ शाहजहांको मामी मृत्यु, राजधानीमें प्रवेश, बादशाहकी उदारता, ग्रलम्दादका बागी होना।

३८० रावत मानके बेटे मानसिंहको मनसव, वगत्र, राजा सूर ज्सिह (बीकानेरी), खानखानाकेबेटे शाहनवाजखाकीमृत्यु।

३८१ भारत बुन्देलेको मनसब।

३८२ हजरतकी जमींदार सग्रामको हाथी, वहां ग्रोर बकरीकी लड़ाई।

३८३ बिहार सुबेर ग्रोर वगाला, परवेजको खिलग्रत, मिरजा वालो।

३८४ सरबुलन्दराय, शेख ग्रहमद धूर्त, परवेजको भेट, रतन पुरका राजाका पाप तथा जाति वगालको ग्रन्तिम सीमाम।

३८५ ईरानका दूत, खानग्रालमको ईरानसे ग्रवजो, विग्रोतन को मनसव।

३८६ ग्रबलक (चितवरा दात)

३८८ ग्रादिलखाके नोकर बहलीमखाका नादर नोकर होना खानदोराको पेनशन, कश्मीर जानेकी तय्यारी, विक्रमा जीत बघेरीका बाधोगढसे ग्राना।

४४० पपीहा ; औरंगजेबका दूत ; रावत सगरके बेटे मानसिंहका मनसब बढना , कबरे दांत ; पहाड़में हार ; सूरजमलका मरना ।

४४१ भटनदीके तटपर दीपमालिका ; तुलादान ; आसफखांके घर ; मुर्गाबी ।

४४२ कशमीरके पशुपक्षियोंके नाम ; शफतालू ; वेरनाग और किश्तवारमें हानि ।

४४३ काकापुर ; पंचहजारा ; खानदौरांकी मृत्यु ; अनचका भरना ।

४४४ अच्छोलका झरना ; वेरनाग और वहांके बाग ।

४४५ लोकभवन ; अन्धनाग ; मच्छीभवन ।

४४६ श्रीनगर ; जम्मूका जमींदार संग्राम ; दशहरा ; बादशाह को खांसीका रोग ; पतझडकी शोभा ; मिरजा रहमान-दादकी मृत्यु ।

४४७ कशमीरसे कूच ; केसरके खेत ; भाव ।

४४८ कलगीके पर ; शिकारी जानवर ; ईरानका दूत ; महल और मकान ; कमलपुरका जलाशय ।

४४९ बाडी घरारी घाटी ; पौशाना ; बीरमकल्ला ; रास्तेके दो जमींदार ।

४५० शेख हबूनअमीनका मरना ; घोलीका फर्क ; राजोरमें जीती स्त्रियां मुर्देके साथ गाडी जाती थीं उनके विषयमें निषेध ।

४५१ विषैला पानी ; नौशहरा वगैरह रास्तेके गांव ; सारंगदेवका मनसब बढना ।

४५२ जहांगीराबाद ; मोमिनका बाग ।

सतरहवां वर्ष (सं० १६७७—७८)

४५३ बादशाह लाहोरमें ; कांगड़ेकी फतहका वृत्तान्त ।

४५४ खुर्रमके नये भवन ; कांगडेके कर्मचारी; चन्द्रग्रहण ; ईरान का दूत ।

इमामकुलीकी मा ; जंगका बच्चा ; खुर्रमकी अर्जी।

४७१ बादशाहकी बखशिशें ; ऊदाराम दक्षिणी ; दिल्लीकी सूबे-दारी ; गजरत्न हाथी।

४७२ रूपरत्न घोडा ; किश्तवार ; उड़ीसा ; काजीनसीर ; अमी-रोंके इजाफे ; कन्दहार।

४७३ जम्बील बेगकी बखशिश ; इनसाफ ; आसफखांके घरजाना; कल्याणलुहारका बादशाहके कहनेसे छतसे कूदकर मरना।

४७४ बादशाहको दमेकी बीमारी और हकीमोंकी शिकायत।

४७५ सौरपञ्चीय तुलादान और नूरजहांका उत्सव करना।

४७६ जोतकरायको रुपयो और मोहरोंमें तोलना ; भेट ; बाद-शाहका बोझ ; शाह परवेजका आना।

४७७ खुर्रमको २० लाख रुपये भेजना ; नूरजहां बेगमकी माका मरना।

४७८ अबदुल्लहखांको बिना छुट्टी आनेका दण्ड ; हकीमकी बिटा, उत्तरको यात्रा ; अवधकी सूबेदारी।

अठारहवां वर्ष (संवत् १६७८—७९)

४७९ शाह परवेजका बिहारको जाना ; बादशाह दिल्लीमें ; जादू-रायके लिये नारायणदास राठौडके हाथ खिलअत भेजना , बादशाह हरिद्वारमें।

४८० राजा भावसिंहका देहान्त ; घालूतवा।

४८१ उकाबका मांस ; सरहिन्द ; इलाहाबास ; व्यास नदी , बल-वाडेका जमीदार बासू ; फूलपकार पक्षी।

४८२ सुर्ग जर्रीन ; चन्द्र तुलादान ; एतमादुद्दौलाकी मृत्यु।

४८३ कांगडेको कूच ; चम्बेके राजाकी भेट।

४८४ कांगडेके किलेमें प्रवेश ; कांगडेकी कथा ; भवन।

४८५ मदारकी पहाडी ; कांगडेसे कूच।

४८६ नूरपुर ; जंगली सुर्गे ; राजा बासूका ; धमरीका नाम नूर-पुर रखना ; एक मौनीको शराब पिलाना।

४८७ एतमादुद्दौलाका लशकर नूरजहांको दिया जाना ; खुसरो का मरना ; राजा हमगुदासका मनसब वढना ।

सतरहवां नौरोज ।

४८८ शाह ईरानका विचार कन्दहार लेनेका ; बादशाह हसन-अबदालमें ; राजा अबुलहसनके लशकरकी हाजिरी : शिकार ।

४८९ हकीम मोमिना ; महावतखां काबुलको और एतवारखां आगरेको सूबेदारी पर : बादशाह कशमीरमें , फौजदारोंके कसूरकी माफी ; अमीरोंके मनसब बढना ।

४९० शाह ईरानका कन्दहारका लेलेना : ईरान पर चढाईकी तैयारी ।

४९१ कशमीरके फकीरोंके वास्ते गांव , किशवारके जमींदारोंका बदल जाना , खुर्रमको अरजीसे नाराजी , कन्दहारके वास्ते लशकरको तैयारी : किशवार ।

४९२ ज्योतिष और रमलका चमत्कार ; जोतकराय माटिकजा और रमाल मीर्जा इनाम : दक्षिणीसेना : खुर्रमके कौतुक ।

४९३ खुर्रमका दक्षिणसे आकर मंडूमें ठहरना . राजा वरसिंह-देवको बुलाना, प्रगअग और फिर वस्तूरमें शिकार खेलना ।

४९४ कशमीरसे कूच ; शहरयारको कन्दहार जानेका हुक्म ; कीमती मोती; फगुट; सोरतुलादान, गङ्गाजलकी परीक्षा ।

४९५ हीरापुर ; कुंवरसिंह किशवारका राजा : हैदर मलिक , भवर ; खुर्रम ।

४९६ बादशाह लाहौरमें ।

उन्नीसवां वर्ष (संवत् १६७९—८०)

४९७ शाह ईरानके वकीलोंका आना , राजा वरसिंहदेवके लाने को सारंगदेवका आना , ईरानके एलचियोंकी बिदा ; ईरानके बादशाहका पत्र ।

४९९ पत्रोत्तर।
५०१ कन्दहार ; आगरेके खजाने ; शाह परवेज।
५०२ सोतमिदखांके लिये मसविदे ;ं खुर्रमकी कुपात्रता ; चन्द्र-तुलादान ; खुर्रमका मंडूसे कूच करना।
५०३ बादशाहका कूच खुर्रम पर ; राजा बरसिंहदेवका आना, खुर्रमका बेदौलत कहलाना।
५०४ खलील वगैरहका पकड़ा जाना।
५०५ राजा रोजअफजूं, खानखानांका नमकहराम होना।
५०६ लुधियाने पहुंचना, राजा भारत बुन्देला; राजा सारंगदेव, आसफखां; फौजोंका जमा होना।
५०७ यमुना पर डेरे।

अठारहवां नौरोज।

५०८ खुर्रम मथुरामें, राजा जयसिंहका राजी होना, बेदौलतका आना।
५०९ लड़ाईका आरम्भ, सुन्दर ब्राह्मणका आगे बढ़ना।
५१० बेदौलतकी हार और सुन्दरका मारा जाना।
५११ अमीरोंके मनसब बढ़ना, सरबुलन्दरायका हाजिर होना।
४१२ बागी अमीरोंका हाजिर होजाना, मीर अजदुद्दौलाका कोष, राजा जयसिंह, अमीरोंको खिताब।
५१३ मनसूर फरंगी, परवेजका आना, बेदौलतका लौटते हुए आमेरको लुटवाना, शाह परवेजका ४० हजारी होना।
५१४ राजा जगतसिंहका पंजाबमें जाकर फतूर करना, सादिक-खांका उस पर जाना, मिरजा वदीउज्जमांका मारा जाना, राजा गजसिंहका आना, बेदौलत पर परवेज।
५१५ महाबतखां वगैरह परवेजके साथ जानेवाले अमीरोंको खिलअत, बंगाल और उडीसेकी सूबेदारी, बादशाह अज-मेरमें।
५१६ राजा गजसिंहका ५ हजारी होना, बादशाहकी मा मरयम

जमानीकी मृत्यु, गुजरातमें वेदौलतपर बादशाहकी फतह।

५१८ वेदौलतका गुजरात पर फौज भेजना और उसकी हार।

५२१ पूर्णमल, रायसेन ओर चन्देरीके हाकिमका वेटा शेरखां।

५२२ वारहके सैयद।

५२३ मनूचहरका वेदौलतको छोडना, शेरका शिकार और अपने शिकारोंका वखान।

५२४ राणा करणके वेटे जगतसिंहको इनाम, पगली, खुर्रम पर फतह।

५२५ वेदौलतका नर्मदा पार होजाना और खानखानांको कैद करना।

५२८ सांपकी करतूत, वेदौलतके कई नौकरोंका परवेजके पास आना।

५२६ नमकहरामोंको सजा, शहरयारके घर जाना, वेदौलतका बादशाही सरहदसे निकल जाना, खानखानांको छोडना।

५३२ वेदौलतका पीछा करना।

बीसवां वर्ष (संवत् १६८०—८१)

५३३ वेदौलतका कुतुबुल्मुल्कके मुल्कमें जाना।

५३४ राजा मारूवेवको परवेजके पास भेजना, काश्मीरको कूच, जगतसिंहका विदा होना, परवेजकी अर्जी, राजा गिरधर का मारा जाना और राजपूतोंका विगडना।

५३५ खानसेरकी फौजदारी।

५३६ रहीमाबादमें शेरका शिकार, आगरेका हाकिम, मथुरासे नाव पर वैठना, यमुना पारके गवारोंको सजा—कन्नोज।

५३७ अवदुल्लहको सजा; शिकार; तीतरके पेटमें चूहा, दिल्ली पहुचना; जगतसिंहके छोटेभाई माधवसिंहको राजाका खिताव; सलीमगढमें वादशाह।

५३८ दिल्लीकी हुकूमत; तिब्बतके अलीरायका वेटा; आदिमखां।

५३९ जगतसिंहको माफी, वेदौलत उडीसेमें।

५४० डूबी वस्तुका मिलना।

५४१ नर और मादा तीतरकी पहचान पक्षियोकी शारीरिक दशा मछलियोकी जातिया।

उन्नीसवा नौरोज।

५४२ सवारीके समय काने कोढी नकटे और कनकटे आदमियो के सामने आनेका निषेध, बैरीलत पर परवेज, खानजहा आगरेमें, परवेजका विवाह।

५४३ जादूराय और उदारामका बुरहानपुरके किलेसे बैदौलतके हाथी लेकर परवेजके पास आना दक्षिणियोकी तावेदारी, आदिलखाका ५००० सवार भेजना स्वीकार करना, परवेजका दक्षिणसे कूच।

५४४ आदिलखाका बरताव, सापके मुहसें साप, बैदौलतका उडीसे पहुचना और उसका हुक्म इब्राहीमखा सूवदार बगालेके नाम।

५४५ यहा तक मोतमिदखाका लिखा है आगे मुहम्मद हादीने लिखकर किताब पूरी की है।

५४६ इब्राहीमखाका जवाब, शाहजहा बर्दवान और अकबरनगर में इब्राहीमखाका ढाकेमे अधीन होजाना, शाहजहाका दाराबखाको बगालेकी हुकूमत देकर आगे बढना।

५४८ शाहजहा विहारमें, राणाके बेटे भीमका पटनेमें अमल करना शाहजहाका राजा भीम और अबदुल्लहखाको इलाहाबाद पर भेजना दक्षिणका हाल।

५५१ बादशाह कशमीरमें, अबदुलअजीजखाका शाह इरानको कन्दहार सौंपनेके कुसूरमें माराजाना आरामबानू बेगमका मरना, उजबकोंका काबुलकी सरहदमे आकर लडना, हारना।

५५३ दक्षिणका हाल, खानखानांका जो परवेजके पास आगया था कैद किया जाना और उसके गुलाम फहीमका मारा

जाना, शाहजहां और परवेजकी लडाई, राजा भीमके काम आने पर शाहजहांका दक्षिणको लौटना।

५५७ महाबतखांको खानखानाका खिताब और ७ हजारी मनसब, दक्षिणका हाल, मलिक अम्बरका कुतुबुल्मुल्क और आदिलखांको दबाना, सरबुलन्दरायका आदिलखांकी मदद करना, आदिलखांकी हार, बादशाही अमीरोंका लौट आना, उदाजीराम और जादूरायका भाग जाना, अम्बरका अहमदनगरके किलेको घेरना।

५६० बलखसे नजर मुहम्मदखांका खत आने पर काबुलके सूबेदारको बदल देना, दक्षिणका हाल सुनकर काश्मीरसे लौटना, परवेज बिहारमें और शाहजहां दक्षिणमें।

इक्कीसवां वर्ष (संवत् १६८१—८२)

५६१ शाहजहांका दाराबखांको बंगालेमें छोडना, दाराबखांका खानजादखां बंगालेसे परवेजको दक्षिण जानेका हुक्म, नागरकी सूबेदारी, दक्षिणकी हकीकत सरबुलन्दरायका हबशी दक्षिणियोंसे लडनेवा।

५६२ काश्मीरको कूच, शाहजहां दक्षिणमें, सरबुलन्दरायका मुकाबिला शाहजहांका बालाघाटको लौट जाना।

५६३ खानआजमका मरना।

५६४ खानजहां गुजरातकी सूबेदारी पर।

बीसवां नौरोज।

बादशाह भक्करमें, शाहनवाजखांका बेटा लाहोरकी हुकूमत पर, बादशाह नूराबादमें, मंजिल दरमंजिल मकान बनानेका हुक्म।

५६५ सुन्दर झरने और फूल, काश्मीर पहुंचना, केसरके गुणोंकी परीक्षा, कागडेमें अनीराय।

बाईसवां वर्ष (संवत् १६८२—८३)

५६६ सरदारखां और मुस्तफाखांका मरना शाहजहांका देवलगांवमें पहुंचना, दक्षिणियोंका बुरहानपुर घेरना और उठ

जाना सरबुलन्दरायको ५ हजारी मनसब और रायराज का खिताब, शाहजहाका माफी मागना, अपने बेटोंको और १० लाख रुपयोंकी भेंट बापकी सेवामें भेजना।

५६७ सुलतान होशग और खानखानाका बादशाहके पास आना, महाबतखाको बगाले जानेका हुक्म।

तेईसवा वर्ष (सवत् १६८३—८४)

५६८ कश्मीरसे कूच, हूमा पक्षीकी जाच।

५७० बादशाह लाहोरसे, ईरानका एलची, शेर और बकरीकी मुहब्बत दक्षिणका दीवान, महाबतखासे तकरार।

५७१ महाबतखाका बगालेजाना, तहसुर्स और हाशमका विवाह मोतमिदखाका बख्शी होना, बादशाहका काबुल जाना, परवदादका सिर।

५७२ बादशाहकी बडी साकी मृत्यु, खानखाना पर मेहरबानी, महाबतखा पर कोप।

इक्कीसवा नोरोज।

५७३ महाबतखाका आना।

५७४ महावतखाके राजपूतोका भटनदीपर बादशाहको घेरलेना।

५७६ महाबतखाका बादशाहको अपने डेरे पर लेजाना।

५७७ नूरजहा बगमका लडनेको आना।

५८० बल्खका एलची, आसफखाका कैद होजाना।

५८१ काफिरोका हाल।

५८२ जगतसिहका भागना, बादशाहका काबुलमें पहुचना बाबर बादशाह मिरजा हिन्दाल और मिरजामुहम्मद हकीमकी कबरो पर जाना, महाबतखाके राजपूतोकी हार।

५८३ अख्वर हबशीका मरना—अबदुर्रहीम खानखानाका लाहोर मे आना।

५८४ दाराशिकोह और औरगजेबका आना, शिकारके वास्ते रस्सा, शाहजहाका ठट्ठे जाना, महाराजा भीमके बेटे राया सिहका अजमेरमें मर जाना।

मनसबदारोंकी सूची।

मुसलमान।

अ।

अम्बाखां कशमीरी	१ हजारी ७०० सवार
अकबरकुली जलालका बेटा	१ हजारी १००
अकीदतखां	१२ सदी ३००
अजीजुल्लह यूसुफखांका बेटा	१ हजारी ५००
अबुल कासिम तिमकीन	१ हजारी
अबुलफतह हकीम	१ हजारी ३००
अबुलहसन सुलतान दानियालका दीवान	१॥ हजारी ५००
ख्वाजा अबुलहसन मीर बख्शी	५ हजारी ५०००
अबूसईद, एतमादुद्दौलाका पोता	१ हजारी ५००
अबदुलकरीम मामूरखां	२ हजारी २०००
अबदुलखां कांगड़ेका फौजदार	२ हजारी ५००
अबदुलअजीजखां नकशबन्दी हाकिम कन्दहार	३ हजारी २०००
अबदुर्रज्जाक मामूरी	१८ सदी ७००
अब्दुर्रहीम खरयूलवाश्री	२॥ हजारी १५००
मिरजा अबदुर्रहीमखां खानखानां सिपहसालार	७हजारी ७०००
अबदुर्रहीम अहदियोंका बख्शी	७ सदी २००
शेख अबदुर्रहमान फाजिलखां शेख अबुल-फजलका बेटा	२हजारी २०००
ख्वाजा अबदुललतीफ कौसबेगी	१ हजारी ४००
सैयद अबदुल वारिस	५ सदी ५००
अबदुल्लहखां फीरोजजङ्ग	५ हजारी २५००

अबदुल्लह खानआज़मका बेटा	१ हजारी ३००
अबदुल्लह हकीम	५ सदी
अमानुल्लह महाबतखांका बेटा	२ हजारी ८००
अमानतखां मुतसद्दी सूरत बन्दर	२ हजारी ४००
अमीरखां, इज्ज़तखांका भाई	१ हजारी १०००
अमीरुलउमरा शरीफखां	५ हजारी ५०००
अलिफखां क़ायमखानी	२ हजारी १५००
अल्लहदाद पठान	२॥ हजारी १२००
अल्लहयार	१ हजारी ५००
अली, सेफखां बारहका बेटा	६ सदी ४००
हकीम अली	२ हजारी
अली, अकबर शाही	४ हजारी
अलीकुलीबेग दरमन	१॥ हजारी
अलीखां तातारी, खिताब नुसरतखां	२ हजारी ५००
सय्यद, अली बारहा	२॥ हजारी १०००
ख्वाजा अलीबेग	४ हजारी
ख्वाजा अली मिरज़ा किलेदार अहमदनगर	५ हजारी ५०००
मुल्ला अहमद	२ हजारी २००
असदबेग खानदौराका तीसरा बेटा	१ हजारी १ हजार
असदुल्लह मीर सैयद नाजी	५ सदी एक सौ
असालतखां खानजहांका बेटा	२ हजारी १ हजार
आक़तमासखां मीरहदर	२ हजारी १५ सौ
अहमदबेगखां हाकिम कशमीर	२॥ हजारी
अहमदबेगखां, इख्लासखां फतहजंगका भतीजा	२ हजारी ५००
अहमद बेग	२॥ हजारी १५००
अहसनुल्लह अबुलहसनका बेटा	१॥ हजारी ८००

आ।

आग़ा, ताहिर	१॥ हजारी ८५०

आकिलखां	१ हजारी ८००
आबिदखा दीवान सूबे दक्षिण	१ हजारी ४००
आबिद उजबक	१ हजारी १०००
आसफखां दीवान	५ हजारी ५०००
आसफखा एतमादुद्दौलाका बेटा	७ हजारी ७०००

इ ।

इकरामखा इसलामखाका बेटा फौजदार मेवात	२हजारी १५००
इनायतखा	२ हजारी
इफतिखारखा	२ हजारी
इब्राहीमखा बखशी दरीखाना	१॥ हजारी ६००
इब्राहीमखा फतहजग सूबेदार उडीसा	४ हजारी ४०००
इब्राहीमखां बखशी सूबे दक्षिण	१ हजारी २००
इब्राहीमखा काशगरी	२ हजारी ८००
इरादतखां मीर सामान	२ हजारी १५००
इरादतखा आसफखाका भाई	१ हजारी ५००
इसकन्दर अमीन	३ सदी ५०
इसलामखा नाम शेख अलाउद्दीन, शेख सलीम चिश्तीका बेटा सूबेदार बगाला	६ हजारी ५०००

ई ।

ईवल बेग	१॥ हजारी
मिरजा ईसा	१॥ हजारी ८००
मिरजा ईसातरखा	१२ सदी ५००

ए ।

एतकादखा सूबेदार कशमीर	४ हजारी ३०००
एतबारखा (मुमताजखा)	६ हजारी ५०००
एतमादुद्दौला गयास बेग	७ हजारी ७०००

क ।

कजलबाशखा	१॥ हजारी १२००

करमुल्लह अलीमरदानखा बहादुरखाकाबेटा	६ सदी ३००
कराखा तुर्कमान	२ हजारी
कामगार सरदारखाका बेटा	४ सदी ५००
कासिमखा इसलामखाका भाई	४ हजारी २०००
सैयद कासिम सैयद दिलावरखाका बेटा	८ सदी ४००
ख्वाजा कासिम	१४ सदी
मीरकासिमखा अहदियोंका बखशी	१हजारी ४००
किफायतखा दीवान गुजरात	१२ सदी ५००
किशवरखा शेख इब्राहीम, कुतुबुद्दीनखा कोका का बेटा	१ हजारी ३००
कुतुबुद्दीनखा कोका	५ हजारी ५०००
कुलीचखा सूबेदार काबुल	६ हजारी ५०००
कयामखा	१ हजारी १०००

ख।

खंजरखा अवदुल्लहखा फीरोजजङ्गका भाई किलेदार अहमदनगर	१ हजारी २००
ख्वासखा फौजदार कन्नौज	१ हजारी ३००
मीर खलीलुल्लह	१ हजारी २००
खलील मीर अवदुल्लहका बेटा	६ सदी २५०
खानआलम	५ हजारी ३०००
खानआजम	७ हजारी ७०००
खानजहा लोदी (नाम पीरखा फिर सलावतखा)	६हजारी ६०००
खानजमा	
खानाजादखा (नामानुल्लह महाबतखाका बेटा)	५ हजारी ५०००
खानदौरा सूबेदार पटना	६ हजारी ५०००
खिदमतगारखा	५॥ सदी १३०
सुलतान खुर्रम शाहजहां	३० हजारी २००००
खुर्रम, खानआजमका बेटा हाकिमजूनागढ	२ हजारी १५०

खुसरोबेग उजबक (फोजदार सरकार मेवात)	१ हजारी ८००
ख्वाजाजहां	५ हजारी ३०००
ख्वाजाबेग सफवी	५ हजारी ५०००
ख्वाजगी ताहिर	८ सदी ३००

ग।

गजनीनखां जालौरी	२ हजारी ७००
गयासखां	२ हजारी ८००
गाजीखां मिरजा जानीका बेटा	४ हजारी ५०००
गैरतखां या इज्जतखां	८ सदी ७००

च।

चीन क़ुलीचखां, क़ुलीचखांका बेटा सूबेदार भक्कर २हजारी८००

ज।

जफरखां सूबेदार बिहार	३॥ हजारी २५००
जबरदस्तखां मीरतुज़ुक	१ हजारी ५००
जमालुद्दीन	५ हजारी ३५००
मीर जमालुद्दीन अंजू अजदुंद्दौला	१ हजारी ४००
मीर जमील वज़ीर	२ हजारी
जहांगीरक़ुलीखां, शमसुद्दीन खानआजमका बड़ा बेटा, सूबेदार बिहार	५ हजारी ५०००
मीर जहीरुद्दीन	१ हजारी ४००
जासूसखां	२ हजारी २००
जाहिदखां (सादिकखां)	१ हजारी
जाहिदखां	१॥ हजारी ४००
सैयद जाहिद, शुजाअतखांका बेटा	१ हजारी ४००
जाहिदखा	१॥ हजारी ७००
मीर जियाउद्दीन कजवीनी	१ हजारी
जुलफिकारखां	१ हजारी ५००
जनुद्दीन	७ सदी ३००

त।

तख़्तावेग	३ हजारी
तरबीयतखां	३॥ हजारी १५००
तरसून बहादुर	१२ सदी ४२०
ताजखां	३॥ हजारी २५००
तातारखां	२ हजारी ५००
तुगरल अबदुर्रहीम खानखानांका पोता	१ हजारी ५००
तुरस्तमबेग, कासिम कोका का बेटा	५ सदी ३००

द।

दयानतखां	५ सदी २००
मिरजा दखिनी मिरजा रुस्तमका बेटा	५ सदी २००
दाराबखां, खानखानां अबदुर्रहीमका बेटा	५ हजारी ५०००
शाहजादः दावरबख्श सुलतान खुसरोका बेटा	८ हजारी ३०००
दिलावरखां पठान काकड	४ हजारी ३०००
सैयद दिलेरखां (अबदुल वहाब)	१ हजारी ८००
दौलतखां सूबेदार इलाहाबाद	१॥ हजारी
दोस्तबेग तोलकखांका बेटा	८ सदी ४००

न।

ख़्वाजा नबी	१ हजारी १८०
नजीबखां	१॥ हजारी
नवाजिशखां	४ हजारी ३०००
नसरुल्लहखां	७ सदी ४००
नसरुल्लह फतहुल्लहका बेटा किलेदार आसेर	१॥ हजारी ४००
नसरुल्लह अरब	५ सदी ५२
नादअली	१॥ हजारी १०००
नानूखां	१॥ हजारी १२००
नाहरखां (शेरखां)	३ हजारी १५००
निजामुद्दीनखां	७ सदी ३००

निजाम (८ सदी ६५०
नूरुद्दीनकुलीखां २ हजारी ६००
नोवतखा (अलीखा करोडा) नौबतखानेका दारोगा २ हजारी
१०००

प

परवरिशखां १ हजारी ५००
सुलतान परवेज ४० हजारी ३००००
पायदाखां मुगल २ हजारी ४५०

फ

शेख फरीद वखशी ५ हजारी ५०००
शेख फरीद कुतुबखा कोकाका बेटा १ हजारी ४००
फरेंदू वरलास २॥ हजारी २०००
फाजिलखा २ हजारी ७५०
फिदाईखां ५ हजारी ५०००
फीरोजखा ख्वाजासरा ६ सदी १००

ब

बदीउज्जमा मिरजा शाहरुखका बेटा १॥ हजारी १०००
बहलीमखा १ हजारी ५००
सैयद बहवा ' २ हजारी १०००
बहादुरउलमुल्क ३ हजारी २३००
बहादुरखां ३ सदी ३००
बहादुरखां १॥ हजारी ८००
बहादुरखां (अवदुन्नबी बेग उजबक हाकिम कधार) ५ हजारी
४०००
बहादुर सैफखांका बेटा ४ सदी २००
बहादुर धनतूरी २ सदी १००
बाकरखा ३ हजारी १५००
बाकीखां २॥ हजारी २०००

ख्वाजा बाकीखा फोजदार बराड	१॥ हजारी १०००
बाजबहादुर कलमाक	१ हजारी १०००
ख्वाजा बाबाखा	१ हजारी ५५०
शेख बायजीद शेख सलीमचिश्तीका पोता	३ हजारी
बायजीद बुखारी सूबेदार ठट्टा	२ हजारी १५००
बिशोतन शेख अबुलफजलका पोता	७ सदी ३५०
बैजन नादअलीका बेटा	१ हजारी ५००
बैरम खानखानानका बेटा	२॥ हजारी

म

मकतूबखा कुतुबखानेका दारोगा	१॥ हजारी
मकसूद कासिमखाका भाई	५ सदी ३००
मकसूदखा	१ हजारी १३०
मनूचिहर खानखानाका पोता	३ हजारी २०००
मनसूरखा फिरङ्गी	३ हजारी २०००
मसऊदबेग बख्शी गुजरात	३ सदी १५०
ममीहुल्जमा हकीम सदरा	५ सदी ३०
महरमनी फरेदू बरलासका बेटा	१ हजारी १०००
महाबतखा(१) खानखाना सिपहसालार नामजमानाबेग	
गयूरबेग काबुलीका बेटा	७ हजारी ७०००
मोहतशिमखा शेख अबुलकासिम सूबेदार इलाहाबाद	५ हजारी
मालजू कुलीचखाका भतीजा	२ हजारी
मीरखा अबुलकासिम तमकीनका बेटा	१॥ हजारी ८००
मीरजुमला दरानी	३ हजारी ३०००
मीरन	७ सदी ५००
मीरमीरा	२॥ हजारी १४००
मुकर्रबखा सूबेदार गुजरात	५ हजारी ५०००

(१) करनल टाडने इसको गलतीसे राजपूत लिखा है।

मुकर्रमखां	३ हजारी २०००
मुखलिसखां	२ हजारी ७००
मुखलिसुल्लह	५ सदी २५०
मुजफ्फर बहादुरकुल्मुल्कका बेटा	१ हजारी ५००
मुजफ्फरखां	२ हजारी १०००
हकीम मुजफ्फर	३ हजारी १०००
मुजफ्फर वजीरखांका बेटा	*५ सदी ३००*
मुबारकखां रुहतासका किलेदार	५ सदी २००
मुबारकखां	४ सदी २००
मुबारकखां शिर वानी	१ हजारी ५००
मुबारजखां	२ हजारी १७००
मुरतिजाखां	६ हजारी ५०००
मुरव्वतखां	२ हजारी ५००
मुलतफितखां मिरजा रुस्तमका बेटा	१॥ हजारी ३००
श्राका मुल्लाई, श्रासफखांका भाई	१ हजारी ३०००
मुस्तफाखां	२ हजारी २५०
मूनिसखां, महतरखांका बेटा किलेदार कालंजर	५ सदी १५०
मूसवीखां	१ हजारी ३००
शैख मूसा कासिमका जमाई	८ सदी ४००
मुअज्जुलमुल्क	१८ सदी
मुअज्जमखां	४ हजारी २०००
मोतकिदखां	२॥ हजारी २५०
मोतमिदखां बखशी	२ हजारी १५००
हकीम मोमिना	१ हजारी
मुहम्मद मुराद ख्वाजा मोहसिन	१ हजारी ५००
मुहम्मद कफी बखशी पंजाब	५ सदी ३००
मुहम्मद सईद, श्रहमदबेगका बेटा	१ हजारी ३००
मुहम्मद हुसैन ख्वाजाजहांका भाई	८ सदी ८००

मंगलीखां	१॥ हजारी
य	
याकूबखां, खानदौरांका दूसरा बेटा	८ सदी ४००
याकूबखां	२ हजारी १५ सौ
सैयद याकूबखां कमालबुखारीका बेटा	८ सदी ५ सौ
यादगार कौरची	७ सदी ३ सौ
यारबेग अहमद कासिमका भतीजा	६ सदी अढ़ाईसौ
यूसुफ	१ हजारी ५ सौ
यूसुफखां हुसैनखांका बेटा फौजदार गौंडवाणा	३ हजारी १५ सौ
र	
रणबाजखां शाहबाजखां कम्बूका बेटा	८ सदी ४ सौ
रजवीखां अबुलहसन रजवी	२ हजारी १ हजार
रहमानदाद, अबदुर्रहीम खानखानांका पोता	१ हजारी ८ सौ
रुस्तमखां मिरजा रुस्तम	५ हजारी १५ सौ
रुस्तमखां	५ हजारी ४ हजार
रुस्तमजमां शुजाअतखां	३॥ हजारी २५ सौ
व	
वजीरखां	३॥ हजारी २ हजार
वजीर जमील	२ हजारी
वजीरुल्मुल्क	१७ सदी ५॥ सौ
वफादारखां	२ हजारी १२ सौ
मिरजावाली बादशाहकी फूफीका बेटा	२॥ हजारी १ हजार
श	
मीर शरीफ दीवान बयूतात	१ हजारी
शरीफ आमिली	२॥ हजारी
शरीफखां शम्सुद्दीन किरावल	६ सदी १००
शरीफखां अमीरुलउमरा	७ हजारी ७ सौ
मीर शरफुद्दीन काशगरी	१॥ हजारी १ हजार

शहबाजखां लोदी फौजदार सरकार सारंगपुर २ हजारी २हजार
शाहजादा शहरयार ८ हजारी ४ हजार
शादमाखां खानश्राजमका बेटा ७ सदी ५ सौ
शाहनवाजखां खानखानां श्रबदुर्रहीमखांकाबेटा ५हजारी ३हजार
शाहबेगखां सूबेदार कन्दहार ५ हजारी
शाह मुहम्मदखां खानदौरांका बेटा १ हजारी ६ सौ
शिरजाखां २॥ हजारी १२ सौ
मिरजा शाहरुख मिरजा सुलेमानका बेटा ७ हजारी ७ हजार
शुजाश्रतखां २॥ हजारी १५ सौ
शुजाश्रतखां श्ररब ३ हजारी २५ सौ
शेरखां पठान ३॥ हजारी

स

सश्रादतउमेद जैनखां कोकाका पोता ८ सदी ४ सौ
सीरान ; सदरजहां ५ हजारी ५ हजार
सदरजहां सुरतिजाखांका जमाई फौजदार सम्भल ७ सदी ६ सौ
सफदरखां डेढ हजारी ७ सौ
सफी श्रमानतखांका बेटा
सफीखां (सैफखां) ३ हजारी २ हजार
सरदारखां ३ हजारी पच्चीस सौ
सरफराजखां २ हजारी १४ सौ
सरबुलन्दखां बहलोल पठान २॥ हजारी २२ सौ
सरबराहखां ८ सदी २॥ सौ
सलामुल्लह श्ररब १॥ हजारी ११ सौ
सादातखां १ हजारी ६ सौ
सादिकखां मीरबखशी २ हजारी २ हजार
सादिकखां ४ सदी ४ सो
सादुल्लहखां २ हजारी २ हजार
सिकन्दर जौहरी १ हजारी ३ सौ

सुलतान मिरजा मिरजा शाहरुखका बेटा	२ हजारी १ हजार
सुलतानहुसेन	६ सदी ३५०
सुहराबखां मिरजा रुस्तमका बेटा	१ हजारी ४ सो
सेफखां सेयदअली असगर बारह फोजदार	५ हजारी २५००
सेयदअली सैफखांका भतीजा	५ सदी ५ सो
सेयद अहमद कादरी	८ सदी ६ सौ
सेयद अहमद सदर	१ हजारी १ हजार

ह

मिरजा हसन मिरजा रुस्तमका बेटा	१॥ हजारी ५ सो
हसनअलीखां सूबेदार उडीसा	३ हजारी ३ हजार
हसनअलीखां जागीरदार (गकड)	२॥ हजारी २॥ हजार
हसनअली तुर्कमान	५ सदी
हाकिमबेग	१ हजारी ३ सो
हाशिमखां कासिमखांका बेटा	३ हजारी २ हजार
हाशिमखां	२॥ हजारी १८ सौ
हिम्मतखां	२ हजारी १॥ हजार
मीर हिसामुद्दीन	१॥ हजारी १॥ हजार
हुसैनखां फोजदार मेवात	१॥ हजारी ५ सो
होशङ्ग इसलामखांका बेटा	२ हजारी ७ सौ

हिन्दू।

१—अनीराय सिंहदलन, राजा अनूपसिंह ; जाति बड़गूजर ; रियासत अनूपशहर ; मनसब २ हजारी १६०० सवार।

२—ऊदाजीराम ; दक्षिणी ब्राह्मण ; ३ हजारी १५ सौ।

३—बारमसेन ; पिताका नाम रावउग्रसेन ; राठौड़ ; भिनाय जि० *अजमेर ; १ हजारी ३ सौ।*

४—कुंवर वारण ; बापका नाम राणा अमरसिंह ; सीसोदिया ; उदयपुर ; ५ हजारी ५ हजार।

५—राजा कल्याण ; सूबेदार उड़ीसा ; १७ सदी १ हजार।

६—रावल कल्याण ; भाटी ; जैसलमेर ; २ हजारी १ हजार।

७—राजा कृष्णदास मुशरिफ़ अस्तबल और फीलखाना ; २हजारी पांच सौ।

८—राजा कृष्णसिंह ; काटोच ; नगरकोट कांगड़ा।

९—राजा कृष्णसिंह ; बापका नाम मोटा राजा उदयसिंह ; राठौड़ ; कृष्णगढ़ ; ३ हजारी १५ सौ।

१०—केशवदास मारू ; बापका नाम रावराम ; राठौड़ ; आलभेरा मालवा ; २ हजारी १५-सौ।

११—राजा गजसिंह ; बापका नाम राजा सूरसिंह ; राठौड़, जोधपुर ; ५ हजारी ४ हजार।

१२—राजा गजसिंह(१)का भाई ; बापका नाम राजा सूरसिंह ; राठौड़ ; जोधपुर ; ५ सदी अढ़ाई सौ।

१३—गिरधर ; बापका नाम रायसाल दरबारी ; कछवाहा शेखावत ; शेखावाटी जिला जयपुर ; २ हजारी १५००।

---

(१) तुजुकमें इसका नाम नहीं लिखा है पर तवारीख मारवाड़ में सबलसिंह लिखा है।

१४—राजा चन्द्रसेन ; झाला ; हलवद ।

१५—राजा जगतसिंह ; बापका नाम राजा बासू ; पठानिया(तुंवर) नूरपुर कांगड़ा ; १ हजारी ५ सौ ।

१६—राजा जगन्नाथ ; बापका नाम राजा भारमल ; कछवाहा ; आमेर (जयपुर) ; ५ हजारी ३ हजार ।

१७—राजा जगमाल ; बापका नाम राजा कृष्णसिंह ; राठौड ; कृष्णगढ ; ५ सदी २॥ सौ ।

१८—राजा जयसिंह ; बापका नाम राजा महासिंह ; कछवाहा ; आमेर (जयपुर) २ हजारी एक हजार ।

१६—राजा जूझारसिंह (जुगराज) ; बापका नाम वरसिंहदेव ; बुन्देला ; उर्छा बुन्देलखण्ड ; २ हजारी एक हजार ।

२०—राय दलपत ; बापका नाम रायसिंह ; राठौड , बीकानेर ; २ हजारी १ हजार ।

२१—राय दुर्गा ; सीसोदिया ; रामपुरा ; ४ हजारी ।

२२—देवीचन्द ; गुलेर (पंजाब) ; डेढहजारी ५ सौ ।

२३—राजा धीरधर ।

२४—राजा नथमल ; सफौली (बिहार) ; २ हजारी ११ सौ ।

२५—नथमल ; बापका नाम राजा कृष्णगढ ; राठौड ; कृष्णगढ ; ५ सदी २३५ ।

२६—रायरायां पितरदास, राजा विक्रमाजीत दीवान ।

२७—राजा प्रेमनारायण ; गौंड ; गढा (नागपुर) ; १ हजारी ।

२८—पृथ्वीचन्द ; राय मनोहर ; कछवाहा शेखावत ; शेखावाटी ; ७ सदी ४५० ।

२६—राय वनमालीदास मुशरिफ फीलखाना ; ६ सदी १२० ।

३०—राजा वरसिंहदेव ; बुन्देला ; उर्छा ; ५ हजारी ५ हजार ।

३१ राजा बासू ; पठानिया ; पठानकोट (पंजाब) , ३॥ हजारी पांच सौ ।

३२—बिहारीचन्द कानूनगो आगरा ।

३३—विहारीदास वाकयानवीस बुरहानपुर।

३४—विहारीदास दीवान दक्षिण।

३५—भरजी (राजा), राठौड, वगलाना, ४ हजारी।

३६ राजा भारत, राजा रामचन्द्रका पोता, बुन्देला, बुन्देलखण्ड डेढ हजारी एक हजार।

३७—मिरजा राजा भावसिंह, राजा मानसिंहका वेटा कछवाहा आमेर, ५ हजारी ५ हजार।

३८—महाराजा भीम, वापका नाम राना अमरसिंह, सीसोदिया, उदयपुर।

३९—भोज, वापका नाम राजा विक्रमाजीत, चोहान भदोरिया भदावर।

४०—राय मनोहर, कछवाहा, शेखावाटी, १ हजारी आठसो।

४१—राजा महासिंह, बापका नाम कुवर जगतसिंह, कछवाहा, आमेर (जयपुर), ४ हजारी ३ हजार।

४२—राय सार्ईदास सुशरिफ महल, ६ सदी १ सौ।

४३—माधवसिंह, वापका नाम राजा भगवन्तदास, कछवाहा, आमेर, ३ हजारी।

४४ राजा मानसिंह, राजा भगवन्तदासका वेटा, कछवाहा,

४५—राजा मान पजावी, पजाव, डेढ हजारी १ हजार।

४६—राव मानसिंह, राना सगर, सीसोदिया, उदयपुर, दो हजारी ६ सौ।

४७—राय मोहनदास दीवान गुजरात, ८ सदी ५ सौ।

४८—राय भगत, चोहान भदोरिया, भदावर।

४९—राजा रामदास, कछवाहा, आमेर ३ हजारी।

५०—राजा रामदास, पिताका नाम राजसिंह, कछवाहा वाना वर गवालियर, डेढ हजारी ७॥ सौ।

५१—राय कुवर दीवान गुजरात।

५२—रायमाल दरवारी, कछवाहा, शेखावाटी, ३ हजारी।

५३—रायसाल खिदमतिये प्यादोंका सरदार।

५४—रायसिंह ; बापका नाम कल्याणमल ; राठौड ; बीकानेर ; ५ हजारी।

५५—रूपसवास ; १ हजारी ५ सौ।

५६—राजा लक्ष्मीचन्द ; पिताका नाम राजा रुद्र ; कमाऊ ।

५७—सगर (राणा जिर रावत) : बापका नाम राणा उदयसिंह , सीसोदिया ; उदयपुर ; ३ हजारी।

५८—संग्राम ; बिहार।

५९—सग्राम ; जम्मू।

६०—सरबुलन्दराय (रावरतन हाडा) ; बापका नाम राय भोज , हाडा ; बून्दी , ५ हजारी।

६१—राजा सारगदेव ; १॥ हजारी।

६२—राजा सूरजमल , बापका नाम वासू, पठानिया , पठानकोट, २ हजारी एक हजार।

६३—राजा सूरजसिंह , बापका नाम उदयसिंह मोटा राजा , राठौड , जोधपुर , ५ हजारी ३३ सौ।

६४—सूरजसिंह , बापका नाम राय रायसिंह , राठौड , बीकानेर, २ हजारी दो हजार।

६५—राजा श्यामसिंह , २॥ हजारी १४ सौ।

६६—हृदयनारायण , हाडा , ९ सदी ६ सौ।

इस पुस्तकके फारसी तुर्की और अरबी शब्दोंके अर्थ।

अ

अकलीम—भूखण्ड, देश
अक़ीक—लालमणि
अबरशा—एक प्रकारका घोडा
अरगली—एक पशु
अर्गवां—एक लाल फूल
अर्नवेगी—झोढोदार
अलतमश—फौजका अगला दल
अशकन—एक फल
अस्प—घोडा

आ

आबदार—जल रखनेवाला
आलतमगा—लालछाप
आलूबालू—एक मेवा

इ

इक़बाल—भाग
इसामिया—शीआ जातिके मुसलमान

उ

उकाब—एक प्रबल पक्षी
उजबक—एक जातिके मुगल
उरबसी—काठी, माला
ऊदबिलाव—एक जानवर

क

क़ज़लबाश—लालटोपीवालेईरानी
क़बा—अचकन
कब्ब—बूटा
क़मरगा—बडा शिकार
करावल—बन्दूकची, लशकरोंमें आगे चलनेवाला, शिकारी
करदी—जाकट
कगेडी—तहमीलदार
कर्रानी—पठानोंकी एक जाति
काहरुबा—एक दवा
काकड—पठानोंकी एक जाति
काज—राजहंस
कारलग—गक्कडोंकी एक जाति
कारवदीक—पक्षीकारी
कारस्तानी—युक्ति
कालीन—गलीचा
क़ुफ़्र—अधर्म
क़ुरीशा—एक पक्षी
कुलग—कौंच पक्षी
कोतापाचा—एक पशु
कोरनिश—भुककर सलामकरना
कोलकची—खिदमतगार
कोल—बीचकी फौज
कौर—हथियार
कौरची—सिपाही

कोरचीबाशी—सिपाहियोंका ज मादार या हथि यारोंका दारोगा
कोशनेगी—शिकारखानेका दारोगा
कोशची—मीरशिकार

ख

खताई—चीनीलोग, या चीनकी वस्तु
खण्वा—एक शस्त्र
खाका—मसौदा
खातिमवन्दी—हाथीदांतका काम
खुतवा—नमाजके पीछे बादशाह का नाम लेना
खुशामदरामद—लल्लोपत्तो
ख्वाजासरा—जनानी ड्योढीका नाजिर, हीजडा
ग्वारी—खराबी

ग

गनीमत—लूट
गुज्रानी—आगे रखी
गुमराही—अनीति
गुलअफशा—एक बागका नाम
गुलखतमी—एक फूलका नाम
गुलजाफरी—एक फूलका नाम
गुललाला—एक फूलका नाम
गगला—एक पक्षी
गब—परोक्ष
गोरखर—एक जातिका बडा गधा
गोल—बीचकी फौज

च

चरज—एक पक्षी
चरन—चौथाई मोहर
चन्दावल—पिछली फौज
चपावल—पीछेकी फौज
चिनार—एक वृक्ष
चीतल—एक पशु
चुगद—एक जातिका उल्लू
चौखण्डी—चौबुरजी
चौगाथी—एक फूल

ज

जकात—महसूल
जमधर—कटार
जरज—एक पक्षी
जरनगार—बायें हाथकी फौज
जर्दालू—एक फल
जर्टतिलक—एक पक्षी
जलवानी—हाथी घोडेका इनाम
जाला—घडनाव
जिरगा—बिरादरी, पचायत
जीगा—किरीट कलगी
जुरअत—साहस
जुर्रा—नर बाज

त

तकला—एक पक्षी

तगटरी—एक पक्षी
तगटाग—एक पक्षी
तरह—सहायक सेना
तवीब—वैद्य
तवाची—चोबदार
तवेगून—एक जातिका बाज
तसलीम—झुककर सलाम करना
तुकमा—घुंडी
तुगाई—मामा
तुमन—एक प्रकारकातमगा
फौजका एक भुण्ड
तुहफा—सौगात
तोग—झंडे परकी एक धज्जी
तोरा—तुर्कों का कानून

ट

टरव—आधी मोहर
टाम—रुपयेका ४०वां भाग
टुआतशा—दोबार खिंची हुई
शराब.
टौलतख्वाह—शुभचिन्तक

न

नकशबन्दी—एक जातिके फकीर
नमट—नमदा, ऊनी गलीचा,
तकिया,
नरगिस—एक फूल
नादिरी—सदरी
नादिरुलअस्र—अपने समयका
एक अनोखा

नौरोज—नया दिन

प

परमनरम—कश्मीरी शाल
पेशखाना—आगे चलनेवालाडेरा

फ

फरजी—जाकट
फलोनिया—एक दवा
फुन्दुक—एक लाल रंगका मेवा
फेज—लाभ, उपकार
फौत हुआ—मर गया

ब

बनफशा—एक फूल और पौदा
बरबरी—बड़े बड़े बालों वाली
बकरी
बरामदा—कमरेके आगेका भाग
बलूत—एक वृक्ष
बिही—एक फल
बुका—एक पक्षी
बुकनगार—बायें हाथकी फौज
बुर्दबारी—सहनशीलता
बोजा—एक मादक वस्तु

म

मशायख—शेख, मौलवी
मेहमानदारी—अतिथिसत्कार
महरम—तुर्कों की एक जाति
मारखोर—एक पहाड़ी बकरा
मीर आतिश—तोपखानेका
अफसर

जहांगीरके समयके राजपूत राजा और सरदार जिनका वृत्तान्त जहांगीर नामेमें आया है।

(१) अनूपशहर—अनूपसिंह बडगूजर (अनीराय सिंहदलन)।

(२) अमझेरा (मालवा)—केशवदास मारू राठौड।

(३) आमेर (जयपुर)—राजा भारमल कछवाहा २ भगवन्तदास ३ मानसिंह ४ जगतसिंह ५ महासिंह ६ जयसिंह। मिरजा राजा भावसिंह मानसिंहका बेटा, राजा जगन्नाथ राजा भारमलका बेटा, रायदेराज कछवाहा राजा मानसिंहका चचा। अखेराजके बेटे अभयराम विजयराम श्यामराम रामदास कछवाहा।

(४) ईडर (गुजरात)—राजा कल्याण राठौड।

(५) उर्छा—राजा बरसिंह देव बुन्देला।

(६) उदयपुर (मेवाड़)—राना सांगा, उदयसिंह, प्रतापसिंह, अमरसिंह, कुंवर करण, जगतसिंह, राना (फररावत) सगर, राना अमरसिंहका चचा, सगर(१)का बेटा मानसिंह, महाराजा भीम(२) राना अमरसिंहका दूसरा बेटा किशनसिंह।

(७) कच्छ (काठियावाड)—राव भारा।

(८) कमाऊ (गढवाल)—राजा रुद्र, राजा लक्ष्मीचन्द, राजा टेकचन्द।

(९) कृष्णगढ (राजपूताना)—राजा कृष्णसिंह राठौड, नथमल

(१०) किश्तवार (कश्मीर)—राजा कुंवरसिंह।

---

(१) सगरकी औलादमें अब जमरी इलाके गवालियरके राजा दलीपसिंह हैं।

(२) भीमके दूसरे बेटे रायसिंहको शाहजहां बादशाहने टोडा और टोडेका राज्य दियाथा परन्तु अब उसकी औलाद मेवाड़में है।

(११) कूचविहार (बंगाल)—राजा लक्ष्मीनारायण।

(१२) खानदेश—पंजू जमींदार।

(१३) गढा (गोंडवाना)—राजा पेमनारायण।

(१४) गुलेर (पंजाब)—राजा मान गुलेरी, देवीचन्द गुलेरी, रूपचन्द गुलेरी।

(१५) चन्द्रकोटा—हरभान।

(१६) जम्मू (पंजाब)—राजा संगराम।

(१७) जामनगर (गुजरात)—जाम जस्सा जाड़ेचा।

(१८) जैसलमेर—रावल कल्याण।

(१९) जोधपुर (मारवाड़)—राव मालदेव २ मोटा राजा उदयसिंह ३ राजा सूरजसिंह ४ राजा गजसिंह, नारायणदास राठौड, भाटी गोयनदास सूरजसिंहका प्रधान।

(२०) नरवर (गवालियर)—राजा राजसिंह कछवाहा, राजा रामदास।

(२१) नूरपुर (कांगडा)—राजा वासू २ राजासूरजमल ३ राजा जगतसिंह ४ राजा माधवसिंह।

(२२) बगलाणा (गुजरात)—प्रतापमरजी राठौड।

(२३) बलवाडा (पंजाब)—वासू जमींदार।

(२४) बांधोगढ (रीवां)—राजा विक्रमाजीत २ राजा अमरसिंह

(२५) बिहार—राजा संग्राम उसका बेटा राजा रोजअफजू (मुसलमान)

(२६) बीकानेर—राय रायसिंह २ राय दलपतसिंह ३ सूरज-(सूर) सिंह।

(२७) बुन्देलखण्ड—राजा रामचन्द्र, राजा भारत बुन्देला (मर-दुलन्दराय रायराज)

(२८) बूंदी (राजपूताना)—रावरतन हाडा. हृदयनारायण हाडा।

(२९) भदावर—धर्मंद्द, भोजभदोरिया।

(३०) संभौली (बिहार) राजा नथमल।

(३१) रतनपुर—राजा कल्याण।

(३२) रामपुरा (मालवा)—राय दुर्गा सिसोदिया।

(३३) शेखावाटी (जयपुर)—राय मनोहर और उस राय पृथ्वीचन्द रायसाल दरबारी और उसका राजा गिरध

(३४) श्रीनगर—राजा श्यामसिंह।

(३५) हलवद (गुजरात)—राजा चन्द्रसेन झाला।

मरहठे।

[१] दक्षिण—ऊदाराम पंडित दक्षिणी।

[२] " —जादूराय (सेवाजीका नाना)।

बादशाही श्रीहदेदार।

[१] राजा कल्याण राजा टोडरमलका बेटा।

[२] राजा विक्रमाजीत (सुन्दर ब्राह्मण)।

[३] राजा विक्रमाजीत रायरायां पतरदास।

[४] राय घनसूर दीवान।

[५] कल्याण विक्रमाजीतका बेटा।

[६] राय बिहारीदास।

[७] राजा सारङ्गदेव।

[८] राजा किशनदास।

[९] रायकंवर दीवान।

[१०] राय भवाल (भवानीदास) मुशरिफ तोपखाना।

फुटकर।

[१] गुरु अर्जुन (गुरु नानक साहिबके उत्तराधिकारी)।

[२] जदरूप सन्यासी (चिदरूप)।

[३] मानसिंह सेवड़ा।

[४] सुखराय भाट।

[५] जीतकराय ज्योतिषी।

[६] भट्टाचार्य्य ।
[७] उस्ताद पूर्ण कारीगर ।
[८] कल्याण कारीगर ।
[९] कल्याण लुहार ।
[१०] किशनदास मुसव्विर (चितेरा) ।

जहांगीरनामा ।

दूसरा भाग ।

चौदहवें वर्ष (सन १०२७) का शेषभाग १३वां नौरोज फरवरदीन महीना ।

२३ रवीउल अव्वल सन १०२७ चैत्र वदी १० संवत् १६७४ बुधवारको १४॥ घडी रात जाने पर सूर्य मेष राशिमें आया । इस नये दिन तक बादशाहके राजतिलकसे लेकर १२ वर्ष कुशलसे बीते और शुभ घडी शुभ मुहूर्तमें नयावर्ष लगा ।

वर्षगांठके उत्सवमें दान—२ फरवरदीन गुरुवार (चैत्र वदी ११) को ५१वां वर्ष लगनेका तुलादान हुआ इस उत्सवमें बादशाहने निज सेवकोंको प्याले देकर प्रसन्न किया ।

आसिफखांके ५ हजारीजात और ३ हजार सवारोंके मनसब पर १००० सवार दुअस्पा और तिअस्पा बढाये गये ।

साबितखांको अर्ज मुकर्रर और मोतमिदखां को तोपखानेका काम मिला ।

दिलावरखांके बेटेका भेट किया हुआ कच्छी घोडा जिसके समान गुजरातमें और घोडा न था बादशाहने मिरजा रुस्तमकी खातिर और प्रार्थनासे उसको देदिया ।

जामको हीरे, लाल, पन्ने और नीलमकी चार अंगूठियां, दो कंगन और राजा लक्ष्मीनारायणको भी वैसीही ४ अंगूठियां मिली ।

मुरव्वतखाने तीन हाथी बङ्गालेसे भेजे थे, उनमेंसे दो खासे बनाये गये।

शुक्रकी रातको तालाब पर दीपमालिका बहुत अच्छी हुई।

रविवारको हाजी रफीक, शाह अब्बासका पत्र, पचास जातिके घोड़े और दिव्य वस्त्रोंके थान लेकर ईरानसे आया। बादशाहने कई घोड़े खासे तवेलेमें भेजे और उसे मलिकुत्तुज्जार (व्यापारियोंके राजा) की पदवी दी।

सोमवारको बादशाहने खासी तलवार जड़ाऊ माला और ४ मोती कुण्डलोंके वास्ते राजा लक्ष्मीनारायणको दिये।

मिरजा रुस्तम ५ हजारी, ऐतकादखा चार हजारी, और सरफ राजखा अढ़ाई हजारी हुआ।

रानीराय सिंहदलन और फिदाईखांको सौ सौ मोहरोंके घोड़े मिले।

पंजाब का सूबा एतमादुद्दौलाको दे रक्खा था उसकी प्रार्थनासे बादशाहने अहदियोंके बख्शी मीरकासिमको हजारीजात ४०० सवारोंका मनसब और कासिमखांका खिताब देकर वहां शासन करनेको भेजा।

राजा लक्ष्मीनारायणको बादशाहने पहिले इराकी घोड़ा दिया था। इस दिन हाथी और तुरकी घोड़ा देकर बङ्गाले जानेकी आज्ञा दी।

जासको भी घर जानेकी बिदाईमें, जड़ाऊ कमरपेटी जड़ाऊ माला २ तुरकी और इराकी घोड़े सिरोपाव सहित मिले। इसी तिथीको नौरतुमलाने इराकसे आकर चौखट चूमी।

मीरजुमला—यह इसफहानके प्रतिष्ठित सैयदोंमेंसे था। पहिले १० साल तक गोलकुंडेके मुहम्मदकुली कुतबुलमुल्कका सत्री था। नाम था मुहम्मदअमीन। कुतबुलमुल्कने उसे मीरजुमलाकी पदवी दी। १४ साल गोलकुंडेमें रहकर ईरानमें शाह अब्बासके पास चला गया था। उसका भतीजा मीर रजी, शाहका

दानाध्यक्ष था। शाहने अपनी बेटी उससे व्याही थी। बादशाहने मीरजुमलाका विचार अपने दरबारमें नौकरी करनेका सुनकर उसे बुलाया था। वह १२ घोड़े ९ थान कपड़ो के और २ अंगूठियां भेंट लेकर आया। बादशाहने २०००० दरब सिरोपाव सहित उसे दिये।

११ शनिवार (चैत्र सुदी ५ ६ संवत् १६७५) को बादशाह हाथी का शिकार खेलनेके लिये चलकर गांव कड़ेबाड़ेमें और १२ को गांव सजारामें ठहरा। यहांसे दोहद (१) ८ कोस और शिकार का स्थान १॥ कोस था।

हाथीका शिकार—१३ सोमवार (चैत सुदी ८) सवेरे बादशाह बहुत से निज सेवकों सहित हाथी के शिकारको गया। पहिलेसे बहुतसे सवारों और पदलोंने जाकर पहाड़ोंको घेरलियाथा। बादशाहके बैठनेको १ वृक्षपर सिंहासन बनाया गयाथा। उसके आसपास अमीरोंकी बैठकें वृक्षों पर बनीथीं। २०० हाथी बहुतसी हथनियों और सुदृढ़ नागपाशों समेत वहां लाये गये थे। एक एक हाथी पर दो दो महावत "जरगा" जातिके जिनका कामही हाथीका शिकार है बैठे थे। यह बात ठहरी थी कि जङ्गली हाथी चौतरफसे घेरकर बादशाहके सम्मुख शिकारका कौतुक दिखानेके लिये लायें जावें। परन्तु लोग जब जङ्गलमें आये तो घने वृक्षों और ऊंची नीची भूमिके होनेसे शिकारका प्रबन्ध टूट गया। जङ्गली हाथी घबराकर हर तरफको चलेगये। केवल १२ हथनियां और हाथी इधर आये उनके भी निकल जानेका भय था इसलिये पलेहुए हाथियोंको आगे करके जहां मिले वहीं उनको बांधा। यद्यपि बहुत हाथी हाथ नआये तथापि दो उत्तम हाथी पकड़े गये। बादशाह लिखता है—"जिस जङ्गलमें यह हाथी रहते हैं वहां एक पहाड़ है। उसको राक्षस पहाड़ी कहते हैं। इसी प्रसंगसे मैंने उन दोनों हाथियोंके नाम भी राक्षसोंके नामपर रावनसर और पावनसर रक्खे।

(१) अब दोहद पंचमहाल जिले गुजरातमें है।

बादशाह १४ मङ्गल और १५ बुधको भी वहीं रहा। १८ वृहस्पतिवार (चेतसुदी ११) की रातको कूच करके "काडे वारह" में आगया। तीन हजार रुपये पञ्जाबके पहाडी राजा सग्रामको इनायत हुए। गर्मी बहुत पडती थी दिनको चलना कठिनथा इस लिये रातका कूच ठहरा।

१८ शनिवारको दोहदमें डेरे हुए।

१८ रविवार (चेतसुदी १४) को मेष सक्रांति थी(१) बादशाह फिर दरबार करके सिंहासन पर बैठा। शहनवाजखांके मनसब ५ हजारीजातमें २००० सवार दुअस्पा ओर तिअस्पा हुए। ख्वाजा अबुलहसन मीर बख्शीका मनसब बढकर ४ हजारीजात ओर २००० सवारोंका होगया।

काश्मीरकी सूबेदारी—अहमदबेगखा काबुली, काश्मीरके हाकिमने यह प्रतिज्ञा की थी कि दो वर्षमें तिब्बत ओर किश्तवार को जीत लूंगा परन्तु यह काम उससे न बना। इस लिये बादशाहने उसे पदच्युत करके दिलावरखां काकडको काश्मीरकी सूबेदारी दी ओर हाथी सिरोपाव प्रदान करके बिदा किया। उसने भी दो वर्षमें तिब्बत ओर किश्तवार फतह करदेनेका प्रतिज्ञा पत्र लिख दिया।

मिर्जा शाहरुखका बेटा "बदीउज्जमा" अपनी जागीर सुलतान पुरसे आया।

पञ्जाबकी सूबेदारी—बादशाहने कासिमखांको जडाऊ खजर और हाथी देकर पञ्जाबकी सूबेदारी पर भेजा।

अहमदाबादको लोटना—२१ मङ्गलवार (बैशाखबदी १) को रातको बादशाहने अहमदाबादकी ओर बाग फेरी। गर्मीकी तेजी ओर हवाके बिगड जानेसे लोगोंको बहुत कष्ट होने लगा था इस लिये राजधानीको जानेका विचार छोडकर अहमदाबादमें रहना

(१) पडूपचाङ्गमें मेष सक्रांति पहले दिन लिखी है।

स्थिर किया। क्योंकि गुजरातकी बरसातकी बहुत प्रशंसा सुनी थी। अहमदाबादकी भी बहुत बड़ाई होती थी।

आगरेमें मरी—इसी समय यह भी खबर आई कि आगरे मे फिर मरी फैलगई है, बहुतसे आदमी मरते हैं। इससे आगरे न जानेका विचार और भी स्थिर होगया।

२७ (वैशाख बदी २) को गुरवारका उत्सव गाव जालोदमें हुआ।

सिक्केमे राशि—पहिले सिक्केमें १ ओर बादशाहका नाम और दूसरी ओर स्थानका नाम महीना और सन जुलूसी होता था। अब बादशाहने महीनेकी जगह उस महीनेकी राशिका चित्र खुदवाया जैसे फरवरदीनमें मेष, उरदीबहिश्तमें वृष। राशिके चित्रमें उदय होता सूर्य्य बनाया गया। बादशाह लिखता है यह बात मने किसीसे पहले न थी।

कोयल—२७ चन्द्रवार(१) (वैशाख बदी ६) को रातको गाव बदरवालेमें दरगाहके सदरमें डेरे हुए। यहा बादशाहने कोयलकी बोली सुनी। बादशाह लिखता है—"कोयल एक चिड़िया काव्वेकी किसम से है, पर उससे छोटी। कव्वेकी दोनों आखें काली होतीहै और कोयलकी लाल—नर काला होता है और मादाके बदन पर सफेद तिल होते हैं। नरकी बोली बहुत प्यारी होती है मादाकी बोली वसी नही होती। कोयल हिन्दुस्तानकी बुलबुल है। जैसे बुलबुल बहारमें मस्त होती है वैसेही कोयलभी बरसातमें मस्त होजाती है। इसकी कूक बहुत सुहावनी और मनभावनी होती है। यह बहुधा आमके दरखतपर बैठती है और आमोंके रग और रसमे मुदित रहती है। अजब बात यह है कि कोयल अपने अंडोंको आप न सेती जहा कहीं कव्वेका घोसला देखती है उसमें से उसके अडे तो चोचसे तोडकर फेंक देती है और अपना अडा उसकी जगह रख आती है। कव्वा उसको अपनाही अडा समझ कर सेता है और बच्चा निकालकर पालता है। यह बात मैंने अपनी आखोंसे देखी है।

२८ बुध (वैशाखबदी ८) को महीनदीके तटपर डेरे हुए। यहा

(१) मूलमें लेखक दोषसे शनिवार लिखा है।

गुरुवारके उत्सवकी सभा हुई। वही २ झरने भी थे जिनका पानी ऐसा निर्मल था कि जो उसमें खशखाशका १ दाना भी पड़जाता तो पूरा देखाई देता। बादशाह दिनभर वेगमों सहित वहीं रहा और दोनों झरनों पर चबूतरे बना देनेका हुक्म दिया।

गुजरातकी मछलियां का शिकार हुआ। बड़ी बड़ी छिलकेदार मछलियां जालमें फसीं। बादशाहने पहिले शाहजहांको और फिर औरोंको हुक्म दिया कि अपनी अपनी कमरसे बंधी हुई तलवार इन पर मारें। शाहजहांकी तलवारने सबसे अच्छा काट किया। मछलियां उपस्थित सेवकोंको बांटदी गई।

उर्दीबहिश्त—१ शनिवार (वैशाखबदी ११) को रातको बाद शाहने वहांसे कूच करके यसावलों(१) और तवाचियोंको हुक्म दिया कि रास्तेके और आसपासके गांवोंसे विधवाओं और अपाहजों को इकट्ठा करके मेरे सामने लाओ। मैं अपने हाथसे उन्हें दान दूंगा। इससे मेरे लिये एक काम होगा और उनको लाभ पहुंचेगा इससे अच्छा काम क्या होगा"।

३ सोमवार (वैशाखसुदी १३—१४) को मुजफ्फरखां नवब, और सिपहरखां, जाहिदे जो गुजरात और दक्षिणमें नियत थे आकर चौखट चूमी। सआदतखां और काजी सुफती जो अहमदा बादमें रहते थे वह भी हाजिर हुए।

४ मङ्गलवार (वैशाखसुदी १०) अहमदाबादकी नदी पर डेरे हुए। कल्पतरखाने जिसको शाहजहांने गुजरातके शासन पर छोड़ा था, चौखट चूमनेका मान पाया।

शाहपुरवानको मीनात—६ गुरुवार (वैशाखसुदी २) को गुरुवार का उत्सव कांकरियातालाव पर हुआ। नाहरखाने आज्ञानुसार दक्षिणसे आकर सिर झुकाया।

बादशाहने कुतुबुल्मुल्कको भेजी हुई १ सहस्र स्वर्ण मुद्राकी मोहरकी अगूठी शाहजहांको दी। उसपर तीन नगीने तो बराबर और एक टेढ़ी लकीर नीचे थी जिसमें अलाके नामके से अक्षर

(१) नकीब चोबदार।

बन गये थे। यह अनोखापन देखकर कुतुबुल्मुल्कने वह भेजी थी। इत्तिफाकसे उसमें लकीर होना दोष है तोभी यह हीरा देखनेमें अच्छा था। पर किसी उत्तम खानिका न था। बादशाह लिखता है "शाहजहां चाहता था कि दक्षिण की फतहके माल में से कोई निशानी मेरे भाई शाह अब्बासकी वास्ते भेजे इस लिये उसने इस चीजको दूसरी सौगातोंके साथ ईरानको भेज दिया।

हृपराय भाट—इसी दिन बादशाहने हृपरायको एक हजार रुपये इनामके दिये। बादशाह लिखता है "यह गुजराती है और इस देशको बातें खूब जानता है। इसका नाम बूटा था मैंने जोमें प्राया कि बूढ़े आदमीको बूटा कहना उचित बात है और विशेष कर उस दशामें जबकि मेरी कृपादृष्टिसे हरा होकर फूलफलसे लद गया हो। इसलिये मैंने हुक्म दिया कि इसे हृपराय कहा करें (हृप (हृ) हिन्दीमें दरख्तको कहते हैं"।

नगर में प्रवेश—७ शुक्रवार १ जमादिउलअव्वल (वैशाख सुदी ३) को बादशाह शुभ मुहूर्त्त में कांकरिया विजय पूर्वक अहमदाबाद में प्रविष्ट हुआ। सवारीके समय शाहजहां पांचहजार रुपयेके चौसहजार चरण लाया था। बादशाह उन्हें लुटाता राजभवन तक गया। वहां उतरतेही शाहजहांने एक तुर्रा २५०००) का भेट किया। उसके नोकर भी जो इस सूबेमें रखे गये थे अपनी अपनी भेटें लाये। वह सब मिलकर चालीस हजार रुपयेकी थी।

अहमदनगर—ख्वाजाबेग मिरजा सफवी अहमदनगरमें मर गया था इस लिये बादशाहने उसके गोद लिये हुए सपूत लड़के खंजरखां को दो हजारीजात और सवारका मनसब देकर अहमदनगरकी किलेदारी पर नियत किया।

बीमारी—बादशाह लिखते हैं कि इन दिनों गर्मी बहुत पड़ने और हवाके बिगड़ जानेसे लोग रोगग्रस्त होगये। शहर और उर्दूमें कम ही कोई रहा होगा जो बीमार न हुआ हो दारुण ज्वर चढ़ता है या हाथ पांव टूटते हैं दो तीन दिन बहुत

कष्ट रहता है फिर अच्छे होजाने पर भी बहुत दिनों तक निर्बलता और शिथिलता रहती है परिणाम कुशल है। मौत इसरोगसे बहुतही कम होती है। इसप्रांतके पुराने पुरुषों से सुना गया कि कि ३० वर्ष पहिले भी इसी प्रकार का ज्वर फैला था और कुशल रही थी। कुछ हो गुजरातका जल वायु बिगड़ चला है मैं यहां आकर बहुत पछताता हूं। परमात्मा कृपा करके यह चिन्ता दूर करें।

पट्टनकी फौजदारी—१३ गुरुवार (वैशाख सुदी ८) को बादशाहने मिर्जा शाहरुखके बेटे, बदीउज्जमां को डेढ़ हजारीजात और सवारका मनसब तथा झंडा देकर पट्टनकी फौजदारी पर नियत किया—इसी प्रकार और भी कई अमीरोंके मनसब बढ़ाये।

बाज—कासिम, दक्खन्होने, तूरानसे "तवेगूं" जातिके ५ बाज अपने एक सजातिके हाथ भेजेथे, उनमेंसे एक तो रास्तेमें मरगया। बाको चार उज्जैनमें पहुंचे। बादशाहने १०००) लानेवालेको दिलाये और ५०००) उसे इस वास्ते दिये थे कि जिस प्रकारका माल ख्वाजा की पसन्दका समझे मोल लेजावे और अब खानआलमने जो शाह ईरानके पास गया हुआ था एक बाज "आशयानी" (१) जिसको फारसी भाषा में "अकना" बोलते हैं भेजा था वह भी भेट हुआ। बादशाह लिखता है—यों तो इसमें और "टामी" (२) बाज में कोई भेद नहीं दिखाई देता, किन्तु उड़ानेपर अन्तर प्रगट होता है।

२० गुरु (जेठ बदी १) को मिरजा यूसुफखांके जमाई अबूसालहने आज्ञानुसार दक्खिन से आकर चौखट चूमी। एक हजार स्वर्ण मुद्रा और एक लालगी भेट की। यूसुफखां मशहदके सैयदों में से था। खुरासानमें इस घरानेकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। ईरानके बादशाह अब्बासने अपनी बेटी मीर अबूसालहके भाई को दी थी। मिरजा यूसुफखां को अकबर बादशाहने बढ़ाकर पांच हजारी कर-

(१) घोंसले में रहने वाला।

(२) जाल में पकड़ा हुआ।

दिया था वह अच्छा अमीर था। अपने नोकरोंको बड़े प्रबन्धसे रखता था। वह दक्षिणमें मरा उसके बहुत बेटे थे। बादशाहने पुराना हक देखकर सबका पालन किया और बड़े बेटेको थोड़ेही दिनों में अमीरोंके पद पर पहुंचा दिया।

हकीमो को पारितोषक—२७ गुरुवार (जेठ बदी ८) को बादशाहने हकीम मसीहुज्जमाको बीस हजार द्रव्य और हकीम रुहुल्लाहको १०० मुहरें और एक हजार रुपये दिये। यह बादशाह की प्रकृति को खूब पहचान गया था। उसने गुजरातकी आब हवा बादशाहसे सधते न देखकर कहा कि आप शराब और अफीम कुछ कम करदे तो बहुत लाभ हो। बादशाहने ऐसा किया तो एकही दिन में बहुत लाभ हुआ।

खुरदाद।

हाथियोका शिकार—२ गुरुवार (जेठ बदी ३०) को गजशाला के अध्यक्ष गजपतिखा और किरावल बेगी (शिकारके कर्मचारी) बल्लोचखा की अर्जीसे जाना गया कि ६८ हाथी हथनिया पकड़ी गई है। बादशाहने उस अर्जी पर हुक्म चढाया कि बूढ़े और बच्चों को छोड़कर बाकी सब हाथी हथनिया पकड़ी जायें। बल्लोचखा को एक हजार रुपये इनाम भी दिये।

बरसिहदेव को घोड़ा—१४ चन्द्रवार (जेठ सुदी १२) को जाम के भेट किये हुए उत्तम घोडोंमेंसे १ खासा कच्छी घोड़ा बादशाहने राजा बरसिंहदेव को प्रदान किया।

बादशाहका अस्वस्थ होना—१५ मङ्गल (जेठ सुदी दूसरी १२) से बादशाहके सिरमें पीड़ा होकर ज्वर चढ गया। रातको शराबके प्याले भी न पिये। दूसरेदिन थोड़ा ज्वर उतरा तो हकीमोंके कहने से प्याली की तिहाई मात्रा ली। खानेके वास्ते उड़दकी दालका पानी और चावल बताये गये थे। बादशाहने यह पथ्य नली। वह लिखता है—"जबसे मैंने होश सम्हाला है याद नहीं कि कभी उड़द की दालका जूस खायाहो"। एक रातदिन मेंही बादशाह

ऐसा निर्बल होगया मानो बहुत दिनका बीमार है। भूख बन्द होगई खाने की रुचि न रही। तीन दिन और दो रात लंघन किया।

अहमदाबादकी निन्दा—बादशाह लिखता है—"मुझे आश्चर्य है कि इस नगरके बसाने वालेने क्या शोभा और सुन्दरता देखकर ऐसी रूखी सूखी भूमिमें नगर बसाया। उसके पीछे दूसरोंने भी अपनी प्यारी जानें इसी धूल में मिलादी। यहां की हवा जहरीली भूमि निर्जल धूल अपार पानी खराब बदमजा, नदी जो नगरके निकट है सिवा बरसातके सदा सूखी पड़ी रहती है। कूओंका जल बहुधा खारा है। बस्तीके आसपासके तालावोंका जल धोबियोंके साबुन से छाछके समान बना हुआ है। धनियोंने अपने घरों में टांके बनवे हैं उनमें वर्षा का जल भरते हैं और अगली बरसात तक पिया करते हैं। जिस पानी पर हवा न लगे और जिससे भाप न उठे वह विकारयुक्त होगा यह स्पष्ट है। नगरके बाहर अर-यालों और बागोंकी जगह थोहर हैं। उनमें होकर जो हवा निकले उसका बखानही क्या। मैंने अहमदाबादको गर्दाबाद कहा है। अब नहीं जानता कि इसका नाम लूयाका स्थान रक्खूं या रोगका घर, या हर नगर कहूं या एकदम दोजख, जो सब कष्टोंका आगार है। यदि वर्षा कालकी रुकावट न होती तो एक दिन भी इस क्रोध भरे स्थानमें न ठहरता। सुलेमानकी भांति हवाके तख्त पर बैठकर उडजाता। और ईश्वर की प्रजा को इस कष्टमें छुडाता। (१)

बादशाह की न्याय नीति—बादशाह लिखता है—"इस नगरके मनुष्य बड़े दीनहीन हैं। मैं इस विचारसे कि कहीं फौजवाले जबरदस्ती किसीके घरमें न घुसजायें या किसी दुर्बलको तंग न करें काजी और मीर अदल उनके भयसे कुछ बोल न सकें और उन

(१) अफसोस है कि उस समय रेल न थी। होती तो विलासी बादशाहको इतना दुःख न देखना पडता।

अत्याचारियों को दबा न सके, इन लू और तपतके दिनोंमें भी नित्य दोपहरको इवादतके बाद उस झरोकेमें बैठता हूं जो नदी की तरफ है। वहां न कुछ रोकटोक है न कोई चोबदार। दो दो तीन तीन घण्टे वहां बैठा रहताहूं। जो फरयादी आता है उसकी पुकार सुनकर दुराचारियों को दण्ड देताहूं। बड़ी कमजोरी तकलीफ और बीमारीके दिनों में भी नियम पूर्वक झरोके में बैठता हूं। शरीर को सुख देना बुरा समझता हूं।

ईश्वरकी कृपासे ऐसी प्रकृति होगई है कि रात दिनमें दो तीन घण्टेसे अधिक नहीं सोता हूं। इसमें दो स्वार्थ है एक तो देश की व्यवस्थामें सचेत रहना दूसरे भगवत स्मरणमें जागना। बड़े खेद की बात है जो यह थोड़ेसे दिनकी आयु प्रमादमें वृथा जाय। जब आगे एक गहरी निद्रा आने वाली है तो फिर इस जाग्रत अवस्था को जिसे पुनः स्वप्न में भी नहीं देखगा दुर्लभ समझ कर पलभर भी भगवत स्मरणसे असावधान नहीं रहना चाहिये।

शाहजहांका रोगग्रस्त होना—जिस दिन बादशाह को ज्वर आयाथा उसी दिन शाहजहां को भी आने लगा था। उससे पीड़ित होकर वह १० दिन तक दण्डवत करने न आसका था। २४ गुरुवार (आषाढ़ बदी ६) को आया तो इतना दुर्बल होगया था कि मानो महीनेसे बीमार है।

३१ गुरुवार (अषाढ़ बदी १४) को बादशाहने मीर जुमला को डेढ़ हजारी और २०० सवारोंका मनसब दिया।

दान—इसी दिन बादशाहने कष्ट निवारणके लिये एक हाथी एक घोड़ा अनेक पशु चांदी सोना और दूसरे पदार्थ दान किये। बहुत सेवक भी अपनी अपनी शक्तिके अनुसार दानकी चीजें लाये। बादशाहने कहा सबेजोंसे यह दानकी चीजें लायेहो तो हमें दिखा येही दान करदी होती। सामने लानेकी क्या जरूरत है।

तीर महीना।

अमीरोंके मनसब बढ़ाना—गुरुवार (आषाढ़ सुदी ६) को बाद

चूमनेकी इज्जत पाई। बादशाह लिखता है—"गुजरात देशमें इससे बडा कोई जमींदार नहीं है। इसका राज्य समुद्रसे मिला हुआ है। भारा और जाम एक दादाके पोते हैं। १० पीढियोंमें मिलते हैं। राज्य और सेनामें भारा जामसे भारी है। कहते हैं कि वह गुजरातके किसी बादशाहके देखनेको नहीं गया। सुल्तान महमूदने इस पर सेना भेजी थी। वह मैदानकी लडाई लडा और इसने उस सेनाको हराया। फिर जब खानेआजम जूनागढ और सोरठ पर चढा तो नन्नू जो सुलतान मुजफ्फर कहलाता था और जमींदारोंके पास भागा भागा फिरता था जामके पास गया। जाम साथमें आकर खानेआजमसे लडा और हारा। तब नन्नूने आकर रायभाराकी शरण ली। खानआजमने उसको मांगा तो इसने बादशाही लशकरसे लडनेकी सामर्थ्य अपनेमें न देखकर नन्नूको खानके हवाले किया। इस सेवासे उसने अपना राज्य बचालिया। पहले जब अहमदाबादमें सवारी आई और जल्दही कूच होगया तो यह हाज़िर न होसका था। इसका देश दूर था और तब इस पर सेना भेजनेका भी अवकाश न था। अब जो दैवयोगसे फिर इधर आना हुआ तो राजा विक्रमाजीतको कुछ बादशाही कर्मचारियोंके साथ इस पर भेजा। इसने आनेमें अपनी रक्षा देखकर चोखट चूमी। दोसौ मोहरें हजार रुपये और सो घोडे भेट किये। घोडा एक भी ऐसा नहीं जो खास आवे। इसकी उमर ८० सालसे अधिक जान पडती है। यह ९० साल बताता है। इसकी शक्ति और इन्द्रियोंमें कुछ निर्बलता नहीं जान पडती। इसका साथी एक बूढा देखा गया, जिसकी डाढी मोछें अब सब सफेद हैं। उसने कहा मेरा लडकापन भाराको याद है। मैं उसके सामने बूढा हुआ हूं।'

अबुलहसन चित्रकार—इसी दिन बादशाहने अबुलहसन चित्रकारको "नादिरुज्जमा"की उपाधि दी। बादशाह लिखता है—"इसने मेरे दरबारका चित्र जहांगीरनामेके मुखपृष्ठमें खेंचकर

उस दिन घोड़े और आदमी भी पार होने लगते हैं। इस नदीका निकास राजाके पहाड़ोंसे है। कईकोंकी घाटोंसे निकलती है। जब डेढ़ कोस चलकर नगरमें आती है तो इसे बागल कहते हैं। पीछे तीन कोस चलकर शाभरसती बन जाती है।

राव भारा—१० गुरुवारको बादशाहने हाथी, हथनी, जड़ाऊ खञ्जर गोप ४ अङ्गूठियां लाल, पीरोज़ाकृत नीलम पत्रेकी राव भारको दी।

हीरेकी खान—इसी पहले खान खानाने खानदेशके जमीदार पनजूसे हीरेकी खान लेनेके लिये अपने बेटे अमरूल्लहको बादशाह के हुक्म सहित भेजा था। इस दिन उसकी अर्जी पहुंची कि उस जमीदारने बादशाहकी सेनासे लड़ना अपने वृतेके बाहर देखकर वह खान भेट कर दी और बादशाही दारोगा उस पर बैठ गया। वहांके हीरे असली और उत्तम होनेके कारण सब हीरोंसे बढ़ चढ़ कर हैं। जौहरी उन पर बड़ा विश्वास रखते हैं। सब सुडौल और बढ़िया होते हैं। दूसरी गोलकुंडेवाली हीरोंकी खान विस्तारमें है। पर वहां खानसे हीरे नहीं निकलते। वर्षाकालमें पहाड़से पानीका रेला आता है। उसके आगे बांध बांधते हैं। जब रेला उस बांध परसे निकल जाता है तो जाननेवाले लोग वहां जाकर हीरे निकालते हैं। तीन भागमें वह देश बादशाही कर्मचारियोंके अधिकार में है। वहांका नरीदार चांद है। उस वहांका विधेला है। बाहरका आदमी वहां नहीं रह सकता।

तीसरी खान गंगनाटकमें कुतुबुलमुल्ककी सीमाके पास है। यहां पचास कोसके बीचमें खानें हैं यह जमीदारोंके पास हैं इस खानों का हीरा बड़ा होता है।

दीपमालिका—१८ श बाग चन्द्रवार (सावन सुदी १५) को शब बरात थी। बादशाहने हुक्मसे काकरिया ताल और उसके बीचके मकानों पर बड़ी भारी दीपमाला हुई और आतिशबाजी छोड़ी गई। उस समय मेह खुल गया था ऐसीही दीपमालिका शुक्रवार की रातको भी हुई तब भी बादल वर्षा न थी।

इसी दिन एतमादुद्दौलाने एक उत्तम नीलमणि और एक हाथी बिना दातका चादोके साज सहित भेट किया। हाथी सुन्दर और सुडौल था इस लिये बादशाहने निजके हाथियोंमें लेलिया।

सन्यासी—बादशाह लिखता है—"काकरिया तालके ऊपर एक कुटीमें एक सन्यासी रहता था। मेरा चित्त हमेशा ज्ञानी पुरुषोंके सतसङ्गमें लगा रहता है इस लिये मैं सीधा उससे मिलने गया और बहुत देर तक उसका सत्सङ्ग करता रहा। वह ज्ञान और बुद्धिसे शून्य नहीं है। वेदान्तका पूरा ज्ञाता व पूरा त्यागी और आशा तृष्णासे रहित है। यह कह सकते है कि सन्यासियोंमें इससे बढ कर कोई नहीं देखा गया।

सारसके अन्डे—चन्द्रवार, २१ अमरदाद (भादों वदी ८) को उस सारसने जिसके गर्भधारणका वर्णन पहले लिखा जाचुका है बगीचे में घास फूस इकट्ठा करके पहले एक अडा और तीसरे दिन दूसरा अडा दिया। मादा रातको अकेली अडे पर बैठती है और नर उसके पास खडा होकर पहरा देता है। ऐसा चौकस रहता है कि किसी जानवरको वहा फटकनेकी मजाल नहीं। एकबार एक बडा नेवला उधर आनिकला। सारस उस पर वेगसे झपटा। जबतक उसे उसके बिलमें न घुसा दिया तबतक उसका पीछा न छोडा। जब सूर्य्य चमकता है तो नर मादाके पास जाकर चोचसे उसकी पीठ खुजाता है। इसी प्रकार मादा भी नरको उठा कर आप बैठती है। साराश यह है कि रातको मादा अकेली अडे पर बैठी रहती है और दिनको बारी बारीसे बैठते हैं। उठते बैठते बडी सावधानीसे है कि जिसमें कही अडेको ठेस न लग जावे।

शिकारके हाथी—इसी दिन गजपतिखा, बह्लोचखा और शाह जहाके शिकारी जिन्हे बादशाह हाथी पकडनेके लिये छोड आया था सेवामें उपस्थित हुए। सब मिलाकर ७३ हाथी ११२ हथनिया पकडी गई। इन १८५ मेंसे ४७ हाथी और ७५ हथनिया बादशाही सहावतोंने और २६ हाथी और ३७ हथिनिया शाहजहाके शिकारियोने पकडी थी।

फतहबाग—२४ गुरुवार (भादों वदी ११) को बादशाह फतह बागमें जाकर दो दिन सुख पूर्वक रहा। शनिको पिछले दिनसे राजभवनमें आगया।

आसफखांके बगीचेमें जाना—आसफखांने प्रार्थना की थी कि उसकी हवेलीके बगीचेमें नाना प्रकारके फूल फूलने लगे हैं इस लिये बादशाह गुरुवार (भादों सुदी ३) को उसके घर गया और उस खिलेहुए बगीचेको देखकर बहुत प्रफुल्लित हुआ। उसने ३५०००)के जवाहिर जड़ाऊ पदार्थ और दिव्य वस्त्र भेट किये।

ठट्ठेकी सूबेदारी—बादशाहने मुजफ्फरखांको हाथी सिरोपाव देकर फिर ठट्ठेकी सूबेदारी पर भेजा।

ईरानके बादशाहको पत्र—ईरानका व्यापारी ख्वाजा अबदुल करीम गीलानी, ईरानके शाह अब्बासका पत्र और थोडीसी सोगात लाया था। इस दिन बादशाहने उसको भी हाथी सिरोपाव देकर बिदा किया और शाहके लिये भी कुछ उपहार पत्रोत्तर सहित उसको दिये। खानआलमके लिये भी प्रसादपत्र और अपने पहननेके वस्त्र भेजे।

शहरेवर।

सारसके अंडे—शुक्रवार (भादों सुदी ४) को शहरेवर महीना लगा। ३ रविवारसे गुरुवारको रात तक मेह बरसता रहा। बादशाह लिखता है—"विचित्र बात यह है कि और दिनों तो सारस ५।६ बेर बारी बारीसे अंडोंपर बठा करते थे। परन्तु इन दिनोंमें मेह निरन्तर बरसता रहा था और पवन भी ठण्डी होगई थी, अंडोंको गरम रखनेके लिये प्रात:काल से दोपहर तक नर बराबर बठा करता था। आगेसे मादाही अगले प्रभात तक बैठने लगी है कि कहीं बहुत उठने बैठनेसे अंडोंको ठण्ड न लग जावे। मनुष्य जो काम अपनी समझसे करता है पशु वही प्रकृतिके सिखानेसे कर ने लगता है। यह विचित्रबात है कि पहले तो सारस अंडोंको बहुत पास अपनी छातीके नीचे रखते थे। पर जब १४।१५ दिन होगये

तो उनको कुछ अलग रखने लगे कहीं पास रहनेसे बहुत गर्मी पाकर सड गल न जावें।

आगरेको कूच—७ गुरुवार (भादों सुदी १०) को आगे जाने वाले डेरे आगरेकी ओर लगाये गये। इससे पहले भी ज्योतिषियों ने मुहूर्त्त निकालाथा, परन्तु जब मेंह बहुत बरसा और महमूदाबाद की नदी तथा महानदीसे लशकरका उतरना कठिन प्रतीत हुआ तो रुक गये। अब इस दिन डेरे बाहर निकाले गये।

२१ (आश्विन वदी १०) गुरुवारको बादशाहके प्रयाणका मुहूर्त निश्चय हुआ।

कांगडेका किला और राजा विक्रमाजीत—बादशाह लिखता है—शाहजहाने कांगडा जीत लेनेकी प्रतिज्ञा करके जिसके कंगूरे तक किसी बादशाहका हाथ नहीं पहुंचा था अपने विश्वासियोंमेंसे राजा बासूके बेटे सूरजमल और तकीको वहां भेजा था पर अब जाना गया कि उस दुर्गम दुर्गका विजय करना इन लोगोंसे सम्भव नहीं है। इस लिये उसने राजा विक्रमाजीतको जो उसके प्रतिष्ठित पारिषदोंमेंसे है अपने पासके दो हजार सवारों और जहागीरी बन्दोंमेंसे शाहबाजखां लोदी, हृदयनारायण हाडा, राय पृथ्वीचन्द रामचन्द्रके पुत्री, २०० बर्कन्दाज सवारों, ५०० तोपची प्यादों सहित भेजना ठहरायाथा। उसके जानेका मुहूर्त आजका था, इसलिये उसने १०००) का कण्ठा पन्नोंका भेट करके तलवार और सिरोपाव पाया और उस काम पर बिदा हुआ। उस सूबेमें उसकी जागीर नहीं थी सो मुझे शाहजहाने बढानेका परगना जो २० लाख दाम का था उसको जागीरमें देनेके लिये अपने इनाममें मांग लिया।

कारखानोंका दीवान ख्वाजा तकी मोतमिदखांका खिताब और खिलअत पाकर दक्षिणके सूबेका दीवान हुआ और हिम्मतखां ख्वेसा परम नरम पाकर सरकार भरूचकी फौजदारी पर गया।

राय पृथ्वीचन्द—राय पृथ्वीचन्दको कांगडे जाते समय सात सदी जात और साढे चारसौ सवारोंका मनसब मिला।

जहांगीरनामा—बादशाह लिखता है, "जहांगीरनामेमेंसे १२ वर्षका वृत्तान्त पुस्तकाकार तय्यार होगया। मैंने निज पुस्तकालय के कर्मचारियोंको हुक्म दिया था कि इस बारह सालके वृत्तान्तकी अन्य पुस्तक बनाकर उसकी कई नकलें की जावें। वह मैं सेवकों को दूंगा और सब देशोंमें भेजूंगा। राजकर्मचारी और विद्वान उसे अपना पथप्रदर्शक बनावें। अब ८ शुक्रवार (भादों सुदी ११) को उसकी एक जिल्द नकल होकर और बंधकर आई। वह मैंने पुस्तक ने पुत्र शाहजहांको दी। उसे मैं सब बातोंमें सब पुत्रोंसे श्रेष्ठ जानता हूं। अपने हाथसे मैंने उक्त पुस्तक पर लिख दिया कि अमुक तिथिको अमुक स्थानमें यह पुस्तक पुत्र शाहजहांको दीगई। आशा है कि उसे ईश्वरकी प्रसन्नता और प्रजाका आशीर्वाद प्राप्त करनेकी श्रद्धा होगी।

सुबहान कुली किरावलको प्राणदण्ड—सुबहान कुली हाजी जमाल बलोचका बेटा था। वह अकबर बादशाहके अच्छे किरावलोंमेंसे था। उनके स्वर्गलाभके पीछे सुबहानकुली बंगालेमें इस लामखांके पास चला गया। इस्लामखां उसे बादशाही खानाजाद जानकर उसका आदर और विश्वास करता था। परन्तु वह उस्मान पठानके लालच देनेसे इस्लामखांको मार डालनेके विचारमें था कि इसलामखांने भेद पाकर उसको तुरन्त पकड लिया और कारागारमें डाल दिया। इसलामखांके मरे पीछे वह फिर आकर बादशाही किरावलोंमें भरती होगया। इस्लामखांके बेटेने बादशाहसे अर्ज की कि यह पास रहनेके योग्य नहीं है। बादशाहके कारण पूछने पर उसने वह सब वृत्तान्त कह दिया। इस पर बादशाह उसे दण्ड देना चाहता था। परन्तु उसके भाई बन्दोंने जो सब किरावल थे प्रार्थना की कि उस पर वृथा दोष लगाया गया है। बलोचखां किरावलबेगी (किरावलोंका नायक) उसका जामिन होगया। बादशाहने क्षमा करके कह दिया कि बलोचखांके साथ रहकर काम किया करे। इस पर भी वह बिना प्रयोजन भागकर आगरेको

चला गया। बादशाहने वखीचख़ापर उसके हाजिर करनेकी ताकीद की। उसने अपनी आदमी ढूंढनेको भेजे। बखीचख़ाके मार्गकी वह भाडा नामक गांवमें मिला, जहां फसादी लोग रहते थे। वह उसका पक्ष करके लडनेको उद्यत हुए। तब उसने आगरेसे जाकर ख्वाजा जहांसे हाल कहा। उसने कुछ फौज भेजी तो गांववालोंने डरकर उसको पकडवाया। वह इस दिन जञ्जीरोंसे जकडा हुआ दरगाहमें लाया गया। बादशाहने उसके मार डालनेका हुक्म देदिया, "मौर गज्ब" तुरन्त उसको वधस्थानमें लेगया। थोडी देर पीछे बादशाहने एक पारिषदके निवेदन पर उसकी जान बख्श दी पर उसका एक पांव काटनेकी आज्ञा दी। इस आज्ञाके पहुचनेसे पहलेही वह मारा जाचुका था। बादशाहने पछतावार यह स्थिर किया कि अब जो हुक्म किसीको वध करनेका दिया जाय तो उसमें चाहे जितनीही ताकीद और जल्दी की जाय तथापि दिन छिपे तक उसे न मारें। यदि उस समय भी कोइ हुक्म उसको छोड देनेको न पहुचे तो फिर प्राणदण्ड देदें।

महीनदीका चढाव—रविवारको मही नदी बहुत जोरसे चढी। दिन चढेसे चढने लगी थी अगले दिन उतर गई। वहांके वृद्ध लोगोंने बादशाहसे कहा कि हमने केवल एक बार सुलतानखांकी हाकिमीमें इस नदीका इतना चढाव देखा था।

कविता पर इनाम—पूर्वकालमें मुसरवी नाम एक शायर था उसने खुरासानके बादशाह सुलतान सञ्जरकी प्रशंसामें कविता लिखी थी। इसका एक शेर सुलतानने बहुत पसन्द किया था। बादशाहने सुना तो बहुत सराहा। इसपर सय्यदअल्लगगराजी (आभूषणागारके अध्यक्ष) ने बादशाहकी प्रशंसामें कसीदा बनाकर सुनाई। उस पर प्रसन्न होकर बादशाहने १४ गुरवार (आश्विन बदी ७) को हुक्म दिया कि सय्यदको बराबर सोना तोल दें।

दिन ढले बादशाह हरतम्बाडीकी हवा खाने गया जो खिली हुई थी।

मुल्ला असीरी—१५ शुक्र (आश्विन बदी ३) को मुल्ला असीरीने जो अबदुल्लःखां उजबकके पास रहा करता था तूरानसे आकर चोखट चूमी। उसको बादशाहने एक हजार रुपये और शाहजहां ने पांच सो रुपये सिरोपाव सहित दिये।

मांडसिरीके हुच पर लेख—शाहजहांके भवनमें कुण्डके पास चबूतरेपर एकसंगसिपरीका हुच पीठलगाकर बैठनेके योग्य था, परन्तु एक ओरसे ३ गज तक खोखल होजानेसे बुरा लगता था। बादशाह ने उसे देखकर आज्ञा दी कि यहां संगमर्मरका एक टुकड़ा ऐसा जोड़ दें कि जिससे पीठ लगाकर बैठ सकें। बादशाहने तुरन्तही एक शेर भी कह कर सिलावटोंको उस शिला पर खोद देनेके वास्ते दिया। उस दोहेका मतलब यह है—"यह बैठक सात विलायतोंके स्वामी सम्राट अकबरके बेटे जहांगीरकी है।"

खास दौलतखानेमें बाजार—१८ मंगलवार (आश्विन बदी ७।८) की रातको दौलतखाने खासमें बाजार सजाया गया। बादशाह लिखता है—"पहले ऐसी प्रथा थी कि कभी कभी शहरके कारीगर और बाजारवाले आज्ञा पाकर राजभवनके रायआंगनमें दुकानें लगाते थे। जवाहिर, जडाऊ गहने और नाना प्रकारके पदार्थ सजाकर दिखाते थे। मैंने सोचा कि जो यह बाजार रातको लगाया जावे और दुकानोंके आगे बहुतसे फानूस रखे जावें तो और ही शोभा होगी। ऐसाही हुआ। मैंने सब दुकानोंमें फिरकर जवाहिर जडाऊ गहने और जो जो चीजें पसन्द आईं खरीदीं। हर दुकान से कुछ कुछ अनोखे पदार्थ मुल्ला असीरीको लेदिये। वह इतने अधिक थे कि वह सम्हाल न सकता था।

आगरेको कूच—२१ शहरेवर गुरु सन१३ ता० २२ रमजान १०२७ २॥ घड़ी दिन चढे बादशाहने आगरेको कूच किया। दौलतखानेसे कांकरियां ताल तक सोना उछालते गये। इसी दिन सौर पचीय तुलादानका उत्सव भी हुआ। बादशाहको ५०वां सौर वर्ष लगा। उसने नियमानुसार सोने और दूसरे पदार्थोंमें तुलकार

मोती और सोनेके फूल लुटाये। रातको दीपमालिकाकी रात अन्त पुरमें सुखपूर्वक विताई।

रोजा खोलना और ईश्वर स्तुति—२२ शुक्रवार (आश्विन वदी ११) को बादशाहने आज्ञा दी कि इस शहरमें जितने मौलवी मुल्ला और शेख रहते हैं वह सब बुलाये जाय। वह सब मेरे साथ रोजा खोलें। बादशाह लिखता है—तीन राते इसी प्रकारसे व्यतीत हुई। मैं प्रत्येक रात्रिमें सभा विसर्जन होने तक खडा रहता था और यह स्तुति पढा करता था—

"हे परमात्मा सर्व्वविवान तूही है, तूही समर्थ है तूही दीनपालक है। मैं न तो दिग्विजयी हू और न शासक हू। तेरे द्वारके भिक्षुकोंमेंसे एक भिक्षुक हू। तूही मुझको भलाई और सुक्रति करनेकी सामर्थ्य देता है, नही तो मुझसे किसीके वास्ते क्या भलाई होसकती है। मैं दासोका स्वामी तो हू पर अपने स्वामीका कृतज्ञ दास हू।"

"बहुतसे दीन दरिद्री जो सेवामें नही पहुचे थे और जीविका की अभिलाषा रखते थे मैंने उन सबकी योग्यतानुसार भूमि और खर्च दिलाकर सबकी मनोकामना पूर्ण करदी।"

सारसके बच्चे—२१ गुरुवार (आश्विन वदी १०) को सारसने एक बच्चा निकाला फिर सोमवारकी रातको दूसरा। पहला बच्चा ३४ दिन और दूसरा ३६ दिन पीछे हुआ। यह राजहसके बच्चोंसे सवाये थे। या मोरके एक महीनेके बच्चेके बराबर थे। इनके रोये नीले रगके थे। पहले दिन उसने कुछ नही खाया। दूसरे दिन उसकी मा छोटी छोटी टीडिया चोचमे लेकर कभी तो कबूतर के समान खिलाती थी और कभी मुर्गीकी भाति बच्चोके आगे डाल देती थी कि स्वय चुग ले। छोटी टीडी तो समूचीही बच्चोंके मुह मे डाल देती थी और बडीके दो तीन टुकडे करदेती थी जिसमें बच्चे सुगमतासे खाले। बादशाह लिखता है—"मुझे उनके देखनेकी अत्यन्त लालसा थी। इस लिये आज्ञा दी कि बहुतही सावधानीसे

लावे जिसमें उन्हें कुछ स्दमा न पहुंचे। देखकर फिर आज्ञा दी कि दौलतखानेके अन्दर उसी बागीचेमें लेजाकर बड़ी सम्भालसे रखें। जब चलने फिरने लगे तब मेरे पास फिर लावें।" इसी दिन हकीम रूहुल्लहको एक हजार रुपये इनाम मिले।

२६ मंगलवार (आश्विन बदी ३०) को बादशाहने काकरिया तालसे चलकर गांव खजर्में विश्राम किया।

जलवायुकी परीक्षा—२७ बुधवार (आश्विन सुदी १) को महमूदाबादकी नदी पर जिसका नाम एजक है डेरे हुए। बादशाह लिखता है—अहमदाबादका जलवायु बहुत बुरा था इस लिये महमूद बेगड़ेने हकीमोंकी सम्मतिसे यह शहर बसाया था। फिर जब उसने चांपानेर जीता तो वहां राजधानी बनाई। महमूद शहीद तक गुजरातके हाकिम बहुधा यहीं रहा करते थे और इस महमूद ने तो जो अन्तिम बादशाह गुजरातका था महमूदाबादको अपना वासस्थानही ठहरा दिया था। निस्सन्देह महमूदाबादके जलवायु को अहमदाबादसे कुछ लगाव नहीं है। मैंने परीक्षाके वास्ते फर माया कि एक बकरीको उसका चमड़ा उधेड़कर काकरिया तालमें लटकावें और दूसरीको महमूदाबादमें, जिससे वायुका अन्तर जाना जावे। काकरिया तालमें सात घड़ी दिन चढ़े बकरी लटकाई गई थी। जब तीनघड़ी पिछला दिन रहा तो वह ऐसी सड़गई थी, कि दुर्गन्धके मारे उसके पाससे निकलना दुस्तर होगया था और महमूदाबादमें तड़केसे सन्ध्या तक तो बकरीका कुछ नहीं बिगड़ा डेढ़ पहर रात जाने पर उसमेंसे दुर्गंधि आने लगी। इसका तात्पर्य्य यह है कि अहमदाबादके पास तो ८ घण्टेमें बकरी सड़ी और महमूदाबादसे १४ घण्टे पीछे।

अमीरोंकी बिदा—२८ गुरुवार (आश्विन सुदी २) कोही बादशाहने शाहजहांके नियत किये हुए गुर्जराधीश रुस्तमखांको खासी घोड़ा और परम नरम खासा देकर बिदा किया और जहांगीरी बन्दोंको जो इस सूबेमें रखे गये थे यथायोग्य घोड़े और सिरोपाव दिये।

रावभाराको विदा—२८ शहरेवर १ शव्वाल (आश्विन सुदी ३) को राव भारा खिलअत जडाऊ तलवार और खासा घोडा पाकर अपने देशको विदा हुआ। उसके बेटोंको भी घोडे और सिरोपाव मिले।

कुरानका अनुवाद—शनिवारको बादशाहने शाह आलमके पोते सैयद महमूदको कुरानकी सौगन्द देकर कहा कि जो तू चाहता हो बेधडक मांगले। उसने कहा कि जब मुझे कुरानकी कसम दिलाई जाती है तो मैं एक ऐसा कुरान मांगता हूं जिसको सदैव अपने पास रखूं और उसके पाठ करनेका पुण्य हजरतको मिले। इसपर बादशाहने छोटेआकारका एकक़ुरान याक़ूतका लिखाहुआ जो जगत के अपूर्व पदार्थो मेंसे था उसको इनायत किया और उसकी जिल्द पर अपने हाथसे लिख दिया कि अमुक मितीको अमुक स्थान पर सैयद महमूदको दिया गया। बादशाह उसकी विद्वता और सज्जनताकी प्रशंसा करके लिखता है—"मैंने उससे कहा कि कुरानका पूरा अनुवाद जिसमें मूलसे एक अक्षर भी घटाया बढाया न जावे सीधी और सरल फारसी भाषामें करके अपने सुयोग्य पुत्र सैयद जमालके हाथ मेरे पास भेजदे।

शेखोंको विदा—गुजरातके शेखोंको बादशाहने कई बार कुछ दिया था। अब फिर उनमेंसे हरेकको रुपये और कपडे देकर विदा किया।

शराब—बादशाह लिखता है, गुजरातका जलवायु मुझे नही रुचा था। इससे हकीमोने मुझे शराब कम करनेकी सलाह दी। मैं उनकी सलाहसे शराब छोडने लगा। एक सप्ताहमें एक प्याला कम करदिया। पहले साढे सात सात तोलेके छ प्याले एक रातमें पीता था अब सवा छ छ तोलेके छ प्याले। सोलह स्तरह साल पहले इलाहाबादमें मैंने प्रतिज्ञा की थी कि जब मेरी उमर पचास सालकी होजायगी तो तीर बन्दूकका शिकार छोडकर जीव जन्तुओं का अपने हाथसे मारना बन्द कर दूंगा। आज मुझे पचासवां साल

लगा। एक दिन धुए और तपकी अधिकतासे मेरा सांस रुकने लगा था। बड़ा कष्ट होता था। उस दशामें ईश्वरकी प्रेरणासे वह प्रतिज्ञा याद आगई। पुराना सङ्कल्प दृढ़ होगया। मैंने जीमें निश्चय किया कि पचासवां साल उतरने पर जब सङ्कल्पकी अवधि पूरी होगी तो जिस दिन स्वर्गीय श्रीमानके दर्शनको जाऊंगा उसदिन उनकी पवित्र आत्मासे इस काममें सहायता लूंगा और इसे छोड़ दूंगा। यह कल्पना करतेही मेरा कष्ट छूट गया। मैंने प्रसन्न होकर परमेश्वरका धन्यवाद किया। फिरदोसी(१)ने क्या अच्छा कहा है कि चींटीको भी मत सता कि उसके जान है और जान सबको प्यारी है।

सफर महीना।

४ गुरुवार (आश्विन सुदी ८) को आदिलखांके वकील सैयद कबीर और बख्तरखां जो भेट लेकर आये थे विदा हुए। बादशाह ने सैयद कबीरको खिलअत, जड़ाऊ खञ्जर, घोड़ा दिया और बख तरखांको घोड़ा, सिरोपाव और जड़ाऊ उर्वसी जिसे उस देशके मनुष्य गलेमें लटकाते हैं दी। ६००० दरब खर्चके वास्ते दोनोंको दिये। आदिलखांने कई बेर शाहजहां द्वारा बादशाहकी तसवीर मांगी थी। इस लिये अपना एक बहुमूल्य चित्र, एक लाल और एक खासा हाथी उसके वास्ते भेजा। पत्रमें लिखा कि निजामुल् मुल्क और कुतुबुलमुल्ककी विलायतमेंसे जितना कुछ लेसकेगा वह उसके इनाममें दिया जावेगा। जब कभी वह सहायता चाहेगा तो शाहनवाजखां एक सजी हुई फौज उसके पास भेज देगा। बादशाह लिखता है—"पिछले समयमें जब कि निजामुलमुल्क दक्षिण के हाकिमोंमें बड़ा था तो सब उसको बड़ा मानते थे और बड़ा भाई जानते थे। अब जो आदिलखांने अच्छी सेवा की तो वह पुत्रकी पदवीसे सम्मानित हुआ और मैंने सारी दक्षिणकी सरदारी उसीको दी और तसवीर पर यह छन्द अपने हाथसे लिख दिया—

(१) शाहनामेके कर्ता फारसीका कवि।

आम और नीबू—बादशाह लिखता है—इस वर्ष ६ मह्नर (आश्विन सुदी १०) तक आम खाये गये। इसदेशमें नीबू बहुत है और बड़े भी होते हैं। काकर नामक एक हिन्दूके बागसे कई नीबू आये थे जो खूब नर्म और बड़े थे। सबमें बड़ेको मैंने तुलवाया तो ७ तोलेका निकला।

दशहरा—६ शनिवार (विजयादशमी) को दशहरेका उत्सव हुआ। पहले खासेके घोड़े सजाकर लाये गये फिर हाथीके हाथी।

महीनदीका चढ़ाव—मही नदी अभी तक लशकरके उतरने योग्य पायाब नहीं हुई थी और महमूदाबादके जलवायुको दूसरे स्थानोंके जलवायुसे कुछ लगाव न था, इसलिये दो दिन फिर वहां बादशाहका पड़ाव रहा।

महीनदी पर पुल—८ चन्द्रवारको वहांसे कूच होकर गांव मोदे में डेरे हुए। बादशाहने ख्वाजा अबुलहसन बखशीको बहुतसे सेवकों और मज़ाहीके साथ मही नदी पर पुल बांधनेके लिये भेजा। जिससे सेना पार होजावे और नदीके पायब होनेकी प्रतीक्षा न करना पड़े।

८ मंगलको वहां मुकाम रहा और १० बुधवारको एना नामक स्थानमें डेरे हुए।

सारस—पहले सारस बच्चोंके पांव चोंचमें पकड़कर उन्हें औंधा कर देता था। उससे यह शङ्का होती थी कि कहीं वह उन्हें मार न डाले। इसलिये बादशाहने नरको बच्चोंसे न्यारा रखनेका हुक्म दिया था। अब फिर इस बातकी जांचके लिये कि सारसको अपने बच्चोंसे मोह है या नहीं उसे बच्चोंके पास छोड़ा। देखा गया कि नर सारसका स्नेह बच्चोंके साथ मादा सारससे कम नहीं है। वह बच्चोंको प्यारसे औंधा किया करता था।

११ गुरुवार (आश्विन सुदी १४) को मुकाम रहा। पिछले दिन ३ काले हरन ४ हरनिया और चिकारे चीतेसे पकड़वाये गये।

१४ रविवारको भी चीते द्वारा शिकार हुआ। १५ हरनिया और हरन पकड़वाये गये। मिरजा रुस्तम और सुहराबखां दोनों

दाप वटे वादशाहके कहनेसे सात नील गाये शिकार करके लाये।

शेरका शिकार—बादशाहने यह सुनकर कि इस प्रान्तमें मनुष्य के मांस पर हिला हुआ एक सिंह प्रजाको पीडित कर रहा है शाह नवाजको उसके मारनेकी आज्ञा दी। वह उस शेरको मारकर रातको ले आया। बादशाहने अपने सामने उसकी खाल उधडवाई। यह बादशाहके मारे हुए शेरोंसे तोलमें कम निकला।

१४ चन्द्रवार और १६ मंगलवारको बादशाहने शिकारको जा कर दो नील गाये बन्दूकसे मारी।

कवल—१८ बृहस्पतिवार (कार्तिक वदी ८) को एक तालके तट पर डेरा हुआ। प्यालोंकी सभा जुडी। पानी पर कवलके फूल खिले हुए थे। बादशाहने अपने नौकरोंको प्याले दिये।

हाथियोंकी भेट—जहांगीर कुलीखांने बिहारसे २० और मुकर्रबखांने बंगालेसे ८ हाथी भेजे थे। उनमेंसे बादशाहने एक एक हाथी खासे हाथियोंमें लेकर शेष बांट दिये और कई अमीरोंके मन सब भी बढाये।

शिकार—१८ शुक्रवार (कार्तिक वदी८) को बादशाहने शिकार में एक नील गाय मारी। वह लिखता है—मुझे स्मरण नहीं कि इससे पहले कभी नर नीलगायके शरीरको छेदकर गोली पार निकलने देखी हो। हां मादाके शरीरसे निकल जाती है। आज ३४ पावडेकी दूरी थी तो भी गोली नर नीलगायके दोनों चमडोंसे पार निकल गई। शिकारी लोग आगे पीछेके पांवोंके फासलेको पावडा कहते हैं।

शिकार—२१ रविवार (कार्तिक वदी ११) को बादशाह स्वयं तो बाज जुर्रोके शिकारको गया और मिरजा, रुस्तम, दाराबखां और मीरमीरा आदि अनुचरोंको कह गया कि नीलगायोंका शिकार करो और जितने चाहो बन्दूकसे मारो। वह १८ नर मादा मार कर लाये। सबने दस दस हरन भी चीतोंसे पकडवाये।

सूबे दक्षिणके वखशी इब्राहीमखांको मनसब खानखानाकी

प्रार्थनासे हजारी जात और दोसौ सवारोंका होगया।

मथीनदीका पुल और अकबर बादशाहका एक चरित्र—२२ चन्द्र और २३ भौमवारको लगातार कूच हुआ। रास्ते में बादशाहने एक सिंहनीको तीन बच्चों सहित बन्दूकसे मारा। आगे जाकर मही नदीके पुलसे उतरा जो १४० गज लम्बा और १४ गज चौड़ा था। उसे ख्वाजा अबुलहसन मीरबख्शीने अति परिश्रमसे ऐसा सुदृढ़ बंधवाया था कि बादशाहने जब अपने सबसे प्रचण्डहाथी गुण-सुन्दरको तीन हथनियों सहित परीक्षाके लिये उसके ऊपरसे उतारा तो वह हिला तक नहीं। बादशाह लिखता है—मैंने स्वर्गवासी श्रीमानसे सुना। वह कहते थे कि मैं जवानीमें एक दिन दो तीन प्याले पीकर एक मस्त हाथी पर चढ़ा। मुझे नशा न था और न हाथी मस्त था वरच वह मेरे काबूमें था। तोभी मैं अपने को मतवाला और हाथीको मस्त जनाकर लोगों पर दौड़ाता था फिर दूसरा हाथी मंगवाकर लड़ाया। दोनो हाथी लड़ते लड़ते जमनाके पुल तक चले गये। वहां वह हाथी भागा पर राह न पाकर पुल पर गया। मैं जिस हाथी पर बैठा था वह उसके पीछे दौड़ा। उसका ठहरा लेना मेरे हाथमें था। पर मैंने सोचा कि जो हाथीको पुलपर जानेसे रोकूंगा तो लोग समझेंगे कि यह सब कौतुक नशेके न थे बनावटी थे और यह बात स्पष्ट जानली जावेगी कि न मैं मतवाला था न हाथी मस्त। बादशाहोंकी ऐसी पोल खुल जाना ठीक नहीं। इसलिये मैंने परमेश्वरकी सहायताका भरोसा करके अपने हाथीको उसके पीछे जाने दिया। दोनो पुल पर चले। पुल नावोंका बना था। जब हाथीके अगले पैर नाव पर पड़ते थे तो आधी नाव पानीमें डूब जाती थी और आधी ऊपर उठ आती थी। पद पद पर यह आशंका होती थी कि नावोंके रस्से टूट जावेंगे। उधर लोग यह हाल देखकर हाहाकार कर रहे थे। पर भगवानकी कृपासे जो सब जगह और सब दशाओंमें मेरी सहायता करता है दोनो हाथी कुशलपूर्वक पुलसे पार होगये।

२४ गुरुवार (कार्तिक वदी ३०) को मन्दीके तट पर प्यालेकी सभा हुई और कई निज पारिषदोंको जो ऐसी सभाओंमें आसकते थे बादशाहने प्यालोंसे छका दिया। और दो हेतुसे वहां चार मुकाम किये। एक तो स्थान सुरम्य था दूसरे यह कि लोग घबराकर नदीमें न उतर पडें।

सारसोंकी लडाई—२८ रवि और २६सोमवारको दो कूच बराबर हुए। इस दिन बादशाहने एक अजब तमाशा देखा। सारस का जोडा बच्चो सहित गुरुवारको अहमदाबादसे लाया गया था। वह राजभवनके चोकमें जो एक तालके तट पर सजाया गया था फिर रहे थे। अचानक उनकी बोली सुनकर एक जङ्गली सारसोंका जोडा तालके उधर बोला और उडकर सीधा इधर आगया। नर नरसे लडने लगा और मादा मादासे लडने लगी। उस समय कई मनुष्य वहां खडे थे परन्तु उन्होंने किसीकी कुछ शङ्का न की। अन्तको रक्षक दोडे। एकने नरको पकडा दूसरेने मादाको। नर बडे परिश्रमसे पकडा गया और मादा हाथमें निकल गई। बाद शाहने नरके गले और पावोंमें अपने हाथसे कडिया डालकर छोड दिया। दोनो अपने स्थानको चले गये। फिर जब जब वह घरेलू सारस बोलते थे तो वह जङ्गली भी साथ लगाते थे।

हरनोंकी लडाई—बादशाह लिखताहै—ऐसाही कौतुक जङ्गली हरनोंका देखा। मै एक बार कारनालके परगनेमे शिकार खेलने गया था। तीस शिकारी और खिदमतगार साथ थे। एक काला हरन कई हरनियों सहित दिखाई दिया। मैंने एक पाला हुआ हरन जो दूसरे हरनोंको पकडा करता था उनसे लडनेके लिये छोडा। वह दो तीन वेर सीगोंसे लडकर लोट आया। मै उसके सीगोंमें फंदे बांधकर दूसरी बेर छोडाही चाहता था जिससे वह उसे फांस लावे। पर इतनेहीमे वह जङ्गली हरन अति क्रोधसे लोगोंकी शङ्का न करके दोडा आया और दोडतेहीमें उस हरनसे दो चार टक्करें लडाके निकल गया।

१ महावतखांके बेटे अमानुल्लहकी हजारी जात ३०० सवार।

२ गिरिधर, राव सालके बेटेको हजारी जात ८०० सवार।

३ खान आज़मके बेटे अबदुल्लहको हजारी जात ३०० सवार।

४ दिलेरखांको जो गुजरातके जागीरदारोंमेंसे था हाथी और घोड़ा।

५ शहबाजखां कोम्बोका बेटा रणबाजखां जो दक्षिणसे बुलाया गया था, ८ सदी जात और ४०० सवारोंका मनसब पाकर बंगशकी बखशीगरी और वाकिआनवीसके काम पर नियत हुआ।

शाहजादा शुजा—३ शुक्रवार (कार्तिक सुदी ८) को कूचहुआ। शाहजहांका बेटा शाहजादा शुजा नूरजहां बेगमके पास पलता था। और बादशाहको उससे बहुत मोह था, हब्बे डब्बेके रोगमें ग्रस्त होकर अचेत होगया। जब बहुतसे उपचार करने पर भी चैतन्य न हुआ तो बादशाहने परमेश्वरसे उसके कष्ट निवारण करनेकी दुआ मांगी। ५० वर्षकी अवस्था होजाने पर जो तीर और बन्दूक से जीवोंके न मारनेकी कल्पना मनमें कर रखी थी उसकी प्रतिज्ञा विशुद्ध चित्तसे की कि अब फिर किसी जीव जन्तुको अपने हाथसे न मारूंगा। इस पर भगवत कृपा होकर उसका कष्ट निवृत्त होगया।

अकबर बादशाहका संकल्प—बादशाह लिखता है—"जब मैं माके पेटमें था तो एक दिन हलाचला नहीं। दासियोंने विह्वल होकर मेरे पिताके कान तक यह बात पहुंचाई। वह उन दिनों सदा चीतेका शिकार किया करते थे। उस दिन शुक्रवार था। उन्होंने मेरे आरोग्यके लिये यह सङ्कल्प किया कि जीवन भर शुक्रवारको चीतेका शिकार न करूंगा।" वह जब तक जिये अपनी प्रतिज्ञा पर स्थिर रहे और मैंने भी उनका अनुसरण करके अबतक कभी शुक्रके दिन चीतेका शिकार नहीं किया है।

शुजाकी निर्बलतासे तीन दिन तक वहीं निवास हुआ।

ऊंटनीका दूध—७ मंगलवार (कार्तिक सुदी १२) को कूच

१५ बुधवार(१) (अगहनबदी ५।६) को गाव समन्नेमें डेरे हुए। पर वहा कोई सुरम्य स्थान गुरुवारके उत्सव होनेके योग्य न था। बादशाहने यह नियम कर रखा था कि उस उत्सव यथासाध्य किसी जलाशय या मञ्जुल स्थानमें किया जावे। इस वास्ते १६ गुरुवार की आधीरात(२) को वहासे कूच होकर दिन निकलतेही बाघोरके तालाव पर डेरे हुए। दिन ढलेसे प्यालोंकी मजलिस आरम्भ हुई।

केशव मारू—१७ शुक्रवार (अगहन बदी ८) को वहासे प्रयाण हुआ। उस प्रान्तका जागीरदार केशवदास मारू, जो दक्षिणसे बुलाया गया सेवामें उपस्थित हुआ।

धूमकेतु—१८ शनिवार (अगहन बदी ९) को रामगढमें डेरे हुए। कई रातोंसे तीन घडीके तडके आकाशमें कुछ धुआ और भाप मिलकर एक स्तम्भ बनता जाता था। जब बन चुका तो एक शक्सा दिखाई देने लगा। उसके दोनो सिरे महीन बीच मोटा और बाका धुरेके समान, पीठ दक्षिणमें थी और मुह उत्तरमें था। बादशाह लिखता है—"अब पहर रात रहे से उगने लगा है। ज्योतिषियोंने यन्त्रराजसे देखा तो जाना गया कि आकाशके २४वें अशमें दिखता है और महत आकाशकी गतिके साथ इसकी भी गति है। उस गतिमें उसका चार भी प्रगट होता है जैसे पहले कर्कराशिमें था फिर उसको छोडकर तुलामें पहुचा है उसकी गति विशेषकर दक्षिण दिशाको है। ज्योतिर्विदोंने इस प्रकारके तारोंका नाम 'हरबा(३)' लिखा है और इसका निकलना अरब देशके अधिपतियोंकी निर्बलता और उन पर उनके बैरियोंके प्रबल होनेका कारण बताया है। इसके प्रादुर्भावकी १६ रातों के पीछे उसी दिशामें एक तारा चमकने लगा। जिसके मस्तकम

(१) मूलमें लेखक दोषसे रवि लिखा है।
(२) तारीख आधीरातसे मानी जाती थी।
(३) हस्व।

शाहजहांकी भेंट—शाहजहांने अपने नवजात पुत्रका उत्सव अबतक नहीं किया था और उज्जैन उसकी जागीरमें था। इस लिये उसने बादशाहसे प्रार्थना की कि गुरुवारका उत्सव उसके यहां किया जावे। बादशाह ३० गुरुवार (अगहन सुदी ४) को उसके यहां गया। जो लोग ऐसी मजलिसोंमें जानेके अधिकारी थे उनको प्याले दिये। शाहजहांने उस बालकको बादशाहकी सेवामें लाकर एक थाल रत्नों और जड़ाऊ गहनोंसे भरा हुआ २० हथनियां और ८० हाथी भेंट किये और उसके नाम रखनेकी विनती की। बादशाहने उन हाथियोंमेंसे ७ तो निज हलकेमें रखनेके वास्ते लेलिये। १४ फौजदारों (महावतों) को देदिये। यह भेंट दो लाखकी थी।

आजर महीना।

१ आजर शुक्रवार (अगहन सुदी ६) को बादशाह बाज जुर्राका शिकार खेलने गया। रास्तेमें जुवारका खेत पड़ा। जुवारकी एक डण्डीमें एकही भुट्टा निकलता है। पर वहां एक डंडीमें १२ भुट्टे देखे गये। इस पर बादशाहको एक बादशाह और एक मालीकी कहानी याद आई—

कथा बादशाह और मालीकी—"एक बादशाह गर्मियोंमें किसी बागके पास पहुंचा। एक बूढ़ा माली द्वार पर खड़ा था उससे पूछा कि क्या इस बागमें अनार है? उसने कहा हां है। कहा कि एक कटोरा उनके रसका भर ला। मालीने अपनी कन्यासे कहा। वह सुन्दरी तुरन्त कटोरा भर लाई। उसमें कुछ पत्ते भी पड़े हुए थे। बादशाहने कटोरा उसके हाथसे लेकर पी लिया और उससे पूछा कि पत्ते क्यों डाले थे। उस प्रियवादिनीने कहा कि ऐसी तप्तवायु और पसीनेमें एक साथ पानी पीना वैद्यकके विरुद्ध है इसलिये मैं रसमें पत्ते डाल लाई कि आप जरा ठहर ठहरके पियें। उसकी इस चतुराई बादशाहके मनमें बहुत भाई और उसको अपने विलास भवनमें सम्मिलित करनेकी चेष्टा करके मालीसे पूछने लगा कि वर्ष भरमें इस बागसे तुमको क्या प्राप्त होजाता है? उसने कहा कि

से नहो पडती। वल्कि यह हुक्म है कि जो कोई अपने खेतमें बाग लगावे उसका हासिल माफ रहे। आशा है कि पवित्र परमात्मा सुझे सदैव इसी नीति पर स्थिर रखेगा।

जदरूप—२ शनिवार (अगहन सुदी ७) को फिर जदरूपसे मिलनेकी अभिलाषा बादशाहको हुई। दोपहरकी उपासनासे निबट कर नावमें बेठा और दिन ढले उसीकी कुटीमे जाकर मिला। खूब ज्ञानचर्चा हुई। बादशाह लिखता है—निस्सन्देह वेदान्तका रहस्य बहुत स्पष्ट रूपसे कहता है। इसके सत्सगसे अति आनन्द होता है। इसकी अवस्था ६० वर्षसे ऊपर है। जब २२ वर्षका था तो विरक्त होगया। ३८ वर्षसे परमहस गतिमें रहता है। विदा होते समय बोला कि मै परमात्माके इस अनुग्रहका धन्यवाद किस सुखसे करू कि ऐसे न्यायवान बादशाहकी छत्रछायामें एकाग्रचित्तसे अपने इष्ट देवको आराधनामें लगा हुआ हू, किसी प्रकारसे कोई विघ्न मेरी तपस्यामें नहो पडता है।

बाज और करवानक—३ रविवार (अगहन सुदी ८) को बादशाह कालियादहसे चलकर कामिमखेडमें ठहरा। रास्तेमें बाज और कुहीसे शिकार कराता आता था कि अकस्मात एक करवानक उडी। बादशाहने उसके ऊपर तबीगू जातिका बाज छोडा। करवानक तो बाजके पजेसे छूट गई पर बाज इतना ऊचा चढा कि दृष्टिसे अलोप होगया। किरावल और मीरशिकार उसके पीछे इधर उधर बहुत दोडे पर कुछ पता न लगा और ऐसे जगलमें उस का हाथ आना असम्भव होगया। इससे लशकरमीर काशमीरी जो काशमीरके मीर शिकारोका मीर था बहुत घबराया क्योंकि वह बाज उसीको सौपा हुआ था। वह जगलसे वेर्पते दौडता फिरता था। अन्तको दूरसे एक वृक्ष देखा। जब पास गया तो बाजको उस पर बैठा पाया। तब एक पला मुर्गा दिखाकर तीन घडी बीतने से पहले उसे बादशाहके पास पकड लाया। यह बाज बादशाहको बहुत प्यारा था। उसके मिलनेकी आशा सबने त्याग दी थी। उसे

य कर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ। महाबतखां मीरकां मनसब बढ़ाया गया और उसे छोड़ा और सिरोपाव दिया।

४ चन्द्र ५ मंगल और ६ बुधवारको लगातार कूच हुआ। ७ गुरुवार (अगहन सुदी १०) को एक तालाब तट पर तम्बू तने और उतना हुआ।

नकीम रूमान की तीन गाव—नूरजहां बगमको एक बीमारी थी। बादशाहकों मकाम रहनेवाले हिन्दू मुसलमान हकीम वैद्य सब उपचार कर हार थे। अन्तमें हकीम रूहुल्लहकी ओषधसे आराम होगया। बादशाहने प्रसन्न होकर उसको उचित मनसब और तीन गाव उसके देशमें दिये और उसको बराबर चांदी भी तोल दी।

मुकाम १३ बुधवार तक निरन्तर कूच होते रहे। नित्य मंजिल पर पहुंचने तक वाम और जुगाम शिकार कराया जाता था। बहुत से हिरन पकड़वाये गये थे।

बख्र कुंवर—पिछले रविवार (पौष वदी १) को राणा अमर सिंहके पुत्र करनने नसीब हुजूरकी प्रतिष्ठा प्राप्त करके दक्षिण हैदिजयकी मुबारकबादी, १००० मुहर, १००० रुपये नजर और २१००० के जड़ाऊ पदार्थ, कुछ हाथी तथा घोड़े पेश किये। हाथी घोड़े तो बादशाहने उसीको बख्श दिये शेष पदार्थ रख लिये।

दूसरे दिन बादशाहने उसको सिरोपाव दिया।

हुसामुलमुल्क वकीलको हाथी—कुतुबुलमुल्कके वकील मीर शरीफ और इरादतखां, मीर सामानको एक एक हाथी मिला।

मनसबदारों सरकार मदारतकी मुजरादारी पर और सैयद मुबारक रोहतासगढ़की किलेदारी पर नियत हुए। उनके मनसब भी बढ़े।

१४ रविवार (पौष वदी ५) को बादशाहने गांव मन्धारके तालाब पर पहुंचकर प्यालोंका मजलिस की। निज अनुचर प्याले देकर मतवाले किये।

शिकारी जानवर—शिकारी जानवर जो आगरेमें बंधे थे उनको

ख्वाजा अबुलहसनीफ कोशवेगी इस दिन बादशाहको सेवामें लाया। उनमेंसे निज सरकारमें रखने योग्य देखे वह बादशाहने छांट लिये शेष अमीरों और दूसरे सेवकोंको बख्श दिये।

राजा सूरजमलका प्रतिकूल होना—इसी दिन राजा बासूके बेटे सूरजमलके बागी होनेका समाचार बादशाहको सुनाया गया बादशाह लिखता है—"राजा बासूके कई पुत्र थे। सूरजमल सबमें बड़ा था। परन्तु अशुभचिन्तक और दुराचारी होनेसे पिता सदैव उसको कारागारमें रखता था। जब वह उसी अप्रसन्नता और खिन्न दशामें मर गया तो बड़ा लड़का यही था और दूसरा लड़का योग्य न था। इस लिये मैंने राजा बासूकी सेवाका ध्यान करके जमींदारीके प्रबन्ध और वतन तथा देशकी रक्षाके लिये इस दुष्टको राजाकी उपाधि, दो हजारी मनसब और वह जागीर भी जो उसके बापने सेवा और स्वामिधर्म्मसे पाई थी और वह सब जमापूंजी जो वर्षोंकी जोड़ी हुई थी देदी। जिस समय मुर्तिजाखां कांगड़ा जीतनेके वास्ते भेजा गया था तब यह कुपात्र भी जो इन पहाड़ोंका मुख्य जमींदार था सेवा और शुभचिन्तकताकी प्रतिज्ञा करने पर उसकी सहायता पर नियत किया गया था। मुर्तिजाखांने वहां पहुंच कर किलेको घेरा और अन्दरवालोंको तंग किया तो वह दुष्ट यह देखकर कि अब शीघ्रही किला फतह होजावेगा बदल गया और खुल्लम खुल्ला प्रतिकूल होकर उसके आदमियोंसे शत्रुता करने लगा। मुरतिजाखांने उसकी यह दशा देखकर दरगाहमें अरजी लिखी और स्पष्ट रूपसे उसके बैरभाव और अहितकारी होनेका वृत्तान्त लिखा उस कुपात्रने भी मुर्तिजाखां जैसे सुभटके प्रबल सैन्य सहित उन पहाड़ोंमें होनेसे उपद्रव करनेका समय न पाकर शाहजहांकी सेवा में एक अर्जी भेजी कि मुर्तिजाखां स्वार्थी लोगोंके बहकानेसे असन्तुष्ट होकर मेरा अनर्थ करना चाहता है। राजविद्रोहका मुझ पर झूठा कलङ्क लगाता है। आप मेरी रक्षा करें और मुझे जीवनद ः देकर दरगाहमें बुला लेवें। मुझे मुर्तिजाखांकी बातका पूरा

भरोसा था। तो भी उसको दरबारमें बुलाये जानेकी प्रार्थनासे मनमें शङ्का हुई कि कदाचित मुर्तिजाखांने दुर्जनोंकी प्रेरणासे क्रुद्ध होकर और विचार न करके उसको कलंकित किया हो। पुत्र शाहजहांकी सुफारिशसे उसके अपराध क्षमा करके उसे दरगाहमें बुला लिया। इतनेमें मुर्तिजाखां तो मर गया और कांगडेका फतह होना किसी दूसरे सरदारके भेजने तक रुक गया। जब वह दरगाहमें आया तो मैंने उसकी ऊपरी दशा पर दृष्टि देकर शीघ्रही कृपापूर्वक शाहजहांकी सेवामें दक्षिण जीतनेके वास्ते भेज दिया। जब वह देश राजकीय कर्मचारियोंके अधिकारमें आगया तो इसने शाहजहांकी सेवामें अपना पक्ष बढाकर कांगडा विजय कर देनेकी प्रतिज्ञा की। यद्यपि इस कृतज्ञताविहीन पुरुषको उन पहाडोंमें भेजना सावधानीसे दूर था परन्तु इस कामको उस पुत्रने अपने जिम्मे ले रक्खा था इसलिये उसीके विचार और अधिकारमें इसे छोडना पडा। उस प्रतापी पुत्रने अपने अनुचरोंमेंसे तकी नामके एक लेखक तथा बादशाही मनसबदारों, अहदियों और बर्कन्दाजों की एक सुसज्जित सेना उसके साथ भेजी। उसका वृत्तान्त पिछले पन्नेमें लिखा जाचुका है। जब वह वहां पहुंचा तो तकीसे भी नटखटी और दुष्टप्रकृति प्रकट करने लगा। तकीने कई बार उसकी शिकायत लिखी और स्पष्ट कह दिया कि मेरी उसकी नहीं बनती है और यह काम उससे बन भी नहीं सकता है; दूसरा सरदार भेजें तो शीघ्रही यह किला फतह होजावे। शाहजहांने तकी को हजूरमें बुलाया और अपने प्रधान मन्त्रियोंमेंसे राजा विक्रमाजीत को एक प्रबल सेना सहित उसके साथ भेजा। तब इस कुपात्रने जाना कि अब विशेष छल छिद्र नहीं चलेगा। उसने विक्रमाजीत के पहुंचनेसे पहले बहुतसे बादशाही बन्दोंको यह कहकर विदाकर दिया कि बहुत दिनो तक लडाईमें कष्ट उठानेसे शोभाविहीन हो गये हो सो अपनी अपनी जागीरोंमें जाकर राजा विक्रमाजीतके आने तक फिर तय्यारी करलो। जब इस भांति शुभचिन्तकोंका

दल टूट गया, बहुतसे अपनी जागीरोंमें चले गये और थोड़ेसे वहां रहे तो उसने अवसर पाकर उपद्रव उठाया। सैयद सफी बारह जो बड़ा वीर था अपने थोड़ेसे भाइयों और सम्बन्धियोंको लेकर उससे शूरता पूर्वक लड़ा और मारा गया। कुछ लोग घायल भी हुए जिन्हें वह दुष्ट रणस्थलसे पकड़कर अपने स्थानमें लेगया। जो बाकी रहे वह भागकर बचे। उस अभागेने पहाड़की तलहटीके परगनोंको लूट लिया जो अधिक एतमादुद्दौलाको जागीरमें थे। लूटमें कुछ बाकी न छोड़ा।"

१७ रविवार (पौष बदी ८) को बादशाह चादाको घाटीसे उतरा।

खानखानाका उपस्थित होना—१८ चन्द्रवार (पौष बदी ६) को खानखाना सेनापतिने चौखट चूमी। यह बहुत दिनोंसे दूर था। अब बादशाहकी सवारी खानदेश और बुरहानपुरकी सरकारमें होकर निकली तो उसने सेवामें उपस्थित होनेके वास्ते प्रार्थनापत्र भेजा। बादशाहका हुक्म हुआ कि जो सब प्रकारसे उसका चित्त निश्चिन्त हो तो हड़ा आकर शीघ्रही लौट जावे। इस पर वह इस तारीखको आया था। बादशाहने बादशाहोंकीसी कृपा करके उस का मान बढ़ाया। उसने १००० मुहरें और १००० रुपये भेंट किये।

घाटेसे उतरनेमें सेनाको बहुत कष्ट हुआ इस लिये बादशाहने सर्वसाधारणके सुखके लिये १९ मङ्गलवार (पौष बदी १०) को वहीं निवास किया।

खानखानाको घोड़ा—२० बुधवार (पौष बदी ११) को कूच और २१ गुरुको मुकाम हुआ। सिन्धु नदीके कूलमें प्यालों का कुतूहल हुआ। बादशाहने खानखानाको सुमेर नाम घोड़ा दिया जिसने रंग और डीलडौलके कारण यह नाम पाया था।

निर्मल नाला—२२ शुक्र और २३ शनिवारको लगातार कूच होता रहा। इस दिन बादशाहने एक अद्भुत नाला निर्मल जल का देखा जो ऊंची टेकरीसे गिरता था। उसके आसपास कुदरती बैठकें बनी हुई थीं। उस प्रान्तमें ऐसी छबिका कोई झरना बाद-

शाहके देखनेमें न आया था। इससे कुछ देर उसे देखकर प्रमुदित हुआ।

२४ रविवार (पोष बदी ३०) को मुक़ाम हुआ। डेरेके आगे एक तालाब था बादशाहने नावमें बैठकर जलमुर्गियोंका शिकार किया।

खानखानाकी पोस्तीन और घोड़े—२५ सोम २६ मंगल और २७ बुधवारको लगातार कूच हुआ। खानखानाकी खासा पोस्तीन जो बादशाह पहने हुए था और खासे तवेलेके ७ घोड़े मिले जिन पर बादशाह सवारी कर चुका था।

पन्द्रहवां वर्ष।

सन् १०२८ हिजरी।

पौष सुदी २ संवत् १६७५ ता० ८ दिसम्बर सन् १६१८ से
मार्ग शीर्ष सुदी द्वितीय १ संवत १६७६
ता० २८ नवम्बर सन् १६१८ तक।

दे महीना।

गढ़ रणथम्भोर—२ रविवार (पौष सुदी ५) को बादशाहने रणथम्भोरमें प्रवेश किया। बादशाह लिखता है कि यह किला हिन्दुओंके बड़े दुर्गोंमेंसे है। सुलतान अलाउद्दीन खिलजीके समयमें राय हमीरदेव(१) के पास था। सुलतानने वर्षों तक घेरा रखकर बड़े कष्ट और कठिन परिश्रमसे उसे विजय किया था। स्वर्गवासी श्रीमान के राज्यके प्रारम्भमें राय सुरजन हाडाके अधिकारमें था। ६।७ सहस्र सवार सदैव उसकी सेवामें रहते थे। स्वर्गवासी श्रीमानने पवित्र परमात्माकी सहायतासे एक महीने १० दिनमें लेलिया। राय सुरजन भाग्यकी अनुकूलतासे चौखट चूमनेका सौभाग्य पाकर शुभचिन्तकोंकी श्रेणीमें सम्मिलित होगया और विश्वासपात्र सुभटोंमें गिना गया। उसके पीछे उसका पुत्र भोज भी बड़े अमीरोंमें रहा। अब उसका पोता सरबुलन्दराय, शिरोमणि सेवकोंमेंसे है।

रणथम्भोरका विवरण—बादशाह लिखता है, "३ चन्द्रवार (पौष सुदी ४) को मैं किले रणथम्भोरके देखनेको गया। दो पहाड़ बराबर बराबर हैं एकको रण और दूसरेको थम्भोर कहते हैं। किला थम्भोरके ऊपर बना है। इन दोनोंको मिलाकर उसका रणथम्भोर नाम रखा है। किला यद्यपि अति दृढ़ है और पानी भी उसमें पुष्कल है तो भी रण स्वयं सुदृढ़ है और उसी पर इस किलेका

---

(१) मूलमें लेखक दोषसे पीताम्बर देव लिखा है।

टूटना भी निर्भर है। मेरे पिताने हुक्म दिया था कि रणके ऊपर तोपे चढाकर किलेके मकानोंपर गोले मारे। पहला गोला रायसुर जनकी चारपाई पर लगा। उसके गिरनेसे उसके साहसकी नीव हिल गई और उसका मन जरा भयभीत होगया। उसने अपनी मुक्ति किलेके माप टेनेमें देखकर कृपाशील श्रीमानकी चौखट पर अपना मस्तक घिसा।" मैंने मनमें यह ठान ली थी कि वातको मिले पर श्मकर दूसरे दिन उदेंसे जाऊंगा। परन्तु किलेके भवन और निवासस्थान हिन्दुस्तानी ढग पर बने हैं। घर खुले नहीं हैं। हवाका सचार कम है इसलिये वहां रहनेको जी न हुआ। वहां एक हमाम देखनेमें आया जो कस्तमखांके नौकरने किलेकी दीवार के पास बनाया है। वहीं एक बागीचा और एक बैठक जगलके ऊपर बनी है। यहां हवा है और जगह भी खुली है। किले भर में इससे अच्छी जगह नहीं है। कस्तमखां स्वर्गवासी श्रीमानके मुसाहिबोंमेंसे था। बचपनसे पास रहता था। उसका बड़ा विश्वास था इसीसे यह किला उसे सौंपा था।"

"किले और उसके मकानोंके देखनेके पीछे मैंने हुक्म दिया कि उन अपराधियोंको जो इस किलेमें कैद हैं मेरे पास लावें जिससे प्रत्येककी व्यवस्था समझकर न्यायपूर्वक हुक्म दियाजावे। सिवा खूनी कैदियोंके या ऐसे लोगोंके जिनके छोडनेसे राज्यमें अशान्ति फैलने का भय न था, सब कैदी छोड दिये गये। सबको यथायोग्य खर्च और खिल्लत [illegible]।"

४ र[illegible]र(१) को [illegible] पहर तीन घडी रात व्यतीत होने पर राजधानी[illegible] लौटा।

५ बुधवार(२) को पञ्च कोसके लगभग कूच होकर ६ गुरुवार

(१) ऐसा जाना जाता है कि यहां तारीख और वार सन्ध्यासेही मुसलमानी प्रथासे बदला गया है।

(२) लेखक दोषसे मूलमें बुधकी जगह रवि लिखा गया है।

(पोष सुदी १०) को मुकाम हुआ। यहां खानखानाने अपनी भेट अर्पण की। जवाहिर, जडाऊ पदार्थों, कपडों और हाथियोंमेंसे जो बादशाहके पसन्द आये वह चुन लिये और शेष उसीको बखश दिये। सब मिलाकर डेढ लाखका माल पसन्द आया था।

७ शुक्रवार (पोष सुदी ११।१२) को ५ कोसका कूच हुआ।

दरनाका शिकार—बादशाह लिखता है—मैंने सारसको तो शाहीनसे पकडवाया पर दरनाके शिकारका तमाशा अबतक न देखा था। पुत्र शाहजहाको शाहीनके शिकारका बहुत शौक है और उसके शाहीन भी अच्छे हैं। मैं तडकेही उस पुत्रकी प्रार्थना से सवार हुआ। एक दरना तो मैंने अपने हाथसे पकडवाया और दूसरा उस शाहीनने पकडा जो उस पुत्रके हाथमें था। यह शिकार खूब हुआ। मैं अत्यन्त प्रमुदित हुआ। सारस बडा जानवर है पर उडनेमें शिथिल और भद्दा है। दरनाके शिकारको उससे कुछ लगाव नहीं है। मैं शाहीनके कलेजेकी तारीफ करता हूं कि ऐसे बडे डीलडौलके पक्षियोंको पकडकर साहस और पजेके बलसे दबा लेता है। इस शिकारकी खुशीमें उस पुत्रके कारगी (मीर शिकार) हसनखाने हाथी घोडा और सिरोपाव पाया। उसके बेटेका भी घोडे और खिलअतसे मान बढाया।

खानखानाकी बिदा—८ शनि (पोष सुदी १३) को बादशाह सवा चार कोस चलकर ६ रविको फिर ठहर गया। इस दिन खानखाना सिपहसालारने खासा खिलअत जडाऊ कमरपेटी और खासा हाथी तलायर सहित पाया। वह नये सिरेसे दक्षिण और खानदेशकी सूबेदारीपर नियुक्त हुआ और उसका मनसब भी बढकर सात हजारी जात और सातहजार सवारोंका होगया। उसमें ग्यार लशकरखासे नहीं बनती थी इस लिये बादशाहने उसको प्राथनास कारखानोंके दीवान आबिदखाको दक्षिणका दीवान करके उधर भेजा। उसको हजारी जात चारसौ सवारोंका मनसब देकर हाथी घोडा और सिरोपाव दिया।

बादशाहको ऐसी एक और कविता भी याद थी वह भी उसने वहा लिख दी। उसका अर्थ यह है—

"हाय ! विद्वान और बुद्धिमान लोग चले गये, पास रहनेवालो के चित्तसे उतर गये, जो सैकडो भाषाओमे भाषण करते थे, उन्होने न जाने क्या सुना कि चुप होगये।"

१४ शुक्रवार (माघ बदी ४) को ५ और १५ शनिवार (माघ बदी ५) को ३ कोसका कूच होकर बयानेके पास डेरे हुए। बाद शाह वेगमो सहित किला देखनेको गया। यहा हुमायू बादशाहके बखशी मुहम्मदने जो यहाका किलेदार था एक विशाल भवन वन वाया था। वह जगलकी तरफ खुला हुआ था। शैख मुहम्मद गौसके बडेभाई शैख बहलोलकी कबर इस किलेमें है उसकी हुमायू बादशाहको बहुत भक्ति थी। जब वह बगाल विजय करने गया और बहुत दिनो तक वही रहा तब मिरजा हिन्दाल उसके हुक्मसे आगरेमें रह गया था। कुछ राजविद्रोही सिपाही बगालेसे प्रति-कूल होकर मिरजाके पास आगये और मिरजा उनके बहकानेसे स्वय बादशाह बन बैठा। हुमायूने यह सुनकर शैख बहलोलको मिरजाके समझानेके लिये भेजा। परन्तु मिरजाने उन्ही लोगोकी प्रेरणासे चारबागमें जो बाबर बादशाहका बनाया हुआ कालिन्दीके कूलमें था शेखको मार डाला। मुहम्मद बखशीको भी शेख पर भक्ति थी इसवास्ते उसने शेखकी लाश बयानेके किलेमे लाकर गाड दी।

बादशाहकी माकी बावडी—१६ रविवार (माघ बदी ६) को बादशाह ४॥ कोस चलकर बारबरेमें उतरा। उसकी माने जौसतके परगनेमें रास्ते पर एक बावडी बाग सहित बनाई थी। बादशाह उसके देखनेको गया और पसन्द करके कर्मचारियोसे पूछा तो विदित हुआ कि २०००) उसमें लगे है।

१७ सोमवार (माघ बदो ७) को बादशाह शिकारके वास्ते वही रहा।

१८ मङ्गलवार (माघ बदी ८) को डेढ़ पाव तीन कोसका कूच करके गाव डावरमल्‌में ठहरा। १९ बुधवार (माघ बदी ९) को २॥ कोस परही फतहपुरके ताल पर डेरा हुआ। रणथम्भोरसे फतह पुर तक २३४ कोस ६३ कूच और ५६ मुकाम अर्थात् ११९ दिनमें पूरे हुए। सोर पहलसे इसके एक दिन कम चार महीने और चान्द्र मासमे पूरे चार महीने हुए। जबसे बादशाह राना और दक्षिण देश जीतनेको चढा तबसे राजधानीसे पहुचने तक ५ वर्ष और चार महीने लगे।

आगरेमें प्रवेशका मुहूर्त—बादशाह लिखता है,—ज्योतिषियोने २७(१) दे बुधवार सन् १३ तारीख ३० मुहर्रम सन् १०२८ (माघ सुदी२ स०१६७५) को राजधानीमें प्रवेश करनेका मुहूर्त निकालाथा।

ताऊन(२)—परन्तु इन दिनो शुभचिन्तकोने अनेक बार प्रार्थना की थी कि ताऊनका रोग आगरेमें फैला हुआ है। एक दिनमें न्यूनाधिक १००मनुष्य, कांख तथा जांघके जोड़ वा गलफड़ेमें गिल्टी उठकर मरते है। यह तीसरा वर्ष है। जाड़ेमें यह रोग प्रबल होजाता है और गर्मीमें जाता रहता है। अजब बात यह है कि इन तीन वर्षोंमें आगरेके सब गावो और कसबोंमें तो फैल चुका है परन्तु फतहपुरमें बिलकुल नही पहुचा है। अमनाबादसे फतहपुर २॥ कोस है जहाके मनुष्य मरीके डरसे घरबार छोडकर दूसरे गांवोंमें चले गये है। इस लिये विचार पूर्वक यह बात ठह राई गई कि इस मुहूर्त पर फतहपुरमें प्रवेश करू और जब रोग थोमा पड़ जावे तब दूसरा मुहूर्त निकलवाकर आगरेमें जाऊ।

गुरुवार (माघ बदी १०) का उत्सव फतहपुरके ताल पर हुआ। और मुहूर्त आने तक बादशाह ८ दिन वही ठहरा। तालका घेरा

(१) मूलमें २८ गलत लिखी है।

(२) इस ताऊनके लक्षण प्लेगसे ठीक मिलते है जो आठ दस सालसे भारतमें फैला हुआ है।

नपवाया तो सात कोस निकला। यहां बादशाहकी माके सिवा जो कुछ बीमार थी और सब बेगमें और नौकर चाकर अगवानी आये।

ताऊन बूईसि—स्वत आसफखांकी बेटीने जो खानआजमके बेटे अबदुल्लहखांसे घरमें है, बादशाहसे यह विचित्र चरित्र ताऊनके विषयमें कहा और उसके सत्य होने पर बहुत जोर दिया। इससे बादशाहने वह घटना तुजुकमें लिख ली।

उसने कहा था कि एक दिन घरके आंगनमें एक चूहा दिखाई दिया। वह मतवालोंकी भांति गिरता पड़ता इधर उधर दौड़ रहा था। उसे कुछ सुझाई न देता था। मैंने एक लौंडीसे इशारा किया। उसने उसकी पूंछ पकड़कर बिल्लीके आगे डालदिया। पहले तो बिल्लीने बड़े मोदसे उछलकर उसको मुंहमें पकड़ा किन्तु पीछे घिन करके तुरन्त छोड़ दिया। बिल्लीके चेहरे पर धीरे धीरे मांदगी के चिन्ह दिखाई देने लगे। दूसरे दिन वह मरणप्राय होगई। तब मेरे मनमें आया कि थोड़ासा तिरियाक फारूक (विष उतारनेवाली एक औषध) इसको देना चाहिये। जब उसका मुंह खोला गया तो देखा कि उसकी जीभ और तालू काला पड़ गया था। तीन दिन बुरा हाल रहा। चौथे दिन उसे कुछ सुध आई। फिर एक लौंडीको ताऊनकी गांठ निकली। उसकी जलन और पीड़ासे वह सुध भूल गई। रंग बदलकर पीला और काला होगया। प्रचण्ड ज्वर चढ़ा। दूसरे दिन वह मर गई। इसी प्रकार सात आठ मनुष्य उस घरमें मरे और कई रोगग्रस्त हुए। तब मैं उस स्थानसे निकल कर बागमें चली गई। वहां फिर किसीके गांठ नहीं निकली पर जो पहलेके बीमार थे वह नहीं बचे। आठ नौ दिनमें १७ मनुष्य मर गये। उसने यह भी कहा कि जिनके गांठें निकली हुई थीं वह जो किसीसे पानी पीने या नहानेको मांगते थे तो उसको भी यह रोग लग जाता था। अन्तको ऐसा हुआ कि मारे डरके कोई उनके पास नहीं जाता था।

खानजहां—२२ शनि (माघबदी १२) को खानजहांने जो राज-

थानी आगरेकी रक्षा पर छोड़ा गया था चौखट चूमकर ५०० मोहरें भेट और चारसी रुपये न्योछावर किये। २४सोमवार (माघवदी १४) को बादशाहने उसे खासा खिलअत दिया।

फतहपुरमें प्रवेश—२७ गुरुवार (माघ सुदी २) को ४ घड़ी दिन चढ़े जो ज्योतिषकी दी घड़ीके लगभग होती है बादशाह ने फतहपुर में प्रवेश किया इसी दिन शाहजहां के तुलादान का सुहर्त था। बादशाहने उसको सोने और दूसरे पदार्थोंमें तोला। सौर वर्षसे उसको २८ वां वर्ष लगा। इसी दिन बादशाह की माता मरयमजमानी भी आगरे से आई और बादशाह उसकी सेवा में उपस्थित हुआ।

अकबरबादशाहके राजभवन—उसीदिन बादशाहने अपने पिता के भवन एक एक करके देखे और शाहजहां को दिखाये। बाद शाह लिखता है—राजभवन के बीचमें तराशेहुए पत्थरों का एक होजकपूर तालाब नामक अति सुन्दर है। वह ३६ गज लम्बा और उतनाही चौड़ा चौकोर बना है। उसमें खजाने के कर्मचारियों ने रुपये पैसे भरदिये थे जिन का मूल्य ३४ करोड़ ४८ लाख ४६ हजार दामया १६७८४०० रुपये था। यह गरीबों को बटते रहे।

वहमन महीना।

१ रविवार (माघ सुदी ५) को १००० दरब हाफिज यादअली गवैये को और एक एक हजार रुपये मुहिबअली और अबुलकासिम गीलानी को मिले जिन्हे ईरान के बादशाह ने अन्धा करके नगल में कुडवादिया था और वह इस दरबार की शरण लेकर सुखसे रहतेथे।

गुरुवारकी सभा—५ (माघ सुदी ८) को गुरुवारकी सभा फतहपुरके राजभवन में जुडी। निज सेवकों को प्याले मिले।

---

(१) यहां फिर मूलमें भूलसे २७ की जगह २८ लिखी है गुरुवार २७ को था २८ को नहीं था।

सुलतान परवेज को जहांगोरनामा—सुलतान परवेज ने नप कलह के साथ एक बहुत बडा हाथी बादशाह के लिये भेजा था। बादशाहने उसके हाथ परवेजके वास्ते जहांगीरनामा और पनचाक जाति का एक घोडा भेजा।

कुवरकरण—८ रविवार (माघ सुदी १२ १३) को बादशाह ने राना अमरसिंह के बेटे कुवर करण को हाथी घोडा खिलअत जडाऊ खपवा फूल कटारे सहित देकर अपनी जागीर मे जाने की आज्ञा दी और उसके हाथ एक घोडा राना के वास्ते भी भेजा।

शिकार—इसी दिन बादशाह शिकार के अभिप्रायसे असनाबाद गया। वहा बादशाह ने हरनो के न मारने की आज्ञा दे रखी थी। इससे छ मासमे वहा बहुत हरन होगये थे और हिलमिल गये थे।

१२ गुरुवार (फाल्गुन सुदी २) को बादशाह राजभवन मे आया। नियमानुसार प्यालो की मजलिस हुई।

शेख सलीम चिश्ती—१४शनिवार(१)की रातको बादशाहने शेख सलीमके रौजेमे जाकर फातिहा पढा। वह लिखता है—भगवत भक्तोंको अपनी सिद्धि जतानेकी इच्छा तो नहीं होती है परन्तु कभी कभी उनको बिना इच्छा भी किसीको भन ईके वास्ते वह सिद्धि प्रकट होही जाती है। जैसे मेरे जन्मसे पहले इन्होंने मेर बाप मेरे भाइयोंके पैदा होनेकी आशा स्वर्गवासी श्रीमानको बधा दी थी। एक दिन श्रीमानने उनसे पूछा कि आपकी उमर कितनी है और अब आपकी मुक्ति होगी, तो जवाब दिया कि यह भेदकी बात तो खुदाही जानता है। फिर इधरसे बहुत आग्रह होने पर मेरी तरफ इशारा करके कहा कि जब शाहजादा स्वय पढकर या किसी दूसरेके पढानेसे कोई चीज याद करके पढने लगेगा तो वह हमारे अन्त समयकी सूचनाका चिन्ह होगा। इस पर श्रीमानेने उन सब सेवकोंको जो मेरी सेवामे नियुक्त थे ताकीद करदी थी कि

(१) यहा रात से वार माना है क्योंकि १३ को शुक्रवार था।

कोई कुछ गद्य तथा पद्य शाहजादेको न सिखावे। जब इस बातको दो वर्ष सात महीने व्यतीत होगये तो एक स्त्री जी उस मुहल्लेमें रहती थी और मुझे नजर नहीं लगनेके हेतुसे हमेशा स्पन्द (धूनी) जलाया करती थी और इस प्रसगसे मेरे पास आया जाया करती। और कुछ दान लेजाया करती थी। उसने मुझको अकेला पाकर और उस बातको भूलकर एक दोहा मुझे सिखा दिया। मैंने जाकर ऊंसको सुनाया। वह उसी दम उठकर स्वर्गवासी श्रीमानके पास गये और इस व्यवस्थाको उनको सूचना दी। उसी रातको उन्हे ज्वर होगया और दूसरे दिन श्रीमानके पास आदमी भेजकर तानसेनको जो अद्वितीय गवैयोंमेंसे था बुलाया। जब तानसेन उनकी सेवामें उपस्थित होकर गाने लगा तो श्रीमानके बुलानेको भी आदमी भेजा। श्रीमान पधारे तो कहा कि हमारा समय आगया है तुमसे विदा होते है। अपने मस्तकसे पगडी उठाकर मेरे मस्तक पर रखी और कहा—हमने सुलतान सलीमको अपना प्रतिनिधि किया और उसे रक्षा करने और विजय देनेवाले परमेश्वरको सौपा। शेख की निर्बलता पल पल बढती जाती थी और निर्वाणके चिन्ह प्रबल होते जाते थे। अन्तको ईश्वरमें मिल गये।

स्वर्गीय पिताके शासनकालमें जो जो बडे काम हुए उनमेंसे एक यह मसजिद और रोजा (समाधिभवन) भी है। यह कहनेमें अत्युक्ति नहीं कि इमारत बहुत बडी है। ऐसी मसजिद किसी शहरमें नहीं है। सब पत्थरकी है। पाच लाख रुपये खजानेसे लगे थे तब बनी थी। कुतुबुद्दीनखा कोकलताशने जो कटहरा, रोजेकी चारदीवारी, गुम्बदका फर्श और मसजिदका बरामदा मकरानेके पत्थरसे बनवाया वह उससे अलग है। इस मसजिदके दो दरवाजे है बडा तो दक्षिण को है जो बहुत ऊचा है जिसकी चौडाई १२ गज लम्बाई १६ गज और ऊंचाई ५२ गजकी है। ३२ सीढियों पर चढकर वहा तक पहुचते है। छोटा दरवाजा पूर्वको है। मसजिदकी लम्बाई पूर्वसे पश्चिमको दीवारोंके आसार सहित २१२

गज और चोडाई उत्तरसे दक्षिणको १७२ गज है। ऊपर ३ गुम्बद है बीचवाला बडा और आसपासवाले छोटे हैं। बडा गुम्बट लम्बा १५ और चोडा भी १५ही गजका है छोटोंकी लम्बाई चौडाई १०।१० गजकी है। चारों तरफ ८० दालान और ८४ हुजरे हैं। दालानोंकी चोडाई साढे सात सात गजकी है और हुजरोंकी लंबाई पाच पाच और चोडाई चार चार गजकी। मसजिदका चोक १६८ गज लम्बा और १४३ गज चोडा है। छतों पर छोटे छोटे गुम्बट है जिन पर उर्सकी रातों और दूसरे पुनीत दिनोंमें रंगीन कपडोंके कन्दील जलते है। चोकके नीचे टांका है जिसको मेंहके पानीसे भर लेते है जो साल भर तक गंवके वगजों और इस मसजिदमें रहनेवाले फकीरोंके काम आता है। क्योंकि फतहपुरमें पानीकी कमी है और वहांका पानी अच्छा भी नहीं होता।

बडे दरवाजेके सामने उत्तरको पूर्वमें झुकता हुआ शेखका रोजा है। गुम्बटका बीच ७ गजका है उसके गिर्द संकरनिके पत्थरके दालान हैं जिनके आगे भी उसी पत्थरके कटहरे बहुत कारीगरीसे बने है। इस रोजेके सामने पश्चिमको कुछ हटकर एक गुम्बट और है जिसमें शेखके बेटे और जमाई दफन है। जैसे कुतुबुद्दीनखां इसलामखां और मुअज्जमखां आदि जो सब इस(१) घरानेके प्रसंग से अमीरोंके दरजों और बडे बडे ओहदों पर पहुंचे थे जिनका वृत्तान्त अपनी अपनी जगह पर आचुका है। अब इसलामखांका बेटा जिसका खिताब इकरामखां है यहांकी गद्दीका मालिक है और बहुत योग्य है मुझे उसका बहुत ध्यान है।

कांगडा—१८ गुरुवार (फाल्गुण वदी ६) को बादशाहने अबदुल अजीजखांको दो हजारी जात एक हजार सवारोंका मनसब हाथी घोडे और खिलअत देकर कांगडा फतह करने और सूरजमलको दण्ड देनेके वास्ते बिदा किया। तरबियतखांको भी १२ सदी जात ४५० सवारोंका मनसब और घोडा देकर इसी काम पर भेजा।

(१) बादशाही घराने।

एतमादुद्दौलाके घर जाना—२६ गुरुवार (फाल्गुण वदी ३०) को बादशाह एतमादुद्दौला की प्रार्थनासे उसके मकान पर पधारा जो तालके तट पर बना था और बड़ा सुन्दर था। एतमादुद्दौलाने पाव न्दाज और पेशकशकी रीति विधि पूर्वक की। बड़ी मजलिस लगी थी। बादशाह वहीं रातका खाना खाकर महलमें आगया।

अमफन्दार महीना।

१२ शनिवारको बादशाह बेगमों सहित शिकार खेलनेको अमनाबादमें गया। २७ रविवार (चैत्र सुदी १ सं० १६७) तक वहीं रहा। मंगलके दिन शिकारमें मोतियोंकी एक माला नूरजहां बेगमके गलेसे टूट पड़ी। उसमेंसे एक मोती और एक लाल दस दस हजार रुपयेके खोगये। बुधके दिन किरावलोंने बहुत खोज की परन्तु कुछ पता न लगा। बादशाहने कहा कि जब इस दिनका नाम कमशम्ब (१) है तो इसमें उनका मिलना मुशकिल है और गुरुवार सदा मेरे वास्ते शुभ रहा है। उस दिन थोड़े ढूंढनेमेंही उस विशाल बनमें दोनो रत्न उन किरावलोंको मिल गये और वह मेरी सेवामें ले आये। और भी सुअवसर यह हुआ कि इसी दिन चान्द्र मासका तुलादान और बसन्तबाड़ीका उत्सव हुआ और दलमऊके किलेकी फतह तथा सूरजमलके पराजयकी बधाई भी आई।

दलमऊकी फतह और सूरजमलकी हार—राजा बिक्रमाजीत जब उस प्रांतमें पहुंचा तो सूरजमलने चाहा कि कुछ बात बनाकर समय टाले परन्तु राजा बड़ा भेदी था उसके कहनेमें न आकर आगे बढ़ा। सूरजमल न मैदानकी लड़ाई लड़ा और न किला मजबूत कर बैठा। थोड़ी सी झड़पमें ही बहुतसे मनुष्योंको कटाकर भाग गया। मऊका किला और नगर दोनों अनायासही फतह होगये। जो देश बाप दादोंसे उसके अधिकारमें चला आता था वह बादशाही लशकरके आक्रमण से छिन्न भिन्न होगया। वह स्वय बुरे हालसे पहाड़ोंकी टेकरियोंमें

(१) बादशाहने बुधका नाम कमशम्बा रखा है।

जा छिपा। राजा विक्रमाजीतने उसके देशको तो पीछे छोडा और उसका पीछा करनेको अपनी सेना आगे बढाई।

बादशाहने यह समाचार सुनकर राजा विक्रमाजीतको इस सेवा के बदलेमें नक्कारा दिया और यह हुक्म लिखा कि सूरजमलके किले और उसकी तथा उसके बापकी बनाई हुई इमारतोंको जडसे उखाडकर उनका चिन्ह तक मिटा दो।

जगतसिंह—बादशाह लिखता है, "अद्भुत लीला यह हुई कि सूरजमलका एक भाई जगतसिंह था। जब मैंने सूरजमलको राजा की पदवी देकर अमीरोंके पद पर पहुंचाया और राज्य तथा धन सम्पत्ति और सेनाका स्वामी अकेले उसीको बनाया तो उसकी खातिरसे जगतसिंहको जो उससे मेल नहीं रखता था थोडासा मनसब देकर बगालेके सूबेमें भेज दिया। वहां वह बिचारा अपने घरबारसे दूर पडा हुआ कष्ट भोग रहा था और किसी दैवी घटना की प्रतीक्षा करता था। उसके भाग्यसे ऐसा सुअवसर आगया। कुपात्र सूरजमलने अपने पावोंमें अपने हाथसेही कुल्हाडा मारा। मैंने शीघ्रही जगतसिंहको बुलाकर राजाका खिताब हजारी जात ५०० सवारोंका मनसब, जडाऊ खपवा, हाथी, घोडा, खिलअत और २०००० दरब खजानेसे देकर राजा विक्रमाजीतके पास भेजा और राजाको यह हुक्म लिखा कि यदि वह भाग्यकी अनुकूलतासे अच्छा काम दे और राजभक्ति प्रकट करे तो उसका अधिकार उस देशमें स्थिर कर दे।

नूरमजिल बाग—बादशाह नूरमजिल बाग और वहांके नये बने हुए महलोंकी शोभा सुना करता था इस लिये सोमवारको सवार होकर 'दुस्तासरा' नामक मनोहर बागमें ठहरा। मगलका दिन उसी मनोरम उपबनमें बिताकर रातको नूरमज्लिमें पहुंचा। यह बाग ३३० जरीबमें था उसके चौतरफ ईट और चूनेकी पक्की दीवार चौडी और ऊची बनी थी बीचमें विशाल भवन, सुन्दर बैठकें और मजुल जलाशय थे। दरवाजेके बाहर एक बडा कूआ तय्यार हुआ

था जिसका पानी बेलोंकी बत्तीस जोडिया बराबर खैचती थी। उसका नाला एक नदीके समान बागके ढोलोंमें गिरता था। इसके सिवा कई कूए और भी थे जिनके पानीसे जलाशय भरते थे फव्वारे चलते थे। बागके बीचोबीच एक तालाब भी था जो मेहके पानी से भरा रहता था जब कभी गरमीमें उसका पानी कम होजाता तो कूएके पानीसे मदद पहुचाई जाती थी। जिससे सदा भरा रहता था। डेढ लाख रुपये तो इस बागमें लग चुके थे १५००००) और लगनेवाले थे।

२४ गुरुवार (चैत्र सुदी १३) को ख्वाजाजहानने अपनी भेंट सजा कर पेश की। बादशाहने डेढ लाख रुपयेके जवाहिर जडाऊ आभूषण कपडे और हाथी घोडे उसमेंसे छांट लिये। शनिवार तक बादशाह सुखपूर्वक उस बागमें रहा और २७ रविवार (चैत्र सुदी १) की रातको फतहपुरमें लौट आया। बडे असीरोंके नियमानुसार नव रोजके वास्ते राजभवनके सजानेका हुक्म हुआ।

२८ सोमवार (चैत्र सुदी ३) को बादशाहकी आखोंमें रक्तविकारसे कुछ पीडा हुई तो उन्होंने अलीअकबर जर्राहसे कहकर तुरन्त फसद खुलवा ली। जिसका लाभ दूसरे दिनही प्रगट होगया। उसे १०००) मिल गये।

चोदहवा नौरोज।

गुरुवार ४ रबीउलअव्वल १०२८ (चैत्र सुदी ६ सवत् १६७६) को तडकेही सूर्य भगवानने मेषराशिमें प्रवेश किया। बादशाहके राज्य शासनका १४वां वर्ष प्रारम्भ हुआ। शाहजहानने नौरोजके उत्सवकी बडी मजलिस रचाकर देश देशान्तरोंके चुने हुए पदार्थोंकी भेंट बादशाहको दिखलाई जिसमें मुख्य पदार्थ इतने थे।

१—एक याकूत सुडौल और सुरंग २२ रत्तीका जिसका मोल जौहरियोंने ४० हजार रुपये कूता।

२—एक लाल कुतबी अति श्रेष्ठ ४० हजारका।

३—मोती ६ जिनमें एक नग एक टांक और ८ रत्तीका था।

यह शाहजादेके वकीलोंने गुजरातमें २५ हजार रुपयेको खरीदे थे।

४—५ मोती ३३ हजार रुपयेके।

५—एक हीरा अठारह हजार रुपयेका।

६—एक जड़ाऊ परदला तलवारकी मूठ सहित जो शाहजादेकी जरगरखानेमें शाहजादेकी निकाली तरकीबसे नई चालका तय्यार हुआ था। जिसमें रत्न काट काटकर बैठाये गये थे। मोल ५०हजार रुपये।

७—चांदीका पूरा नक्कारखाना ढोल, नक्कारे, करना, शहनाई सहित जिसमें एक जोड़ी सोनेके नक्कारोंकी थी और जब बादशाह सिंहासन पर विराजा तो बजाया गया था। मूल्य ६५ हजार रुपये।

८—सोनेका होदा ३० हजार रुपयेका।

९—दो बड़े हाथी सोनेकी ५ तलायर सांकलों सहित कुतुबुलुल्क हाकिम गोलकुंडेके भेट किये हुए, इनमें एक हाथीका नाम दाद-इलाही था, बादशाहने उसका नाम नूरनौरोज रखा। उक्त हाथी बहुत विशाल और सुन्दर था। बादशाह पसन्द करके उस पर सवार हुआ दौलतखानेके चौकमें उसे फिराया। मूल्य ८० हजार कूतागया और छ: सोनेकी सांकलोंका २० हजार। नूरनौरोजके सोनेके साज और सांकल आदिका मूल्य ३०हजार। दूसरे हाथीका १०हजार।

१०—गुजरातके दिव्य वस्त्रोंके थान जो शाहजादेके कपड़ा बुनने-वालोंने बुनकर भेजे थे।

पूरी भेट साढ़े चार लाखकी थी।

२ शुक्रको शुजाअतखां अरब और नूरुद्दीनकुलीकी और ३ शनि को खानखानाके बेटे दाराबखांकी भेटें पेश हुईं।

४ रविवारको खानजहांकी भेट एक लाख ३०हजारकी खोलत हुई। उसमें एक मोती २० हजार रुपयेका था।

५ सोमवारको राजा किशनदास और हाकिमखांने, ६ मंगलको सरदारखांने, ७ बुधको मुस्तफाखां और अमानतखांने भेट पेश की। उसमेंसे बादशाहने कुछ कुछ लिया।

८ गुरुवारको एतमादुद्दौलाने एक बड़ी शाही मजलिस रचाकर बादशाहको बुलाया। उसने सभा और भेटके सजानेमें बड़ीचेष्टा की थी। तालके किनारों और गली कूचोंको जहांतक दृष्टि जाती थी रंग बरंगे चिरागों और फानूसोंसे चौचन्द कर दिया था। उसकी भेटमें एक सोने चांदीका सिंहासन था। उसके पाये सिंहके स्वरूपके थे। वह मानो सिंहासनको उठाये हुए थे। यह सिंहासन तीन वर्षमें ४ लाख ५० हजार रुपयेकी लागतसे बना था। इसको हुनर-मन्द नाम एक फरंगीने बनाया था जो गहना घड़ने, नग जड़ने और दूसरी कारीगरीके कामोंमें अद्वितीय था। उसका यह नाम भी बादशाहने उसके इन्हीं गुणोंसे रखा था।

इस भेटके सिवा उसने एक लाख रुपयेकी भेट बेगमों और महलवालियोंको भी दी थी। बादशाह लिखता है—स्वर्गवासी श्रीमानके समयसे अबतक १४ वां वर्ष मुझ भगवत्भक्तके राज्याभिषेकका है। किसी बड़ेसे बड़े अमीरने भी ऐसी भारी भेट नहीं दी थी। सच तो यह है कि एतमादुद्दौलाकी दूसरोंसे बराबरीही क्या है।

इसी दिन इसलामखांके बेटे इकरामखांका मनसब दोहजारी और १००० सवारका और अनीराय सिंहदलनका दोहजारी १६०० सवारोंका होगया।

९ शुक्रवार (चैत्र सुदी १४) को एतबारखांकी भेट पेश हुई। खानदौरां घोड़ा और हाथी पाकर पटनेकी सूबेदारी पर बिदा हुआ। उसका मनसब वही ६ हजारी ५००० सवारोंका रहा।

१० शनिवारको फाजिलखांने, ११ रविको मीरमीरांने, १२ सोमको एतकादखांने, १३मंगलको तातारखां और अनीराय सिंहदलनने, १४ बुध (वैशाख बदी ४) को मिरजा राजा भावसिंहने अपने अपने उपहार बादशाहके सम्मुख उपस्थित किये। उनमें जो नई तथा अनोखी वस्तु थी वह तो बादशाहने लेली शेष उन्हींको फेर दी।

१५ गुरुवार (वैशाख बदी ५) को आसफखांने अपने डेरे पर जो एक मंजुल मनोरमस्थानमें था बादशाहोंकीसी सभा सजवा-कर बादशाहसे वहां सुशोभित होनेकी प्रार्थना की। बादशाह बेगमों सहित वहां पधारा। आसफखांने इस आगमनको ईश्वरका अनुग्रह समझकर सभाकी शोभा और भेटकी सजावटमें अत्यन्त श्रम किया था। अमूल्यरत्न, स्वर्णमयवस्त्र और दूसरे अमूल्य पदार्थ, जो बादशाहने पसन्द करके लिये वह १ लाख ६७ हजार,रुपयेके थे जिनमें एक लाल ही १२॥ टांकका १ लाख २५ हजार रुपयेका खरीदा हुआ था।

ख़ानेजहांका मनसब ५ हजारी २५०० सवारोंका होगया।

लशकरखां दक्षिणसे आया। बादशाहका विचार बरसात पीछे कशमीर जानेका था। इसलिये इसको ख़ानाजहां की जगह किले तथा शहर आगरे की रक्षा और उस प्रांतकी फौजदारी पर छोड जाने के लिये बुलाया था। अमानतखां, दाग की दरोगाई और खुदमहले सवारों(१)की सेवामें उपस्थित करने पर नियुक्त हुआ।

१६ शुक्रको ख़्वाजा अबुलहसन मीरबखशी, और १७ शनिको सादिकखां बखशी, १८ रविको इरादतखां मीरसामान, और १६ सोमवार (वैशाख बदी ८) को सूर्यके उच्च होने, अर्थात् मेष संक्रांति का दिन था, अजदुद्दौलाने, अपनी अपनी भेट पूजा उपस्थित की। उनमें जो वस्तु बादशाहको पसन्द आई वह लेली।

भेटोंका मूल्य—इस नौरोजमें बादशाहने जो भेटें लीं उनका मूल्य २० लाख रुपये था।

सुलतान परवेजका मनसब२०हजारी १० हजार सवारका, एत-मादुद्दौलाका सात हजारी सात हजार सवारका होगया। अजदु-द्दौला, शाह शुजाकी अतालीकी पर नियत हुआ। कासिमखां और बाकरखांके भी मनसब बढे।

महाबतखांकी प्रार्थना पर ५०० सवार सूबे बंगशमें भेजे गये

(१) आपही अपनी हाजिरी देनेवाले सवार।

और इज्जतखांको उस सूबेमें अच्छी सेवा करनेसे हाथी और जड़ाऊ खपवा मिला।

हुमायूं बादशाहको हस्तलिखित पुस्तक—अबदुसत्तारने हुमायूं बादशाहके हाथका लिखा हुआ एक संग्रह ग्रन्थ बादशाहके भेट किया। उसमें कुछ बातें धर्मकी कुछ ज्योतिषकी कुछ तंत्र की लिखी हुई थीं। उनमेंसे कई एक अनुभव की हुई थीं। बादशाह लिखता है—"मुझे .उनके अक्षर देखनेसे इतना हर्ष हुआ कि कभी काम हुआ होगा खुदाकी कसम है मैंने सब यादगीं से उसे बढ़कर समझा। मैंने प्रसन्न होकर उसे वह पद दिया, जिस की उसे आशा भी न थी। साथही एक हजार रुपये इनाम दिये।"

हुनरमन्दफरंगी—हुनरमन्द फरंगीको जिसने रत्नजटित सिंहासन बनाया था बादशाहने तीन हजार दरब घोड़ा और हाथी दिया कई अमीरोंके मनसब बढे कईके नये हुए जैसे—

१—राजा सारङ्गदेव	७ सदी ३० सवार
२—राय जनमालीदास	६ सदी १२० सवार
३—फौलखानेका मुशरिफ, रामायणदास	६ सदी १०० सवार
४—किशनसिंहके बेटे नरमल	५ सदी २०० सवार
दूसरा बेटा जगमल	५ सदी २०० सवार

१५००जीते हरन—२१ बुधवार (वैशाखवदी ११) को बादशाह शिकारके वास्ते असनाबादमें गया। ख्वाजाजहां और कयामखां किरावलवाशीने पहले से जाकर एक बडे जंगलको कनातोंसे घेर लिया था। उसमें बहुतसे हरन घिर गये थे। परन्तु बादशाहने यह प्रण करलिया था कि अपने हाथसे किसी जीवकी हत्या न करेंगे इसलिये विचार किया कि यदि सबको जीता पकडकर फतहपुरके चौगानमें छोड़ दिया जावे तो शिकारका मजा भी आजावे और उनका भी बाल बांका न हो। इस लिये ७०० हरन पकडकर फतहपुरमें भेज दिये और रायमान खिदमतियेको आज्ञाकी कि शिकारकी जगहसे फतहपुरके चोगान तक रस्तेसे दोनो ओर कना-

तोंको गली बनाकर हरनोंको उसमें हांकटें। इस युक्तिसे ८०० हरन फिर मातहपुर पहुंचाये गये। सब मिलकर १५०० होगये।

२८ बुधवारको बादशाह चमनाबादसे चलकर एक बागमें रहा। २८ गुरुवारको रातको नूरमंजिल बागमें ठहरा।

शाहजहांको माको मृत्यु—३० भृगुवारको शाहजहांको मा मर गई। दूसरे दिन बादशाह शाहजहांके डेरेपर गया और बहुत तरहसे उसे संतोष देकर अपने साथ राजभवनमें लेआया।

उर्दी बहिश्त।

१ रविवार (वैशाख सुदी ८) को बादशाहने ज्योतिषियोंके बताये हुए महूर्त्त में दिलेर नामके खासे हाथीपर सवार होकर राजधानीमें प्रवेश किया। गली कूचों बाजारों छतों और झरोखोंमें बहुत भीड़ स्त्री पुरुषोंकी लगी हुई थी। बादशाह अपनी प्रथाके अनुसार दौलतखाने तक रुपये बखेरता गया। ५ वर्ष ७ महीने ८ दिन पीछे सफरसे लौटा था।

सुलतान परवेजको बादशाहने बहुत वर्षोंसे नहीं देखा था इस लिये उसके नाम हाजिर होनेका हुक्म लिखा।

बादशाहकी उदारता—इस वर्ष बादशाहने दरिद्रों और हकदारोंको निम्न लिखित दान दिया।

भूमि ४४७८६ बीघे। गांव २

काशमीरमें अन्न ३२० गोन। काबुलमें जमीन ७ हल।

अलहदादका बागी होना—जब महाबतखां बंगशके बन्दोबस्त करने और पठानोंको जड़ उखाड़नेके वास्ते बिदा हुआ था तो जलाला पठानके बेटे अलहदादको साथ लेगया था कि शायद वह कुछ अच्छी सेवा करेगा। बादशाहने दूरदर्शितासे उसके भाई और बेटेको अपने पास औलमें रहनेके वास्ते बुलवा लिया था और उनपर बहुत कुछ कृपाभी कीजाती थी। तोभी अलहदाद जिसदिन पहुंचा उसीदिनसे खिंचाहुआ सा था। महाबतखां काम सुधारनेकी कामनासे उसका मन मनाता रहता था। इन दिनों उसने कुछ

बहुत पीने लगा है। यह बात सच है तो अफसोस होगा कि वह इस अवस्थामें अपनेको नष्ट करदे। उसको स्वतन्त्र मत रहने दो और पूरी तरहसे रोको। जो यह तुमसे न होसके तो साफ अर्ज करो हम उसको हजूरमें बुलाकर उसकी व्यवस्था ठीक करनेकी कृपा करेंगे। जब वह बुरहानपुर पहुंचा तो शाहनवाजखांको बहुत शिथिल और क्षश पाकर यत्न करने लगा। परन्तु कुछही दिन पीछे वह खाटसे पड गया। हकीमोंने बहुतसी दवादारूकी कुछ लाभ न हुआ। ३३ वर्षकी जवान अवस्थामें बहुतसे अरमान मनमें लेकर परलोकको चल दिया। इस अशुभ समाचारको सुननेसे मैंने बहुत सोच किया। सच यह है कि वह पूरा खानाजाद था। चाहिये तो यह था कि इस राज्यकी अच्छी अच्छी सेवायें करता और बडा नाम और यश छोडता। यद्यपि यह मार्ग सभीके आगे है और मृत्युने किसीको छुटकारा नहीं है परन्तु इस प्रकार मरना बुरा लगता है आशा है कि उसके अपराध क्षमा होंगे। राजा सारंगदेवको जो पास रहनेवाले सेवकों और मिजाज जाननेवाले चाकरोंमेंसे है मैंने अपने उस अतालीकके पास भेजकर बहुतसी मेहरबानियों और बखशिशोंसे उसकी सहानुभूति की और शाहनवाजखांका मनसब जो ५ हजारी था वह उसके भाइयों और बेटोंके मनसब पर बढा दिया। उसके छोटे भाई दारावखांका मनसब असल और इजाफे से ५ हजारी जात ५ हजार सवारका करके खिलअत घोडा और जडाऊ तलवार दी और उसको बापके पास शाहनवाजखांकी जगह बराड और अहमदनगरके सूबोंमें शासन करनेके वास्ते भेज दिया। उसके दूसरे भाई रहमानदादको दोहजारी जात और ७०० सवारोंके मनसबसे सम्मानित किया। शाहनवाजखांके एक बेटे मनूचहरको २ हजारी जात १००० सवार और दूसरे बेटे तुगरलको हजारी जात और ५०० सवारका मनसब दिया।

भारत बुन्देला—१२ गुरुवार (ज्येष्ठ बदी ४) को बादशाहने कुछ अमीरों पर कृपा करके मनसब हाथी और घोडे दिये उनमें

मिलाया जायगा इनकी औलाद आशा है कि और भी अच्छी होगी। इनमें बकरीसे यह विलक्षणता है कि बकरा तो जन्मते ही जबतक थन मुहमें लेकर दूध न पीले चिल्लाता रहता है और यह बिलकुल नहीं बोलते चुप खडे रहते हैं।

खुरदाद।

बिहार—२ गुरुवार (ज्येष्ठ सुदी १०) को बादशाहने मुकर्रबखा को हाथी तलायर सहित और दो घोडे एक जडाऊ खपवा और ५० हजार रुपये खर्चके वास्ते देकर बिहारकी सूबेदारी पर जो पहले मिल चुकी थी विदा किया। वह वहां जानेसे पहले सलाम करने को दरगाहमें उपस्थित हुआ था।

मुंगेर—इसी दिन सरदारखा हाथी घोडा और खिलअत पाकर सरकार मुंगेरकी जागीरदारी पर बिदा हुआ।

गोलकुण्डा—कुतुबुल्मुल्कका वकील मीर मुशरिफ भी बिदा हुआ। शाहजहाने अपने दीवान अफजलखाके भाईको उसके साथ भेजा। कुतुबुल्मुल्कने भक्ति प्रकाश करके कई बार बादशाहके चित्र की प्रार्थना की थी। इस लिये बादशाहने अपनी जडाऊ तसवीर खपवे और फूल कटारे सहित भेजी। और मीरको २४ हजार दरब जडाऊ खञ्जर घोडा और खिलअत दिया।

बंगाला—बादशाहने हसनअलीखा जागीरदार सरकार मुंगेरको अढाई हजारी जात और सवारका मनसब देकर बंगालेके सूबेदार इबराहीमखा फतहजंगकी मदद पर भेजा। इबराहीमखाने दो नावें जिनको बंगालेमे कोशा कहते हैं भेजी थी।, एकमें सोनेकी और दूसरीमें चादीकी बैठक बनी थी। बादशाहने पसन्द करके उनमेंसे एक शाहजहाको दी।

सुलतान परवेज—परवेजके वास्ते बादशाहने नादिरीका मन सब चीरा और पटका भेजा जो उसने सेवामें उपस्थित होनेके वास्ते मगाया था।

मिरजावाली—२३ गुरुवार (आषाढ सुदी१।२) को बादशाहकी

काले हरन एक हरनी और एक हरनका बच्चा शिकार हुआ। बाद शाह सुलतानपरवेजकी हवेलीके आगेसे निकलता था इसलिये उसने दो टन्तीले हाथी तलायर सहित भेट किये। दोनोंही खासे हाथियो मे रखे गये।

ईरानका दूत—२३ गुरुवार (सावन बदी ७) को शाह अब्बास ईरानीका एलची सयद हसन एक प्रेमपत्र और बिल्लौरका आबखोरा जिसके ढकने पर एक लाल लगा हुआ था लेकर आया। शाहको इस प्रीतिकी रीतिसे और भी प्रीति बढी।

खानआलमकी ईरानसे अरजी—२० गुरुवार (सावन बदी ३०) को खान आलमका नौकर हाफिज हसन उसकी अरजी और शाह अब्बासका छापापत्र लेकर राजद्वारमें उपस्थित हुआ। शाहने खान आलमको अबलक अर्थात चितकबरे लहरदार मछलीके दांतकी बनीहुई तलवारकी मूठ दीथी। वह उसने अति अनोखी और सुन्दर होनेसे बादशाहकी सेवामें भेजी। बादशाह भी उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। क्योंकि अबतक उसने ऐसे रगका दांत नहीं देखा था।

अमरदाद।

शबबरात—४ शनिवार १५ शाबान (द्वितीय सावन बदी १) को रातको शबबरात थी। जमनामें दीपमाला और आतिशबाजीसे नावें सजाकर बादशाहको दिखाई गई। बादशाह बडी प्रसन्नतामे बहुत देर तक उनका तमाशा देखता रहा।

समूगर—८ गुरुवार (सावन बदी ६) को बादशाह शिकारके वास्ते गाव समूगरमें गया और सीम तक बनविहार करके सगलकी रातको राजभवनमें लौट आया

बिशोतनकी मनसब—१६ गुरुवार (द्वितीय सावनबदी १४) को शेख अबुलफजलके पोते बिशोतनको सात सदी जात ३५० सवारोंका मनसब मिला।

गुलअफशा बाग—फिर बादशाह गुलअफशा बागमें गया।

रस्तोंमें पानी बरसा जिससे बागकी और शोभा बढ़गई थी। वह यमुनाके तटपर था। उसमें जो भवन बनेथे उनपरसे बादशाह दूरतक दरयाहीका जोबन देखकर बहुत प्रफुल्लित हुआ। यह बाग ख्वाजाजहांके अधिकारमें था इस लिये उसने बंगालके जरी के बने हुए कुछ कपड़े जो उसके वास्ते इराक देशसे आये थे बादशाहको भेट किये। बागको भी उसने सुन्दरतासे सजाया था। अनवाल खूब पले हुए थे। बादशाहने उसका मनसब बढ़ाकर ५ हजारी जात तीनसौ सवारोंका करदिया।

अबलकदान्त —बादशाहका मन खानअलामको भेजीहुई सूठ को देखकर अबलक रंगके दान्तोंपर लोटपोट होरहा था और लोग उसको ढूंढते फिरते थे कि कहीं मिलजावे तो भेटकरके बादशाहकी प्रसन्नता प्राप्त करें। बादशाहने भी चतुर चाकरोंको ईरान और तूरानमें भेजाथा। दैवयोगसे आगरेमेंही एक धजनकी आदमीने वैसा दान्त घोड़ेको दाममें मोल लेलिया था और यह अनुमान करता था कि कभी आगमें पड़जानेसे काला पड़गया है। उसने एक दिन शाहजहांकी सरकारके एक बढ़ईको दिखाकर कहा कि इसकी कालौंस उतार दीजिये। वह नहीं जानता था कि इस कालौंसनेही उसको सफेदीको कीमत बढ़ा दी है। बढ़ईने अपने दरोगाके पास जाकर बधाई दी कि जिस अलभ्य वस्तुके ढूंढनेको बहुतसे आदमी देशदेशान्तरमें भटक रहे हैं वह बहुत सस्ती एक अनाड़ीके हाथ लगगई है जो उसको कदर और कीमत कुछ नहीं जानता है उससे थोड़ेमें मिलसकती है। वह दान्त लिया गया और दूसरे दिन शाहजहांको भेटकिया गया। शाहजहांने बादशाहकीसेवामें उपस्थित होकर पहिले तो बहुत कुछ प्रसन्नता दिखाई और जब शराबका नशा बादशाहकी आखोंमें खिला तो वह दान्त उसको दिखाया। बादशाह लिखता है—"मैंने अत्यन्त प्रफुल्लित होकर उसको इतने आशीर्वाद दिये कि यदि सौमें एकभी स्वीकृत हो तो उसके इस लोक और परलोकके कल्याणके वास्ते बहुत है।"

त्रादिलाका नोकर बहलीमखा—इसी दिन आदिलखाका उत्तम सेवक बहलीमखा नोकर होनेको आया। बादशाहने घोडा खिल अत तलवार और १० हजार दरब देकर हजारी जात और ४०० सवारोंके मनसबसे सम्मानित किया।

खानदौरा—खानदोराकी अरजी पहुची कि श्रीमानने कृपाकर के इस बूढे दासको ठट्ठेकी सूबेदारी दी पर बुढापेसे लाचार होकर प्रार्थना करता हू कि दासको पेंशन मिले। इसपर बादशाहने खुशावका रसल परगना जो बहुत बर्षोसे उसकी जागीरमें था जिसकी उपज ३० लाख दाम की थी उसके नाम स्थिर रख दिया। उसके बडे लडके शाहमुहम्मदको हजारी जात ६०० सवारका, मझले बेटे याकूबबेगको ७ सदी ३५० सवारका, और छोटे असदबेग को २ सदी ५० सवारका मनसब दिया।

शहरेवर।

१ शनिवार (द्वितीय सावन सुदी १४) को बादशाहने खान खाना और दूसरे बडे बडे अमरोंके वास्ते जो दक्षिणमें थे बरसाती कपडे भेजे।

कशमीर—बादशाहका विचार कशमीर जानेका था इसलिये ज्मागीरकुलीको विदा किया कि आगे जाकर पुखिचके रस्ते को ऐसा साफ करे कि बोझ उठानेवाले जानवर वहाकी विकट घाटि योंमसे सुगमता पूर्वक निकल जावे और मनुष्योंको भी किसी प्रका रका कष्ट न भुगतना पडे। इस कामके वास्ते बहुतसे बढई बेलदार और मिलावट उसके साथ भेजेगये। एक हाथी भी उसको दिया गया।

नूरमंजिल—१३ गुरुवार (भादों बदी १२) को बादशाह नूरम जिल बागमें आकर १६रविवार तक वहा विहार करता रहा।

विक्रमाजीत बघेला—राजा विक्रमाजीत बघेलेने अपने वतन बाधोगढसे आकर एक हाथी और एक जडाऊ कलगी भेट की।

१५ वीं सालगिरह—२४ (भादों सुदी ८) को राजमाता

मरयमजमानीके भवनमें सोरपचीय वर्षगांठके तुलादानका उत्सव हुआ। बादशाहको ५१वां वर्ष सोरपचसे लगा।

चांदनीका उत्सव—३० रविवार १४ शव्वाल (भादों सुदी १४) की रातको बादशाहने चांदनीरातका उत्सव यमुना तटस्थ बागके भवनमें किया।

प्रवलकटारकी मूठ—शाहजहांने जो चितकबरा दांत नजर किया था बादशाहने उसे कटवाकर, दो तलवारकी मूठ बनानेका हुक्म दिया। यह दांत भीतरसे बहुत सुथरा और सुरंग निकला। उस्ताद पूर्ण और कल्याणको जो खातिमबन्दीके काममें अद्वितीय थे हुक्म हुआ कि एक मूठ तो उसी केडेकी बनावें जो आजकल सर्व प्रिय होकर जहांगीरीकेडेके नामसे प्रसिद्ध होचुका है। तेगा गिलाफगीरी और बन्दूवान बनानेका उन उस्तादोंको हुक्म हुआ जो इन कामोंमें दक्ष थे। बादशाह लिखता है—जैसी मनोवाञ्छा थी वैसाही काम बना। एक मूठ तो ऐसी चितकबरी है कि जिसके देखनेसे आश्चर्य मालूम होता है। इसमें सात रंग झलकते हैं। इसके कई फूल ऐसे दिखाई देते हैं कि मानो शिल्पके सिरजनहारने स्वयं अपनी विचित्रलेख्य लेखनीसे उन पर काली रेखाएं खैंची है। वास्तवमें यह इतनी अद्भुत है कि मैं इसे एक चण अलग करना नहीं चाहता। खजानेमें जितने अमूल्य रत्न हैं उन सबसे इसको अधिक सन्मान रखताहूं। गुरुवारके दिन हर्ष और उत्साह पूर्वक मैंने उसको कमरमें बांधा और जिन चतुर कारीगरोंने उसके बनानेमें दिल लगाकर अपनी कारीगरी दिखाई थी उनको पुरस्कार दिया। उस्ताद पूर्णको हाथी सिरोपाव और सोनेके कड़े दिये।

कल्याणको 'अजायबदस्त' की पदवी, सिरोपाव, और जड़ाऊ पहुंचिया दी। इसी तरह सबको उनकी कारीगरीके अनुसार इनाम दिया।

अहदादकी हार—महाबतखांके बेटे अमानुल्लहने अहदाद पठानसे युद्ध करके बहुतसे पठानोंको मारा था बादशाहने इसके इनाम में हाथी तलवार उसके वास्ते भेजी।

मह्‌र महीना ।

राजा सूरजसिंह-गजसिंह—५ शनिवार (आश्विन वदी ५) को दक्षिणसे राजा सूरजसिंहके मरनेकी खबर पहुंची। बादशाह लिखता है—यह मालदेवका पोता था। मालदेव हिन्दुस्थानके श्रेष्ठ जमींदारोंमेंसे था जो राणासे बराबरीका दम भरता था। यहां तक कि एक लड़ाईमें राणासे जीत भी गया था। उसका अहवाल अकबरनामेमें विस्तारपूर्वक लिखा है। राजा सूरजसिंह स्वर्गवासी श्रीमान और मुझ ईश्वरभक्तकी कृपासे उच्च पदको पहुंचा था। उस का राज्य भी बाप और दादासे बढ़ गया था। उसके बेटेका नाम गजसिंह है। बापने जीते जीही राज्यका सारा काम उसके अधिकारमें कर दिया था। मैंने भी उसको शिक्षा और कृपाके योग्य पाकर तीन हजारी जात और दोहजार सवारका मनसब, झण्डा, राजाकी उपाधि और देश जागीरमें दिया। उसके छोटे भाईको पांच सदी जात और २५० सवारोंका मनसब बख्शा।

आसफखांके घर जाना—१० गुरुवार (आश्विन वदी ११) को बादशाह आसफखांकी प्रार्थना पर उसकी हवेलीमें गया जो उसने जमनापर नई बनवाई थी। उसमें एक हम्माम बहुत सुन्दर बना था। उसकी शोभा देखकर बादशाह बहुत मुदित हुआ। उसमें नहानेके पीछे वहीं प्यालोंकी मजलिस हुई। निज सेवकोंको प्याले दिये। तीस हजार रुपयेके पदार्थ आसफखांकी भेटमेंसे लिये।

आगरेसे बंगाले और लाहोरतक मीनारे—बादशाहकी आज्ञानुसार आगरेसे इधर अटक नदी और उधर बंगाले तक रास्तेके दोनो ओर वृक्ष तो पहलेही लग कर उपवनसे बन गये थे। अब उसने हुक्म दिया कि आगरेसे लाहोर तक कोस कोस पर एक एक मीनारा(१) बनाया जाय और तीन तीन कोस पर एक एक कुआ।

(१) यह स्तम्भ अब तक कहीं टूटे और कहीं साबित खड़े हैं। और कोसमीनारेके नामसे प्रसिद्ध है। पहला मीनारा दिल्लीके बाहर ही है जो एक चबूतरे पर बना है। उसका चित्र सन् १८६४ की छपी तुजुक जहांगीरीमें लगा है।

जिससे पथिक सुख पूर्वक आवें जावें। धूप प्यासका कष्ट न हो।

दशहरा—२४ गुरुवार (आश्विन सुदी ८*) को दशहरेका उत्सव हुआ। भारतवर्षकी प्रथानुसार घोड़े सिंगार कर बादशाहकी सेवामें लाये गये फिर कई हाथी लाये गये। बादशाहने उन्हें देखा।

सीतमिदखांकी भेट—सीतमिदखांकी भेट पिछले नौरोजमें नहीं हुई थी इसलिये उसने इस उत्सवमें सोनेका एक सिंहासन, याकूत और बुसद (मूंगे) की एक अंगूठी और पेंसिंहो और फुटकर पदार्थ भेट किये जो १६ हजार रुपयेके थे। सिंहासन सुन्दर बना था। बादशाह लिखता है—उसने यह भेट विशुद्ध भावसे की थी इसलिये स्वीकार की गई।

काश्मीरकी कूच।

काश्मीर जानेका मुहूर्त दशहरेको निकला था इसलिये बादशाहने उसी दिन शामको नावमें बैठकर प्रस्थान किया। ८ दिन तक पहले पड़ावमें इस अभिप्रायसे ठहरा कि सब लोग सुगमतासे तय्यारी करके आजावें।

बंगशके मेव—महाबतखाने बंगशके मेव डाकचौकीसे भेजे थे। वह ताजा ताजा बादशाहके पास पहुंचे। बादशाह लिखता है—मैं इनको खाकर बहुत खुश हुआ। काबुलके मेवोंसे जो कभी खाये थे और समरकन्दके मेवोंसे जो हरसाल आते हैं इनकी कुछ तुलना नहीं होसकती। मिठास कोमलता और स्वादमें उनको इन से कुछ बराबरी नहीं है। अबतक ऐसे कोमल और सरस मेव नहीं देखे थे। कहते हैं कि बंगशबाला(१)में नगरावरदके पास मेदा नाम एक गांव है उस देशमें तोनही हक्त इन मेवोंके है। बहुत

---

* चंद्रपञ्चांगमें तो इस दिन ८ है बादशाही पञ्चांगमें १० होगी।

(१) बंगश देशके दो विभाग हैं एक ऊंचा और दूसरा नीचा। ऊंचेको बंगशबाला और नीचेको बंगशपाईं कहते हैं। बंगशके रहनेवाले पठान भी बंगशही कहलाते हैं।

परिश्रम किया गया पर दूसरी ठौर इस खूबीके सेव नहीं हुए। मैंने भाई शाह अब्बासके एलची सैयदहसनको इन सेवोंका कुछ उच्छिष्ट दिया और पूछा कि इराकमें इनसे उत्तम सेव होते हैं या नहीं ? उसने विनय की कि ईरान भरमें इसफहानके सेव सबसे उत्तम होते हैं वह भी इनसे बढ़कर नहीं।

आबान महीना।

अकबर बादशाहका रौज़ा—१ आबान गुरुवार (कार्तिकबदी१) को बादशाहने अपने पिताकी कबर पर माथा टेककर १०० मोहरें चढाईं। सब बेगमों और महलवालियोंने भी परिक्रमा देकर भेट पूजा की। शुक्रवारको रातको बड़ी मजलिस जुड़ी। मौलवी मुल्ला, हाफिज, शेख, सूफी और गाने बजानेवाले बहुतसे आजुड़े थे। बादशाहने सबको यथायोग्य ख़िलअत फरजी और शाल दिये। इस रौजेकी इमारत अति विशाल थी तो भी बादशाहने और बहुत बढ़ा दी।

तीसरी रातको ४ घड़ी व्यतीत होने पर वहांसे कूच हुआ। बादशाह जलमार्गसे ५॥ कोस चलकर ४ घड़ी दिन चढे मंजिल पर पहुंचा। पानीसे निकलकर उसने सात तीतर शिकार किये।

ईरानके एलचीको विदा—तीसरे पहर बादशाहने ईरानके एलची सैयद हसनको २० हजार रुपये, सोनेका सिलाहुआ सिरोपाव, जड़ाऊ जीगे सहित, और हाथी देकर विदा किया। शाह अब्बासके वास्ते मुर्गकी शक्लकी जड़ाऊ सुराही जिसमें बादशाहके पीनेके योग्य शराब समाती थी सौगातमें भेजी।

लशकरखां—लशकरखांको खिलअत हाथी घोड़ा नौबत और जड़ाऊ तलवार देकर राजधानीके शासन और रक्षापर भेजा।

इकरामखां चिश्ती—इकरामखांको जो इसलामखांका बेटा और शेख सलीम चिश्तीका पोता था दो हजारी जात और १५०० सवार का मनसब देकर मेवातकी फौजदारी पर विदा किया।

इसलामखांका बादशाह पर सदके होना—बादशाह लिखता

है आकर जमनाके तटपर भगवत स्मरणमें तत्पर है। उसके सत्संग की इच्छा मनमें सदा रहती है। मैं उससे मिलने गया। बहुत कालतक एकान्तमें वार्तालाप करता रहा। सचतो यह है कि वह एक अच्छा साधु है। उसकी सभामें आनन्द मिलता है और तृप्ति होती है।"

शेरका शिकार—१० शनिवार (कार्तिक बदी ११) को किरा वलोंने रिपोर्ट की कि इस प्रान्तमें एक सिंह है जिससे प्रजा और यात्री पीडित है। बादशाहने हुक्म दिया कि बहुतसे हाथी लेजा कर जंगल घेर लो। दिन ढले आप भी बेगमों सहित गया और नूरजहां बेगमको बन्दूक मारनेकी आज्ञा दी। क्योंकि बादशाह अपने हाथसे जीव वध न करनेका प्रण कर चुका था। वह लिखता है—"हाथी शेरकी बूसे एक जगह नहीं ठहरता था। मेघाडम्बरमें से ठीक गोली मारना बहुत कठिन है। मिरजा रुस्तमने जो बन्दूक मारनेमें मेरे बाद अद्वितीय है कई बार हाथी परसे तीन तीन चार चार गोलियां मारी हैं और नहीं लगी है। पर नूरजहांने पहली ही गोली ऐसी मारी कि शेरका ढेर होगया।

चिदरूपसे फिर मिलना—१२ सोमवार (कार्तिक बदी १३) को बादशाहके मनमें फिर गुसाईं चिदरूपसे मिलनेकी उत्कण्ठा हुई। वह तुरन्त उसकी कुटीमें चलागया। वह लिखता है—"सत्सङ्ग किया गया बड़ी बड़ी बातें हुई। परमात्माने अजब श्रद्धा दी है, उच्च समझ, उच्च प्रकृति, तीक्ष्ण ज्ञानशक्ति, गम्भीर बुद्धि, मन सब बन्धनोंसे मुक्त, संसारकी बातों पर लात मारकर निश्चिन्त बैठा है। एक आध गज कपडेकी लंगोटी और एक ठीकरा पानीपीनेको है। जाडे गर्मी बरसात सदा बिना वस्त्र रहता है। एक सकडी गुफा रहनेको है जिसमें बड़ी कठिनाईसे करवट ली जासकती है। भीतर जानेका मार्ग ऐसा है कि दूध पीते बालकको भी कठिनाईसे उसमें जासके।

गुसाईं से बिदा होना—१४ बुधवार (कार्तिकबदी अमावस) को बादशाह फिर गुसाईं चिदरूपके पास जाकर उससे बिदा हुआ।

ह लिखता है—'उसका वियोग जीको बहुत अखरा।"

परवेजकी विदा—१५ गुरुवार (कार्तिक सुदी १) को बादशाह ने मथुरासे कूच करके वृन्दावनके पास डेरा किया। सुलतान परवेज को पचाक घोडा, चितकबरी लहरदार मूठकी कटारी, खासी तल वार और खासी ढाल देकर इलाहाबाद जानेकी आज्ञा दी। बाद शाह उसे साथ लेजाता था। पर उसकी इच्छा न देखकर उसे विदा किया।

खुसरोको छोडना—खुसरो पहलेसे कैद था। बादशाहने उसके अपराध क्षमा करके सम्मुख बुलाया और सलाम करनेकी आज्ञादी।

१८ भृगुवार (कार्तिक सुदी २) को मुखलिसखां जो बंगालेमें बुलाया हुआ आया था शाहजादे परवेजका दीवान नियत किया गया। उसका मनसब दहो दो हजारी सातसौ सवारोंका रहा जो बंगालेमें था।

१७ शनिवार (कार्तिक सुदी ३) को यहीं मुकाम रहा। कन्नौज के फौजदार सैयद निजामने सलाम उपस्थित होकर दो हाथी और बाज शिकारी पक्षी भेट किये। बादशाहने एक हाथी और एक बाज लेलिया।

शनकार पक्षी—एक सुन्दर शनकार ईरानके बादशाहने और दूसरा खानखानांसमने मीरशिकार पक्षीके साथ भेजा था। खान खानांका तो रास्तेमें मर गया और बादशाहवालेको भी मीरशिकार की असावधानीसे बिल्लीने पकडकर घायल कर दिया जो दवादारू करनेके पीछे एक महीनेसे अधिक न जी सका।

बादशाह लिखता है—'मैं उसके रंग रूपका क्या वर्णन करूं। काले काले सुन्दर तिल पीठ बाजू और परों पर थे। इसी कारणसे मैंने उस्ताद मनसूर चित्रकारको जिसे 'नादिरुलअस्र'की उपाधि दी गई है हुक्म दिया कि इसका चित्र उतार रक्खे। मीर शिकार को २० ०) देकर विदा किया।

दिल्ली तोल—बादशाह लिखता है—स्वर्गवासी श्रीमानके राज्य

मे सेर ३० दामका था । मने सोचा इमे क्यो बदला जाय यही रहे । एक दिन गुसाई जदरूपने किसी प्रसगसे कहा कि हमारे धर्मग्रन्थ वेदर्मे सेर ३६ दामके बराबर लिखा है। देवयोगसे तुम्हारा मनो रथ भी जो ३६दाम भरके सेर चलानेका है हमारी पुस्तकसे मिलता है। यदि ३६ दामका सेर कर दो तो अच्छा है। इस पर मेने हुक्म दिया कि अबसे ३६ दामका सेर सब देशोमें चलाया जावे।

राजा भावसिह—१८ सोमवार (कार्तिक सुदी ५) को कूच हुआ। राजा भावसिहको बादशाहने घोडा और सिरोपाव देकर दक्षिणी सेनाकी सहायता पर भेजा।

१८ बुधवार (कार्तिकसुदी १४) तक बराबर कूच होता रहा।

दिल्लीमे पहुचना—२८ गुरुवार (कार्तिक सुदी १५) को दिल्लीमे स्वारी पहुची। बादशाह पहले बेगमी और बेटो सहित हुमायू बादशाहके रोजे(१) मे भेट और परिक्रमा करके फिर शेख निजा मुद्दीन चिश्तीकी जियारतको गया। कुछ दिन रहे उस दौलतखाने मे उतरा जो सलीमगढमे बना था।

आजर महीना।

१ शनिवार (अगहन वदी २) को बादशाह परगने पालमने चीतोसे हरनोका शिकार करने गया। यह हरन बादशाहकी आज्ञा से रक्षित थे इससे बहुत होगये थे। मार्गमे दिन ढले शिकार करते समय ओले खूब पडे जो बेरके बराबर थे। १३ गुरुवार (अगहन वदी ३०) तक १२ दिनमे १६२६ हरन पकडवाकर बादशाह दिल्ली को लौटा। उसने अपने पितासे सुना था कि जो हरन चीतेसे छुडाया जाय और उसके शरीरमें चीतेका नख तथा दात न लगा हो तो भी उसका जीना दुस्तर है। इसलिये उसने इस शिकारमें बडी सावधानीके साथ कई हृष्टपुष्ट हरनोको चीतोसे घायल होनेके पहले छुडाकर अपने पास रखा। वह एक दिनरात तो अच्छे रहे।

(१) मकबरा।

हाथी और भण्डा देकर दक्षिणको विदा किया।

शेख अबदुलहक—इसी दिन शेख अबदुलहक देहलवी बादशाह की सेवामें उपस्थित हुआ। यह बड़ा विद्वान था। इसने एक ग्रन्थ हिन्दुस्तानके औलियाओंके चरित्रोंका लिखा था वह बादशाहने देखा। वह लिखता है—"ग्रन्थ बनानेमें इसने बहुत परिश्रम किया है। दिनोंमें सन्तोषपूर्वक आकाशी वृत्ति पर बैठा है। वृद्ध है, इस का सत्सग नीरस नहीं है। मैंने बहुत भांतिकी कृपाओंसे प्रसन्न करके उसे विदा किया।"

सोलहवां वर्ष।

सन् १०२८ हिजरी।

अगहन सुदी २ संवत् १६७६ ता० २८ नवम्बर सन् १६१६ अगहन सुदी १ संवत् १६७७ ता० १५ नवम्बर सन् १६२० तक।

मुकर्रबखांका बाग—१६ रविवार (अगहन सुदी २) को बादशाह दिल्लीसे कूच करके १२ शुक्रको किरानेके बागमें पहुंचा। यह मुकर्रबखांका वतन था। इसकी हवा अच्छी और भूमि सरस थी। मुकर्रबखांने वह बाग और मकान बनवाये थे। बादशाहने उसके बाग की तारीफ कई बार सुनी थी इस लिये उसके देखनेकी चाह हुई। २२ शनिवार (अगहन सुदी ८) को बेगमों सहित उसमें गया और देखकर मुदित हुआ। लिखता है—निस्संदेह बाग बड़ा उत्तम और मनोहर है। १४० बीघेमें एक पक्के कोटके अन्दर है। उसके बीचमें झालरा २२० गज लम्बा और २०० गज चौड़ा है। झालरेमें एक चौकोर चबूतरा २२ गज लम्बा और इतनाही चौड़ा चांदनीमें बैठनेका है। ऐसा कोई मेवा गर्म और ठंडे देशोंका नहीं है जो इस बागमें न हो। मेवेके वृक्ष जो विलायतमें होते हैं यहां तक कि पिस्तेके पौदे भी यहां लगे हुए हैं। सर्वके वृक्ष ऐसे सुडौल और सर्वांग सुन्दर देखे गये कि वैसे अबतक देखनेमें नहीं आये थे। मैंने इनकी गिनती करनेका हुक्म दिया। ३०० निकले। झालरे के ऊपर भी अच्छे भवन बने हैं।

शाहजादा उमीदबख्श—२६ बुधवार (अगहन सुदी १२) को आसफखांकी बेटीसे शाहजहांके लड़का हुआ। बादशाहने उसका नाम उमीदबख्श रखा।

शिकार—२७ गुरुवार (अगहन सुदी १३) को भी वहीं मुकाम रहा। इन दिनों बादशाह जरज और तीतरी पक्षियोंके शिकार

के आनन्दमें मग्न रहता था। जरजीको तुलवाया तो बीरते रग वाला सवा दो सेर जहांगीरी तोलसे हुआ और चितकबरा दो सेर आध पाव। बड़ी तोगदो बीरते जरजसे पाव भर अधिक उतरी।

दे सहीना।

५ गुरुवार (पोष वदी ६) को बादशाहका लशकर अकबरपुरमें नावोंसे उतरकर खुश्कीसे उतरा। यह स्थान परगने वृडियासे दो कोस था। आगरेसे यहां तक जलमार्गसे १२२ कोस थे जो स्थलके ८१ कोसोंके बराबर थे। ३४ कूच और १७ मुकाममें कटे थे। एक सप्ताह शहर आगरेसे निकलनेके पीछे ठहरना पड़ा था और १० दिन पालमकी शिकारमें लगे थे। सब ७० दिन लगे।

इसी दिन जहांगीरकुलीखाने बिहारसे आकर १०० मोहरें और १००) भेट किये।

गुरुवारसे ११ बुधवार (पोषबदी १२) तक लगातार कूच होता रहा।

सरहिन्दका बाग—१२ गुरुवार (पोष सुदी १३) को बादशाह सरहिन्दके बागकी बहार देखकर प्रसन्न हुआ। यह पुराना था। यहां सालके वृक्ष खूब थे। पर पहलेकीसी शोभा न थी। बादशाह ने ख्वाजा वेसीको जो खेती और इमारतके कामोंमें निपुण था इसी बागके सुधारनेके लिये सरहिन्दका 'करोड़ी'करके पहलेसे भेज दिया था। उसने कुछ दुरुस्ती और मरम्मत की थी। अब फिर नये सिरसे उसे ताकीद कर दीगई कि पुराने मधसूखे वृक्षोंकी जगह नये पौद लगावे और क्यारियां भी नई बनाकर पुराने मकानोंकी मरम्मत करावे और हम्माम आदि दूसरे मकान भी उचित स्थानमें बनावे।

शाहजहांके घर जाना—१८ गुरुवार (पोष सुदी ४) को बादशाह शाहजहांकी प्रार्थनासे उसके डेरे पर गया। उसने पुत्रोत्सवकी बड़ी भारी मजलिस रचाकर बादशाहको उत्तम भेट दिखाई। बादशाहने एक लाख तीस हजार रुपयेकी चीजें पसन्द करके लेली। उनमें एक नीमचा जरहौकाटके नीलमोंसे जड़ा अति उत्तम था।

एक सुन्दर हाथी था जो बगलानेके राजाने बुरहानपुरमें शाह-जहांको भेट किया था। ४००००) की भेट उसने अपनी माताओं और बड़ी बुढ़ियोंको दी।

जंग—भक्करके फौजदार सैयद बायजीद बुखारीने एक जंगके बच्चेको पहाड़से लाकर घरमें पाला था। अब बड़ा होजाने पर वह बादशाहकी भेटमें भेजा गया। बादशाहको बहुत पसन्द आया। वह लिखता है—"मारखोर और पहाड़ी मेंढ़े तो घरमें पाले हुए बहुत देखे गये थे परन्तु जंग देखनेमें न आया था। उसके बच्चे पैदा कराने के लिये उसको बरबरी बकरीके साथ रखनेका हुक्म दिया। यह मारखोर और जबकारसे दिलचस्प है।" सैयद बायजीदको हजारी जात और पानसौ सवारोंका मनसब दिया।

२८ रविवार (पोषसुदी १५) को शाहजहांकी वर्षगांठका उत्सव व्यास नदीके तट पर हुआ। इसी दिन राजा विक्रमाजीत जो कांगड़े के किलेको घेरे हुए था, कई कामोंकी प्रार्थना करनेके लिये बुलाया हुआ दरबारमें आया।

लाहौरका दौलतखाना—३० सोमवार (माघ वदी१) को बादशाह १०दिनकी छुट्टी लेकर लाहौरके दौलतखानेको देखनेके लिये गया। वह फिरसे बना था।

राजा विक्रमाजीतकी विदा—इसी दिन राजा विक्रमाजीत भी खञ्जर, खासा खिलअत और घोड़ा पाकर किले कांगड़ेके घेरे पर विदा हुआ।

बहमन महीना।

कलानूरका बाग—२ बुधवार (माघ वदी ३) को बादशाहकी सवारीके उतरनेसे कलानूरके बागकी शोभा बढ़ी। बादशाह लिखता है—"इस भूमिमें स्वर्गवासी श्रीमान् राजसिंहासन पर विराजमान हुए थे।"

खानआलमका ईरानसे लौटना—खानआलमके ईरानसे लौटने की खबर पहुंचने पर बादशाह प्रतिदिन एक पारिषदको उसका

मान दढानेके लिये भगवानी भेजता था और नानाप्रकारकी हपान्री से उसकी प्रतिष्ठा बढाता था। उसको जो प्रसादपत्र लिखे जाते थे उनके ऊपर उचित कविता लिखकर अनुग्रह दिखाया जाता था। एकबार जहांगीरी इत्र भेजा तो एक शेर लिखा जिसका अर्थ यह है—

"मैंने अपनी सुगन्ध तेरी ओर भेजी है, कि शीघ्र तुझे अपनी ओर लाऊं।"

खानआलमकी साथ ईरानके शाहका बर्ताव—३ गुरुवार (माघ बदी४) को खानआलमने कालानूरके बागमें राजद्वारको चूमकर१०० मोहर और एक हजार रुपये भेंट किये। बादशाह लिखता है— "मेरे भाई शाह अब्बास जो कृपा, खानआलम पर फरमाते थे यदि उसको विस्तारपूर्वक लिखा जावे तो अत्युक्तिका भ्रम होगा। सदैव खानआलम कहकर सम्भाषण करते थे और एक क्षण भी अपने पाससे पृथक नहीं रखते थे। कभी किसी दिन या रात्रिको वह अपने घरमें रहना चाहता तो साधारण रीतिसे उसके घर पर जा कर अधिक कृपा प्रगट करते थे। एक दिन फर्र्हाबादमें कमरगे के शिकारका बड़ा समारोह था। उसमें शाहने खानआलमको तीरन्दाजीकी हुक्म दिया। उसने अदबसे एक कमान और दो तीर आगे किये। बादशाहने ५० तीर और उसे अपने तरकशमेंसे दिये। उनमेंसे ५० तीर तो शिकार पर पहुंचे और २ हवा गये। फिर शाहने उसके नौकरोंको भी जो राजसभाओं और मजलिसोंमें जाने पाते थे तीरन्दाजीकी आज्ञा दी। बहुतोंने अच्छे तीर लगाये। मुहम्मदयूसुफ किरावलने एक तीर ऐसा मारा कि दो सूअरोंको छेदता हुआ निकल गया। इस पर जो लोग शाहके पास खड़े थे धन्य धन्य करने लगे। शाहने बिदा करते समय खानआलमको आलिंगन करके अपनी प्रीतिका परिचय दिया और जब वह शहर से बाहर निकला तब भी उसके डेरे पर पधारकर शिष्टाचार पूर्वक विदा किया। जो अपूर्व पदार्थ खानआलम लाया वह निम्नदेह

भाग्यवलसेही उसे मिले थे। उनमें एक चित्र नकीसअखांके साथ मानिव किराकी लड़ाईका था। उसमें उनकी और उनके कई बेटों तथा नामीरोंकी तसवीरें थी जिनको उस मआसमें साथ रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। प्रत्येक चित्रके पास उसका नाम लिखा था। इस चित्रमें २४० स्वरूप थे चित्रकारने अपना नाम खलील मिरजा शाहरुखी लिखा था। उसका काम बहुत पक्का और बढ़िया है और उस्ताद बहज़ादके कामसे पूरा पूरा मिलता है। जो नाम नहीं लिखा होता तो यही अनुमान किया जाता कि यह बहज़ाद का काम है। सम्भव है कि बहज़ाद उसके शिष्योंमेंसे हो और उस के ढग पर चला हो। यह अपूर्व पदार्थ स्वर्गवासी शाह इसमाईल या तुहमास्पके पुस्तकालयसे मेरे भाई शाह अब्बासको सरकारमें आया और सादकी नाम उनके पुस्तकाध्यक्षने चुराकर एक मनुष्य को बेच दिया। दैवसंयोगसे सफाहानसे खानआलमके हाथ लगा। यह खबर शाहको भी होगई कि ऐसी दिव्यवस्तु उसने प्राप्त की है। उसने देखनेके बहानेसे मांगा। खानआलमने मीठा बहाना करके बहुत टाला। पर अत्यन्त आग्रह होने पर उनकी सेवामें भेज देना पड़ा। उन्होंने देखतेही पहचान लिया और कई दिन तक अपने पास रखा। पर वह जानते थे कि हमारी रुचि ऐसी चीजोंमें कैसी है। यह भी जानते थे कि यह मांगनेपर किसी छोटी या बड़ी वस्तु के देडालनेमें संकोच करता नहीं है। इससे खानआलमसे असली बात कहकर चित्र उसीको दिया। मैंने जब खानआलमको ईरान भेजा तो विष्णुदास नाम चित्रकारको जो चित्र खेंचनेमें इस समय अद्वितीय है साथ और उनके प्रधान सभासदोंके चित्र उतार लानेके लिये उनके साथ भेजा था। वह बहुतोंकी छवि खेंचकर लाया। मेरे भाई शाहकी तो बहुतही सुन्दर खेंची। मैंने उनके जिस सेवकको दिखाई उसीने निवेदन किया कि ठीक खेंची है। विष्णुदासको मान हाथी देकर बढ़ाया गया।

एतमादुद्दौलाकी सेना—८(१) मगलवार (माघ बदी ८) को परम प्रधान एतमादुद्दौलाने अपनी सेना सजाई। पजाबके सूबेका प्रबन्ध उसके प्रतिनिधियोंको समर्पित था और भारतमें भी उसको फुटकर जागीरें थीं तथापि ५००० सवार दिखा सका।

कश्मीर—बादशाह लिखता है—कश्मीरमें इतनी गुजाइश नहीं है कि उसकी उपज उस भीड़भाड़के लिये यथेष्ट हो जो सदैव सवारीके साथ रहती है। फिर अब तो लश्करकी अवाईसे अनाज का भाव बहुत महगा होगया था इसलिये सर्वसाधारणके हितार्थ हुक्म दिया कि जो अनुचर मेरी सवारीके साथ हैं वह थोड़ेसे जरूरी साथी साथ रखकर शेष सबको अपनी अपनी जागीरों पर भेजदें। इसी प्रकार जानवर और नौकर चाकर भी कम करदें।

शाहजहांका आना—१० गुरुवार (माघवदी १२) को शाहजहां लाहोरसे आगया और जहांगीरकुलीखां खिलअत घोड़ा और हाथी पाकर दक्षिणको बिदा हुआ।

तालिबआमिली—इसी दिन बादशाहने तालिबआमिलीको मलिकुश्शोरा (कविराजा) का खिताब और खिलअत दिया। यह आमिल नाम नामका रहनेवाला था कुछ समयसे एतमादुद्दौलाके पास रहता था। जब उसकी कविता सब कवियोंसे बढ गई तो वह दरबारके कवियोंमें लेलिया गया।

कविता—१४ चन्द्रवार (माघ बदी ३०) को सुलतान कियासके बेटे हुसेनीने एक रुबाई (एक प्रकारकी चोपाई) कहकर बादशाह को नजर की। उसका यह आशय था—

तेरे पखेसे जो गर्द झड़े, वह सुलेमानी सुरमेकी सुत्तको आब उतार दे। तेरे द्वारकी धूलको जो परीचाके लिये निचोड़े, तो उस मेंसे बादशाहोंके ललाटका पसीना टपकने लगे।

मोतमिदखाने उसी समय एक रुबाई पढी जो बादशाहको

(१) मूलमें मगलको ६ लिखी है सो भूल है।

तब उसने कई स्त्रियोंसे उसकी परीक्षा कराई कि कहीं वह नपुंसक न हो। स्त्रियोंने परीक्षा करके कहा कि इसमें और दूसरी स्त्रियोंमें और कुछ अन्तर नहीं है। विचित्र जानकर यह बात लिख दीगई।

अल्हदादखां—जलालखानारीका बेटा अल्हदाद अपने कुकर्मो से लज्जित होकर सुलतानके सूबेदार बाकरखां द्वारा एतमादुद्दौलासे अपराध क्षमा करादेनेका प्रार्थी हुआ। बादशाहने स्वीकार करके *बाकरखांके साथ उपस्थित होने पर उसके अपराध क्षमा कर दिये।*

जम्मूकाराजा—जम्मूके जमींदार संग्रामको राजाका पद, हजारी जात ५०० सवारका मनसब हाथी और सिरोपाव मिला।

सुलतानका सूबा—बाकरखां डेढ़ हजारी जात और ५०० सवारोंका मनसब पाकर फिर सुलतानकी सूबेदारी पर विदा हुआ।

२८ सोमवार (माघ सुदी १४) को बादशाह भट नदीके तटपर करौहीके परगनेमें पहुंचा। बादशाहके नियत किये कमगा स्थानों में यहांके पहाड़ भी थे। इसलिये किरावलोंने पहलेसे आकर उन को घेर रखा था।

असफंदार महीना।

शिकार—२ असफंदार गुरुवार (फाल्गुण बदी ३)को छ कोससे दूसरे दिन शाखबंदमें लाये १०१ मेंढे और चिकारे शिकार हुए।

महाबतखां—महाबतखांको बादशाहने हुक्म भेजा था कि यदि वहांका प्रबन्ध विश्वास योग्य होगया हो तो फौजोंको थानोंमें छोड़कर अकेला आवे। इस पर उसने इसी दिन चौखट चूमकर १००० मोहरें समर्पण कीं।

खानआलम—खानआलमका मनसब ५ हजारी जात ३००० सवारोंका होगया।

कशमीर—नूरुद्दीन कुलीकी अरजी युक्तिसे पहुंची। उसमें लिखा था कि जहां तक हो सका मैंने सब घाटियोंको सुधार कर

ओर खास" परम नरम देकर लाहौरको बिदा किया। रास्ते पर एक बागीचा था। बादशाह उसके फूलोंकी शोभा देखकर प्रसन्न हुआ।

इस जगह तीहू पक्षीका शिकार मिला। बादशाह लिखता है—तीहूका मांस चकोरसे अधिक स्वादिष्ट होता है।

थलके फूल—५ रविवार (फाल्गुण बदी ६) को बादशाहने कुछ फूल ऐसे देखे जिनमें कुछ तो भीतरसे श्वेत और बाहर लाल थे और कुछ भीतरसे लाल और बाहर पीले थे। बादशाह लिखता है—इनको फारसीमें 'लालाबेगाना' और हिन्दीमें थल कहते हैं। क्योंकि जैसे कमल जलका फूल है वैसेही यह थलका कमल है।

किश्तवारकी विजय—८ गुरुवार (फाल्गुण बदी १०) को काश्मीरके सूबेदारकी अरजी पहुंची जिसमें किश्तवारके फतह होनेकी बधाई लिखी थी। बादशाहने उसको प्रसादपत्र, खास खिलअत, और जड़ाऊ खञ्जर भेजकर किश्तवारकी एक सालकी उपज पुरस्कारमें दी।

हसन अब्दाल—१४ मङ्गलवार (फाल्गुण बदी १४) को बादशाह हसन अब्दालमें पहुंचा। उसने इस रास्तेका वर्णन काबुलकी यात्रामें सविस्तर पहले कर दिया था इसलिये यहां फिर नहीं लिखा। अकबरपुरसे हसन अब्दाल तक १७८ कोस ४८कूच और २१मुकाम अर्थात ६८ दिनमें तय हुए। हसन अब्दालमें एक टांका एक झरना और एक झालरा बहुत सुन्दर था इसलिये बादशाह दो दिन तक यहां ठहरा।

१६ गुरुवार (फाल्गुण सुदी १) को सौमवर्षीय तुलादानका उत्सव हुआ। इस पक्षसे बादशाहको ५३वां वर्ष लगा।

काश्मीरको कूच—यहांसे आगे ऊंचा नीचा रास्ता पहाड़ोंमें होकर था। इसलिये बादशाहने यह निश्चय किया कि श्रीमती मरयमजमानी दूसरी बेगमों सहित कुछ दिनों ठहरकर सुभीतेसे पधारें। मुख्य अमात्य एतमादुद्दौला, सादिकखां मीरबख्शी

और इनायतखां सौन्मासान भी कारखानों सहित धीरे धीरे आवें। इनको मिरजा रुस्तम सफवी, खान आजम और दूसरे बन्दोंको पश्चिमके मार्गसे जानेकी आज्ञा हुई। स्वयं बादशाह आवश्यक परगह और पारिषदोंके साथ १७ गुरुवार (फाल्गुण सुदी २) को २॥ कोस चलकर सुलतानपुरमें उतरा। यहां समाचार मिला कि राणा अमरसिंह उदयपुरमें परलोकगामी हुआ। बादशाहने उसके पोते जगतसिंह और बेटे भीमसिंहको जो सेवामें रहते थे सिरोपाव दिये और राजा किशनदासको आज्ञा की कि प्रसादपत्र राणाको सदनोवा, सिरोपाव तथा टीका और खासा हाथी कवर कर्णके वास्ते लेजाकर शोक और बधाईकी क्रिया सम्पादन(१) करे।

पहाड़ गर्ज—बादशाह लिखता है—"यहांके लोगोंसे सुना गया कि अकस्मात बादल और बिजली न होनेके दिनोंमें भी बादलकी सी गर्जें इस पहाड़से सुनी जाती है। इसीलिये इस पहाड़को गर्ज कहते हैं। एक या दो वर्ष पीछे यह गर्ज होतीही है। यह बात मैंने स्वर्गवासी श्रीमानके मुंहसे भी कईबार सुनी थी। अनोखी जानकर लिख ली।

१८ शनिवार (फाल्गुण सुदी३) को साढ़ेचार कोस चलकर मजीमें डेरे हुए। यह गांव 'हजाराकारलग'के परगनेका है।

१९ रविवार (फाल्गुण सुदी ४) को ३। कोस पर नौशहरेमें मुकाम हुआ। यह धन्तूर परगनेका गांव है। जहांतक देख पड़ता है स्थान कमलके फूल तरताजा खिले हुए दिखाई देते थे।

लाल फूल—२० सोमवार (फाल्गुण सुदी ५) को गांव सलहरमें डेरे हुए। सहादतखांने साठ हजार रुपयेके रत्न और जड़ाऊ पदार्थोंकी भेंट अर्पण की। यहां बादशाहको गुलखतमीके आकारका पर उससे कुछ छोटा लाल अङ्गारासा फूल दृष्टिगोचर हुआ। कई फूल पास पास खिले हुए थे। दूरसे ऐसा जान पड़ता था कि

(१) अर्थात् राणा अमरसिंहके मरनेका शोक प्रकट करे और करणसिंहके राज्याभिषेक पर बधाई दे।

एकही फूल रहे। इसका पौदा जर्दालूके बराबर था और इस पहाड़ की तराईमें जंगली फूल बहुत उगे हुए थे। उनकी सुगन्ध अति तीव्र थी और रंग वनफशाके फूलसे मिलता था।

२१ मंगलवार (फागुण सुदी ६) को तीन कोस पर गांव मालकानीमें डेरा लगा। यहांसे बादशाहने रामदासको घोड़ा, खासा हाथी और सिरोपाव पोस्तीन सहित देकर बंगशकी हुकूमत पर बिदा किया। रातभर बूंदे पड़ती रही। रातको मेह बरसा।

२२ बुधवार (फागुनसुदी ७) को तड़केही फिर गिरकर रास्ते पर निकल गया और मेहसे फिसलन होगई जिससे जो निर्बल पशु गिरा फिर न उठा। २५ मस्त हाथी जानसे गये। बादशाहको वर्षाके मारे दो दिन ठहरना पड़ा।

पगलीका जमीदार—२३ गुरुवार (फाल्गुण सुदी ८।९) को पगलीके जमीदार सुलतान हुसैनने आकर जमीन चूमी। यहांसे पगलीका इलाका लगता था।

वर्फ—बादशाह लिखता है—यह अद्भुत संयोग है कि जब स्वर्गीय श्रीमान काश्मीर पधारे थे तो उस समय भी वर्फ गिरी थी और अब भी गिरी है। बीचके वर्षोंमें वर्फ भी न गिरी थी और वर्षा भी कम हुई थी।

फूलों और वृक्षोंकी शोभा—२४ शुक्रवार (फागुण सुदी १०) को सवारी ४ कोस चलकर गांव सवादनगरमें ठहरी। इस मार्गमें भी अचम्बा (१) बहुत था और जर्दालू और शफतालूके फूल जंगल भरमें फूले हुए थे मनोहर से इक्ष भी सर्व के समान आंखोंको ताजा करते थे।

सुलतान हुसैनके घर जना—२५ शनिवार (फागुण सुदी ११) को ३॥ कोस पर पगलीके पास पड़ाव हुआ। २६ रविवारको बादशाह चकोरोंके शिकारको गया। दिन ढले सुलतान हुसनकी

१ (अचमा) वृक्षमें मिश्रीकी जाती है किसी इसका नाम ने पु० पृ० २४।

प्रार्थना पर उसके घर पधारा। उसने घोडा, तलवार, बाज जुर्रे, भेट किये।

सरकार पगली—बादशाह लिखता है—"सरकार पगली ३५ कोस लम्बी और २५ कोस चौडी है। पूर्व दिशामें कशमीरके पहाड पश्चिममें अटक बनास उत्तरमें गनोर और दक्षिणमें गक्कड हैं। जब अमीर तैमूर साहिबक़िरा हिन्दुस्थानको जीतकर तूरान जाते थे तो इनलोगों (गक्कडों) को जो साथ थे यहां रहनेका हुक्म देकर छोड गये थे। ये कहते हैं कि हमारी जाति कार लग है। परन्तु ठीक नहीं जानते कि उस समय इनमें सबसे बडा कौन था और उसका क्या नाम था। अब तो ये निरे लाहौरी हैं और बोली भी वैसीही बोलते हैं"।

धन्तोर—"यही हाल धन्तोर" के लोगोंका है स्वर्गवासी श्रीमान के समयमें धन्तोरका जमींदार शाहरुख था। अब उसका बेटा बहादुर है। यह पगली और धन्तोरवाले सम्बन्धी हैं तो भी इनमें सीमाओंका वही झगडा करता है जो जमींदारोंमें स्वाभाविक होता है। पर दोनों सदासे शुभचिन्तक रहते आये हैं। सुलतान हुसैनका बाप सुलतान महमूद और शाहरुख दोनों युवराजावस्थामें मेरे पास आये हैं। सुलतान हुसैन ७० वर्षका होगया है तो भी सवारी और सफरकी शक्ति जैसी चाहिये वैसी अब तक उसमें है"।

बोजा—इस देशमें रोटी और चावलका बोजा(१) बनाते हैं जिसको सर बोनते हैं यह बोजे से बहुत तीव्र और तरल होता है। यहांके लोग इसीका सेवन करते हैं यह जितना पुराना हो उतनाही उत्तम है। सर को घडेमें बन्दकरके दो तीन वर्ष तक घरमें रख छोडते हैं। फिर उसके ऊपरका पानी निथार लेते हैं। उसको आछी कहते हैं। आछी १० वर्षकी भी होती है। इसकी समझमें जितनी पुरानी उतनीही अच्छी। कमसे कम एक वर्षकी तो होतीही है। सुलतान महमूद तो 'सर' के प्याले पर

(१) एक एक प्रकारका मादकरस।

प्याले उडा जाता था । सुलतान हुसेन भी पीता है । मेरे लिये बहुत बढिया सर लाये थे मैंने एक वेर परीक्षाके लिये पी और इससे पहिले भी पी थी । इसका नशा भूख तो लाता है पर दारुण भी है । विदित हुआ है कि इसमें कुछ भंग भी मिलाते हैं । न दारुण हो तो भंग उसे दारुण कर देती है । मेवोंमें जर्दालू शफतालू और न रूद होते हैं परन्तु सम्हाल नहीं करते जिससे जंगलीके समान खट्टे और बुरे होते हैं खेर उनकी कलियोंको ही देखकर प्रसन्न हो सकते हैं । घर भी कश्मीरियोंकी भांति लकडीके बनाते हैं । शिकारी जनावर भी होते हैं घोडे खच्चर, गायें, और भैंसें भी हैं बकरे और मुर्गे बहुत हैं । खच्चर छोटा होता है बहुत बोझके काम नहीं आता" ।

कई मंजिल आगे लशकरके वास्ते पूरा अनाज न होनेकी अर्ज हुई थी । इसलिये बादशाहने हुक्म दिया कि थोडेसे जरूरी डेरे और कारखाने साथ लेकर हाथियोंको छोड दें और तीन चार दिनकी सामग्री लेलें । सवारीके नौकरोंमेंसे भी थोडेसेही साथ चलें बाकी ख्वाजा अबदुलहसन बखशीके साथ कई मंजिल पीछे आते रहें । इतनी कमी करने पर भी ७०० हाथी तो जरूरी डेरों और कारखानोंके लिये लेजानेही पडे ।

सुलतानहुसेनका मनसब ४ सदी ३०० सवारोंसे ६ सदी ३५० सवारोंका होकर खिलअत जडाऊ तलवार और हाथी भी उसको मिला ।

बहादुर धन्तोरी, बंगशके लशकरमें नियुक्त था । उसका भी मनसब बढकर २ सदी जात और १०० सवारोंका होगया ।

नेनसुख नदी—२८ बुधवार (फालगुण सुदी १५) को बादशाह ५। कोस चलकर नैनसुख नदीके पुलसे उतरा । यह नदी उत्तरसे दक्षिणको जाती है । दारो नामक पहाडसे निकली है जो तिब्बत और बदखशाके बीचमें है । यहांसे इसकी दो शाखायें होगई थी इस लिये बादशाही लशकरके उतरनेको बादशाहके हुकमसे दो पुल

वह जब पुलसे उतरा तो नदी परही एक हरा भरा चौकोर मेदान ५० गजका उसको मिल गया। मानो दैवने उसे इसी दिनके वास्ते बनाया था। उसने उसी पर सभा सजाई जो बादशाहको भी बहुत पसन्द आई। उसको खूब शाबाशी मिली।

कृष्णगङ्गा दक्षिणसे आती है और उत्तरको जाती है। भट नदी पूर्वसे आकर कृष्ण गङ्गामें मिल जाती है।

पन्द्रहवा नोरोज।

१५ रवीउस्सानी शुक्रवार सन् १०२८ (चैत्र वदी २) को १२॥ घडी अर्थात् ५ घण्टे दिन व्यतीत होने पर सूर्य्य मेषराशिमे आया। जहांगीर बादशाहके राज्याभिषेकका पन्द्रहवा वर्ष आरम्भ हुआ।

फरवरदीन महीना।

२ शनिवार (चैत्र वदी ३) को साढे चार कोस कूच होकर गाव वकरमें डेरे लगे। इस रास्तेमें पहाडिया तो न थी पर पत्थर बहुत थे। मोर, कालेतीतर और लगूर भी थे। बादशाह लिखता है— "जो पशु पक्षी गर्म देशोंमें रहते है वह ठडे देशोंमे भी रह सकते हे। यहांसे कशमीर तक जहा कही भट नदीके तटपर होकर रास्ता गया है उसके दोनो ओर पहाड ह और पानी घाटेसे होकर अति वेगसे बहता है। हाथी चाहे कितनाही प्रचण्ड हो पाव नही जमा सकता। तुरन्त लुढककर बह जाता हे। पानीमे रहनेवाले कुत्ते भी यहा हे।"

३ रविवार (चैत्र वदी ४) को बादशाह साढे चार कोस चलकर गाव मोसरामें ठहरा। रातको वाराम्रूलाके व्यापारियोने आकर भेट की। बादशाहने बारामूलाकी व्युत्पत्ति पूछी तो अर्ज की गई कि हिन्दीभाषामें वाराह नाम सूअरका और मूला नाम स्थानका हे अर्थात् वाराहका स्थान। हिन्दुओंके अवतारोंमेंसे एक अवतार वाराह भी हुआ है। वाराहमूलासे बारामूला बना।

४ सोमवार (चैत्र वदी ५) को २॥ कोस पर भोलवासमें सवारी ठहरी। आगे पहाडी रास्ता बहुत सङ्कीर्ण बताया जाता था इस

लिये बादशाहने मोतमिदखांको हुक्म दिया कि खासखास और दूई सेवकोंके सिवा और किसीको सवारीमें मत आने दो और लशकरको भी एक मंजिल पीछे लाया करो।

मोतमिदखाके डेरेमें उतरना—बादशाह लिखता है—"मोतमिदखाने अपना डेरा इस हुक्मसे पहलेही आगे भेज दिया था और फिर अपने आदमियोंको लिखा कि मेरे वास्ते ऐसा हुक्म है तुम जहां पहुंचे हो वहीं ठहर जाओ। यह चिट्ठी उसके भाइयोंको भोलवास्की पहाडीके नीचे मिली। उन्होंने वहीं अपना डेरा खडाकर दिया। जब बादशाही लशकर उसकी मंजिल(१)के पास पहुंचा तो बर्फ और मेह बरसने लगा। अभी एक मैदान भर रास्ता भी न कटा था कि उसका डेरा दिखाई दिया। मैं इसको भगवत्कृपा समझकर बेगमों सहित उस डेरेमें उतर पडा। जाडे बर्फ और मेह से कष्टसे बचा। मोतमिदखांके भाइयोंने मेरे हुक्मसे उसके बुलाने को आदमी दौडाये। जब यह बधाई उसे पहुंची उस समय हाथियों और डेरोंकी भीडसे घाटी पर रास्ता बन्द होरहा था। तोभी वह पैदल दो घडीमें २॥ कोस चलकर बडे हर्ष और आल्हादसे सेवामें पहुंचा और जो कुछ उसके पास धन माल हाथी घोडे आदि थे वह सब लिखकर 'पायन्दाज'के तौर पर मेरे अर्पण किया। पर मैंने सब उसीको बख्श दिया और फरमाया—हमारी चीजोंका हमारे सन्निकट कुछ आदर नहीं। हम तो भक्तिके मरतबे मालके गाहक हैं। यह योग उसके सद्भाव और भाग्यसे बना है कि मुझसा बादशाह बेगमों सहित एक रात दिन सुखसे उसके घरमें रहे और उसे अपने सह योगियोंमें यह प्रतिष्ठा प्राप्त हो।

५ मंगलवार (चैत बदी ६) को बादशाह दो कोस चलकर गांव च्ढाईमें ठहरा और जो वस्त्र पहने हुए था वह सब मोतमिदखांको प्रदान किये और उसका मनसब भी बढ़ाकर डेढ हजारी डेढ हजार सवारका कर दिया।

(१) डेरा, पडाव, उतारा।

कश्मीरकी सीमा—भोलवासकी घाटीसे आगे काश्मीर है। यहीं यूसुफखां कश्मीरीका बेटा याकूब स्वर्गवासी श्रीमानकी विजयिनी सेनासे लड़ा था जिसका नायक राजा मानसिंहका बाप भगवान दास(१) था।

मिरजा रुस्तमका बेटा सुहराबखां तैराकीके घमण्डसे भट नदी में कूदकर डूब मरा। बापको बेटेसे बहुत मोह था इसलिये अति व्याकुल होकर सकुटुम्ब शोकसूचक वस्त्र पहने पुणिचके रास्तेसे बादशाहकी सेवामें उपस्थित हुआ। बादशाह लिखता है—"उसकी माका भी बुरा हाल था। मिरजाके और बेटे हैं लेकिन इससे उस को हार्दिक प्रेम था। यह २६ वर्षका था। बन्दूक चलानेमें अपने बापका उत्तम शिष्य था। हाथीकी सवारी और सिपाहगरी खूब जानता था। गुजरातकी यात्रामें मेरे हाथीके आगे आगे चला करता था।

६ बुधवार (चैत्र बदी ७) को ३ कोस पर गांव बन्दमें डेरे हुए।

क़ारमती घाटी—७ गुरुवार (चैत्र बदी ८) को क़ारमती घाटी से उतरकर गांव वच्छमें सवारी ठहरी। यह मंजिल ४॥ कोसकी हुई। बादशाह लिखता है—"क़ारमती विकट घाटी है। इस मार्गकी अन्तिम घाटी यही है।

८ भृगुवार (चैत्र वदी ९) को ४ कोस पर गांव बलतारमें डेरे हुए।

विनोदघाटी—विनोदघाटी इस रास्तेमें कुछ चौड़ी थी जिसमें बादशाहने नरगिस बनफशा और दूसरे अद्भुतफूल जो कश्मीरमेंही होते हैं बहुतसे खिले देखे। उनमें एकफूल विचित्र आकृतिका था। जिसमें ५।६ फूल नारंगी रंगके औंधे फूले हुए था और उन फूलोंमेंसे

(१) भगवन्तदास—बादशाहने भूलसे सब जगह भगवन्तदासको भगवानदास लिखा है। भगवानदास भगवन्तदासका छोटा भाई था। जयपुरकी तवारीख और अकबरनामेसे यह बात अच्छी तरह जानी जासकती है।

रंग पत्ते निकले हुए थे जैसे कि अनन्नासमें होते हैं। इस फूलका नाम लोलाशिक है। दूसरा फल पोईके समान था उसके आसपास छोटे छोटे सफेद, नीले और लाल फूल खिल रहे थे जिनमें पोले छीटे बहुत सुन्दर फबते थे। इसका नाम लटापोश था। पीले रंग का अर्गवान भी उस रास्तेमें बहुत था।

बादशाह लिखता है—"किस किसको लिखें और कहांतक लिखें। जिस फूलमें कुछ विशेषता होती है लिखी जाती है। इस रास्तेमें मार्ग परसे एक बडी चादर पानीकी ऊंचे स्थानसे गिरती है। ऐसी छटाकी चादर रास्ते भरमें और नहीं देखी गई। मैंने कुछ क्षण ठहरकर एक ऊंची जगहसे उसकी शोभा देखकर आंखों और हृदयको ठण्डा किया।"

बारामूला—८ शनिवार (चैत्र बदी १०) को ४। कोसका कूच होकर बारामूलामें सवारी ठहरी। बारामूला(१) कशमीरके प्रधान नगरोंमेंसे है। यहांसे शहर (श्रीनगर) १४ कोस है। यह भट नदीके ऊपर है। बहुतसे कशमीरी व्यापारियोंने इस नगरमें निवास करके नदीके ऊपर घर और मसजिदें बनाली हैं और सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करते हैं। बादशाहके हुक्मसे बहुतसी नावें सजाकर यहां रखी गई थीं और बादशाहके प्रवेशका मुहूर्त सोमवारको था इसलिये वह १० रविवार (चैत्र सुदी ११) के दोपहरको शहाबुद्दीनपुरमें जाकर ठहर गया। यहां कशमीरके हाकिम दिलावरखाने किश्तवारसे पहुंचकर चौखट चूमनेकी प्रतिष्ठा प्राप्त की और बादशाहकी विविध कृपाओंसे अलंकृत हुआ।

किश्तवारकी फतह—बादशाह लिखता है—"किश्तवार कशमीरके दक्षिणमें है। कशमीरकी बस्तीसे किश्तवारके मुख्य स्थान तक जहां हाकिम रहता है ६० कोसकी दूरी निकली।"

(१) २१ नवम्बर १८०४ को इसी जगह पर लार्ड साहब और महाराजा काश्मीरके मिलापकी खबर अखबारोंमें देखी गई।

१० शहरेवर सन् १४ (भादों वदी ८ सं० १६७६) को दिलावर खांने १०००० जंगी सवारों और पैदलोंसे किश्तवार जीतनेका विचार करके अपने बेटे हसन और गुर्दअली मीरबहरको शहर और सीमाओंकी रखवाली पर रखा। अपने भाई हैवतको कुछ सेना सहित कश्मीरके दाविदार(१) गौहरचक तथा ऐवाचककी देख भालके लिये जो किश्तवारमें थे पीरपंचाल घाटीके पास देसू नाम स्थानमें छोड़ा। वहीं सेनाओंके व्यूह रचकर आप तो कुछ कटक सहित संगीपुरके रास्तेसे रवाने हुआ और अपने सुपात्र पुत्र जलालको नसरुल्लह अरब, अलीमुल्क कश्मीरी, और दूसरे जहांगीरी सेवकोंके साथ अन्य मार्गसे भेजा। बड़े बेटे जमाल को कुछ वीरों सहित अपनी सेनाका हिरावल करके ऐसीही दो दूसरी फौजोंको अपनी दाईं और बाईं ओर चलनेका हुक्म दिया। आगे घोड़ोंका रास्ता नहीं था इसलिये अपने कई घोड़े रख लिये और सिपाहियोंके घोड़े कश्मीरको लौटा दिये। फिर सब पहाड़ पर पैदल चढ़े और काफिरोंसे लड़ते भिड़ते नरकोट तक जापहुंचे। वह एक सुदृढ़ स्थान शत्रुका था। वहां जलाल और जमालकी सेनाएं भी दूसरे रास्तोंसे चलकर आमिलीं। शत्रु सामनेसे भाग गये। बादशाही लोग ऊंचे नीचे रास्तोंको वीरतासे पार करके मर्व नदी पर पहुंचे। वहां पानी पर फिर लड़ाईकी आग भड़की और ऐवाचक बहुतसे शत्रुओंमें घिरके मारा गया। इससे राजा हिम्मत हारकर भागा और पुलसे उतर कर नदीके पार भिण्डरकोटमें ठहरा। बादशाही वीर भी पुलसे उतरने लगे। पुलपर बड़ी लड़ाई हुई और बहुत आदमी काम आये। बाकी सेना २० दिनतक निरन्तर नदीसे उतरनेका परिश्रम करती रही। परन्तु काफिर लोगोंने लड़ने और रोकनेमें तत्पर रहकर उसे उतरने न दिया। दिलावरखां थानोंको स्थिर और रसदका प्रबन्धकरके सेना से आमिला। तब राजाने छलसे दूत उसके पास भेजकर

(१) पहले कश्मीरमें शकजातिके बादशाहोंका राज्य था।

कहलाया कि मैं अपने भाईको मेट सहित दरगाहमें भेजता हूं, जब मेरे अपराध क्षमा होजायेंगे और मेरे मनका भय जाता रहेगा तो मैं भी वहां जाकर चौखट चूमगा। परन्तु दिलावरखांने इसकी बात न सुनी। उस अवसरको वृथा न खोकर उसने तो लौटा दिया और नदीसे उतरनेका विचार किया। उसका बडा बेटा हमान कुछ सिपाहियोंके साथ तैर कर पार होगया। इधर शत्रुओं से दारुण समर हुआ। शत्रु अन्तमें हारकर भाग निकले और पुल को तोड गये। बादशाही बन्दोंने पुल फिर बनाकर बाकी लशकर भी उतार लिया और भिडरकोटमें जाकर छावनी डाली। इस नदीसे चिनाब नदी जहां शत्रुओंका अड्डा था दो तीरके फासिलेपर थी। यहां एक ऊंचा पहाड था जिसमें होकर जाना बहुत कठिन था। पहाडोंके गाने जानेके लिये मोटे मोटे रस्से बंधे थे जिनमें हाथ हाथ भरकी लकडियां पास पास लगी हुई थीं। एक सिरा इन रस्सोंका पहाडकी चोटी पर और दूसरा नदीके तटपर गडा था। इन रस्सों पर गज भर ऊंचा एक रस्सा और था। प्यादे पांव तो उन लकडियों पर धरते थे और हाथसे ऊपरके रस्सेको पकड लेते थे। इस प्रकार पहाडसे नीचे उतर कर नदी के पार होते थे। पहाडी लोग इसको जम्पा कहते हैं। जहां कहीं जम्पा बांध सकनेका भय था वहां वह लोग बन्दूकची तीरन्दाज और कटारे आदमी रखकर निश्चिन्त हो बैठे थे।

बहादुरखांने जाले (१) बनाकर एक रात ८० वीरोंको उनमें बिठाया और पानीसे उतरना चाहा। परन्तु पानी बडे वेगसे बहता था इसलिये जाले बह गये। ६८ वीर डूब गये और १० तैर कर निकल आये। दो उधर जाकर शत्रुओंके हाथ पडगये। इस तरह दिलावरखां ४ महीने १० दिन तक भिडरकोटमें रहकर नदीसे उतरनेका यत्न करता रहा परन्तु कुछ न हुआ। निदान एक जमीदारके रस्ता बतानेसे एक ऐसी जगह पर जम्पा बांधा

(१) नाव।

गया जहांका सन्देह शत्रुओंको न था और दिलावरखांका बेटा जलाल २०० पठानों और बादशाही बन्दोंको लेकर रातके समय नदीसे कुशलपूर्वक पार होगया। तड़केही राजाके सिर पर पहुंच कर रणसींगा वजाने लगा। राजाके नौकर जो कुछ सोते और कुछ जागते थे घबराकर निकले। उनमेंसे कुछ तो मारे गये और बाकी भाग निकले। उस गड़बड़में एक सिपाही राजा तक जापहुंचा और तलवार मारने लगा। राजा चिल्लाया कि मैं राजा हूं मुझे जीता दिलावरखांके पास ले चल। यह सुनकर सिपाहियोंने राजा को बांध लिया। राजाके पकड़े जातेही उसके भाई बन्धु सब इधर उधर छिप गये। दिलावरखां विजय घोष सुनतेही ईश्वरका धन्यवाद करके नदीसे उतरा और उस मुल्कको राजधानी मंडल बदर में जो नदीसे ३ कोस थी जापहुंचा।

जम्मूके राजा संग्राम और राजा बासूके बेटे सूरजमलकी बेटियां इस राजाको ब्याही थीं संग्रामकी बेटीसे बेटे भी हुए थे। फतह होनेसे पहले उसने अपना कुटुम्ब जसवां(१)के राजा और दूसरे जमींदारोंके पास भेज दिया था।

दिलावरखां बादशाहकी सवारीके पास आपहुंचने पर, बादशाहके हुक्मसे राजाको लेकर चौखट चूमनेको रवाना हुआ और नसरुल्लह अरबको बहुतसे सवार और पैदलों सहित उस देशके आबते पर छोड़ गया।

किश्तवारका वृत्तान्त—बादशाह लिखता है—"किश्तवारमें गेहूं जव मसूर और उड़द बहुत उपजते हैं। पर शाली (धान) काश्मीर से बहुत कम होता है। यहांकी केसर कश्मीरकी केसरसे उत्तम है और खरबूजा काश्मीर कासाही होता है। अंगूर शफ्तालू जरटालू और अमरूद खट्टे होते हैं। यदि उनकी सम्हालकी जाय तो शायद अच्छे होनेलगें"।

---

(१) जसवां एक छोटासा राज्य कांगड़ेके जिलेमें हैं।

काश्मीरके हाकिमोंके रुपयेका नाम सहसी था। वह १॥ सहसी यहां एक रुपयेमें लेते हैं। १५ सहसी जो दस रुपयेकी होती है लेन देनमें बादशाही एक मोहरकी गिनी जाती हैं। हिन्दुस्तानके दो सेरको यहां एक मन कहते हैं। यहां यह रीति चली है कि राजा खेतीका कुछ करले। वह घर पीछे ६ सल्मिया लेता है जो ४) की होती है। कुल कैसर बहुतसे राजपूतों और ७०० तोपचियोंकी तनखाहमें लगा रखी है जो पुराने नौकर हैं केसरकी बिक्री पर खरीदारसे एक मन (टोमेर) पीछे राजा ४) लेता है। राजाकी बड़ी आमदनी दण्डसे होती है जो थोड़ेसे अप राधपर भी बहुत सा लेलिया जाता है। जिस मनुष्यको धन सम्पत्ति से सम्पन्न देखते हैं किसी न किसी बहानेसे उसका सर्वस्व छीनलेते हैं। राजाकी आमदनी सब मिलाकर एक लाख रुपयेके लग-भग है। काम पड़नेपर ६।७ सहस्र पैदल इकट्ठे होजाते हैं घोड़े बहुत कम हैं। राजा और उसके सरदारोंके पास कोई ५० घोड़े हों तो हों। एक वर्षकी उपज दिवानखालसाके इनाममें दीगई है जो अकबरनामे जहांगीरी जाबते (प्रबन्ध) के अनुसार हजारे जात हजार सवारकी जागीरके बराबर होगी। जब दीवानलोग निश्चय करके जागीरदारकी तनख्वाहमें जमा लगावेंगे तब यथार्थ रूपसे विदित होगा कि कितनी आमदनीकी जगह है।"

प्रवेश—११चन्द्रवार (चैत्रबदी १२) को दोपहर दिन चढे बादशाहने आनन्द मङ्गल पूर्वक नये राजभवनमें प्रवेश किया जो तालके तटपर बना था। स्वर्गीय बादशाहके आदेशसे एक पक्का किला चूने पत्थरका बनाया गया था उसकी एक भुजा बननी बाकी थी। उसके विषयमें बादशाहने पीछेसे बनानेको लिखा है।

काश्मीरकी दूरी—हसन अब्दालसे काश्मीर इस रास्ते होकर७५ कोस थी। ७५ दिन अर्थात् १८ कूच और ६ विश्राममें यह सफर पूरा हुआ। आगरेसे यहां तक ३७६ कोस बादशाह १०२ कूच और ६६ मुकाम अर्थात् १६८ दिनोंमें पहुंचा था। साधारण स्थल मार्गसे

काश्मीर ३०४॥ कोस थी।

किश्तवारका राज्य—१२ मंगलवार (चैतबदी १३) को दिलावरखांने बादशाहके हुकमसे किश्तवारके कैदीराजाको लाकर राजद्वारकी भूमि चूमी। बादशाह लिखता है—"राजा कुरूप नहीं है। आदमी भी सभ्य जानपड़ता है। हिन्दुस्तानियों कैसे वस्त्र पहने है। हिन्दी और काश्मीरी बोलता है। मैंने कहा अपराधी होने पर भी जो तू अपने बालबच्चोंको सेवामें लेआवेगा तो कैदसे छूटकर इस विशालराज्यकी छत्रछायामें सुखसे रहेगा, नहीं तो हिन्दुस्थानके किसी किलेमें जिन्दगी भर कैद रहेगा। उसने विनयकी कि बाल बच्चोंको सेवामें लेआऊंगा और जैसी आज्ञा होगी पालन करूंगा।"

काश्मीरकी कथा—बादशाह लिखता है—काश्मीर चौथी इकलीममें है। इसकी चौड़ाई मध्यरेखासे ३५ और लम्बाई सफेद-टापुओंसे १०५ अंश है। प्राचीन समयसे यह देश राजोंके अधिकार में था जिनका राज्य चार हजार वर्ष रहा। उनके नाम और वृत्तान्त राजतरंगिणीमें सविस्तर लिखे हैं। उसका उल्था स्वर्गवासी श्रीमानकी आज्ञानुसार हिन्दीसे फारसीमें होचुका है। सन ७१२ (१) में मुसलमानी धर्मका प्रकाश हुआ। ३२ मुसलमानोंने १७२ वर्ष इसदेशको भोगा। फिर सन ९९४ (२) में स्वर्गवासी श्रीमानने इसको विजय किया। तबसे ३५ वर्ष हुए यह हमारे कर्मचारियोंके अधिकारमें चला आता है।

काश्मीर लम्बाईमें भोलबासकी घाटीसे करोतर तक ५६ कोस जहांगीरी है और चोड़ाईमें २७ कोससे अधिक तथा १० से न्यून नहीं हैं। अबुलफजलने अकबरनामेमें अटकलसे लिखा है कि काश्मीरकी लम्बाई कृष्णगंगासे करोतर तक १२० कोस है और चौड़ाई १० कोससे २५ तक। मैंने निश्चय करनेके लिये कई विश्वास योग्य कार्य कुशल मनुष्योंको कहा कि लम्बाई चौड़ाईको जरीबसे

(१) संवत् १३६८।

(२) संवत् १६४२+४३।

मापने तो ठीक परिमाण लिखा जावे। शेखने जिसको १२० कोस लिखा था वह ६७ कोस निकला। हर देशकी सीमा वहीं होती है जहां तक उसकी बोली बोली जाय। इसलिये भोलबाससे जो कश्मीरसे ११ कोसईधर है कश्मीरकी सीमा ठहराई गई। इस लेखेसे उसकी लम्बाई ५६ कोस हुई। चौड़ाईमें २ कोससे अधिक अन्तर नहीं निकला। मेरे राज्यमें जो कोस प्रचलित है वह उसी मापका है जो स्वर्गीय श्रीमानने बांधा था। प्रत्येक कोस ५००० गजका है। यह गज मुसलमानी २ गजका है। मुसलमानी गज २४ अंगुलका होता है। जहां कहीं कोस या गजका नाम आवे वहां यही प्रचलित कोस और गज समझना चाहिये।

श्रीनगर—शहरका नाम श्रीनगर है। भट नदी उसकी बस्ती के बीचमें होकर बहती है। उसके निकासको वैरनाग कहते हैं। वेरनाग शहरसे १४ कोस दक्षिणमें है। मेरे हुक्मसे उसपर एक भवन बनायागया और एक बाग लगायागया है। शहरमें लकड़ी और पत्थरके बहुत पक्के ४ पुल बने हैं। उनपर होकर लोग आते जाते हैं। पुलको इस देशमें कदल कहते हैं। शहरमें एक बहुत बड़ी मसजिद सुलतान सिकन्दरकी बनाई हुई है जो सन् ७९५ (१) में बनी थी। परन्तु बहुत वर्षों पीछे जलगई थी। सुलतान हुसेनने फिर बनवाई। अभी बनही रही थी कि सुल्तानके शरीरका स्तम्भ गिरगया। निदान सन ९०९ (२) में उसके वजीर इब्राहीम बाकरीने पूरीकी उसे अबतक १२० बरस बीते वह अभी विद्यमान है। लम्बाई महराबसे पूर्वकी भीत तक १४५ और चौड़ाई १४४ गज है। ४ ताक हैं। दालाना और स्तम्भ बढ़िया कारीगरीके बेल बूटे काटे हुए हैं। सच यह कि कश्मीरके हाकिमोंकी कोई निशानी इससे बढ़कर नहीं रही है। मीरसय्यदअली हमदानी कुछ दिनो यहां रहे थे उनकी भी

(१) संवत् १४४८—५०।

(२) संवत् १५६०—६१।

खानकाह (मठ) है। शहरके पास २ ताल हैं जो सालभर पानीसे भरे रहते हैं। उनके जलका खाद नहीं बिगड़ता है। मनुष्योंका आना जाना तथा अनाज और ईंधनका लादना लेजाना नावों द्वारा होता है। शहर और परगनोंमें ५७०० नावें हैं ७४०० केवट गिननेमें आये हैं।"

कश्मीरमें ३० परगने हैं उसके२ विभाग माने हुए हैं। नदीके ऊपरवालेको आमराज और नीचेवालेको कामराज कहते हैं। जमीनकी जवती, और लेनदेनमें चांदी सोनेका व्यवहार नहीं है और जो है भी तो बहुत थोड़ा है। सब महसूलों और धनधान्यका हिसाब शालीकी खरवार (गौनों) से करते हैं। एक गौन ३ मन ८ सेरकी वर्त्तमान तोलसे होती है। कश्मीरी दोसेरको एक मन मानते हैं। ८ सेरके चार मनको एक तक कहते हैं। कश्मीरके देशकी जमा ३०६३०५० खरवार और ११ तर्क है जो नकदीके हिसावसे ७४६७०००० (१) दामकी होती है जो इस समयके जाबतेसे ८५०० सवारोंकी जगह है।"

कश्मीरमें पैठना कठिन है। उत्तम मार्ग बंभर और पगलीका है। यद्यपि बंभरका रास्ता पासका है परन्तु जो कोई कश्मीरकी बहार देखना चाहे तो पगलीके रास्तेसे देख सकता है। क्योंकि दूसरे रस्ते इस ऋतुमें वर्फसे पटजाते हैं।"

यदि कश्मीरकी प्रशंसाकी जाय तो बड़े बड़े ग्रन्थ लिखने पड़ें। इसलिये उसके स्वरूप और विशेषताका वर्णन थोड़ेमें किया जाता है।

कश्मीर एक सदा बहार बाग है या लोहेकी दीवारका एक किला है। बादशाहोंके वास्ते विलास बढानेवाला एक उपवन है और फकीरोंके लिये मनोहर कुंज। सुन्दर रमने और सुरम्य झरने यहां इतने हैं कि गिने नहीं जासकते। नहरों और नदियोंका पार

(१) १७६६७५०) रुपये।

नली है। जहांतक नजर जाती है हरियाली दिखाई देती है या बहता जल।

फूल—गुलाब, बनफशा, और नरगिस यहां आपही उगते हैं। जंगलोंमें नानाप्रकारके फूल और पौदे बेशुमार हैं। बहारके दिनोंमें पहाड़ और जंगल फूलोंसे लदजाते हैं। घरोंके द्वार, दीवारों आंगन, और छतोंमें भी फूल खिलते हैं। रमनों और बनोंका तो कहनाही क्या।"

उत्तम फूल बादाम और शफतालूके होते हैं। पहाड़ोंके बाहर तो पहली असफंदार (फाल्गुण) से ही फूल खिलने लगते हैं और कशमीरमें फरवरदीनके लगतेही। शहरके बागोंमें उससंपीनें की नदी दसवींसे फूलोंका अन्त, नीली चमेलीके प्रारंभसे मिला हुआ होता है। मैंने पिताके साथ केसरकी क्यारियों और पतझड़ ऋतुकी शोभा देखी है। अभी बहारका यौवन है। पतझड़की छटा भी उसके अवसर पर देखी जायगी।

"कशमीरमें घर सब लकड़ियोंके होते हैं। यह दो खंड३ खंड४ खंडके बनते हैं। छतोंको मट्टीसे पाटकर चोगाशी जातिके लालाके पौदे उसपर लगाते हैं। यह बहारमें मौसिमसे फूला करते हैं और बहुत भले लगते हैं। यह कशमीरियोंकोही कारीगरी है। अब की साल दौलतखानेके बगीचे और जुमामसजिदकी छतमें लाला खूब फूला था। नीली चमेली बागोंमें बहुत है। सफेद चमेलीके सिवा जिसमें सुगन्ध होती है चंदनिया रंगकी चमेली होती है। उसमें बड़ी सुगन्ध होती है। यह कशमीरमेंही होती है। गुलाब कई जातिका देखागया। सबमें सुगन्ध होती है। फिर एक फूल चंदनके रंगका गुलाबकीही किस्मसे है जिसकी महक बहुत मीठी और भीनी होती है। उसका पौदा भी गुलाबसे मिलता हुआ होता है। सोसन दो प्रकारकी होती है। एक वह जो बागोंमें फूलती है। वह डंडही और हरेरंगकी होती है। दूसरी जंगली है। उसका रंग तो मंदा है परन्तु सुगंधित है। जाफरीका फूल

बड़ा और सौरभसम्पन्न होता है। उसका बूटा मनुष्यसे ऊंचा होजाता है। पर जब कभी वह बढ़कर फूलता है तो एक कीड़ा उत्पन्न होकर उसके फूलों पर मकड़ीका सा जाला तनता है और उसे नष्ट कर देता है। इस वर्ष भी ऐसाही हुआ।"

"फूल जो काश्मीरके इलाकोंमें देखे उनकी गिनती नहीं होसकती। उनमेंसे १०० से अधिक प्रकारके फूलोंका चित्र उस्ताद मनसूरने खेंचा।"

मेवे—"स्वर्गवासी श्रीमानके शासनसे पहले शाहआलू काश्मीर में नहीं होता था। मुहम्मदकुली अफशार(१) ने काबुलसे लाकर उसका पैवंद लगया। तबसे अबतक १०।१५ पौदे फले हैं। पैवंदी जर्दालूके भी पहले गिन्तीके वृक्ष थे। जबसे उसने पैवंद लगानेकी प्रथा इस प्रदेशमें चलाई तबसे बहुत होगये हैं। वास्तवमें काश्मीरका जर्दालू अच्छा होताहै। काबुलके बाग शहरआरामें मिरजाई नाम एक वृक्ष था जिसके फलसे बढ़कर कोई अच्छा जर्दालू नहीं खायागया था। काश्मीरके बागोंमें वैसे कई पेड़ हैं। यहां नाशपाती बहुत बढ़िया होती है, काबुल तथा बदखशांसे अच्छी और समरकंदकी नाशपातीके बराबर। काश्मीरका सेव विख्यात है। अमरूद साधारण होता है अंगूर बहुत, पर बहुधा खट्टा और छोटा। अनार उतना नहीं है। तरबूज अति उत्तम होता है। खरबूजा बहुत मीठा और नरम। परन्तु बहुधा ऐसा होता है कि जब पकनेपर आता है तो उसमें कीड़े पड़जाते हैं और बिगाड़ देते हैं। यदि इस बाधासे बचजाय तो बहुतही श्रेष्ठ हो। शहतूत नहीं होता है। तूत सब जंगलोंमें फैला हुआ है। तूतकी जड़से अंगूरकी बेलें निकलकर ऊपर चढ़जाती हैं। यह तूत खाने योग्य नहीं है। परन्तु उन कई वृक्षोंके तूत खानेके योग्य हैं जो बागोंमें हैं और जिनमें पैवन्द लगाया जाता है। तूतके पत्ते पीला(२) नामके

(१) मुगलोंकी एक जाति।

(२) रेशमका कीड़ा।

कीड़ोंके काम आते हैं। इन कीड़ोंके बीज (अंडे) काट और टीटके फूलोंमेंसे लाये जाते हैं।"

शराब और सिरका—"शराब और सिरका बहुत है परन्तु शराब खट्टी और बुरी। जब कई प्याले पिये जाते हैं तब कुछ गर्मी सिरमें आती है। सिरकेका अचार बनाते हैं। कश्मीरका लहसन अच्छा होता है इसलिये सब अचारोंमें लहसनका अचार अच्छा गिना जाता है।"

अनाज—"चनेके सिवा और सब अनाज होते हैं। जो चने बोये भी तो पहले वर्ष होजाते हैं पर दूसरे वर्ष अच्छे नहीं होते। तीसरे वर्ष मूंगके समान छोटे होजाते हैं। चावल सबसे अधिक होते हैं ३ भाग चावल और एक भाग और सब अनाज होते होंगे। कश्मीरियोंकी खुराक चावलही है परन्तु चावल अच्छे नहीं होते। चावलका खुश्का पकाते हैं ठंडाकरके खाते हैं उसको भत्त कहते हैं। गर्म खानेकी रीति नहीं है। दरिद्री आदमी तो रातके वास्ते भी कुछ भत्त रख छोड़ते हैं और दूसरेदिन भी कुछ खाते हैं। नमक हिन्दुस्तानसे लाते हैं। भत्तमें नमक डालनेकी प्रथा नहीं है। साग पानीमें उबालते हैं और स्वाद पलटनेके लिये उसमें कुछ नमक डालकर भत्तके साथ खाते हैं। जो लोग स्वादी होते हैं वह कुछ अखरोटका तेल सागमें डाल लेते हैं। अखरोटका तेल शीघ्रही कड़वा और बेस्वाद होजाता है। गायका घी भी ताजा ताजा मक्खनसे निकालकर सागमें डालते हैं और उसको कश्मीरी भाषामें सदापाक कहते हैं। यहांकी हवा ठंडी और सीली है जिससे घी तीन चार दिन पीछेही बिगड़ जाता है। यहां भैंस नहीं होती हैं, गाय भी छोटी और दुबली होती है। गेहूं छोटा और कम मेदका होता है रोटी खानेकी रीति नहीं है।"

पशु पक्षी—"बकरी बिना दुंबेकी पहाड़ी होती है हिन्दुस्तानी उसको हिन्दू कहते हैं। उसका मांस कोमल और स्वाद होता है। मुर्गा कुज मुर्गाबी और सरिये वगैरा बहुत होते हैं। मच्छी

सब प्रकारकी पोलकदार और बिना पोलककी होती हे, परन्तु बुरी ।"

कपडे—"कपडे पशमीने अर्थात् ऊनके होते है। स्त्री पुरुष ऊनका कुरता पहनते हैं उसको पट्टू वाहते है। उनका यह विश्वास हे कि जो पट्टू नही पहने तो वायु लग जावे और उसके बिना भोजन पचना भी सम्भव नही हे। काश्मीरका शाल जिसका नाम स्वर्गवासो श्रीमानने परमनरम रक्खा है स्वय इतना प्रसिद्ध होचुका हे कि उसकी तारीफकी कुछ आवश्यकता नही है। दूसरे नम्बर पर थुरमा हे जो शालसे मोटा और मुलायम होता है। फिर दरमा है, गधे और कुत्तेकी भूल जैसा, उसको विछौने पर डालते है। शालके सिवा और सब ऊनी कपडे तिब्बतमे अच्छे होते हे। शालकी ऊन भी तिब्बतसे आती हे। परन्तु वहा उसको नही बनासकते हे। शालकी ऊन जिस बकरेसे लीजाती है वह तिब्बतमेंही होते है। काश्मीरमें शालकी ऊनसे पट्टू भी बुनते हैं। दोशालोको तूमकर भी बनात जैसी बना लेते है। यह बरसाती कपडे बनानेके लिये बुरी नही है।"

मनुष्य—"काश्मीरी सिर मुडाते है। साधारण स्त्रियोमे अच्छे और धोये हुए कपडे पहननेकी रीति नही है। पट्टूका कुरता ३।४ वर्षतक पहना करती है। कोरे पट्टूको मसलकर कुरता सीती हे फटजानेतक भी उसके पानी नही लगता। इजार नही पहनती। लम्बा और चौडा कुरता जो सिरसे लेकर पावो तक पडा रहता है पहना जाता हे। बहुधा घर पानीके ऊपरही है तो भी पानीकी एक बून्द उनके बदनसे नही लगती। जेसी भीतरसे मैली हे वैसीही बाहरसे भी हे।"

कारीगरी—"मिरजा हैदरके समयमे कारीगर अच्छे हुए है सगीतक भी शोभा बढी थी। कमानचा, शसुरी, जन्तर कानून, चग, और डफका प्रचार हुआ। पहले कमानचे जैसा एक बाजा था राग काश्मीरी बोली और हिन्दी स्वरोंमे

गाये जाते थे, सो भी दो तीन स्वरोंसे ही। बहुधा तो एकही स्वर उतारते थे। सच यह है कि काश्मीरके सुधारमें मिरजा हैदरने बड़ा श्रम किया।"

सवारी—स्वर्गवासी श्रीमानका राज्य होनेसे पहले यहांके आदमी गोट (टट्टू) परही चढ़ते थे, बड़े घोड़े नहीं होते थे। परन्तु बाहरसे इराकी और तुरकी घोड़े हाकिमोंके वास्ते सौगातमें लाते थे। गोट ऐसा टट्टू होता है कि उसकी चारों कांधे धरती से कुछही ऊपर रहती है। हिन्दुस्थानके सब पहाड़ोंमें बहुत मिलता है। बहुधा अड़ियल और मट्टा होता है। जब यह ईश्वर रचित उपवन उक्त श्रीमानकी राजलक्ष्मी और सुशिक्षासे शोभायमान हुआ तो बहुतसे घरानोंको इस सूबेमें जागीरें मिलीं। इराकी और तुरकी घोड़े और घोड़ियां बच्चे लेनेके लिये उन्हें सौंपी गई और सिपाहियोंने स्वयं प्रबन्ध किया। थोड़ी ही अवधिमें घोड़े उत्पन्न होगये। अब जंगलीभी घोड़े २००) और ३००)तक बिकते हैं। कभी कोई १०००) का भी निकल जाता है।

धर्म—"इस देशमें जो व्यापारी और कारीगर हैं उनमें बहुधा सुन्नी मुसलमान हैं और सिपाही शीया इमामिया हैं। कुछ लोग नूरबख्शी हैं कुछ फकीर हैं जिनको ऋषि कहते हैं। उनमें कुछ विद्या और ज्ञान तो नहीं परन्तु सीधे सादे हैं। किसीको बुरा नहीं कहते हैं न कुछ मांगते हैं न कहीं जाते हैं। मांस नहीं खाते ब्याह नहीं करते, सदा जंगलमें मेवोंके वृक्ष इस अभिप्रायसे लगाया करते हैं कि लोगोंका उपकार हो। आप अपना कुछ स्वार्थ नहीं करते। इन २००० आदमी होंगे। ब्राह्मण बहुत हैं जो अनादिकालसे इस देशमें रहते आये हैं। काश्मीरी बोली बोलते हैं। देखनेमें तो मुसलमानोंसे अलग नहीं जाने जाते, लेकिन संस्कृत भाषाके ग्रन्थ रखते और पढ़ते हैं और मूर्त्ति पूजाकी जो विधि है उसका विधान करते हैं। संस्कृत एक भाषा है जिसमें हिन्दुस्थानके पण्डित ग्रन्थ रचते हैं और उसको बहुत आदर देते हैं।"

मन्दिर—"बडे बडे मन्दिर जो मुसल्मानी फैलनेसे पहले बने थे वैसेही खडे हैं। यह सब पत्थरके हैं नीवसे लेकर छततक छिले हुए बडे बडे पत्थर तीस तीस और चालीस चालीस मनके नीचे ऊपर रखे हुए हैं।"

पहाड—शहरके पासही एक पहाडी है। जिसको कोहेमारा और हरी पर्वत भी कहते हैं। उसके पूर्व जडल नाम पहाड है। उसका गिर्दाव कुछ ऊपर ६॥ कोसका नापागया है। बैकुंठवासी श्रीमानने हुक्म दिया था कि यहां एक सुदृढ दुर्ग चूने और पत्थर का बनाया जावे। वह मेरे राज्यमें सम्पूर्ण होनेवाला है। वह पहाडी उसके बीचमें आगई है। किलेका कोट उसके चोफेर फिर गया है। वह उस तलावमें भी जामिला है जिसपर दौलतखाने अर्थात राजभवन बने हैं। दौलतखानेमें एक बागीचा है। उसके बीचमें छोटासा एक कमरा है जिसमें मेरे पूज्य पिता बहुधा बैठते थे। यह इस समय बहुत उदास और शोभाहीन देखनेमें आया। मुझे बहुत बुरा लगा। क्योंकि उनके विराजनेका स्थान मेरा परम पूज्य धाम है। मैंने हुक्म दिया कि बागीचेके सुधारने और मकानों के बनानेमें अति यत्न करें। थोडे दिनोंमें उसकी और ही शोभा निकल आई। बागीचेमें ३२ गज लम्बा चौडा एक चबूतरा ३ टुकडोंका तैयार होगया। मकान नये सिरेसे बनकर विचित्र चित कारोंकी चित्रकारीसे चीनकी चित्रशालाको चकित करने लगे। मैंने इस बागीचेका नाम नूरअफजा रखा।"

तिब्बतके जमींदारोंकी भेंट—१५ शुक्रवार (चैतसुदी १ सवत् १६७७) को तिब्बतके जमींदारकी भेंटमें कुतास(१) जातिकी २ गायें देखकर बादशाह लिखता है "आकृतिमें भैंससे बहुत मिलती है। सब शरीर बालोंसे ढकाहुआ है। ठंडे देशोंके पशु ऐसेही होते हैं। जग जातिका बकरा जो भकर और गर्म पहाडोंसे लाया गया था बहुत सुन्दर था। उसके बाल भी थोडे थे। जो इन पहाडों

(१) सुरागाय।

३।४ महीने पहले जोतकशायने जो बड़ा निपुण ज्योतिषी है मुझसे प्रत्यक्ष कह दिया था, शाहजादेकी जन्मकुंडलीसे ऐसा जाननेमें आया है कि यह तीन चार महीने उनको भारी हैं। संभव है कि किसी ऊंची जगहसे गिरपड़ें। पर प्राणकी हानि न होगी। उसका कहना अनेकवार सही निकल चुका था। इस वास्ते इसकी आशंका निरन्तर चित्तमें बनी रहती थी। विकट रास्तों और दुर्गम घाटियों में पलभर भी मै उससे गाफिल न रहता था। सदैव आंखोंके आगे रखता था। परन्तु यह तो होनेवाली बात थी उसकी धायें और खिलाने वालियां भी असावधान होगईं। पर ईश्वरकी कृपासे कुशल रही।

अलहदाद अफगान—२१ गुरुवार (चैतसुदी ७) को तारीकी का बेटा अलहदाद पठान अपने पिछले कामोंसे पछताकर दरगाह में उपस्थित हुआ। बादशाहने एतमादुद्दौलाकी प्रार्थनासे उसके अपराध क्षमाकरके अगला मनसब अढ़ाई हजारी जात और १२०० सवारोंका बहाल करदिया।

लाला चौगासी—बादशाह चौगासी जातिके लालाको जुमा मसजिदकी छतपर खूब खिला हुआ सुनकर २३ (चैतसुदी ८) को उसकी बहार देखनेके लिये गया। लिखता है—"मसजिदके एक तरफ खूब फुलवारी फूल रही थी।"

जगतसिंहको मऊधमरीका परगना—मऊधमरीका परगना पहले राजा बासूको दियागया था उसके पीछे सूरजमल भोगता था। अब बादशाहने उसके भाई जगतसिंहको जिसे टीका नहीं मिला था इनायत कर दिया।

राजा संग्रामको जम्मूका परगना—जम्मूका परगना राजासंग्राम को इनायत हुआ।

छट्ठीबहिश्त।

१ सोमवार (बैशाखबदी ४) को बादशाह खुर्रमके यहां जाकर

उसके उस्मानसे मनाया। बादशाह आनेपर उसने जो भेट धरी थी उसमें से थोड़ीसी उसका मन रखनेको लेली।

नूरपुर—७ रविवार (बैशाख बदी ८) को बादशाह चकोरोंका शिकार खेलने हैदर मलिकके गाव चारदरेमें गया। जहां पानी बहता था और चनारके बड़े बड़े वृक्ष थे। बादशाहने प्रसन्न होकर उस गावका नाम हैदरमलिककी प्रार्थनासे नूरपुर रखा।

हलताल—इसीमें बादशाहने हलथल नाम एक वृक्ष देखा जिस की एक शाखा को हिलानेसे सारा वृक्ष हिलने लगता था। लोगोंका विश्वास था कि यह गुण केवल उसीमें है। परन्तु बादशाहको उसी गावमें वैसाही एक और वृक्ष भी मिलगया जो उसी प्रकारसे हिलता था। बादशाहने यह सिद्ध किया कि यह बात इस जातिके सब वृक्षोंमें है उसीमें नहीं है।

चनारका एक विचित्र वृक्ष—बादशाह लिखता है—"ख्वाजा के औरंगाबाद, हिन्दुस्तानके तर्फ़गाव रावलपुरमें चनारका एक पोला वृक्ष ऐसा है कि २० वर्ष पहले मैं ५ कसे हुए घोड़े और दो तीन आदमियों सहित उसके अन्दर घुस गया था। परन्तु जब यह बात किसी अन्यसे कही जाती थी तो लोग इसको असम्भव समझते थे। अब मैंने कुछ लोगोंको उसकी पोलमें दाखिल किया तो पिछली बातका प्रमाण मिलगया। अकबरनामेमें लिखा है कि अर्शआशियानीने ३४ मनुष्योंको उसके अन्दर लेजाकर पास पास बिठाया था।"

पृथ्वीचन्दकी मृत्यु—इसी दिन बादशाहसे अर्ज हुई कि राय मनोहरका बेटा पृथ्वीचन्द जो कांगड़ेकी सेनाके सहायकोंमें था शत्रुसे युद्ध करके काम आया।

देवीचन्द गुलेरीकी पदवृद्धि—११ (बैशाख बदी १३) गुरुवारको बादशाहने कई अमीरोंके मनसब बढ़ाये। उनमें देवीचन्द गुलेरी डेढ़ हजारी जात और ५०० सवारोंके मनसब पर पहुंचा।

ठट्टेकी सूबेदारी—१५ गुरुवार (बैशाख बदी १३) को बादशाह

ने भक्करके फोजदार सैयद बायजीद बुखारीको ठट्ठेकी सूबेदारी दी। उसका मनसब बढाकर दोहजारी जात पन्द्रहसो सवारोंका कर दिया और झण्डा भी दिया।

अनीराय सिंहदलन—महाबतखाकी प्रार्थनासे अनीराय सिंह दलन भी बगशके सूबेमे भेजा गया।

अम्बरका उपद्रव—सेनापति खानखाना और दूसरे शुभचिन्त कोंकी विनयपत्रिकाओंसे बादशाहको विदित हुआ कि अम्बर बादशाही सवारीको दूर देखकर दुष्टतासे अपनी प्रतिज्ञा भूल गया है और बादशाही सीमामे हस्तक्षेप करने लगा है। उन्होने खजाना भी मागा था इसलिये बादशाहने बीस लाख रुपये खान-खानाके पास भेज देनेका हुक्म राजधानी आगरेके कोशाध्यक्षोंको लिख दिया। इसके पीछे यह समाचार भी पहुचे कि अमीर खानोंको छोडकर दाराबखाके पास चले आये। बरगी लोग लश करके आसपास सजे हुए फिरते हैं। खजरखा अहमदनगरके किले में घिर गया है। अबतक दो तीन बार बादशाही बन्दे बैरियोंसे भिड चुके है। जो हार हार कर भागे हे। निदान दाराबखा मरस सैधवीके सवारोंके साथ चढकर शत्रुओंकी स्कन्दावार पर गया जहा बडा भारी युद्ध हुआ। शत्रु हारकर भाग गये। उनकी छावनी लुट गई। विजयी सेना अपने लशकरको लौट आई। फिर अनाजके अभावसे अमीर रोहनगढके घाटेसे उतर आये कि अनाज अनायाससही पहुचाता रहे और सिपाही सङ्कटमें न पडे। बालापुर में सेना सजाई गई दुशमन ढिठाई करके वहा भी दिखाई दिया। राजा बरसिंह देव कितनेही वीरोंसे आगे बढा और बहुतोंको मार कर मनसूर नाम हबशीको जीता पकड लाया। उसे हाथीके पैरो में डालनेकी बडी चेष्टा की गई, पर वह अपनी जगहसे हिला तक नही, वही जमा खडा रहा। तब राजाने उसका सिर उडा देनेका हुक्म देदिया।

सुखनाग—१०मगल (ज्येष्ठबदी३) को बादशाह सुखनाग देखने

जो गया। यह एक बड़ा सुरम्य स्थान एक घाटीमें था। पानी ऊपर से गिरता था। बर्फ पड़ी हुई थी। बादशाहने गुरुवारका उत्सव उसी फुलवारमें किया और साथके प्यालें उस जलाशय पर पान किये। यहां पानीमें उसको साज जैसा एक जानवर दिखाई दिया जिसके विषयमें लिखता है—"साज तो काले रंगका होता है जिस पर सफेद तिल होते हैं। इसका रंग बुलबुलका सा है। सफेद छींटें वाला है। पानीमें डुबकी लगाता है और बहुत देर तक भीतर रह कर दूसरी जगह सिर जा निकालता है। मैंने दो तीनके पकडनेकी आज्ञा दी। मैं देखा चाहता था कि उनके पांव जलकुकड़ी के समान चमड़ेसे मढ़े हैं वा जङ्गली जन्तुओंकी भांति खुले हुए हैं। दो पकड़कर लाये गये। एक तो तुरन्त मर गया। दूसरेके पञ्जे जलकुकड़ीकेसे न थे। मैंने नादिरुलअस्र उस्ताद मनसूर चित्रकारको फरमाया कि इसकी तसवीर खेंचले। कश्मीरी इसको गलकर कहते हैं अर्थात् पानीका साज।

न्याय—इन दिनों काजी और मीरअदलने बादशाहसे प्रार्थना की कि हकीम अलीका बेटा अबदुलवहाब लाहोरके कई सैयदों पर अस्सी हजार रुपयेका दावा करता है और एक खत नूरुलहक काजी को मोहरका दिखाकर कहता है कि यह रुपये मेरे पिताने इनके बाप सैयद वलीको अमानत सौंपे थे। सैयद नटते हैं। यदि आज्ञा हो तो हकीमका बेटा कुरान उठाकर अपनी धरोहर उनसे लेले। बादशाहने कहा कि जैसा शरीअतकी आज्ञा हो वैसा करें। दूसरे दिन मोतमिदखाने बादशाहसे प्रार्थना की कि सैयद बहुत चीखते चिल्लाते हैं मामला भी बड़ा है। इसके निर्णय करनेमें अधिक विचार किया जावे तो ठीक होगा। बादशाहने फरमाया कि आसफखां इस झगड़ेका निर्णय अति सूक्ष्मदृष्टि और दूरदर्शितासे करे। और ऐसा करे कि लेशमात्र भी भ्रम और सन्देह न रहे। जो इस पर भी यथार्थ रूपसे न्याय न हो तो हम अपने सामने करेंगे। इस बातके सुननेसे हकीमके बेटेका जी घबराया। उसने अपने कई

मिर्जोकी बीचमे डालकर सन्धिकी बात चलाई। बाला—यदि ऐत्मद आसफखाके पास यह अभियोग न लेजावें तो मै लिख दूंगा कि मुझे इनसे कुछ पाना नही है। आसफखा जब उसको बुलाता था कोई न कोई बहाना करके टाल जाता था क्योंकि चोर डरपोक भी होता है। निदान उसने लादावा लिखकर अपने एक नौकरको सौप दिया। आसफखाको यह समाचार लगा तो उसने उसे जबर दस्ती बुलाया। पूछताछ की तो उसे स्वीकार करना पडा कि यह खत मेरे एक सेवकने लिखा है वही साची बना है और उसीने मुझे बहकाया है। यही उसने लिख भी दिया। आसफखाने सब व्यवस्था बादशाहसे निवेदन की। बादशाहने एतमादुद्दौलेकी जागीर उतारली और उसे भी चित्तसे उतार दिया। ऐत्मदोलो इच्छापूर्वक लाहोरकी ओर विदा किया।

खुरदाद महीना।

बरसिह देवका पाच हजारी होना—८ गुरुवार (ज्येष्ठवदी ११) को बादशाहने राजा बरसिह देव बुन्देलेको पाचहजारी जात पाच हजार सवारोका उच्च पद दिया।

अगगन—बादशाह लिखता है—काश्मीरमें सबसे पहले आने वाला मेवा अगगन है। यह खट्टा मीठा होता है। आलू बालूसे छोटा रग और कोमलतामे बहुत बढिया शराबके नशेमें ३ या ४ से अधिक आलूबालू नही खासकते। पर यह रात दिनमें १०० तक चख सकते है विशेषकर पेवन्दी। मैने हुक्म दिया है कि आजसे अगगनको खुशअगुन (प्रसन्न करनेवाला) कहा करे। जो सब में बडा था वह तोलमें २। माशे हुआ।

शाह आलू—शाह आलू ४ उर्दी बहिश्त (वैशाख वदी ६) को चनेके बराबर निकला था २७ (वैशाख सुदी १५) को उसने रग बदला। १५ खुरदाद (ज्येष्ठ सुदी ४) को पक गया और नया किया गया। शाह आलू मुझे बहुत अच्छा लगता है। ४ वृक्ष

से जन्नतमकानी(१), अर्श आशियानी(२) का, उनके सामने मेरा और मेरे भाई शाह अब्बास सफवीका चित्र है। फिर मिरजा कामरा, मिरजा मुहम्मद हकीम, शाह मुराद और सुलतान दानियालके चित्र हैं। दूसरी श्रेणीमें अमीरों और निज सेवकोंकी तसवीरें हैं। चित्रशालाके बाहर काश्मीरके रास्तेकी उन मंजिलोंका नक्शा उसी क्रमसे है जिस क्रमसे मैं आया हूं।

तीर महीना।

बोरियाकोबीका उत्सव—४ गुरुवार (असाढ़ बदी १०) को बोरियाकोबी (बोरिया कूटने) का उत्सव हुआ। इस दिन काश्मीरके शाह आलू होचुके थे। नूरअफजा बागीचेके ४ वृक्षोंसे १५०० शाह आलू तोड़े गये। बादशाहने काश्मीरके कर्मचारियोंको बागोंमें शाह आलू लगानेकी ताकीद की।

भीमको राजाकी पदवी—बादशाहने राणा अमरसिंहके बेटे भीमको राजाकी पदवी प्रदान की।

उड़ीसेकी सूबेदारी—१४ रविवार (असाढ़ सुदी ६) को उड़ीसेकी सूबेदारी हसनअलीखां तुर्कमानको ३ हजारी ३ हजार सवारके मनसब सहित मिली।

बन्दरगाहके हाकिमकी भेट—इसी दिन बहादुरखां बन्दरगाहके हाकिमकी भेजे हुए ८ ईराकी घोड़े कई दास सुन्दरी कपड़े तथा मखमलके और कैंचके दाने बादशाहकी नजरसे गुजरे।

तृसीनाग—१५ चन्द्रवार (असाढ़ सुदी ७) को बादशाह तृसीनाग देखनेको घाटी पर चढ़ा। दो कोसकी खड़ी चढ़ाई अति कठिनतासे चढ़ी गई। घाटी परसे उस विपिन तक एक कोस धरती ऊंची नीची थी। बादशाह लिखता है—"यद्यपि नाना प्रकारके बन फूले हुए थे परन्तु लोग यहांकी जैसी प्रशंसा करते थे वैसी देखनेमें न आई। सुना, पासही एक ओर घाटी खिली हुई है। से १८गुरुवार (असाढ़सुदी१०) को उसे देखने गया। निस्सन्देह इस

(१) हुमायूं बादशाह (२) अकबर बादशाह।

फुलवारीकी जितनी प्रशंसा की जाय ठीक है। जहांतक नजर जाती थी रंग रंगके फूल फूले हुए थे। ५० तरहके फूल तो मेरे सामने चुने गये थे। सम्भव है कि और भी हों जो देखनेमें न आये। तीसरे पहर लौटे।"

एक अनोखीबात—बादशाह लिखता है—"आजकी रात अहमदनगरके घेरेका प्रसंग चल रहा था। उसमें खांनजहांने एक अजबबात कही जो पहलेभी अनेकबार सुनीगई थी। विचित्र होनेसे लिखी जाती है। जिनदिनों मेरे भाई शाहजादे दानियालने अहमदनगरके किलेको घेरा था, एकदिन किलेवालोंने मलिकमैदान नामकी तोप शाहजादेके लशकरकी ओर छोड़ी। गोला शाहजादे के डेरेके पास पड़ा। फिर वहांसे वह गोला गुंवदबांधकर शाहजादेके सभासद काजी बायजीदके घरमें जागिरा। काजीका घोड़ा ३।४ गजकी दूरीपर बंधा था। गोलेके पड़तेही घोड़ेकी जांघ जड़से उखड़कर अलग जमीनपर जापड़ी। गोला पत्थरका था और तौलमें १० मन हिन्दुस्तानी था। उसके ८० मन खुरासानी होते हैं। यह तोप इतनी बड़ी है कि उसमें एक आदमी अच्छी तरह बैठ सकता है।"

अमरदाद महीना।

कोरीमर्ग— ८ मंगलवार(१) (सावन वदी १४) को बादशाह कोरीमर्ग देखनेको गया। उसकी बहुत प्रशंसा सुनी थी। वह लिखता है —इसकी क्या प्रशंसा करूं। जहांतक दृष्टि काम देती थी रंग रंगके फूलही फूलखिले दिखाईदेते थे हरियाली औरफूलोंमें निर्मल जल बहरहा था। मानो यह देवरचित चित्रशालाका एक चित्रपट था। दिलकी कली इसके देखतेही खिल जाती थी। यह दूसरे बागोंसे बहुत बढ़ चढ़कर है। काश्मीरके देखने योग्य बागोंमेंसे है।

(१) मंगलको ६ थी ८ लेखकके दोषसे लिखी गई है।

कारके तीसरे पहर उल्टे भागी। बहुत आदमी मारेगये। जिन्होंने भागनेका कलंक न सहना चाहा वह जमकर लड़े और काम आये। उनमें शहबाजखां लोदी, जमालखां अफगानी, उसका भाई रुस्तम, और सैयद नसीब बारह आदि थे—कितनेही घायल होकर वहांसे निकले। यह भी लिखा था कि किलेवालोंने घेरेसे तंग होकर कुछ आदमी बीचमें डाले हैं और क्षमा मांगी है।

भटकी तटपरदीप मालिका—१८ गुरुवार (भादोंसुदी १४) को रातको काश्मीरियोंने भट नदीके दोनों तट पर दीपमालिकाकी थी। बादशाह लिखता है "यह एक पुरानी प्रथा है। हरसाल इसदिन धनी और निर्धन लोग जो इस दरियाके किनारे रहते हैं शबबरातकी भांति दीपक जलाते हैं। ब्राह्मणोंसे उसका कारण पूछा गया तो उन्होंने कहा कि इस मितीको भट नदीका सोता निकला था। प्राचीनकालसे यह बात चली आती है कि इस दिन धनचिवाह का उत्सव होता है। धनका अर्थ भट और चिवाहका तेरह है। यह उत्सव जो शव्वालकी इस १३ (१) तारीखको करते हैं इसलिये धनचिवाह कहलाता है। अच्छी दीपमालिका हुई थी। नावमें बैठ कर देखी गई।"

सौर पचीय तुलादान—इसी दिन सौर पचीय जन्मदिवसके तुलादानका उत्सव हुआ बादशाह स्वर्ण आदि पदार्थोंमें तुला ५२वां वर्ष लगा।

आसफखांके घर गुरुवारका उत्सव—२६ गुरुवार (आश्विन बदी ६) को गुरुवारके उत्सवकी सभा आसफखांके घर हुई। वह बादशाहको भेट पूजा करके सम्मानित हुआ।

सुर्गाबी—बादशाह लिखता है—१ शहरेवर (भादोंबदी१०) को अक्षड़के और २४ (आश्विनबदी ४) को डलके तलावमें सुर्गाबियां

(१) इस दिन १३ शव्वाल थी, परन्तु १३ शव्वालको क्या, भादोंसुदी १३ को यह त्योहार माना जाता होगा और काश्मीरमें इस दिन त्रियोदशीही होगी।

मारा गया। बाकी लोग पकडे गये। बादशाहने दिलावरखांके बेटे जल्लालको हजारी जात और ६०० सवारोंका मनसब, उसके नौकर, तथा काश्मीरके सूबेकी कुछ सेना, बहुतसे जमीदार और बन्दूकची साथ, देकर उन बलवाइयोंको दण्ड देनेके लिये विदा किया और जम्मूके जमीदार संग्रामको हुक्म दिया कि अपने लोगों को लेकर जम्मूके पहाडी रस्तेसे वहां जावे।

काकापुर—२८ शनिवार (आश्विन बदी ८) को बादशाह ४॥ कोस चलकर काकापुरसे एक कोस भटके तटमें उतरा। वह लिखता है काकापुरकी भंग विख्यात है दरियाके किनारे पर उसके जंगलके जंगल हैं।"

पंचहजारा—२९ रविवार (आश्विनबदी ९) को पंचहजारामें डेरा लगा। यह गांव शाहपरवेजको दिया हुआ था। उसके वकीलों ने पानीके ऊपर बगीचा और एक छोटासा भवन बना रखा था। पंचहजारेमें एक बहुत सुन्दर रमना था जिसके बीचमें चनारके ७ वृक्ष बहुत बडे खडे थे और नदी उनके चौफेर घूमी हुई थी। काश्मीरी इसको भूली कहते हैं। यह जगह काश्मीरके अतिदर्शनीय स्थानोंमें है।

खांनदौरांकी मृत्यु—इसी दिन खादौरांके लाहोरमें मरनेकी खबर आई। यह ९० वर्षकी लग भग होगया था। अपने समयके वीरपुरुषोंमेंसे था सरदार भी अच्छा था। बादशाह लिखता है उसके ४ बेटे हैं पर एक भी उसका पुत्र कहलानेके योग्य नहीं। ४ लाख रुपयेका धन माल उसने छोडा था वह उसके बेटोंको मिलगया।

अनच—३० सोमवार (आश्विनबदी १०) को बादशाहने अनच का झरना देखा। यह गाव अकबर बादशाहने रामदास कछवाहे को दिया था उसने पहाडके नीचे झरनेके ऊपर कमरे और कुण्ड बनाये थे। बादशाह लिखता है—"यह वास्तवमें बहुत सुन्दर और सरस स्थान है। इसका पानी तो इतना निर्मल है कि अन्धा अंधेरी

रातमें उसके नीचेके रेणुकण गिन सकता है।"

"यह गाव मैंने खानजहांको दिया है। उसने जियाफतकी तैयारी करके भेट सजाई थी जिसमेंसे थोड़ी सी उसका मन रखनेको लेली।"

"इस भरनेसे आध कोस मच्छीभवन नाम एक और भरना है। स्वर्गीय श्रीमानके सेवकोंमेंसे विहारी चन्दने इसके ऊपर एक मन्दिर बनाया है। इस भरनेके पानीकी प्रशंसा जितनी की जाय कम है। पुराने पुराने वृक्ष चनार, सफेदार, और काले बेंदके इसके आस पास उगे हुए हैं। मैं रात यही तेरके ३१ मंगलवार (आश्विनबदी ११) को अछोल नाम भरने पर उतरा।

अछोल—इस भरनेमें बहुत पानी है अच्छा जलाशय है। इसके किनारोंमें ऊंचे और फवते हुए वृक्ष चनार और सफेदारके लगे हुए थे। जगह जगह मनोरम बैठके बनी हुई थी। सामने गुलजा-फरीका बगीचा फूल रहा था स्वर्गका सा टुकड़ा है।

मेहर महीना।

१ बुधवार (आश्विनबदी१२) को अछोलसे कूच होकर वेरनाग में तम्बू तने।

वेरनाग—२ गुरुवार (आश्विनबदी १३) को वेरनागके ऊपर प्यालोंकी मजलिस हुई। बादशाहने निज सेवकोंको बैठनेका हुक्म देकर प्याले भर भरकर दिये और गजकके वास्ते काबुलके शफतालू प्रदान किये। मतवाले सांझ समय अपने घरोंको लौटे।

वेरनागमें बागादि—बादशाह लिखता है कि यह भरना भट नदीका सोता है। यहां घने वृक्षों और घास तथा दूबकी पुष्कलतामें भूमि दिखाई नहीं देती है। मैंने युवराजदशामें यहां कुछ अच्छे स्थान बनानेकी आज्ञा दी थी। वह अब बन चुके थे। इस प्रकार थे। (१) अठपहलू हौज ४२गजका १४गज गहरा जिसका पानी पहाड़ी फूलों और हरयालीके प्रतिबिम्बसे, जंगाली होरहा था। बहुत सी मछलियां उसमें तैर रही थी (२) हौजके ऊपर भारोंके भुके हुए

(३) झरोखोंके नीचे एकबाग (४) हौजसे बागतक नहर४गज चौडी १८० गज लम्बी और ४ गज गहरी (५) नहरके ऊपरकी क्यारियां पत्थरकी बनी हुई।

हौजका पानी ऐसा निर्मल और मञ्जुल था कि १४ गज गहरा होने पर भी यदि एक चना उसमें पडा हो तो दिखाई दे। नहरकी विपुलता तथा झरनेके नीचे उगी हुई घास और दूबकी शोभा क्या लिखी जावे। मानो नाना प्रकारकी बेल और बूँटे मिले जुले उगे हुए थे। जिनमें एक बूटा मोरकी पूंछके आकारका था और पानीकी लहरोंसे लहराता था। फूल जहां तहां खिले हुए थे। काश्मीर भरमें इस छटा और शोभाका कोई विलासस्थान नहीं है। यह भी विदित हुआ कि काश्मीरका जो प्रदेश नदीके ऊपर है उसकी नदीके नीचेके प्रांतसे कुछ तुलना नहीं है। जीमें था कि मैं कुछ दिनों यहां रहकर पूरा वनविहार करता और आनन्द लेता। पर कूचका मुहूर्त पास आगया था और घाटी पर बर्फ भी गिरने लगा था ठहरनेका अवकाश न था इसलिये मैंने शहरको और बाग छोडी और नदीके दोनों तटपर वृक्ष लगानेका हुक्म दिया।

लोकभवन—४ शनिवार (आश्विनबदी ३०) को लोकभवनके झरने पर डेरा हुआ। यह भी अच्छा स्थान है। यद्यपि अभी ऊपर वाले झरनेके समान नहीं है परन्तु सुधरानेसे ठीक होजावेगा। मैंने हुक्म दिया कि इसकी हैसियतके अनुसार यहां भी इमारत बनावे और झरनेके सामनेके हौजकी मरम्मत करे।

अन्धनाग—"फिर रास्तेमें एक और झरना मिला जिसको अन्धनाग कहते हैं। प्रसिद्ध है कि इस झरनेकी मछलियां अन्धी होती हैं। क्षणभर वहां ठहरकर जाल डलवाया तो १२ मछलियां फसीं उनमें ३ अन्धी और ६ आंखोंवाली थीं। शायद इस झरनेके पानीके दोषसे मछलियां अन्धी होजाती हैं। कुछ हो, बात विचित्र है।"

मच्छीभवन—५ रविवार (आश्विनसुदी १२) को नादशाह फिर

मच्छीभवन और एनच होकर श्रीनगरको आया।

८ गुरुवार (आश्विनसुदी ६) को इरादतखां कश्मीरका सूबेदार और मीर जुमला उसकी जगह खानसामान हुआ और मोतमिदखां को अर्ज मुकर्ररका काम मिला।

श्रीनगर—११ शनिवार (आश्विनसुदी ८) की रातको सवारी श्रीनगरमें पहुंची।

जम्मूका जमीदार—जम्मूके जमीदार संग्रामका मनसब डेढ हजारी जात १००० सावारका होगया।

दशहरा—१३ चन्द्रवार (आश्विनसुदी ८) को दशहरे(१)का उत्सव हुआ। प्रति वर्षकी परिपाटीके अनुसार घोडे जो खासा तवेलीमें थे और जो अमीरोंको सौंपे हुए थे, सजाकर बादशाहको दिखाये गये।

बादशाहको खासका रोग—बादशाह लिखता है—इन दिनों खास रुककर आने लगा था।

पतझडकी शोभा—१५ बुधवार (आश्विनसुदी ११) को बादशाह खिजां (पतझड) की शोभा देखनेके लिये सफापुर, और लार के घाटेको गया जो भट नदीके नीचे था। सफापुरमें एक सुन्दर सरोवर और उसके उत्तर और वृक्षोंसे परिपूर्ण एक पर्वत था। पत्ते झडने लगे थे तो भी उसकी विचित्र छटा थी। चनार और जर्दालू आदि वृक्षोंका प्रतिबिंब तलावमें बहुत भला दिखाई देता था। बादशाह लिखता है—"खिजाकी शोभा भी बहारसे कुछ कम नहीं होती।"

समय थोडा था और कूचका मुहूर्त पास आता जाता था इस लिये बादशाह सचिप्त रूपसे देख भालकर लौट आया।

मिरजा रहमानदादकी मृत्यु—शुक्रवारके दिन खानखानाके बेटे मिरजा रहमानदादके मरनेकी खबर पहुंची जो बालापुरमें मरा। कुछ दिनसे उसको ज्वर आता था। कमजोरीके दिनोंमें

(१) चडू पचांगमें इस दिन ९थी बादशाही पचांगसे १० होगी।

एक दिन दखनी सजकर आये। बड़ा भाई दारावखां उनसे लड़ने गया। यह सुनकर रहमानदाद भी उसी कमजोरीमें वीरतासे सवार होकर भाईके पास पहुंचा। जब वैरियोंको भगाकर आया तो असावधानीसे जल्द वस्त्र उतार दिये। हवा लग गई, शरीर ऐंठने लगा, जीभ बन्द होगई। दो तीन दिन यही दशा रही। फिर प्राण तज दिये। बादशाह लिखता है—"बड़ा लायक जवान था तलवार मारने और काम करनेकी उसको बड़ी उत्कण्ठा रहती थी। सब जगह यही उसकी इच्छा थी कि अपना जौहर तलवार में दिखावे। आग यद्यपि गीले सूखे सबको जलाती है लेकिन जब मेरे दिल पर इतना सदमा है तो उसके बूढ़े बापके टूटे दिल पर क्या गुजरी होगी। अभी शाहनवाजखांकी मौतका घाव भरा ही न था कि यह और नया घाव उस पर लगा। आशा है कि परमेश्वर उसे अब भी शान्ति देगा।"

कशमीरसे कूच।

२७ चन्द्रवार (कार्तिक वदी ८) को एक पहर ७ घड़ी दिन चढ़े बादशाहने कशमीरसे हिन्दुस्थानको प्रस्थान किया। अब केसर भी खिलने लगी थी, इस लिये सवारी सीधी पनेरको गई। कशमीर भरमें इस गांवके सिवा और कहीं केसर नहीं होती है।

केसरके खेत—३० गुरुवार (कार्तिक वदी १२) को प्यालोंकी मजलिस केसरकी क्यारियोंमें जुड़ी। केसर बागों और जंगलोंमें जहां तक नजर पहुंचती खिली हुई दिखाई देती थी। उसकी महक हवामें फैली हुई थी। बादशाह लिखता है उसका पौदा जमीनसे मिला रहता है। फूलमें ४ पंखड़ियां होती हैं। वह चंपाके फूलके बराबर बड़ा और रंगमें बनफशई होता है। उसके बीचसे केसरके ३ तन्तु निकलते हैं। उसकी जड़ लगाई जाती है। जिस वर्ष अच्छी उपज होती है वर्त्तमान तौलसे ४०० मन केसर आती है। इसमें आधी प्रजाकी और आधी राजकी होती है। १ सेर १०) को बिकती है। यह भाव कभी घट बढ़ भी जाता है। जो

लोग कीसरके फूल चुनकर लाते हैं वह उनकी तौलसे आधा नमक प्राचीन प्रथाके अनुसार मजदूरीमें लेते हैं। क्योंकि नमक कशमीर में नहीं होता है हिन्दुस्थानसे जाता है।"

कलगीके पर—"कशमीरकी सौगातमें कलगीके पर भी हैं जो शिकारी जानवरों द्वारा साल भरमें १०००० तक एकत्र किये जाते हैं।"

शिकारी जानवर—"बाज जुर्रे २६० तक जालमें पकड़े जाते हैं बाशेके घोंसले भी होते हैं घोंसलेका बाशा बुरा नहीं होता।"

आबान महीना।

ईरानका दूत—१ शुक्रवार (कार्तिकबदी १३) को पनीरसे कूच होकर ख्वानपुरमें मुकाम हुआ। यहां ईरानके एलची जंबील-बेगके लाहोरमें पहुंचनेकी खबर सुनकर बादशाहने खिलअत और ३०००० रुपयेके परते उसके पास मीर हिसामुद्दीनके हाथ भेजे। मीरसे कह दिया कि यदि वह कुछ तुझे दे तो तू उसका मूल्य पर पांच हजार और बढ़ाकर उसको मेहमानीके तौर पर भेज देना।

महल—बादशाहने पहले हुक्म दिया था कि कशमीरके पहाड़ोंकी तलहटी तक हरेक मंजिलमें जो महल और मकान मेरे और बेगमोंके बैठनेके योग्य तय्यार हों, जिससे जाड़ा पाला पड़ने पर डेरोंमें ठहरना न पड़े। वह इमारतें बन तो गई थीं पर अभी गीली थीं और उनसे दुर्गन्ध आती थी इसलिये बादशाहने डेरोंमें ही आराम किया।

कलमपुर—२ शनिवार (कार्तिक बदी १४) को कलमपुरमें मुकाम हुआ। बादशाहने कीरापुरके पास एक बड़े जलाशयकी बात सुनी थी। वह रास्तेसे तीन चार कोस पर बायें हाथको था। बादशाह छड़ी सवारीसे उसे देखने गया। वह कहता है "उसकी क्या प्रशंसा लिखी जावे तीन चार दरजेसे पानी ऊपर तले गिरता है। अबतक ऐसी छवि और छटाकी जलधारा देखनेमें न आई थी। बड़ी बहुत जगह है। मैं वहां ३ पहर दिन पिलौद और विलास

में व्यतीत करके चित्त और चक्षुको संतुष्ट करता रहा। पर बादल और वर्षाके समय यहां कष्ट होता है। तीसरे पहर सवार होकर संध्या समय हीरापुरमें पहुंचा और रातको वहीं रहा।

वाड़ी बरारी घाटी—४चन्द्रवार (कार्तिकसुदी १) को बादशाह वाड़ी वरारी घाटीसे उतर कर पीरपंचाल पहाड़ी पर ठहरा। वह कहता है—"घाटी विकट है। मार्गमें कष्ट होनेकी बात क्या लिखूं विचारसे भी बढ़कर था। इन दिनों कई बेर बर्फ गिर चुकी थी। पहाड़ सफेद होरहे थे। रास्तोंमें कई जगह पाला पड़ा हुआ था। घोड़ेका पांव नहीं जमता था। सवार बड़े परिश्रमसे पार होता था। पर इस दिन ईश्वरकी कृपासे पाला नहीं पड़ा था। हां जो लोग पहले जातुके थे या पीछे आये वह सब बर्फ पड़नेसे पीड़ित हुए।"

पोशाना—५ मंगलवार (कार्तिक सुदी २) को बादशाह पीर पंचालसे उतर कर पोशानेमें ठहरा। इधर नीचा था तो भी इतनी ऊंचाई थी कि बहुतसे लोग पैदल चलने लगे थे।

वीरमकल्ला—६ बुधवार (कार्तिकसुदी ३) को वीरमकल्लेमें डेरा हुआ। इस गांवके पास एक बहुत सुन्दर जलाशय और स्वच्छझरना था। बादशाहके हुक्मसे उस पर उसके बैठनेके लिये चबूतरा बनाया गया था। वह लिखता है "सचमुच सुरम्य दर्शनीय स्थान है। मैंने हुक्म दिया कि मेरे आनेकी मिती पत्थर पर खोदकर इस चबूतरेमें जड़ दें। बेबदलखांने कुछ कविता कही थी वही यहां यादगारीके लिये खोद दीगई।"

इसरास्तेमें दो जमीन्दार रहते हैं। उनके अधिकारमें आने जानेका प्रबन्ध है। वह वास्तवमें काश्मीरकी कुंजी हैं। एकका नाम महदी नायक है और दूसरेको हुसैन नायक कहतेहैं। हीरापुर से वीरमकल्ले तक रास्तेका बन्दोबस्त इनके हाथमें है। महदी नायकका बाप बहराम नायक काश्मीरियोंके राज्यमें बड़ा आदमी था। जब बादशाही बन्दोंके राज्य करनेकी बारी आई तो यूसुफ-

खाने अपने शासनके समय बहरामको मार दिया। अब इन दोनों भाइयोंका अधिकार है। यह ऊपरसे तो मिले हुए हैं पर भीतरसे आपसमें वैर रखते हैं।

इस दिन बादशाहका पुराना और विश्वासी सेवक शैख इजन्द गसीन जो पीरपचाल पर हवा लग जानेसे रोगग्रस्त होगया था मरगया। बादशाहके खानेकी अफीम और पीनेका पानी उसके पास रहा करता था। अब बादशाहने अफीम तो एतबारखांको सौंपी और पानी सूसवीखांको।

ठट्ठा—७ गुरुवार (कार्तिकसुदी ४) को ठट्ठेसे डेरे लगे। बादशाह लिखता है—बीरमकलेमें बहुत बन्दर देखे गये थे। पर यहां से वायु, बोली, पोशाक और पशुओंमें बड़ा परिवर्तन देखा गया जैसा कि गर्म देशोंमें होता है। यहांवाले फारसी और हिन्दी बोलते हैं। इनकी मूल भाषा हिन्दी है। कश्मीरी बोली इन्होंने पड़ोसी होनेसे सीखली है। यहांसे हिन्दुस्तान आरम्भ होता है। स्त्रियां ऊनी कपड़े नहीं पहनती हैं, हिन्दुस्तानी स्त्रियोंकी भांति नाकमें नथ पहनती हैं।

राजौर—८ शुक्रवार (कार्तिकसुदी ५) को राजौरसे डेरा लगा। बादशाह कहता है—"यहांके मनुष्य प्राचीन समयमें हिन्दू थे यहांके जमीन्दारोंको राजा कहते थे। सुलतान फीरोजने उनको मुसलमान किया। तो भी वह राजा कहलाते हैं। मुसलमान होनेसे पहलेकी कुरीतियां अब भी इनमें प्रचलित हैं। जैसे हिन्दुओंकी औरतोंमेंसे कोई कोई अपने पतिके साथ जीती जलजाती हैं वैसेही यह भी जीती स्त्रीको मरे पतिके साथ कबरमें गाड़ देते हैं। सुना इन दिनों एक दस ग्यारह सालकी लड़की जीती पतिके साथ कबरमें डाल दीगई। दूसरे कंगाल लोग लड़कियोंको पैदा होतेही गला घोटकर मार डालते हैं। तीसरे हिन्दुओंको बेटी देते हैं और उनसे लेते हैं। बेटी लेना तो अच्छा है पर देनेसे खुदा बचावे। इसने हुक्म दिया आजसे यह

कुरीतियां दूर हों। जो न माने उसे दण्ड दिया जाय।"

विषैलापानी—राजोरमें एक नदी है जिसका पानी बरसातमें जहरीला होजाता है। बहुत लोगोंके गलेके नीचे घेंघे निकल आते हैं और वह पीले और दुबले रहते हैं। राजोरके चावल काश्मीरसे अच्छे होते हैं। बनफशा जो इस पहाडकी तलहटीमें उगता है सुगन्धित होता है।

नौशहरा—१० रविवार (कार्तिकसुदी ७) को नौशहरेमें डेरे हुए। बादशाह लिखता है—कि यहां स्वर्गवासी श्रीमानके आदेश से पत्थरका किला बनाया गया है और हमेशा काश्मीरके हाकिम की तरफसे कुछ सेना थानेके तौर पर रहती है।

चौकीहटी—चन्द्रवारको चौकीहटीमें सवारी उतरी। यहांके मकानोंकी मुरम्मत चेलेने यत्नसे सुधरवाया था। राजभवनमें सुन्दर चबूतरा बनाया था, जो दूसरे स्थानोंसे उत्तम था। बादशाने प्रसन्न होकर उसका मनसब बढ़ाया।

ठट्ठ—१२ मंगलवार (कार्तिकसुदी ८) को ठट्ठमें पड़ाव हुआ। बादशाह लिखता है—"मैं पहाडों और घाटियोंको पारकर भारतकी समतल भूमिमें आया।

शिकार—ठट्ठ, करछाक, और नन्दवालेमें शिकार घेरनेके लिये क़िरावल पहलेसे विदा होगये थे। बुध और बृहस्पतिवारको जीते जन्तु घेरेगये। शुक्रवारको बादशाहने ५६ पहाडी कचकार शाहिन्ता शिकार किया।

सारंगदेव—इसी दिन राजा सारंगदेवको जो बादशाहके समीपस्थ सेवकोंमेंसे था ८ सदीजात और ४०० सवारका मनसब मिला।

१८ शनिवार (कार्तिकसुदी १२) को बादशाह करछाककी ओर प्रयाण करके ५ कूचमें भट नदीके तटपर उपस्थित हुआ।

करछाक—२१ गुरुवार (अगहनबदी २) को करछाकमें हांके का शिकार हुआ परन्तु और वैरसे बहुत कम जानवर मिले। बादशाह प्रसन्न न हुआ।

जहांगीराबाद—२५ चन्द्रवार (असफन्दार ७) को बादशाहने नकथालेमें शिकार खेला। वहांसे २ कूचमें जहांगीराबाद पहुंच और शिकारगाहमें ठहरा। लिखता है—"युवराजावस्थामें यह भूमि मेरी शिकारगाह थी। यहां मैंने एक गांव अपने नाम(१) पर बसा कर थोड़ी सी इमारत बनाई थी और अपने पास रहनेवाले किरा वल सिकंदर मवीनको सौंपदी थी। सिंहासनासीन होनेके पीछे उसगांवको परगना बनाकर उसको जागीरमें देदिया। वहां दौलत खानेके वास्ते एक इमारत, तलाव, तथा, मिनारा बनानेका हुक दिया। मुवीनके मरने पर यह परगना इरादतखांको जागीरमें लगाया गया और इमारतका काम भी उसीको सौंपागया जो इन दिनोंमें अच्छी तरहसे पूरा होगया। तालाब बहुत चौड़ा बना उसके बीचमें उत्तम जल महल हैं। सब मिलाकर डेढ़लाख रुपये इसमें लगे होंगे। सच यह है कि बादशाहोंकीसी शिकारगाह है गुरुवार और शुक्रवारको वहां रहकर शिकार खेला। लाहौरके सूबेदार कासिमखांने उपस्थित होकर ५० मोहरें भेट कीं।"

मोमिनका बाग—वहांसे एक मंजिल पर मोमिन कबूतरबाज के बागमें जो लाहौरके घाटपर था सवारी उतरी। यहां चनार और सर्वके सुन्दर और सीधे वृक्ष थे।

---

(१) इससे जाना जाता है जहांगीरकी उपाधि युवराजावस्था हीमें बादशाहने धारण करली थी।

सतरहवां वर्ष ।

सन् १०३० हिजरी ।

अगहन सुदी २ संवत् १६७७ ता० १६ नवम्बर सन् १६२०
से अगहन सुदी २ संवत् १६७८ ता० ५ नवम्बर
सन् १६२१ तक ।

बादशाह लाहौरमें ।

८ आजर चन्द्रवार ५ मुहर्रम १०३० (अगहनसुदी ६) को बादशाह मोमिनके लागसे इन्द्रगज हाथी पर सवार होकर रुपये लुटाता शहरको चला । तीन पहर पर २ घडी दिन आनेके मुहूर्त में दौलतखानेमें पहुंचकर उस नये राजभवनमें उतरा जो मामूरखां के प्रयत्नसे प्रस्तुत हुआ था । उसमें अच्छे अच्छे रहनेके स्थान और बैठकें बनी थीं । चित्रकारीकी बहार थी । बागोंमें अनेक प्रकारके फूल फूले हुए थे । ७ लाख रुपये इसमें लगे थे ।

कांगडेकी फतह—इसी दिन कांगडेकी फतह होनेकी बधाई पहुंची । उसकी प्रसन्नतामें बादशाहने परमात्माका धन्यवाद करके विजयके बाजे बजवाये ।

कांगडेका वृत्तान्त—बादशाह लिखता है—"कांगडा एक पुराना किला लाहौरमें उत्तर पहाडोंमें है जो दृढता और दुर्गमतामें बहुत विख्यात है । इसके बनानेकी तारीख खुदाके सिवा और किसी को ज्ञात नहीं है । पञ्जाबके जमींदारोंका यह विश्वास है कि यह किला कभी किसी दूसरी कौमके हाथमें नहीं गया न किसी बाहर वालेका उस पर अधिकार हुआ । खैर यह तो खुदाही जाने पर जबसे इसलामकी दुहाई फिरी है किसी बडेसे बडे बादशाहको इसपर जय प्राप्त नहीं हुई । सुलतान फीरोज स्वय बडे ठाटसे इसको जीतनेको चढा था और वर्षों तक घेरे भी रहा था । परन्तु जब देखा कि यह दुर्ग इतना दृढ है कि जबतक अन्दरवालोंके पास

लडाई और खाने पीनेकी सामग्री रहेगी हाथ नहीं आवेगा तो राजाके आने और नम्रता दिखाने परही सन्तोष करके घेरा उठा लिया। कहते हैं राजा दावत और नजर देनेके लिये बादशाहको अन्दर लेगया। सुलताननें सब किला देखकर राजासे कहा कि मुझ जैसे बादशाहको गढमें लाना सावधानीसे दूर था मेरे साथ जो सेना है यदि वह तुझ पर चढाई करे और किला ले ले तो तू क्या कर सकता है? राजाने अपने सेवकोंको संकेत किया तुरन्त सजे हुए शूरवीरोंकी सेना घातसे निकली और बादशाहको सलाम करने लगी। बादशाह उस भीडको देखकर घबराया कि कहीं दगा तो नहीं है। परन्तु राजाने आगे बढकर कहा कि सेवा और शुश्रूषाके सिवा मेरा और कोई मतलब नहीं है। पर जैसा आपने फरमाया मैं सावधान रहता हूं। बादशाहने राजाकी प्रशंसाकी। राजा कई कूच तक बादशाहके साथ रहकर लौट आया। फिर जो कोई दिल्लीके सिंहासन पर बैठा उसीने कांगडा जीतनेको सेना भेजी परन्तु कुछ काम न बना। मेरे पूज्य पिताने भी एक बेर एक बहुत बडा कटक हुसैनकुलीखांके साथ, जिसे उत्तम सेवा करने से खानजहांका खिताब मिला था भेजा था। उसने इस किलेको घेराही था कि इब्राहीम मिरजाका उपद्रव उठखडा हुआ। वह कृतघ्न गुजरातसे भागकर पंजाबमें विग्रह करनेको गया। जिससे खानजहांको घेरा छोड कर उस उपद्रवको शान्त करनेको आना पडा और कांगडेका लेना खटाईमें पडगया। इसका खयाल सदैव उनके मनमें बना रहता था पर उसका कोई रूपक नहीं बनता था। जब खुदाने अपनी इनायतसे यह तख्त मुझे दिया तो मैंने लडाके वीरों सहित पंजाबके सूबेदार मुरतिजाखांको इस किलेको फतहके लिये भेजा। पर किला फतह होनेसे पहलेही वह चल बसा। तब राजा बासूके बेटे जौहरमल (सूरजमल) ने इसके लिये प्रतिज्ञाकी और मैंने उसे सेनापति करके भेजा। वह सेना भग होगई। किला जीतनेमें देर होगई और वह अपने किये को पाकर

नरकमें गया, जैसा पहले लिखा जाचुका है। तब खुर्रमने इस सेवाका भार लिया और अपने सेवक सुन्दरको दलबल सहित भेजा। बहुतसे बादशाही वीर भी उसके साथ हुए। १६ शव्वाल सन १०२८ (आश्विनबदी २ संवत् १६७६) को यह सेना किलेके निकट पहुंची। उसने मोरचे लगाकर जाने आनेके रास्ते बन्द किये। जब किलेमें खाने पीनेकी सामग्री न रही तो भीतर वालोंने सूखा अन्न उबालकर नमकसे खाया और चार महीने पार किये। जब मरने लगे तो हारकर किला सौंप दिया। १ मुहर्रम १०३० (अगहन सुदी २ संवत १६७७) को यह फतह जो दूसरे बादशाहोंको नसीब न हुई थी इसअपने बंदेको खुदाने दी। जिन लोगोंने इसमें जान लडाई थी उनके पद बढाये गये।

१२(१) गुरुवार (अगहन सुदी ८) को बादशाह खुर्रमके नये बनाये भवनमें गया उसकी भेटमेंसे कुछ पदार्थ और ३ हाथी लिये।

कांगडेके कर्मचारी—इसी दिन अबदुलअजीजखां नकशबन्दी कांगडेकी फौजदारी पर और अलफखां कयामखानी किलेदारी पर भेजागया। सुरतिजाखांका जमाई शेख फैजुल्लाह किले पर रहने के लिये अलफखांके साथ किया गया।

चन्द्रग्रहण—१८(२) बुधवार (अगहन सुदी १५) की रातको (३) चांदगहन था बादशाहने यथा योग्य दानपुण्य किया।

ईरानकादूत—इसी दिन ईरानके एलची जबीलबेगने, जो खान आलमके साथ विदा हुआथा, और कई आवश्यक कामोंसे पीछे रहगया था, चौखट और जमीन चूमकर शाह अब्बासका प्रेमपत्र बादशाहके सामने रखा और १२ अब्बासी(४) नजर की। साथ ही

(१) मूलमें लेखक दोषसे ११ लिखी है।
(२) मूलमें लेखक दोषसे १३ शनिवार लिखा है।
(३) चन्द्रग्रहण पंचांगमें २८ विसवे लिखा है।
(४) यह ईरानके शाह अब्बासका सिक्का था।

उसने ४ सजे हुए घोडे ३ बाज तवियून, ४ खञ्जर ४ जट ८ धनष और ८ खड्ग भेट किये। बादशाहने भारी खिलअत जोगा, जडाऊ तुर्रा जडाऊ खांडा उसको दिया। विमानबग और काजी व्यासन का भी सनास हुआ जो उसके साथ आये थे। बादशाह कामिसर्को प्रार्थनासे उसका बाग देखने गया। बाग शहरसे बाहर था। सवारी में १०००० चरन न्योछावर किये। उसकी भेटमेंसे १ थान १ हीरा और कुछ कपडा चुनलिया।

आगरेको पेशखीमा—२१ रविवार (१) (पोषवदी ३) को रात को पेशखीमा आगरे जाने के लिये निकाला गया।

ईरानकी सोगात—२६ गुरुवार (पोषवदी ८) को मासूमी उत्पन्न हुआ। शाह ईरानकी भेजी हुई सोगात बादशाहकी नजरसे गुजरी।

रामास्पचन्द गुलेरी—गुलेरके राजारूपचन्दने कांगडेकी चढाई में अच्छा काम दिया था। इसलिये बादशाहने दीवानोंको हुक्म फरमाया कि उसका आधा वतन (देश) तो उसके इनाममें गिने और बाकी जागीरकी तनखाहमें देवे।

दे महीना।

अहमदाबादकी सगाई—३ (पोषसुदी १) को एतमादुद्दौलाने मरामी अजादे अहमदाबादके लिये मागी गई। बादशाहने उज लाख रुपयेकी साचिक (बरी) भेजी जिसके साथ बडे बडे अमीर उसके घर गये। उसने भी बडी मजलिस सजाई थी।

एतमादुद्दौलाकी जियाफत—एतमादुद्दौलाने अपनी हवेली में जश्न और उत्तम नवभवन बनाकर बादशाहकी जियाफतकी। बादशाह बेगमों सहित उसके घर गया। उसने खूब मजलिस सजाई थी नाना प्रकारकी भेट बादशाहको दिखाई। बादशाहने उसकी

(१) यहां मुसलमानी मतसे रातको रविवार माना गया है दिन को शनिवार और पचागके मतसे रातको भी शनिवार रविकी २२ तारीख थी।

खातिरसे कुछ चीजें पसन्द करके लेलीं।

इसी दिन ५०००० रुपये जंबीलबेगको इनायत हुए।

दक्षिणमें दंगा—जिन दिनोंमें बादशाह काश्मीरकी बहार और शिकारके मजे लूट रहा था दक्षिणके कर्मचारियोंकी बराबर अर्जियां पहुंचती थीं कि श्रीमानकी सवारीको दक्षिणके दुनियादारोंने राजधानीसे दूर देखकर अपनी प्रतिज्ञा भंगकर दी है और सीमासे आगे बढ़कर अहमदनगर तकका देश दबा बैठे हैं। उनका काम लूटना जलाना, खेती तथा घास विध्वंस करना है।

बादशाह लिखता है—पहले जब दक्षिणी देशोंके जीतने और उन दुष्टोंको दण्ड देनेके लिये चढ़ाई हुई थी और खुर्रमने आगे चलनेवाले लशकरके साथ जाकर बुरहानपुरमें डेरा किया था तो इन धूर्त्तोंने कपटसे उसको अपना आश्रय दाता बनाकर बादशाही देश छोड़ दिये थे और बहुतसा द्रव्य दरबारमें भेजकर यह प्रतिज्ञा की थी कि फिर कभी अपनी सीमासे आगे पांव नहीं रखेंगे जैसा कि पहले लिखा जाचुका है। खुर्रमकी प्रार्थनासे सवारी मंडूके किलेमेंही ठहरी रही और उसीकी सुफारशसे उनका रोना गिड़गिड़ाना सुनकर उन्हें क्षमा दीगई थी। पर वह अब दुष्टता और धृष्टतासे वचन भंगकरके अधीनतासे विमुख होगये तो मैंने फिर प्रबल सैन्य उनको दण्ड देनेके लिये उसी खुर्रमके आधिपत्यमें भेजनेका विचार किया। पर कांगड़ा जीतनेका भी काम उसीके ऊपर छोड़ा गया था जिसमें उसकी अच्छी सेना लगी हुई थी इसलिये कुछ दिनों तक इस मनोरथके पूर्ण करनेमें शिथिलता रही। इतने में उधरसे फिर लगातार अर्जियां पहुंचीं कि गनीमने ६०००० सवार संग्रह करके बहुतसा बादशाही इलाका दबालिया है और जहां जहां थाने थे वह सब उठाकर महकरमें आक्रमण किया है जहां ३ महीनेसे लड़ाई चलती है। अबतक ३ बड़े युद्ध हुए हैं। उनमें बादशाही बन्दोंकी प्रबलता शत्रुओं पर रही। पर सेनामें किसी मार्गसे अन्न नहीं पहुंचता था और वह लोग उसके आसपास

लूट मार करते थे, इससे अनाजका अकाल पडगया और जानवर थकगये। तब लाचार घाट परसे बालापुरमें सेनाके लोग उतर आये। शत्रु भी बल पाकर बालापुर तक आगये और चोरी धाडे करने लगे। दाराबखां बन्दे ६।७ हजार चुने हुए सवारोंसे उनके डेरों पर गये। वह ६०००० सवार थे। बहुत बडा संग्राम हुआ। उनकी छावनी लूटी गई। हमारी सेना बहुतोंको मार बांधकर कुशल पूर्वक लौट आई। वह लोग फिर इधर उधरसे उमडकर लडते हुए छावनी तक आपहुंचे। इसपर भी बादशाही बन्दे ४ महीने तक बालापुरमें जमे रहे। फिर जब यहां भी अनाज की महंगी बहुत बढ गई तो कई कच्चे आदमी भागकर उनमें जामिले और रंगेशा इसी तरह जाने लगी तो वहां रहनेमें भलाई न देखकर बुरहानपुर आगये। उन दुष्टोंने पीछा करके बुरहानपुर को भी घेर लिया और ६ महीनें तक घेरे रहे। कई परगने बराड और खानदेशके भी दबा बैठे। प्रजा और दीनोंको ज्वरदस्ती लटने लगे। सेना थकी हुई थी और चौपाये भी चकनाचूर होगये थे इस कारण शहरसे बाहर निकल कर उनका पूरा मुकाबिला न कर सकी। इससे उन टोगलोंका घमंड और भी बढगया। इतने रोम सवारीका कूच राजधानीको हुआ और खुदाकी इनायतसे कांगडा भी फतह होगया।

खुर्रमको फिर दक्षिणपर चढाई—४शुक्रवार (पौषसुदी २) को मैंने खुर्रमको खिलअत जडाऊ तलवार और हाथी देकर उधर बिदा किया। नूरजहां बेगमने भी एक हाथी दिया। मैंने हुक्म दिया कि दो करोड दामका इलाका दक्षिण जीतनेके पीछे जीते हुए प्रदेशोंमेंसे अपने इनाममें ले ले। ६५० मनसबदार १००० अहदी १००० रूमी बन्दूकची १००० तोपची प्यादे सिवा ३०००० सवारोंके जो उन प्रांतोंमें थे तरह तोपखाने बहुतसे हाथी उस दिये। एक करोड रुपये फौज खर्चके वास्ते उसे दिये। जिन बन्दों की नौकरी बोली गई थी उनको यथायोग्य घोडे हाथी और खिलअत दिये।

आगरेको कूच—उसी मुहूर्तमें बादशाहने भी आगरेको कूच किया। नौगहरेमें डेरा हुआ।

जगतसिंह—राना करनसिंहके बेटे जगतसिंहने अपने वतनसे आकर चोखट चूमनेका सौभाग्य प्राप्त किया।

राजा टोडरमलका तलाव—६ रविवार (पोष सुदी ४) को राजा टोडरमलके तलाव पर पडाव हुआ। बादशाहने ४ दिन तक यहां रहकर कई एक मनबसदारोंके मनसब बढाये जो दक्षिण को विदा हुए थे।

हृदयनारायण हाडा—हृदयनारायण हाडेका मनसब ८ सदी ६०० सवारका होगया। मोतमिदखा इस लश्करका बखशी और वाकिआनवीस नियत हुआ और उसे तोग मिला।

कमाऊंका राजा लक्ष्मीचन्द—कमाऊंके राजा लक्ष्मीचन्दके भेजे हुए बाज, जुर्रे और दूसरे शिकारी पक्षी बादशाहको भेट हुए।

जगतसिंह—राणा करणसिंहका बेटा जगतसिंह दक्षिणकी सेनाकी सहायता पर खासा घोडा पाकर विदा हुआ।

राजा रूपचन्द—राजा रूपचन्द हाथी और घोडा पाकर अपनी जागीरको विदा हुआ।

सुलतान—१२ (पोष सुदी ८) को खानजहां सुलतानकी सूबेदारी पर भेजा गया। विदा होते समय बादशाहने नादिरी सहित खिलअत जडाऊ तलवार तजा हुआ खासा हाथी, अथनी, एटग नाम खासा घोडा और दो बाज उसको दिये।

गवाल—बादशाहने अपने पुराने सेवक नबाबको तोपखानेकी सुपरिफका ओहदा और रायका खिताब इनायत किया।

गोविन्दवाल—१३ (पोष सुदी १०) को गोविन्दवालके पासकी नदी पर बादशाहके डेरे हुए और चार दिन मुकाम रहा।

सोम तुलादान—१७ (पोष सुदी १४) को चान्द्रमासीय वर्षगांठके उपलक्षका तुलादान हुआ।

कांदहार—कान्दहारकी सूबेदारी अबदुल अज़ीज़खांको मिली

और बहादुरखांको जिसने आडीको घोडासे दरबारमें आनेकी प्रार्थना की थी किला उसे सौंपकर चले जानेकी आज्ञा हुई।

नूरसराय—२१ (माघ बदी ४) को नूरसरायमें डेरे हुए। यहां नूरजहांके वकीलोंने यह बडी सराय एक विशाल बाग सहित बनाई थी। बेगमने जियाफतकी तय्यारी करके बहुत बडी मजलिस रचाई और भांति भांतिके उत्तम पदार्थ भेट किये। बादशाहने उसका मन रखनेको उसमेंसे कुछ चुन लिये और दिन भर मुकाम रखकर सूबे पंजाबके सचिव समुदायको आज्ञा की कि कन्दहारको पहले जो ६०००० रुपये भेजे गये हैं उनके अतिरिक्त दो लाख रुपये और किलेकी सामग्रीके लिये भेज दें।

कांगडा—कांगडेकी तलहटीमें कुछलोग उपद्रव करते थे। बादशाहने कासिमखांको नादिरी सहित खासा खिलअत हाथी घोडा और तलवार देकर उन्हें दण्ड देनेके लिये बिदा किया। उसका मनसब भी बढाकर दोहजारी जात और १५०० सवारोंका कर दिया।

राजा सग्राम—राजा सग्राम भी कासिमखांकी प्रार्थनासे घोडा सिरोपाव और हाथी पाकर कांगडेको बिदा हुआ।

बहमन महीना।

सरहिन्द—१ गुरुवार (माघ बदी १४) को बादशाहने सरहिन्द के पास एक दिन ठहरकर बागकी शोभा देखी।

४ रविवार (माघ सुदी २) को ख्वाजा अबुलहसन दक्षिण जीतने को बिदा हुआ। नादिरी सहित खिलअत खासीगज, सुबहदम नाम हाथी तोग और नक्कारा बादशाहने उसे दिया और सीतसिंद खांको भी खिलअत और सुबहसादिक नाम खासा घोडा देकर बिदा किया।

मुस्तफाबाद—७ (माघ सुदी ५) को सरस्वती नदी पर मुस्तफा बादसे और दूसरे दिन शाहाबादपुरमें डेरे हुए। यहां बादशाह नाव में बैठकर जमनाके जलमार्गसे रवाने हुआ और पांच कोसमें किराने

पहुंचा। यहां मुकर्रबखांका वतन था इसलिये उसके वकीलोंने ८१ याकूत ४ हीरे और एक हजार गज मखमल पगपावडेके वास्ते उसकी अरजी सहित भेट की और १०० ऊंट दानके लिये पेश किये जो बादशाहने गरीबोंको बटवा दिये।

दिल्ली—वहांसे ५ कूचमें बादशाह दिल्ली पहुंचा और एतमाद रायको हाथ खासा फरजी शाह परवेजके वास्ते भेजकर एक महीनेमें लौट आनेकी आज्ञा की।

पालम—बादशाह २ दिन सलीमगढमें रहकर २२(१) गुरुवार (फाल्गुन बदी ५) को शिकारके लिये परगने पालममें जाते हुए दिल्ली शहरसे गुजरा और हौज शमसी पर ठहरा। रास्तेमें चार हजार चरन अपने हाथसे न्यौछावर किये। २२ हथनी और हाथी जो इफ्तखारखांके बेटे अलहयारने बंगालेसे भेजे थे भेट हुए।

जुलकरनेन—जुलकरनैन (२) साभरकी फोजदारी पर विदा हुआ। वह सिकन्दर अरमनीका बेटा था जो अकबर बादशाहकी सेवा करता था। उन्होंने अबदुलहईई अरमनीकी बेटी जो अन्तःपुरकी टहलनी थी उसको दी थी। उससे २ लडके हुए थे जिनमेंसे एक यह जुलकरनेन था। बादशाह लिखता है यह कुछ सीखने और काम करनेकी चेष्टा रखता था। मेरे राज्यके प्रधानोंने खालसेके नमकका काम उसको दिया था जिसको वह अच्छी तरहसे करता था। इन दिनों उस प्रांतकी फोजदारीके पद पर पहुंचा। हिन्दी रागोंका रसिया है। उसे इस विद्यामें अच्छा अभ्यास है। उसकी कविता भी अनेक बेर सुननेमें आई है और पसन्द हुई है।

सलीमगढ—बादशाह ४ दिनतक पालममें शिकार खेल कर फिर सलीमगढमें लौट आया।

इब्राहीमखांकी भेट—२८ (३) बुधवार (फाल्गुनसुदी ११) को

(१) मूलमें २३ भूलसे लिखी है।

(२) साभरमें १ शिलालेख पर इसका नाम खुदा है।

(३) मूलमें भूलसे २८ लिखी है तुजुक जहांगीरी पृ० ३२७।

वृन्दावन—बादशाह दिल्लीसे पाससे नाव पर चढ़कर ६ कूचमें वृन्दावन पहुंचा। दूसरे दिन गोकुलमें उतरा। वहां लश्करखां हाकिम आगरा, राजा नथमल आदि कर्मचारी उपस्थित हुए।

नूरअफशा बाग—११ (फाल्गुण सुदी ८) को बादशाह नूरअफशा बागमें जो यमुनाके उस पार था पहुंचकर मुहूर्तके वास्ते ३ दिन ठहरा।

आगरेके किलेमें प्रवेश।

१४ (फाल्गुण सुदी १२) को मुहूर्त आने पर बादशाह सवारी करके किलेमें गया और राजभवनमें सुशोभित हुआ।

२ महीने १० दिनका सफर लाहोरसे आगरे तक ४८ कूच और २१ मुकामोंमें पूरा हुआ। कोई दिन जल और स्थलमें बिना शिकारके नहीं गया। ११४ हरन, ५१ मुर्गाबी, ४ करवानक, १० नोतर, २०० पोदने इस रास्तेमें शिकार हुए।

लशकरखा अच्छी सेवा करनेसे ४ हजारी जात २५०० सवारी के पदको पहुंचकर दक्षिणकी सेनाकी सहायता पर नियत हुआ।

जरगरखानेके दारोगा सईदायको बेवदलखांकी उपाधि मिली।

ईरानकी सौगात—४ घोड़े कुछ चांदीके पदार्थ और कपड़ेके थान जो शाह ईरानने भेजे थे इन दिनोंमें बादशाहकी नजरसे गुजरे।

२० (चैत्र वदी ४) को गुरुवारका उत्सव दस्तमबागमें हुआ एक लाख रुपये शाहजादे शहरयारको इनाममें मिले। कुछ अमीरोंके मनसब बढ़े। कई अमीरोंकी ओरसे भेट पूजा हुई।

२७ (चैत्र वदी ११) को गुरुवारका उत्सव नूरअफशा बागमें हुआ।

२८ शुक्रवार (चैत्र वदी १२) को बादशाह शिकारके वास्ते समूगरसे जाकर रातको लौटा। ईरानकेदूत आकाबेग और मुहिब अलीने ७ इराकी घोड़े भेट किये। बादशाहने १०० तोलेकी एक नूरजहानी मोहर ईरानके वकील जबीलबेगको इनायत की।

मालमरकी खैरात—इस साल बादशाहने तुलादानके खर्चमेंसे इस प्रकार दान अपने सामने किया—

भूमि ८५००० बीघे	धान ३३२५ गोन
गांव ४	हल २
बाग १	रुपये २३२७
मुहर १	दरब ६२००
चरण ७८८०	चांदी सोना १५१२ तोले
दाम १००००	

हाथी—३८ हाथी जिनका मूल्य २४१००० रुपये हुआ था भेट होकर खासे हाथीखानेमें आये और ५१ हाथी बडे बडे अमीरों और दूसर बन्दोंको बखशे गये।

सोलवहा नौरोज।

फरवरदीन महीना।

चन्द्रवार २७ रबीउल आखिर सन १०३० हिजरी (चैत्र बदी १४) को सूर्य मेषमें आया। सोलहवा वर्ष बादशाहके राज्या भिषेकको लगा। बादशाहने शुभघडी शुभमुहूर्तमें आगरेके रान सिंहासन पर विराजमान होकर शाहजादे शहरयारका मन मब ८ हजारी ४००० सवारका कर दिया। वह लिखताहै मेरे पूज्य पिताने पहले यही मनसब मेरे भाइयोंको दिया था।

इस दिन बाकरखाने अपनी सेना सजाकर दिखाई। बखशियोंने उस सेनाकी संख्या १००० सवार और २००० पैदल शुमार की। बादशाहने उसको २ हजारी १००० सवारके मनसब पर चढाकर, आगरेका फौजदार किया।

बुधवारको बादशाह बगमों सहित नाव पर बैठकर नूरअफशा बागमें गया। यह बाग नूरजहांकी सरकारमें था इसलिये उसने दूसर दिन गुरुवारके उत्सवकी बडी भारी मजलिस करके एक शानदार भेट पेशकी। बादशाहने एक लाख रुपयेके जवाहिर, जडाऊ पदार्थ और दिव्य वस्त्र उसमेंसे चुनकर लेलिये।

इन दिनों बादशाह नित्य शिकार खेलने समूगर जाता था और रातको चला आता था। यह स्थान शहरसे ४ कोस था।

बिहार—बिहारका सूबा मुकर्रिबखांसे लेकर शाह परवेजको दिया गया था इसलिये राजासारंगदेवके हाथ खासाखिलअत जड़ाऊ परतला जिसमें एक नीला और कई लाल याकूत लगे हुए थे शाहजादेके वास्ते भेजा गया। उसे यह भी हुक्म था कि शाहजादे को इलाहाबाससे बिहारको रवाने कर दे।

अजदुद्दौलाकी पेन्शन—अजदुद्दौला बहुत बूढा होजानेसे सेना और जागीरका प्रबन्ध नहीं कर सकता था इस लिये बादशाहने उसका ४०००) का महीना करके कह दिया कि आगरे या लाहौर में जहां चाहे सुखपूर्वक रहे।

ईरानके वकीलोंकी भेट—८ (चैत सुदी ७) को ईरानके दूत सुहिबअली और आकाबेगने २४ घोडे २ खच्चर ३ ऊंट ७ ताजी कुत्ते २७थान जरीके अम्बरका एक सुगन्धित द्रव्य, दो जोड़े, कालीन और दो तकिये नमदेके भेट किये। दो घोडियां बछेरों सहित जो शाहने उनके साथ भेजी थीं वह भेट कीं।

आसफखांके घर जाना—गुरुवारको बादशाह आसफखांकी प्रार्थनासे बेगमों सहित उसके घर गया। उसने बड़ी सभा सजाकर बहुतसे अनोखे जवाहिर उत्तम वस्त्र और अमूल्य पदार्थ भेट किये जिसमेंसे बादशाहने १३००००) की चीजें लेकर बाकी उसीको बख्श दीं।

विचित्र गोरखर—इन दिनोंमें बादशाहने अद्भुत गोरखर देखा जो काले और पीले सिंहके समान था। यह दोनो रंग नाककी नोकसे पूंछके नीचे तक थे। कानकी लौसे खुर तक छोटी बड़ी काली धारियां यथास्थान अनुक्रमसे खिंची हुई थीं। आंखके आस-पास बहुतही सुन्दर गोल कुण्डल बना हुआ था। मानो विधाताने अपनी लेखनीकी चित्रकारीसे यह कौतुक रचकर संसारमें भेजा था जो बहुतही अपूर्व था। कुछ लोगोंको भ्रम था कि कहीं रंग तो

नहीं कर दिया। परन्तु बादशाहके निर्णय करनेसे निश्चय होगया कि विधाताने ऐसाही बनाया है। इसी हेतु शाह ईरानके वास्ते जानेवाली सौगातोंमें रखा गया।

मेष संक्रान्ति—गुरुवार (वैशाख वदी २) को मेष संक्रान्तिका उत्सव हुआ। बादशाह दो पहर एक घड़ी दिन बीते सिंहासन पर बैठा। यह उत्सव एतमादुद्दौलाकी प्रार्थनासे उसके घर पर हुआ। उसने बहुत बड़ी भेट सजाई थी जिसमें देशदेशान्तरके दिव्यद्रव्य थे। बादशाहने १३८०००) के पदार्थ उठा लिये।

२०० तोलेकी मुहर—इसी दिन बादशाहने २०० तोलेकी एक मुहर ईरानके एलची जम्बीलबेगको दी।

अद्भुत ख्वाजासरा—इन्हीं दिनोंमें इब्राहीमखांने कई ख्वाजेसरा (क्लीब) बंगालेसे भेजे थे उनमें एक नपुंसक निकला। उसमें स्त्री और पुरुष दोनोंके चिन्ह थे। इनके सिवा बंगालेकी दो नावें भी उसकी भेटमें थीं जिनके अलंकृत करनेमें १००००) खर्च किये थे।

इलाहाबाद—शेख कासिम, मोहतशिमखांका खिताब और पांचहजारी मनसब पाकर इलाहाबादकी सूबेदारी पर नियत हुआ। बादशाहने दीवानोंको हुक्म दिया कि इसके इजाफे की जागीरकी तनखाह उन परगनोंमें लगावें जिनमें अबतक अमल नहीं हुआ है।

श्रीनगरका राजा श्यामसिंह—श्रीनगरके राजा श्यामसिंहको हाथी और घोड़ा मिला।

यूसुफखांकी अद्भुत मृत्यु—हुसैनखांका बेटा यूसुफखां दक्षिणमें अकस्मात् मर गया। बादशाह लिखता है—ऐसा सुना गया है कि इस मुद्दतमें वह अपनी जागीरमें रहता था और ऐसा मोटा हो गया था कि घोड़ेसे चलने फिरनेमें भी श्वास रुकने लगता था। जिस दिन खुर्रमकी सेवामें गया उस दिन आने जानेसे उसका दम घुटने लगा था। जिस समय उसको खिलअत दिया गया तो वह पहनने और तसलीम करनेमें थक गया। सारा शरीर कांपने लगा।

बडे परिश्रम और कष्टसे तसलीम करके जैसे तैसे बाहर निकला और कनातके पासही गिरकर अचेत होगया। उसके नोकर पालकीमें डालकर लेगये। घर पहुंचतेही मर गया।

उर्दीबहिश्त महीना।

१ (वैशाख सुदी १) को बादशाहने खासा खंजर जबीलवेग वकीलको दिया।

शहरयारका विवाह—४ (वैशाख सुदी ४) को शहरयारका विवाह हुआ। मेंहदीकी मजलिस मरयमजमानीके महलमें जुडी। बादशाह भी बेगमों सहित वहां चला गया था। शुक्रवारको ७ घडी रात जाने पर निकाह हुआ।

२०(१) मङ्गलवार (ज्येष्ठ वदी ६) को बादशाहने नूरअफशाबाग में शहरयारको जडाऊ चार कुब्ब, पगडी पटका एक इराकी घोडा सोनेकी जीनवाला, दूसरा तुर्की जिसकी जीन चित्रदार थी इनायत किया।

शाह शुजाकी बीमारी और जोतकरायको इनाम।

इन दिनोंमें शाह शुजाको माता निकलनेसे ऐसी पीडा हुई कि पानी भी गलेसे नहीं उतरता था जीनेकी आशा न रही थी। उसके बापके जन्मपत्रमें ऐसा योग पडा था कि इस वर्ष उसका लडका मर जावे, सब ज्योतिषी यही कहते थे कि वह न बचेगा। परन्तु जोतकराय कहता था कि बचेगा। बादशाह लिखता है—"मैंने प्रमाण पूछा तो कहा—हजरतके जन्मपत्रमें लिखा है कि इस वर्षमें किसी प्रकारका क्लेश न हो और हजरतको उससे बहुत मोह है इसलिये उसको कुछ हानि न पहुचनी चाहिये कोई और लडका भलेही मर जाय। ऐसाही हुआ। शुजा अच्छा होगया और दूसरा लडका जो शाहनवाजखाकी बेटीसे हुआ था बुरहानपुरमें मर गया। इसके सिवा और भी उसके बहुत हुक्म (फल) मिले हैं जो विचित्रतासे खाली नहीं। वह पहले प्रसगोंमें लिखे जाचुके हैं। इस वास्ते मैंने

(१) मूलमें १८ लिखी है २० चाहिये।

उसे रुपयोंमें तुलवा दिया। वह तौलमें ६५०० रुपयोंके बराबर हुआ। वह उसे इनाम दिये गये।

हुरमुज और होशंग—हुरमुज और होशंग मिरजा हकीमके पोते थे और गवालियारके किलेमें कैद थे। बादशाहने दोनोंको अपने सामने बुलाकर आगरेमें रहनेका हुक्म दिया। उनके खर्चके लायक रोजाना भी मुकर्रर कर दिया।

भट्टाचार्य—बादशाह लिखता है—भट्टाचार्य नाम ब्राह्मण जो इस जातिके शिरोमणि विद्वानोंमेंसे है और बनारसमें पढ़ने पढ़ानेका काम करता है इन दिनों आकर मिला। सच यह है कि अकली और नकली (वेद और शास्त्रों) के रहस्य समझनेमें इसने खूब अभ्यास किया है। अपनी विद्यामें पूरा है।

बिजलीका गिरना—३० फरवरदीन (बैशाख बदी १४) को परगने जालन्धरके एक गांवमें तड़केही पूर्व दिशामें ऐसा भारी कोलाहल उठा कि जिसके भयसे गांववालोंके प्राण जाने लगे और उसी गड़गड़ाहटमें ऊपरसे रोशनी जमीन पर गिरी। लोगोंको आकाशसे आग बरसानेका भ्रम हुआ। कुछ देर पीछे जब शान्ति हुई और लोगोंके दिल ठिकाने आये तो उन्होंने एक जल्दी चलनेवाला कासिद मुहम्मद सईद आमिलके पास दौड़ाया और उसको इस वारदातकी खबर भेजी। वह तुरन्त चढ़कर आया और देखा तो १०।१२ गज लम्बी चौड़ी जमीन ऐसी जल गई है कि घासका नाम न रहा था। वह जमीन अभी गर्महो थी। उसने खोदनेका हुक्म दिया। जितनी अधिक खोदी उतनीही अधिक गर्मी और तपत प्रगट होती गई। अन्तको लोहेका एक टुकड़ा मिला जो ऐसा गर्म था कि मानो अभी भट्टीमेंसे निकला है। वह उसको उठाकर अपने डेरे पर लेआया और एक मुहर लगी हुई थैलीके भीतर रख कर दरगाहमें भेजा। बादशाहके सामने तोला गया। १६० तोले का हुआ। बादशाहने उस्ताद दाऊदको हुक्म दिया कि इसकी एक तलवार एक खञ्जर और एक छुरी बना लावे। उसने आकर

अर्ज की कि यह हथौड़ेके नीचे नहीं ठहरता है बिखर जाता है। बादशाहने फरमाया कि दूसरा लोहा मिलाकर बनाओ। तीन हिस्से वह और एक हिस्से दूसरा लोहा मिलाकर दो तलवार एक छुरी और एक खंजर बना लाया। दूसरा लोहा मिलानेसे इसके जौहर भी निकल आये। यमानी तथा दक्षिणी असील तलवारोंके समान यह भी मुड़ जाती थीं और बल नहीं पड़ता था। बादशाहके सामने परीक्षा की गई तो असील तलवारोंके बराबर काट किया।

शाह परवेज—खारंगदेव शाह परवेजके पाससे उसकी अर्जी लेकर आया, जिसमें लिखा था कि यह दास आज्ञानुसार इलाहाबादसे बिहारको रवाने होगया है।

दक्षिणमें विजय—इसी दिन खुर्रमका नौकर अलीमुहीन फतह की अर्जी और एक जड़ाऊ शिस्त(१) भेंट लेकर आया। बादशाह ने उसके हाथ खुर्रमके वास्ते खिलअत भेजा।

इमामकुलीखांकी मा—इमामकुलीखांकी माने पुराने सम्बन्धसे नूरजहांके नाम पत्र और कुछ पदार्थ उस देशके भेजे थे। बादशाह ने भी नूरजहांकी तरफसे पत्रोत्तर और यहांकी सौगात देकर अपनी युवराजावस्थाके सेवक ख्वाजा नसीरको तूरानमें भेजा।

जंगका बच्चा—इन दिनों नूरअफशां बागमें जंगका(२) ८ दिन का बच्चा दौलतखानेकी ८ गज ऊंची छतसे छलांग मारकर जमीन पर आरहा और खूब उछला कूदा। किसी प्रकारकी चोट या मोच उसके शरीरमें न आई।

खुरदाद महीना।

दक्षिणमें फतह—४ (ज्येष्ठ सुदी ५।६) को खुर्रमका दीवान अफजलखां उसकी अर्जी लेकर आया। उसमें लिखा था कि जब बादशाही लश्कर उज्जैनमें पहुंचा तो जो लोग मांडूके किलेमें थे उन्होंने यह लिखकर भेजा कि शत्रुओंकी एक सेना नर्बदासे उतर आई है और किलेकी तलहटीके कई गांवोंको जलाकर लूट मार

(१) सीधा वस्त्र (२) एक पशु।

कर रही है। ख्वाजा अबुलहसन ५००० सवारोंसे उनके ऊपर भेजा गया। वह रातको धावा मारकर तडकेही नर्बदाके तटपर पहुंचा। पर वह लोग खबर पाकर कुशलपूर्वक कुछ पहले नदीसे उतर गये थे। तोभी इसने पीछा करके उनको वहांसे हटा दिया और बहुतों को मार भी डाला। बाकी बुरहानपुर तक भागे चले गये। खुर्रम ने खानाको लिखा कि हमारे आने तक नदीके पारही ठहरा रहे। फिर बादशाही लशकर अगली उनीसे मिलकर कूच दरकूच बुर हानपुरको पहुंचा। तब तक शत्रु बुरहानपुरको घेरे बैठे थे। बादशाही बन्दोंको उनसे लडते हुए दो वर्ष बीत चुके थे। वह घेरे और अनाजके टोटेसे कातर होगये थे। घोडे भी रात दिनकी दौड धूपसे मर रहे थे इसलिये लशकरको तय्यारी करनेमें ८ दिन तक ठहरना पडा। इन दिनोंमें ३० लाख रुपये और बहुतसे घोडे फौजमें बांटे गये। मजावल भेज भेजकर लोगों का शहरसे बाहर निकाला। अभी चढाई न हुई थी कि वह लोग डरकर भाग गये। फुरतीले जवानोंने उनका पीछा किया और खिरकी शहर तक पहुंचा दिया। वहां निजामुलमुल्क रहता था। पर एक दिन पहले खबर पाकर बालबच्चे और धनमाल सहित दौलताबादके किलेमें चला गया था। उसके आदमी मुल्क में बिखर गये। बादशाही सेनापतियोंने ३ दिन खरकीमें रहकर उस शहरको जो बीस वर्षमें बसा था ऐसा उजाडा कि बीस वर्ष आगे तक भी उसका यथार्थ शोभा पाना सम्भव नहीं है। यहांसे सेना अहमदनगरको गई जिसे अबतक भी गनीम घेरे हुए था। सेना पटन तक पहुंची थी कि अम्बरने वकील भेजे और नम्रतासे कहलाया कि आगेको सेवा नहीं छोडूंगा। बिना हुक्म कदम न बढाऊंगा। उन दिनों उर्दूमें अनाजकी बहुत महंगी थी और यह भी समाचार लग गये थे कि जो लोग अहमदनगरके किलेको घेरे हुए थे विजयी सेनाकी चढाईसे भयभीत होकर भाग गये हैं। इस लिये बादशाही बन्दे कुछ सेना और कुछ रुपया सहायताके वास्ते

खुर्रमखांके पास भेजकर लौट आये। फिर अम्बरके बहुत गिड़गिड़ाने पर यह बात ठहरी कि पुराने इलाकेके सिवा १४ कोस भूमि उन परगनोंकी ओर छोड़ दे जो बादशाही इलाकेसे मिले हुए हैं और पचास लाख रुपये भेंट दे।

बादशाहकी बख्शिशें—बादशाहने शाह ईरानकी भेजी हुई वह रत्नजटित कलंगी जिसकी प्रशंसा पहले होचुकी है अफजलखांके हाथ खुर्रमके वास्ते भेजी। अफजलखांको खिलअत हाथी और जड़ाऊ दवात कलम इनायत किया। खंजरखांका मनसब बढ़ाकर चार हजारी १००० सवारोंका कर दिया। क्योंकि उसने अहमद नगरकी लड़ाइयोंमें बहुत दृढ़ता दिखाई थी।

उदयराम दक्षिणी—उदयराम दक्षिणीको झण्डा मिला।

२१(१) (आषाढ़बदी ८) को मुकर्रबखां बिहारसे आया।

ईरानके वकीलोंको विदा—आकाबेग, मुहिबअलीबेग, हाजीबेग और फाजिलबेग शाह ईरानके भेजे हुए कई बार करके आये थे उनको बादशाहने विदा करके आकाबेगको तो सिरोपाव खञ्जर जड़ाऊजीगा और ४०००० रुपये मुहिबअलीको खिलअत और ३००००) और इसी प्रकार दूसरोंको भी प्रदान किये। कुछ सौगात शाहके वास्ते भी उनके हाथ भेजी गई।

दिल्लीका सूबा—इसी दिन मुकर्रमखांको जो उड़ीसेसे बुलाया हुआ आया था दिल्लीकी सूबेदारी और मेवातकी फौजदारी मिली।

गिरधर कछवाहा—राय साल कछवाहेके बेटे गिरधरका मन सब१२ सदी ८०० सवारोंका होगया।

तीर महीना।

गजरत्न हाथी—१ तीर (आषाढ़सुदी ५) को गजरत्न नाम हाथी खानजहांके वास्ते भेजा गया।

खुर्रमको घोड़े—खुर्रमका नौकर नजरबेग उसकी अर्जी लेकर

(१) मूलमें २१ खुरदाद गुरुवारकी लिखी है पर इसमें बड़ी भूल है क्योंकि गणितसे शनिवारको चाहिये।

घाया था जिसमें घोड़े भेजनेकी प्रार्थना लिखी थी बादशाहने राजा कृष्णदास मुशरिफको हुक्म दिया कि सरकारी तवेलोंसे १५ दिनमें एक हजार घोड़े तैयार करके उसको देदे।

रूपरत्न घोड़ा—रूपरत्न घोडा जो शाह ईरानने रूसकी लूटसे भेजा था बादशाहने खुर्रमके वास्ते भेजा।

किश्तवार—पहले बादशाहने किश्तवारके जमीन्दारोंका बलवा मिटानेके लिये दिलावरखांके बेटे जलालको भेजा था परन्तु उससे वह काम न बना तब इरादतखांको खुद जानेका हुक्म दिया वह वहां गया और उपद्रवको दूर तथा थानोंको दृढ़ करके कश्मीरको चला आया। बादशाहने इस सेवाके पुरस्कारमें ५०० सवार उसके मनसब पर बढा दिये। ऐसेही ख्वाजा अबुलहसनके मनसबपर १००० सवार दक्षिणमें अच्छा काम करनेसे बढाये गये।

उडीसा—इब्राहीमखां फतहजङ्ग सूबेदार बङ्गालके भतीजे अह-मदवेगको बादशाहने उडीसेकी सूबेदारी खांका खिताब झण्डा और नक्कारा देकर उसका मनसब दो हजारी ५०० सवारोंका करदिया।

काजी नसीर बुरहानपुरी—बादशाहने काजी नसीरकी विद्वत्ता की प्रशंसा सुनकर उसको बुरहानपुरसे बुलाया था और आदरपूर्वक उससे मिला था। लिखता है—"कम कोई किताब होगी जो उसने न पढी हो। लेकिन उसके जाहिरका बातिनसे बहुत कम मेल है। इसलिये उसकी संगतसे प्रसन्नता नहीं होसकती और उसे भी मैंने विरक्त पाया। इसलिये नौकरीका कष्ट न दिया और ५०००) देकर विदा किया।"

अमरदाद महीना।

अमीरोंके इजाफे—१ अमरदाद (सावन सुदी ७) को बाकरखां का मनसब दो हजारी १२०० सवारोंका होगया। दक्षिणी सेनामें उत्तम सेवा करनेवाले ३२ अमीरों और बादशाही बन्दोंके मनसब यथायोग्य बढ़ाये गये।

कन्दहार—कन्दहारके हाकिम "अबदुलअजीजखां नकशबन्दी"

का। मनसब खानन्हाकी प्रार्थनासे ३ हजारी २००० सवारोंका होगया।

शहरेवर महीना।

ज्बील्बेगकी बखशिश—१ शहरेवर (भादों सुदी ८) को बाद शाहने ईरानके एलची जबीलबेगको एक जड़ाऊ तलवार बखशी ओर १६००० रुपयेकी जमाका एक गांव भी उसे आगरा प्रान्तमें दिया।

हकीम रुकना कुपात्रतासे सेवाके योग्य न समझा जाकर मौकूफ किया गया।

इन्साफ—बादशाहने यह सुनकर कि खानआलमके भतीजे होशंगने एक नाहकका खून किया है उसे अपने सामने बुलाया और तहकीकात की। सहत होजाने पर उसके लिये प्राणदण्डकी आज्ञा दी। वह लिखता है—इन बातोंमें मै शाहजादोंकी भी रियायत नहीकरता, अमीरों ओर दूसरे बन्दोंकी तो बातही क्या।

आसफखांके घर जाना—इसी दिन बादशाह आसफखांकी प्रार्थनासे उसके घर गया। उसने एक सुन्दर हम्माम नया बनवाया था। उसमें स्नान किया ओर उसको भेटमेंसे कुछ पदार्थ लेआया।

कल्याण लुहार—बादशाहने सुना कि कल्याण नामका एक लुहार अपनी जातिकी किसी स्त्री पर आसक्त होकर उसके पीछे पीछे फिरता है पर वह विधवा होने पर भी उसे नहीं चाहती है। बादशाहने दोनोंको अपने सामने बुलाकर पूछताछ की ओर स्त्रीको उससे नाता करनेके लिये बहुतसा कहा सुना। पर उसने अङ्गीकार न किया। तब लुहारने कहा यदि मुझे यह प्रतीत होजावे कि आप इसको मुझे बखश देंगे तो मैं किलेके शाहबुर्ज परसे कूद पडूं। बादशाहने कहा कि जो तेरा मोह सच्चा है तो इस घरकी छत परसे ही कूद, मैं उसे तुझको हुकमन देता हूं। अभी यह बात पूरी भी न हुई थी कि वह बिजलीकी तरह दोड़कर कूद पड़ा ओर गिरतेही उसकी आंख और मुंहसे खून बहने लगा—बादशाह

लिखता है—मैं इस ज़िन्दगीसे बहुत पछताया और उदास हुआ। ग़ुलामख़ानेको हुक्म दिया कि इसको अपने घर लेजाकर इलाज करे परन्तु उसकी मृत्यु आपहुची थी उसी व्यथासे मरगया।

बादशाहको दमेकी बीमारी—दशहरेके दिन काश्मीरमें बादशाहको सांस घुटकर आता सा जान पड़ा था। वहां बहुत मेह बरसने और ठण्डी हवा होनेसे सांसकी नालीमें बाईं तरफ दिलके पास नमी और गरानी पाई गई थी। होते होते बहुत बढ़ गई। पहले हकीम रूहुल्लहने गर्म दवाइया दी जिनसे कुछ कमी होगई परन्तु जब बादशाह उस घाटेसे उतरा तो फिर तकलीफ बढ़ गई। इस समय कुछ दिनतक बकरीका फिर ऊटनीका दूध पिया। परन्तु किसीसे कुछ फायदा न हुआ। फिर हकीम रुकनाने जिसे बादशाह काश्मीरमें छोड़ आया था आकर गर्म और ख़ुश्क दवाइयोंसे इलाज किया जिनसे उल्टी गरमी और ख़ुश्की सरजमें चढ़ गई। बादशाह बहुत दुबला होगया रोग बहुत बढ़ गया। वह लिखता है—इसी हालतमें जबकि पत्थरका दिल भी मेरे ऊपर पिघलता था हकीम मिरज़ा मुहम्मदका बेटा कृतघ्न सदरा, जिसे मैंने सब हकीमों से बढ़ाकर मसीहुज्ज़मा की पदवी दी थी और यह जानता था कि वह किसी दिन मेरे काम आवेगा, कुछ दवा दारू न करता था और मुझे उसी दुर्दशामें रखना चाहता था। मैं बहुत कुछ मेहरबानी जताकर उसे इलाज करनेको कहता था तो वह और भी दूर होकर अर्ज करता था कि मुझे अपनी विद्या और हिकमत पर इतना भरोसा नहीं है कि इलाज कर सकूं। ऐसेही हकीमुल्मुल्क का बेटा हकीम अबुलकासिम भी जो खानाजाद और पाला हुआ था। अपनेको ऐसा उदास और चिन्तातुर दरसाता था कि देखनेसेही मन मलिन और दुःखित होजाता था, फिर इलाज कराना तो कहां रहा? लाचार मैंने सबको छोड़कर बाहरी उपचारोंसे दिल उठा लिया और अपनी आत्माको परमात्माके समर्पण करदिया। प्यालेके नशेमें रोगकी कुछ कमी होजाती थी इसलिये मात्राके अतिरिक्त

दिनमें भी प्याले लेने लगा। इस तरह दारू बहुत बढ गई। जब गर्मी आई तो उसका नुकसान भी मालूम होने लगा। तब नूरजहां बेगम जिसकी चेष्टा और अनुभव इन तबीबोंसे बढ़ा हुआ था प्रेमवश प्याले घटाने लगी। पहले भी हकीमोंका इलाज उसी की सलाहसे होता था। पर अब मैंने उसीकी कृपा पर सब काम छोड़ दिये। उसने धीरे धीरे शराब कम कराई। अनुचित चीजों और कुपथ्य खानोंसे परहेज कराया। आशा है कि ईश्वर स्वास्थ्य देगा।

सौरपचीय तुलादान—१८(१) रविवार २५ शव्वाल सन् १०३० (आश्विन बदी ११ संवत् १६७८) को बादशाहके सौरपचीय जन्म दिवसका उत्सव बड़े समारोहसे हुआ। पिछले वर्ष बादशाहने बहुत कष्ट उठाया था और इस वर्षके लगतेही आराम होगया था। उसके हर्षमें नूरजहांने प्रार्थना की कि मेरे सचिव इस उत्सवका सम्पादन करेंगे। बादशाह लिखता है—"वास्तवमें उसने ऐसी मजलिस सजाई कि देखनेवालोंको आश्चर्य होता था। जिस तिथि से नूरजहां बेगम मेरे निकाहमें आई है प्रत्येक सौम और सौर-पचीय तुलादानोंके उत्सव इस महत् राज्यकी विभूतिके योग्य सम्पादन करनेमें वह अपना सौभाग्य समझती है। इस उत्सवमें तो उसने कमाल करदिया। सभा सजानेमें अत्यन्त प्रयत्न किया। जिन निज सेवकोंने बीमारीमें रात दिन निरन्तर कष्ट सहकर सेवा की थी उनको यथायोग्य खिलअत जड़ाऊ परतले जड़ाऊ खंजर हाथी घोड़े और रुपयोंसे भरे हुए थाल मिले। हकीमोंने कोई अच्छी सेवा न की थी और थोड़ीसी शान्ति होजाने परही जो दो तीन दिनसे अधिक नहीं रहती थी अपनी सुसेवा जताकर इनाम इकराम पाते रहते थे, तोभी वहलोग इस आनन्दोत्सवमें उचित पारि-तोषिक नकद रुपये और अमूल्य वस्तुएं पाकर अपनी मनोवासना को प्राप्त हुए। सभा विसर्जन होने पर रुपयों और रत्नोंसे भरे हुए

(१) तुजुक जहांगीरीमें भूलसे १२ शहरेवर चन्द्रवार लिखा है।

थाल न्यौछावर होकर मंगलमुखियों और मुहताजोंकी झोलियोंमें डाले गये।"

जोतकराय—जोतकराय जो आरोग्य मंगलकी बधाई दिया करता था मोहरों और रुपयोंमें तोला गया। ५०० मोहरें और ७०००) उसको इस प्रसंगसे इनाममें मिले।

भेट—उठते वक्त भेट जो सजी रक्खी थी बादशाहको दिखाई गई। जवाहिर और जड़ाऊ चीजोंमेंसे कुछ बादशाहने चुन लीं। इस उत्सव और इनाममें नूरजहां बेगमने दो लाख रुपये खर्च किये। भेट इससे अलग थी।

बादशाहका वजन—बादशाह लिखता है—"पिछले वर्षों जब मैं भला चंगा था तो तोलमें ३ मनसे कभी सेर दो सेर ज्यादा और कभी कम होता था। इस वर्ष बीमारीसे दुबला होकर दो मन२७ सेर उतरा।"

मह्‌र महीना।

१ मह्‌र(१) शनिवार (आश्विनसुदी१०) को कशमीरके हाकिम एतकादखांका मनसब चारहजारी २५०० सवारोंका होगया।

राजा गजसिंह—राजा गजसिंहका मनसब चारहजारी ३००० सवारोंका होगया।

शाह परवेज—शाह परवेज बादशाहकी बीमारीके समाचार मिलने पर व्याकुल होकर बिना बुलायेही चल दिया था सो १४ (कार्तिक बदी ८) को शुभमुहूर्तमें उसने चौखट चूमी। बादशाह लिखता है—वह तीन बार तख्तके आसपास फिरा। मैं जितना कहता था, शपथ देता था और निषेध करता था उतनाही वह दीनता और अधीनता जताता था। निदान मैंने उसका हाथ पकड़

(१) तुजुक पृष्ठ ३३५ में १ मह्‌र गुरुवारको लिखी है। पर उस दिन तो २८ शहरेवर थी। जो शहरेवरका महीना २८ दिनका माना हो तो १ मह्‌र गुरुवारको होसकती है नहीं तो पंचांगके हिसाबसे शनिको थी—यही हमने ऊपर लिखी है।

कर गागने तरफ खेंचा और बडे चावसे बगलमे लेकर बहुतसा प्यार किया।

खुर्रमको २० लाख रुपये—इन दिनो दक्षिणी सेनाकी समर सामग्रीके लिये बीस लाख रुपयेका खजाना खुर्रमके पास असद दादखाके हाथ भेजा गया।

कयामखा—२८ (कार्तिक सुदी ८) को कयामखा किरावलबाशी (शिकारियोका नायक) मरगया। बादशाहको उदासी हुई क्योकि वह शिकारके कामोमे चतुर और बादशाहका मनोगामी था।

नूरजहा बेगमकी माका मरना—२९ (कार्तिक सुदी ९) को नूरजहा बेगमकी माका देहान्त होगया। बादशाह लिखता है—"सुशील घरानेकी इस विशुद्ध प्रकृतिवाली बेगमकी क्या प्रशसा की जाय। जो उत्तम गुण स्त्रियोके आभूषण होते हे वह सब इसमे थे। इसके समान ससारमे कोई स्त्रीरत्न नही देखा। मै उसे अपनी मासे कम नही जानता। एतमादुद्दौलाको इससे जो प्रेम था वह किसी पतिको भी अपनी पत्नीसे न होगा। इससे अनुमान कर सकते है कि उस व्यथित बूढे पर क्या बीती होगी। ऐसेही नूर-जहा बेगमकी ममताका जो उसे उस अच्छी मातासे थी क्या लिखा जावे। आसफखा जैसा पुत्र अति बुद्धिमान होकर भी व्याकुलतासे गृहस्थासक्तिको छोडकर विरक्त हो बैठा। शान्तचित्त पिताने जब प्रियपुत्रकी यह दशा देखी तो उसे और शोक हुआ। उसने बेटेको बहुत समझाया पर वह कुछ न समझा। जिसदिन मै मातमपुर्सीको गया था उस दिन उसकी उदासीका प्रारम्भही था। इसलिये मैने प्यारसे थोडासा उपदेश किया अधिक आग्रह नही किया। उसे उसी दशामे छोड दिया कि जब शोकका वेग कम होजायगा तो कुछ दिन पीछे उसके हृदयके घावको मेहरबानीके मरहमसे अच्छा करके फिर गृहस्थाश्रममें ले आऊगा। एतमादुद्दौला मेरे लिहाजसे अपना दु ख दबानेमें बहुत साहस करता था। पर इस प्रकारकी प्रीतिमें

पहुंचातक साहस उसका साथ देसकता है।"

आबान महीना।

१ आबान (कार्तिक सुदी ११) को सरबुलन्दखां, जानसुपारखां और बाकीखांको नक्कारे इनायत हुए।

अबदुल्लहखां बिना छुट्टी दक्षिणी सेनासे अपनी जागीरमें चला आया था, इस अपराधमें बादशाहने दीवानोंको कहा कि उसकी जागीर उतार लें और एतमादरायको हुक्म दिया कि सजावली(१) करके उसको उसी सूबेमें पहुंचा दे।

हकीम मसीहुज्जमाकी बिदा—हकीम मसीहुज्जमाकी करतूत पहले लिखी जाचुकी है। अब उसने और ढिठाई करके मक्के जाने की आज्ञा मांगी। बादशाहने जो खुदा पर भरोसा रखता था प्रसन्न मनसे उसको बिदा किया और उसके सबप्रकार सम्पत्तिसम्पन्न होने पर भी उसे २००००) खर्चके वास्ते दिये।

उत्तरको बादशाहकी यात्रा—१३ शनिवार(२) (अगहन बदी७) को बादशाह उत्तरके पहाड़ोंकी ओर गया। क्योंकि आगरेकी गर्म हवा उसे बरदाश्त न थी। विचार था कि यदि प्रान्तिक वायु सम भव हो तो। गंगाके तट पर कोई भली भूमि देखकर एक नगर बसावे जो गर्मियोंमें रहनेके काम आवे। नहीं तो कशमीरको कूच कर जावे।

मुजफ्फरखांको नक्कारा घोड़ा और हाथी देकर राजधानीकी रखवाली पर छोड़ा। उसके भतीजे मिरजा मुहम्मदको असदखां की पदवी और शहरकी तहसीलकी फौजदारी दीगई।

बाकरखां अवधकी सूबेदारी पर भेजा गया।

---

(१) जेर कर।

(२) यहां भी दो दिनका अन्तर है मूलमें चन्द्रवार है।

अठारहवां वर्ष।

सन् १०३१ हिजरी।

अगहन सुदी ३ संवत् १६७८ तारीख ६ नवम्बर सन् १६२० से कार्तिक सुदी १ संवत् १६७९ तारीख २५ अक्टोवर सन् १६२२ तक।

शाह परवेज विहारको—२६ (अगहन सुदी ६) को वादशाहने मथुराके पाससे शाह परवेजको नादिरी मढ़ित खासा सिरोपाव जड़ाऊ खञ्जर घोड़ा और हाथी देकर बिहारकी सूबेदारी पर विदा किया जहां उसकी जागीर भी थी।

आजर महीना।

६ आजर (अगहन सुदी १५) को बादशाह दिल्ली पहुंचा और दो दिन सलीमगढ़में रहकर शिकारका मजा लेता रहा।

जादूराय खाता—इन दिनों बादशाहसे अर्ज हुई कि जादूराय खाता जो दक्षिणके श्रेष्ठ सरदारोंमेंसे था भाग्यवलसे बादशाही दलमें आकर नौकर होगया है। बादशाहने उसके वास्ते क्षमापत्र खिल-अत और जड़ाऊ खञ्जर नारायणदास राठौरके हाथ भेजा।

दे महीना।

१ दे ८ सफर (पौषसुदी १०) को बादशाहने कासिमखांके भाई मकसूदको हाशिमखांका और हाशिमवेगको जांनिसारखांका खिताब दिया।

७ (माघ वदी १) को बादशाह हरिद्वारमें गंगाके किनारे उतरा। लिखता है—"हरिद्वार हिन्दुओंके प्रतिष्ठित तीर्थोंमेंसे है। बहुतसे ब्राह्मण और सन्यासी यहां एकान्तवासी होकर परमेश्वरका पूजन अपनी धर्मनिष्ठाके अनुसार कर रहे थे। मैंने प्रत्येकको यथा-योग्य रुपये और पदार्थ दिये। इस पहाड़का जलवायु मेरे मनको

न भाया और न ऐसी कोई भूमिही देखी जहां रहता। इससे मैंने जम्मू और कांगडेके पहाडकी प्रस्थान किया।"

राजा भावसिंहका देहान्त—इन्हीं दिनोंमें बादशाहसे अर्ज हुई कि राजा भावसिंह दक्षिणके सूबेमें मर गया। बादशाह लिखता है—"अधिक मद्य पीनेसे बहुत दुर्बल होगया था। अकस्मात् मूर्च्छा आई। हकीमोंने बहुत उपाय किये उसके मस्तक पर डाम भी दिये परन्तु होश न आया। एक रात एक दिन संज्ञाहीन पडा रहा। दूसरे दिन शान्त होगया। दो स्त्रियां और ८ लौडियां उसकी प्रेमाग्निमें जल गईं। उसका बडा भाई जगतसिंह और भतीजा महासिंह दोनो मद्यपानमें अपने प्राण खोचुके थे। तो भी इसने उनसे कुछ शिक्षा न लेकर अपनी मीठी जान इस कडवे पानी में डबोई। बहुत सुन्दर सुशील और सजीला था। मेरी युवराजा-वस्थामें सेवाको प्राप्त होकर मेरे प्रतापसे पांचहजारीके पदको पहुंचा था। उसके कोई पुत्र न था इसलिये मैंने उसके बडेभाईके पोते(१) को बालक होनेपर भी राजाकी पदवी दोहजारी जात और १००० सवारोंका मनसब इनायत करके आमेरका परगना जो इन लोगोंका वतन है यथावत उसकी जागीरमें रहने दिया जिससे उसकी सेना बिखरने न पावे।"

आलूतवा—(८ माघ बदी २) को बादशाहका मुकाम सराय आलूतवामें हुआ। बादशाहने पन्नी मुर्गाबीका मास खाना तो उसे कीडे खाते हुए देखकर अजमेरमें छोड दिया था, शिकारी मुर्गाबी का मांस खाना यहां छोडा। क्योंकि उसके पेटसे भी वैसेही कीडे निकले थे। बादशाह जिस पशु पक्षीका शिकार करता था उसका पेट भी अपने सामने चिरवाकर पोटा देखता था। यदि उसमें कोई वस्तु ऐसी निकल आती कि जिससे उसको घृणा होती थी तो उस का मांस न खाता था।

---

(१) जयसिंह, महासिंहका बेटा।

उकावका मास—खान आलमने कहा कि सफेद उकाबका मास बहुत स्वादु और हलका होता है। बादशाहने अपने सामने मगा कर साफ कराया तो उसके पोटेमेंसे भी १० कीडे निकले। इससे उसे घृणा होगई।

सरहिन्द—२१ (माघ सुदी १) को बादशाह सरहिन्दके बागमें पहुचकर दो दिन तक यहा विहार करता रहा।

ख्वाजा अबुलहसन दक्षिणसे आगया।

बहमन महीना।

इलाहाबास—१ बहमन (माघ सुदी ८) को नूरसरायमें सवारी उतरी। खान आलम घोडा सिरोपाव और जडाऊ तलवार पाकर इलाहाबासकी सूबेदारी पर बिदा हुआ।

व्यास नदी—गुरुवार(१) को बादशाह व्यास नदीके तट पर पहुचा। कासिमखा लाहौरसे और उसका भाई हाशिमखा कागडे से पहाडी जमीदारोंको लेकर उपस्थित हुआ।

बलवाडेका जमीदार बामू—बलवाडेके जमीदार बामूने एक पक्षी भेट किया जिसको पहाडी लोग जानवहन कहते हैं। बामूने अर्ज की कि यह जानवर बर्फके पहाडमें रहता है। बादशाह लिखता है—चकोरोंके दडबेमें रखकर उससे बच्चे लिये गये। उसका मास अनेकवार खाया गया। उसके मासको चकोरके माससे कुछ बरा बरी नहीं है। उसका मास स्वादु है।

फूलपकार—बादशाह लिखता है,—जो जानवर इन पहाडोंमें देखे गये उनमें एक फूलपकार है जिसको कश्मीरी मुतलू कहते हैं। यह मोरनीसे छोटा होता है। पीठ पूछ और दोनों भुजा कलौस लिये हुए (जैसे चरजके पख होते हैं) और उसमें सफेद तिल पेट छातीके आगे तक काला और सफेद छींटे, किसी किसीके लाल छींटे भी होते हैं। भुजाओंके पख सुर्ख अगारा, खूब चमकता हुआ, चोंचसे गुद्दीके पीछे तक भी काला भवर, माथे पर दो सींग,

(१) इस दिन ७ बहमन (माघ सुदी १५) थी।

कान फीरोजी रंगके, आंख और मुंहके आसपास लाल चमड़ा, गलेके नीचे दो टंबेलियोंके बराबर गोल चमड़ा जिसमें एक हथेली भर तो उनफ़शाके रंगका (बैंगनी) और बीचमें फीरोजी रंगके छींटे पड़ेहुए। उसके गिर्द फीरोजी रंगका कुण्डल खिंचा हुआ जिसमें ८ कंगूरे। उस पर ग़फतालूके रङ्गका घेरा, फिर गरदन पर फीरोजी लकिरें और पांव भी लाल, जीता तोला गया तो १७८ तोलेका हुआ।"

मुर्ग जर्रीन—दूसरा मुर्ग जर्रीन है जिसको लाहोरके लोग प्रन कहते हैं और कश्मीरी पोट। उसका रंग मोरकी छातीकासा सिर पर बाल। एक चार पांच उंगलकी पीली मोरके बिचले परके समान डील काजके बराबर, परन्तु काजकी गर्दन लम्बी और बेडौल इसकी छोटी और सुडौल—मेरे भाई शाह अब्बासने मुर्ग जर्रीन मांगा था मैंने पकड़वाकर कईएक उसके वकीलके हाथ भेजे।"

चन्द्रतुलादान—चन्द्रवार(१) (फाल्गुण वदी ५) को चन्द्रतुलादान का उत्सव था जिसमें नूरजहां बेगमने बड़े बड़े अमीरों और पास रहनेवाले बन्दोंमेंसे ४५ को खिलअत दिये।

बहलोन—१४ (फाल्गुण वदी ८) को भीतामहल प्रान्तके गांव बहलोनमें लशकर उतरा। बादशाहके मनमें कांगड़ा देखनेकी इच्छा सदासे थी इसलिये बड़े डेरेको वहां छोड़कर निज पारिषदों और सेवकों सहित किला देखने गया। एतमादुद्दौला बीमार था उसको उर्दूमें छोड़ गया।

एतमादुद्दौलाकी मृत्यु—दूसरे दिन एतमादुद्दौलाके मरणप्राय होजानेकी खबर पहुंची। बादशाह लिखता है—मैं नूरजहांकी घबराहट और उसके मोहसे विवश होकर उर्दूमें लौट आया। तीसरे पहर उसे देखनेको गया। वह दम तोड़ रहा था कभी बेहोश होजाता था और कभी होशमें आजाता था नूरजहांने मेरी तरफ इशारा किया और कहा कि पहचानते हो? उसने ऐसे वक्त में अनवरीकी यह कविता पढ़ी—

(१) इस दिन १० बहमन थी।

"जो माके पेटसे जन्मा हुआ अन्धा भी आवे तो वह भी उसके जगत प्रकाशक ललाटमें बड़प्पनके चिन्ह देखले।'

मैं दो घड़ी तक उसके सिरहाने बैठा रहा जब कभी होशमें आता था तो जो कुछ कहता था समझबूझके साथ कहता था १७ (फाल्गुण बदी ११) को ३ घड़ी रात गये परलोकको सिधारा। मैं क्या कहूं कि इस घटनासे मुझ पर क्या बीती। वह बुद्धिमान मन्त्री भी था और मेहरबान मित्र भी।

ऐसे बड़े राज्यका भार उसके कंधे पर था और मनुष्य मात्रसे असम्भव है कि राज्यका अधिकार पाकर सबहीको अपनेसे राजी रख सके तोभी कोई आदमी अपने कामके लिये एतमादुद्दौलाके पास जाकर नाराज नहीं लौटा। वह स्वामीके हितका भी ध्यान रखता था और लाभ वालोंको राजी और आशावान भी कर देता था। सच तो यह है कि यह हृतखरड़ा उसीको आता था। जिस दिनसे उसका जोड़ा बिछड़ा उसने आपा नहीं सम्हाला। दिन दिन घुला चला जाता था प्रत्यक्षमें राज्यके काम परिश्रम पूर्वक करता था परन्तु अन्त करणमें विरहकी आगसे जलता था निदान ३ महीने २० दिन पीछे मर गया।"

दूसरे दिन मैं उसके बेटों और सम्बन्धियोंके पास मातमपुर्सीको गया। उनमेंसे ४१ और उनके आश्रितोंमेंसे १२ को सिरोपाव देकर उनकी मातमी वेष उतार आया।

कांगड़ेके किलेको कूच—दूसरे दिन बादशाह कांगड़ेको कूच करके ४ मुकामोंमें सानगगा पहुंचा। किलेदार अलिफखां और शेख फैजुल्लह चोखट चूमनेको आवे।

चम्बेका राजा—उसी स्थानपर चम्बेके राजाकी भेट भी पहुंची। बादशाह लिखता है—इसका मुल्क कांगड़ेसे २५ कोस दूर है। इन पहाड़ोंमें उससे अच्छा जमींदार और नहीं है। इस मुल्कके सब जमीन्दारोंके भागनेकी जगह उसका मुल्क है जिसमें विकट

नूरजहांकी मा मरी।

चाटिया बहुत है। इसने अबतक किसी बादशाहकी अधीनता नहीं की थी और न भेट भेजी थी। उसके भाईने भी सेवामें उपस्थित होनेका सम्मान पाकर उनकी ओरसे भाव और भक्ति प्रगट की। इस कुछ मुहरें और माफ़ल देखनेमें आया। उस पर बहुत तरह की रुगाए की गई।

किलेमें प्रवेश—बादशाह लिखता है—२४ (फाल्गुणसुदी ३) को मैं किला देखने गया और हुक्म दिया कि काज़ी, मीरअदल और मौलवी साथ रहकर मुसलमानीधर्मकी रीति पूरी करें। एक कोस चलकर किले पर पहुंचा। बांग, नमाज़, खुतबा और गोवध आदि जो किला बननेसे आजतक नहीं हुए थे वह सब मैंने अपने सामने कराये और खुदाका शुक्र किया क्योंकि किसी बादशाहको ऐसी जय नहीं हुई थी। यहां एक बड़ी मसजिद बनानेका हुक्म दिया।

कांगड़ेकी कथा—बादशाह लिखता है—"कांगड़ेका किला एक बड़े ऊंचे पहाड़ पर बना है और ऐसा मज़बूत है कि यहां धनाज और किलेदारोंकी सामग्री हो तो कुछ ज़ोर नहीं पहुंच सकता और उसके लेनेका कोई उपाय नहीं लग सकता। कहीं कहीं मोरचे लगानेके भी स्थान हैं और तोपें बन्दूकें भी यहां पहुंच सकती हैं किन्तु किलेवालोंका कुछ नहीं बिगड़ सकता। वह दूसरी जगह जाकर बच सकते हैं। इस किलेमें २३ बुर्ज और ७ दरवाजे हैं। भीतरका गिर्दाव एक कोस १५ डोरीका है लम्बाई पाव कोस दो डोरी, चौड़ाई २२ डोरीसे ज़्यादा और १५ से कम नहीं। ऊंचाई ११४ गज़ हैं। किलेमें दो कुण्ड हैं। दोनों दो दो डोरी लम्बे और डेढ़ डेढ़ डोरी (जरीब) चौड़े हैं।

भवन—किला देखकर मैं दुर्गाके मन्दिरमें गया जो भवन कहलाता है एक दुनिया गुमराहीके जंगलमें भटकी हुई है। काफिरों के सिवा, जिनका धर्मही मूर्तिपूजन है झुण्डके झुण्ड मुसलमान भी दूर दूरसे भेट लेकर आते हैं और इस काले पत्थरको पूजते हैं। शायद मन्दिरके पास गन्धककी खान है गर्मी और तपतसे हमेशा

आगकी लो उठा करती है। उसका ज्वालामुखी नाम है। उसे मूर्तिका चमत्कार बताते हैं। हिन्दुओंने अपना भाव सिद्ध करके साधारण लोगोंको बहकाया। हिन्दू कहते हैं—जब महादेवकी स्त्रीका देहान्त हुआ तो महादेव मोहसे उसके शरीरको कन्धे पर उठाये हुए जगतमें फिरते रहे। शरीर गल जानेसे उसके अंग जहांतहां टूटकर गिरते थे। जहां जैसा अंग गिरा उस स्थानकी वैसी ही प्रतिष्ठा हुई। छाती दूसरे अंगोंसे उत्तम है, वह यहां गिरी थी। इस हेतु यह स्थान दूसरे स्थानोंसे अधिक पुनीत माना गया है।

कुछ यों कहते हैं कि यह पत्थर जो अब काफिरोंका पूज्य है वह पत्थर नहीं है जो आदिमें था। उसे मुसलमानोंकी एक सेना ने दरियाकी गहराईमें इस तौरसे डाल दिया कि फिर कोई उसका पता न पासका और बहुत वर्षों तक 'कुफ्र'का यह कोलाहल थम गया था। फिर एक धूर्त ब्राह्मणने अपनी दुकान जमानेके लिये एक पत्थर किसी जगह छिपा दिया और उस समयके राजाके पास आकर कहा कि मैंने दुर्गाको स्वप्नमें देखा है जो मुझसे कहती थी कि मुझे अमुक जगह डाल गये हैं शीघ्र निकलवा लो। राजाने मूर्खता और भेटके लालचसे ब्राह्मणकी बात मानकर कुछ लोग उस के साथ भेजे और उस पत्थरको मगवाकर बड़े आदरसे यहां रखा है। यह नये सिरसे कुफ्र और गुमराहीकी दुकान जमाई गई है। आगे खुदा जाने क्या सच है।

मदारकी पहाड़ी—मन्दिरसे मैं उस घाटीके देखनेको गया जो मदारकी पहाड़ीके नामसे विख्यात है। जल वायु हरियाली और स्थानीय शोभाके प्रसगसे बहुत उत्तम जगह है। एक झालरा भी वहां है जिसमें पहाड़के ऊपरसे पानी गिरता है। मैंने हुक्म दिया कि यहां कोई अच्छी इमारत बनावें।"

कागड़ेसे लौटना—२५ (फालगुण सुदी ४) को बादशाह किले में लौटा। अल्फिखां और फेजुल्लहको हाथी और घोड़े देकर किले की रखवाली पर विदा किया।

[१५]

नूरपुर—दूसरे दिन नूरपुरमें लशकर उतरा। बादशाहने यह सुन कर कि यहां जंगली मुर्गे बहुत हैं दूसरे दिन मुकाम करदिया और शिकार खेलने गया। ४ जंगली मुर्गे शिकार हुए। इस जानवरका शिकार अबतक नहीं किया था। बादशाह लिखता है—"रूप रंग और अंगमें तो पले मुर्गे जैसाही है पर विशेषता यह है कि यदि उसे पांव पकड़कर औंधा लटका लेजावें तो चुप चलाजाता है और घरेलू मुर्गा चिल्लाता है। घरेलू मुर्गेको जबतक गर्म पानीमें न डबो लेवें उसके पर सुगमतासे उखाड़े नहीं जाते। पर इस जंगलीके पर, तीतर और पोदनेके परोंके समान सूखेही उखाड़लिये जासकते हैं। मैंने उसका मांस पकवाया और कबाब बनवाये तो बदमजा निकला। जो जितनापुराना था वह उतना ही ःमजेमें बुरा था। जवान कुछ चिकना था पर वह भी बदमजा। यह पक्षी एक तीरके टप्पेसे ज्यादा नहीं उड़ सकता। इनमें मुर्गा तो बहुधा लाल होता है और मुर्गियांकाली तथा पीली—यह नूरपुरके इस जंगलमें बहुत हैं।

नूरपुर—नूरपुरका पुराना नाम धमरी था। जब राजा बासूने पत्थरका किला मकान और बाग बनाया तो इसको मेरे नाम पर नूरपुर कहने लगे। ३००००) इस इमारतमें लगे होंगे। हिन्दू अपने सलीकेसे कैसीही इमारत बनावें और कितनीही उत्तमता दिखावें दिलनशीन नहीं होती। यह जगह उत्तम और मनोरम थी इसलिये मैंने हुक्म दिया कि एक लाख रुपये सरकारी खजानेसे इसके लिये लेलें और यहां एक अच्छा महल बनावें।

मौनी—"इन दिनोंमें अर्ज हुई कि इस प्रान्तमें एक मौनी सन्यासी रहता है जिसने सब इच्छाएं त्यागदी हैं। मैंने हुक्म दिया कि उसको मेरे सामने लाओ। मैं उसे देखूंगा। हिन्दुओंके मुनि तपस्वी सर्वनाशी अर्थात् सर्वत्यागी कहलाते हैं। सर्वनाशीसे सन्यासी हुआ। सर्वनाशी कई प्रकारके होते हैं—उन्हेंमेंसे एक मौनी हैं जो अपना अधिकार छोड़कर परवश होजाते हैं। चुप रहते हैं। यदि दस दिन रात एक जगह खड़े होजावें तो आगे या पीछे पांव न

धरें। सारांश यह कि अपनी इच्छासे कुछ नहीं करते पत्थरसे बने रहते हैं। मेरे सामने लाया गया तो मैंने उसमें अद्भुत दृढ़ता देखी। विचार हुआ कि शायद नशेमें उसकी कुछ बात प्रगट हो। इससे दोश्रातशा शराबके कई प्याले पिलाये पर वह हिला तक नहीं। उसे मुर्दोंकी भांति उठा लेगये। खुदाने बड़ी इनायत की कि वह मरा नहीं। वह अपूर्व स्थिरता रखता है।

असफन्दार महीना।

६ असफन्दार (फाल्गुण सुदी १०) को बादशाहने एतमादुद्दौलाका लशकर और ठाठबाठ सब नूरजहां बेगमको देदिया और यह हुक्म किया कि बादशाही नौबतके पीछे उसकी नौबत बजा करे।

कसहोना—४ (फाल्गुण सुदी १३) को परगने कसहोनेमें मुकाम हुआ। ख्वाजा अबुलहसनको कुल दीवानीका काम मिला।

खुसरोकी मृत्यु—खुर्रमकी अर्जी पहुंची। उसमें लिखा था कि ८ (चैत्र वदी २) को खुसरो बायगोलेकी व्यथासे मर गया।

राजा कृष्णदास—राजा कृष्णदासका मनसब बढ़कर दो हजारी जात ५०० सवारोंका होगया।

२४ (चैत्र सुदी ३ संवत् १६७८) को बादशाह करछाककी शिकारगाहमें शिकार खेलने गया। वहां किरावलों और यसावलो ने पहलेसे जाकर जानवरोंको घेर लिया था १२४ पहाड़ी कबकचार और चिकारे शिकार हुए।

जैनखांका बेटा जफरखां मर गया।

१७ वां नौरोज।

८(१) जमादिउलअव्वल चन्द्रवारको रात (चैत्र सुदी ८) को एक पहर पांच घड़ी बीते सूर्य्य मेष राशि पर आया। बादशाहके राज्याभिषेकका १६वां वर्ष उतरकर १७ वां लगा। इस दिन घाट-

(१) तुजुकमें तारीख भूलसे रह गई है इकबालनामेमें ८ है वही हमने ऊपर लिख दी है।

शाहने आसफखांका मनसब ६ हजारी ६००० सवारका कर दिया। कासिमखांको घोड़ा हाथी और सिरोपाव देकर पञ्जावकी सूबेदारी पर विदा किया।

ईरानके एलची जंबीलबेगको हुक्म हुआ कि सवारीके कशमीरसे लौटने तक लाहौरमें सुखपूर्वक रहे।

शाह ईरानका कन्दहार लेनेका विचार।

इन दिनों सुना गया कि शाह ईरानने खुरासानसे कन्दहार लेने के उद्योगसे प्रस्थान किया है। बादशाहको यह विश्वास न होता था कि शाह इतना पुराना सम्बन्ध छोड़कर ऐसा ओछापन करेगा और इतना बड़ा बादशाह होकर मुझ छोटे सेवक पर जिसके पास तीन चार सौ से अधिक सेना कन्दहारमें न थी स्वयं चढ़ आवेगा। तो भी दूरअन्देशीसे अहदियोंके बखशीने जैनुलआदिनोंको क्षमापत्र देकर खुर्रमके पास भेजा और लिखा कि उस सूबेकी सेना जंगी हाथियों और तरह तोपखानों सहित तुरन्त सेवामें उपस्थित होवे। यदि खबर सच हो तो उसे बड़ी सेना और खज़ाना देकर भेजा जायगा कि वह जाकर शाह ईरानको सन्धिभङ्ग और अज्ञतज्ञताका मजा चखावे।

हसन अब्दाल—८ फरवरदीन (बैशाख बदी २) को हसन अब्दाल के झरने पर बादशाहके डेरे हुए।

१२ शुक्रवार (बैशाख बदी ६) को महाबतखांने काबुलसे आकर जमीन चूमी। १००० मोहर और दस हजार रुपये न्यौछावर किये।

ख्वाजा अबुलहसनने अपनी सेना सजाकर हाजिरी दी। २०५० सवार अच्छे घोड़ों सहित लिखे गये जिनमें ४०० सवार बर्कन्दाज (बन्दूकची) थे।

वहीं बादशाहने हाकेका शिकार करके कापकार वगैरह ३३ जन्तु बन्दूकसे मारे।

एकीम मेमिना महाबतखांके वसीलेसे सेवामें उपस्थित होकर इलाज करने लगा।

१८ (बैशाख बदी १३) को पगलीमें डेरे लगे। मेष संक्रान्ति का उत्सव हुआ। महाबतखांको हाथी घोड़ा सिरोपाव और काबुल जानेका आदेश मिला।

दतबारखां पुराना सेवक था और वृद्ध होगया था। बादशाह ने उसको ५ हजारी ४००० सवारका मनसब देकर आगरेकी सूबे दारी किले और खजानोंकी रखवाली पर नियत किया और हाथी घोड़ा तथा सिरोपाव देकर आगरे भेजा।

२८ (बैशाख सुदी ७) को कवार घाटीमें इरादतखाने काश्मीर से आकर चौखट चूमी।

उर्दी बहिश्त।

बादशाह काश्मीरमें—२ (बैशाख सुदी १२) को बादशाह काश्मीरमें पहुंचा।

फौजदारी रस्म माफ—बादशाहने रैयत और सिपाहीके सुख के लिये फौजदारीका कर माफ करके हुक्म दिया कि राजभरमें फौजदारोंके वास्ते किसीको कुछ खेद न पहुंचावे।

१३ (ज्येष्ठ बदी ८) को बादशाहने हकीमों और विशेषकरके हकीम मोमिनाकी सम्मतिसे बायें हाथकी फस्द खुलवाई। मुकर्रिब खांको सिरोपाव और हकीम मोमिनाको १०००० दरब इनाम मिले।

अबदुल्लहखांका मनसब खुर्रमकी प्रार्थनासे ६ हजारी होगया और नक्कारा भी मिला।

बहादुरखां उजबकने कन्दहारसे आकर १०० मोहरें नजर और ४०००) रुपये न्योछावर किये।

खुरदाद।

१ (ज्येष्ठ सुदी १२—१३) को बादशाहने दक्षिण सेनाके कई अमीरोंके मनसब बढ़ाये। राजा जगतसिंह और हिम्मतखांको नक्कारे दिये।

तीर महीना।

२ (द्वितीय आषाढ वदी १) सैयद बायजीदको मुस्तफाखांका खिताब और झंडा इनायत हुआ।

कन्दहार—तहव्वुरखां शाह परवेजके बुलानेको गया। कुछ दिन पहले कन्दहारके कर्मचारियोंकी अर्जी शाह ईरानके कन्दहार लेनेके विचारमें पहुंची थी। बादशाह पिछले और वर्त्तमान बरताव से इस बातको सच नहीं समझता था। अब खानजहांकी अर्जी आई कि शाह अव्वासने ईराक और खुरासानकी सेनाओंके साथ आकर कन्दहारके किलेको घेर लिया है। बादशाह लिखता है— मैंने हुक्म दिया कि काश्मीरसे निकलनेका मुहूर्त्त नियत करें। ख्वाजा अबुलहसन दीवान और सादिकखां बखशी पहलेसे लाहौर को जावें और शाहजादोंके दक्षिण गुजरात बंगाला तथा बिहारके लश्करों सहित पहुंचने और जो बड़े बड़े अमीर सवारीमें हैं उनके आने तक, और लोग, जो अपनी जागीरोंसे पहुंचा करें उनको पुत्र(१) खानजहांके पास मुलतानमें भेजते रहें.। ऐसेही तोपखाने, मस्त हाथियोंके हलके, खजाने और सलहखाने तैयार करके भेजे। मुलतान और कन्दहारके बीचमें बस्ती कम है और अनाजका प्रबन्ध किये बिना इतने बड़े लश्करका भेजना सम्भव नहीं था। इसलिये यह स्थिर हुआ कि बनजारोंको दिलासा और रुपये देकर सेनाके साथ रखें। जिससे अनाजका कष्ट न हो। यहां बनजारे एक जातिके लोग हैं। इनमें कोई तो १००० बैल रखता है कोई जियादा और कोई कम। यह लोग गांवोंसे शहरमें अनाज लाते हैं और बेचते है। लश्करोंके साथ रहते हैं। ऐसे लश्करमें कमसे कम १ लाख बैल बल्कि विशेष साथ रहेंगे। परमेश्वरकी कृपासे आशा है कि इतना लश्कर शस्त्रों सहित प्रस्तुत होजावेगा कि अस्फहान तक पहुंचनेमें जो उसकी राजधानी है

(१) खानजहांको भी बादशाह पुत्र कहता और लिखता था और पुत्रोंके बराबरही उसका लाड़ रखता था।

कहीं विलम्ब और बाधा न होगी। खानजहांको हुक्म दिया गया कि लशकरोंके पहुंचने तक मुलतानसे उधर जानेमें आतुरता न करे और हुक्म पर कान लगाये रहे। बहादुरखां उजबक घोड़ा और सिरोपाव पाकर कन्दहारके लशकरकी सहायता पर नियत हुआ।

कशमीरके फकीरोंके वास्ते गांव—बादशाहने यह सुनकर कि कशमीरके फकीर जाड़ेमें ठण्डसे कष्ट पाते हे हुक्म दिया कि कशमीरके परगनोंमेंसे ३।४ हजार रुपयेका एक गांव मुलातालिब अस्फहानीको देदें। वह फकीरोंके कपड़ों और मसजिदोंमें वजूके वास्ते पानी गर्म होनेका प्रबन्ध करा दिया करे।

किश्तवार—किश्तवारके जमींदारोंका फिर बदल जाना सुनकर बादशाहने इरादतखांको हुक्म दिया कि शीघ्रही वहां जाकर उनको पूरा पूरा दण्ड दे जिसमें फसादकी जड़ उखड़ जावे।

खुर्रमकी अर्जी—इसी दिन जैनुलआबिदीनने उपस्थित होकर प्रार्थना की कि खुर्रमने बरसात मंडूके किलेमें बिताकर दरगाहमें आना निश्चय किया है। उसकी अर्जी पढ़ी गई। बादशाह लिखता हे—"अर्जीके लेख और प्रार्थनासे खैरकी नहीं बेदौलतीकी बू आती थी। हुक्म हुआ कि यदि उसका इरादा बरसात बाद आनेका है तो बड़े बड़े अमीरों और दरगाही बन्दोंको जो उसकी सहायता पर स्थित है, विशेषकर बारह बुखाराके सैयद शैखजादे पठान और राजपूतोंको दरगाहमें भेज दे।

मिरजा रुस्तम और एतकादखांको हुक्म हुआ कि लाहौरमें जाकर कन्दहारके लशकरकी तय्यारी करें। उनको एक लाख रुपये मदद खर्चके दिये गये। इनायतखां और एतकादखांको नक्कारे इनायत हुए।

किश्तवार—इरादतखां जो किश्तवारमें गया था बहुतसे फसासियोंको मारकर और वहांके थानोंको दृढ़ करके बादशाहके पास आगया।

मोतमिदखां जो दक्षिणी सेनाका बखशी नियत हुआ था वहां

का काम पूरा होजानेसे बादशाहके बुलाने पर सेवामें उपस्थित होगया.

ज्योतिष और रमलका चमत्कार—बादशाह लिखता है—अजब बात यह हुई कि महलमें १४।१५ हजार रुपयेका एक मोती गुम होगया। जोतकरायने अर्ज की थी कि दो तीन दिनमें मिल जायगा। सादिकखां रम्मालने यह अर्ज की कि इन्हीं दो तीन दिनमें किसी पुनीत स्थान अर्थात् (इबादतखाना) नमाज पढ़ने, माला फेरने तथा ध्यान करनेकी जगहसे मिल जायगा। और एक रम्माल स्त्रीने यह प्रार्थना की थी कि शीघ्रही उपलब्ध होगा और एक श्वेतांगी रमणी हंसती हंसती लाकर हजरतके हाथमें देदेगी। अकस्मात् तीसरे दिन एक तुर्क लौंडी इबादतखानेमें उसे पाकर प्रसन्नता पूर्वक मुसकराती हुई मेरे हाथमें देगई। तीनोंकी बात एकसी मिली इसलिये तीनोंही मनचाहा इनाम पाकर प्रतिष्ठित हुए। यह बात विचित्रतासे खाली न थी इस लिये लिखी गई।

दक्षिणी सेना—बादशाहने अपने पास रहनेवाले बन्दोंमेंसे कौकब और खिदमतगारखां वगैरह १२ पुरुषोंको दक्षिणके अमीरों की सजावली पर नियत किया कि वह अच्छे प्रबन्धसे उन सबको शीघ्रही दरगाहमें ले आवें और वह कन्दहारकी सेनामें भेजे जावें।

खुर्रमके कौतुक—इन दिनों लगातार अर्ज हुई कि खुर्रमने नूरजहां और शहरयारकी जागीरों(१) पर बिना हुक्म हस्तक्षेप करके परगने धौलपुरमें, जो दीवानखालासे शहरयारकी जागीरमें तनखाह किया गया था दरिया नाम पठानको भेजा। वह उस प्रान्त

(१) यह जागीरें शाहजहांकी थी जो नूरजहांने अपने जमाई शहरयारको दिलादी थी। क्योंकि वह खुर्रमका जोर घटाकर शहरयारको युवराज कराया चाहती थी। बादशाहका दिल खुर्रम से फिरा दिया था। इसी पर यह सब उपद्रव उठा था जो आगे बढ़ता चला गया।

के फौजदार और शहरयारके नौकर शरीफुल्मुल्कसे आकर लडा। दोनों ओरके बहुतसे आदमी मर गये हैं।

बादशाह लिखता है—"उसने मंडूके किलेमें ठहरकर जो असभ्य और अनुचित प्रार्थनायें अर्जीमें लिख भेजी थीं उनसे पाया जाता था कि उसकी मत मारी गई है। अब इन बातोंके सुननेसे निश्चय होगया कि उसका जो इतना अधिक लालन पालन किया गया उसकी समाई उसमें नहीं है और उसका मगज चल गया है। इस लिये मैंने राजा रोजअफजूंको जो पुराना और पास रहनेवाला सेवक है उसके पास भेजकर इस ढिठाईका जवाब पूछा और आज्ञा दी कि अपनेको सम्हालकर मर्य्यादासे आगे पांव न बढावे और अपनी जागीर पर जो दीवानिआलासे तनखाहमें पाचुका है सन्तुष्ट रहकर हजूरमें आनेका इरादा न करे। जो बन्दे कन्दहार जाने के वास्ते बुलाये गये हैं उनको तुरन्त दरगाहमें भेजदे। यदि आज्ञा के विरुद्ध करेगा तो पछतायेगा।"

राजा बरसिंहदेव—उजाला दखनी, राजा बरसिंहदेवके लाने को कृपापत्र सहित भेजा गया।

प्रणभङ्ग—बादशाह लिखता है—"मैं खुर्रम और उसकी सन्तानसे पूर्ण स्नेह रखता था। जब उसका बेटा बहुतही बीमार होगया था तो मैंने यह प्रण किया था कि यदि परमेश्वर उसकी रक्षा करेगा तो मैं बन्दूकका शिकार न करूंगा और किसी जीव को अपने हाथसे न सताऊंगा। मुझे शिकारकी बडी लत है और विशेषकर बन्दूकसे शिकार मारनेकी। तोभी ५ वर्षसे उसके पास नहीं गया हूं। अब जो उसके दुष्कर्मोंसे मन फट गया तो फिर बन्दूकका शिकार अंगीकार कर लिया और यह हुक्म देदिया कि किसीको बिना बन्दूक दौलतखानेमें न आने दें। थोडेही दिनोंमें बहुतसे बन्दोंको बन्दूक बांधने और लगानेका शौक होगया। तर्कश-बन्द तो घोड़े पर चढ़ेही चढे उसका अभ्यास करने लगे।"

अमरदाद।

काशमीरसे कूच और राणा करणके बेटेको बुलाना।

२५ अमरदाद (सावन सुदी ११) ८(१) शव्वालको शुभमुहूर्त्तमें बादशाहने काशमीरसे लाहोरको कूच किया। विहारीदास ब्राह्मण को कृपापत्र देकर राणा करणके पास भेजा कि उसके बेटेको सेना सहित हुजूरमें लेआवे।

शहरेवर।

अछोल—१ (भादों वदी ३) को अछोलके झरने पर सवारी उतरी। गुरुवारको सरनागमें प्यालोंकी मजलिस हुई।

शहरयार—शहरयारने कन्दहार जानेका मुजरा करके १२ हजारी जात ८००० सवारका मनसब और मोतीके तुकमेकी नादिरी सहित खासा खिलअत पाया।

कीमती मोती—इन दिनोंमें एक सौदागर दो बडे मोती रूमसे लाया था। उनमें एक ४५ रती और दूसरा ४४ रती था। नूर-जहांने दोनो ६० हजार रुपयेमें लेकर बादशाहको भेट किये।

फस्द—१० शुक्रवार (भादों वदी १२) को हकीम मोमिनाकी सम्मतिसे बादशाह अपने हाथकी फस्द खुलवाकर हलका हुआ। वह लिखता है—"मुकर्रिबखां इस काममें पूरा अभ्यास रखता है और हमेशा मेरी फस्द वही खोलता रहा है। वह कभी न चूका था पर अबके दोवार चूका। तव उसके भतीजे कासिमने फस्द खोली। खिलअत और दो हजार रुपये उसको और १०००० दरव हकीम मोमिनाको इनाममें दिये गये।

सौर तुलादान—२१ (भादों सुदी ८) को सौरपक्षीय जन्मतिथि का उत्सव और तुलादान हुआ। बादशाहको ५४वां वर्ष लगा।

गङ्गाजलकी परीक्षा—२८ (आश्विन वदी १) को बादशाह छहर का झरना देखने गया। उसका पानी स्वाद और निर्मलतामें

(१) मूलमें भूलसे ७ लिखी है।

विख्यात था। बादशाहने उसका और लारके घाटेका पानी गङ्गा जल(१) से अपने सम्मुख तुलवाया तो ऊहरका पानी ३ माशे और लारका आध माशे भारी हुआ।

हीरापुर—३० (आश्विन वदी ३) को हीरापुरमें डेरे हुए। इरादतखाने किश्तवारका प्रबन्ध किया था तोभी बादशाहने उसके बरतावसे कशमीरकी प्रजाके गिला करने पर एतकादखांको कश मीरकी सूबेदारी घोडा खिलअत और दुशमनगुदाज नाम खासा खांडा दिया और इरादतखांको कन्दहारके लशकरमें नियत किया।

मह्र।

कवरसिंह किश्तवारका राजा—बादशाहने किश्तवारके राजा कवरसिंहको जो गवालियरके किलेमें कैद था बुलाकर किश्तवार देदिया। घोडा खिलअत और राजाका खिताब भी इनायत किया।

हैदर मलिक—हैदर मलिकको लारके घाटेसे नूरअफजाबागमें पानीकी नहर लानेके लिये भेजा और इस कामके लिये ३००००) उसको दिये।

भवर—१२ (आश्विन सुदी १) को बादशाह जम्बूके पहाडोंमें होकर भवरमें आया। दूसरे दिन कमरगी (हांके) का शिकार हुआ।

खुसरोके बेटे दावरबख्शको ५ हजारी जात और २००० सवार का मन्सब मिला।

२४ (आश्विन सुदी १३) को बादशाह चिनाव नदीसे उतरा।

खुर्रम—इसी दिन खुर्रमका दीवान अफजलखां उसकी अर्जी लेकर आया जिसमें उसने अपने अपराधोंके उज्र लिखे थे। बादशाहने कापटयुक्त समझकर उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया।

आबान।

१ आबान (कार्तिक वदी ७) को महावतखांके बेटे अमानुल्लह

(१) इससे पाया जाता है कि गङ्गाजल बादशाहके साथ रहता था।

का मनसब ५ हजारी १७०० सवारका होगया और महावतखांके बुलानेके लिये प्रसादपत्र भेजा गया।

बादशाह लाहौरमें—४ (कार्तिक बदी ८) को बादशाह लाहौर पहुंचा और दीवानोंको हुक्म हुआ कि खुर्रमकी जागीरोंकी तनखाह जो हिसारकी सरकार, अन्तरवेद और इन प्रान्तोंमें है उन बन्दोंकी तलबमें लगादें जो कन्दहारके लशकरमें नियत हुए हैं और खुर्रम इसके बदले मालवे दक्षिण और गुजरातके सूबोंके परगनों मेंसे जहां चाहे लेले। अफजलखांको खिलअत देकर बिदा किया गया और खुर्रमको गुजरात मालवा दक्षिण और खानदेशके सूबे इनायत होकर हुक्म हुआ कि इनमेंसे जहां चाहे वहीं रहकर उस मण्डलको दृढ़ रखे और कन्दहार जानेके वास्ते जिन बन्दोंको लाने के लिये सजावल भेजे गये हैं उनको दरगाहमें भेजदे। इसके पीछे अपनेको सम्हाले रहे आज्ञा भंग न करे नहीं तो पछतायगा।

उन्नीसवां वर्ष।

सन् १०३२ हिजरी।

कार्तिक सुदी २।३ संवत् १६७८ ता० २६ अक्तूबर सन् १६२२ से कार्तिक सुदी २ संवत् १६८० ता० १५ अक्तूबर सन् १६२३ तक।

ईरानके वकील—२६ (कार्तिक सुदी १५) को हैदरबेग और वलीबेग शाह ईरानके भेजे हुए आये और आदाब बजाकर शाहका पत्र बादशाहके सामने लाये। खानजहांने आज्ञानुसार मुलतानसे आकर १०००मोहरें, १००० रुपये और १८ घोड़े भेट किये।

महाबतखांको ६ हजारी ५००० सवारोंका मनसब मिला।

राजा बरसिंह देव—बादशाहने सारंगदेवको राजा बरसिंह देव की सजावली पर भेजकर हुक्म दिया कि उसको बहुत जल्दी दर-गाहमें ले आवे।

आजर।

ईरानके एलचियोंकी विदा—७ (अगहन बदी १२) को बाद-शाहने शाह अब्बासके वकीलोंको जो कई बार-करके आये थे खिलअत और खर्च देकर विदाकिया। शाहने जो पत्र कन्दहार लेने की माफीमें हैदरबेगके हाथ भेजा था और बादशाहने जो जवाब लिखा उसका सारांश यह है।

ईरानके बादशाहका पत्र।

आपको मालूम होगा कि बड़े बादशाहका स्वर्गवास होने पर ईरानमें क्या क्या उपद्रव उठे थे। कई मुल्क भी इस राज्यके कर्म-चारियोंके अधिकारसे निकल गये थे। जब मैं शासन करने लगा तो खुदाकी इनायत और मित्रोंकी सहायतासे बापदादाके समय के वह सब प्रदेश जो शत्रुओंके हाथ पड़ गये थे छीन लिये गये। कन्दहार आपके नौकरोंके पास था उसको मैं अपनाही समझकर

भाई चारे और प्रीतिकी रीतिसे यह आशा रखता था कि आप भी अपने बाप दादों कामा बरताव करके उसको सौंप देनेकी मेहर बानी करेंगे। परन्तु जब आपने आनाकानी की तो मैंने कई बेर पत्र और सन्देसा भेजकर खुलेतौर, उसे आपसे मांगा। इस आशासे कि यह छोटासा देश आपकी विशाल दृष्टिमें सकीर्णता उत्पन्न न करेगा और उसे हमारे सेवकोंको सौंपकर शत्रुओंका सदेह दूर कर देंगे। परन्तु कुछ लोगोंने इस काममें पहलेसेही ढील डाल रखी थी। जब यह बात मित्रों और शत्रुओंमें फूट निकली और उधर से कोई उत्तर न पहुंचा तो यह विचार हुआ कि कन्दहार जाकर शिकार और वनविहार किया जाय। कदाचित इसी प्रसंगसे आपके कर्मचारी स्वागत करें और सेवामें उपस्थित हों। जिससे दोनों ओरके प्रेमका प्रकाश पृथ्वीमें नये सिरेसे हो तथा शत्रुओं और निन्दा करनेवालोंकी जबान बन्द होजाय। जब हम इस चेष्टासे किन्ना स्नेहके सामानके बिनाही प्रस्थान करके फरहमें पहुंचे तो कन्दहार के आक्रिमको मरोशिकारके लिये वहां आनेकी सूचना छपापत्र द्वारा दी, इसलिये कि वह यथिति सत्कार करे। मान्यवर ख्वाजा बाकी करकराकको बुलाकर हाकिम और अमीरोंको कहलाया कि हमारे और श्रीमान बादशाहके भेदमें कुछ अन्तर नहीं है। हम केवल सैरको इस सूबेमें आये हैं। उन्होंने यह हितकी बात भी न सुनी। हमारी तुम्हारी मित्रताको मंजूर न रखकर प्रति कूलता प्रगट की। हमने किलेके पास पहुंचकर फिर उसी मान्य वरको बुलाया और जो उपदेश करनेका विधान था वह उसके द्वारा कहला भेजा। अपनी विजयिनी सेनाको दस दिन तक किलेके पास जानेसे मनाकर दिया। पर कुछ फल न हुआ। उल्टी और शत्रुता बढ़ी। आगे गुंजाइश न थी। कजलबाशोंके पास किला लेनेका कुछ सामान न था तो भी वह कन्दहार फतह करने पर उद्यत हुए। थोड़ेकालमें कोट और बुर्जों को गिराकर किलेवालों को ऐसा तंग किया कि उन्होंने शरण चाही। हमने भी पुराने

प्रेम और आपकी जवानीके समयकी प्रीतिका खयाल करके; जिस पर दुनिया भरके बादशाह डाह करते हैं, उनकी विनय मानी और अपनी स्वाभाविक सज्जनतासे उनके अपराध क्षमा कर दिये। उन पर कृपाकरके निज भक्त हैदरबेग तीरवाशीके साथ आपकी दरगाहमें भेजा है। मैं खुदाकी कसम खाकर कहता हूं कि पुराने और नये प्रेमकी नीव मेरी ओरसे ऐसी कम मजबूत नहीं है जो उन तुच्छ कारणोंसे जो अचानक होपड़े हैं हिलसके। आशा है कि उधरसे भी यही बरताव रहेगा और इन विचित्र घटनाओं पर कुछ दृष्टि न दी जायगी। यदि उस स्नेहमें कोई आशंका होगई हो तो उसकी निवृत्ति नई पुरानी प्रतिसे करके प्रेमकी जड़ और सुदृढ़ करें। हमारे समग्र राज्यको अपना समझकर जिसे बखशना चाहें उसकी सूचना कर दें, तुरन्त बिना किसी विचारके उसे सौंप दिया जावेगा—ऐसी छोटी छोटी बातोंका तो कहनाही क्या है। किलेके हाकिम और अमीरोंने यद्यपि कई काम प्रीतिकी रीतिके विरुद्ध किये तथापि जो कुछ हुआ हमारी तरफसे हुआ। उन्होंने तो अपनी नौकरीका हक पूरा कर दिया। आशा है कि श्रीमान भी उनपरबादशाहों कीसी कृपा करेंगे और हमको उनसे शर्मिन्दा न करेंगे।

पत्नोत्तर।

परमेश्वरका अनन्त धन्यवाद है, जिसने बड़े बड़े बादशाहोंके सन्धिबन्धनको अपनी सृष्टिकी शान्तिका हेतु बनाया है। इसका प्रमाण वह प्रेम और प्रीति है जो इन दोनों बड़े घरानोंमें चली आती है और जिसकी वृद्धि और दृढ़ता हमारे दिन दिन बढ़नेवाले राज्यमें इतनी बढ़ी थी कि उसका डाह दुनियाके बादशाहोंको था। पर आप उस प्रेम और भाईपनके खिले बागको अकारण सुखा देने के कारण हुए, जिसमें कयामत तक हानि पहुंचनेकी सम्भावना न थी। क्या बादशाहोंकी प्रीतिकी कभी यह भी रीति रही है कि पूरा भाईचारा होने पर भी जब कि प्यारमें एक दूसरेके सिरकी

सोगङ्ग खाते हों और जो मिलजानेसे मुल्क माल तो क्या जान देनेसे भी न अटकते हों, इस प्रकार सैर और शिकारके वास्ते आवें! आपके प्रेमपत्रसे, जो कन्दहारकी सैर और शिकारके उजरमें हैदर बेग और वलीबेगके हाथ आया, आपके शरीरकी कुशलता ज्ञात होकर अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त हुई। उस सिद्धमनोरथ भाईसे छिपा न होगा कि जम्बीलबेगके आनेतक कभी पत्र और सन्देसा कन्दहारकी कामनाका न आया था। हां जब कि हम मनोहर-देश काश्मीरमें विहार कर रहे थे और दक्षिणके दुनियादारोंने मूर्खतासे अधीनता छोड़कर सिर उठाया था और हम उनके दण्ड देनेके लिये लाहोरमें पधारे और पुत्र शाहजहांको उनके ऊपर भेजकर आगरे को आते थे, उस समय जम्बीलबेगने पहुंचकर आपका प्रेमपत्र दिया। हम उसे अपने लिये अच्छा शगून समझकर राजधानीमें आये। उस मोती बरसानेवाली चिट्ठीमें भी कन्दहारके मांगनेकी बात न थी। जम्बीलबेगने जबानी कहा तो हमने फरमाया कि हमें अपने भाईसे किसी बातका उजर नहीं है। दक्षिण फतह हो जाने पर उचित रीतिसे तुमको बिदा करेंगे। तुम बहुत दूरसे चल कर आये हो इससे कुछ दिन लाहोरमें आराम करो। फिर हम बुला लेंगे। आगरेमें पहुंचकर हमने उसे बिदा करनेके लिये बुलाया तो ईश्वरकी कृपासे दक्षिण फतह होगया। हम आप प्रसन्नतापूर्वक पञ्जाबको पधारे। तब उसको लौटानेका विचार हुआ। पर तुरन्त ही कुछ जरूरी काम कर लेने पर हवा गर्म होजानेसे काश्मीरको रवाने हुए जो स्वर्ग समान है। जलवायुके सुरम्य होनेमें सातों विलायतोंके घूमनेवालोंको प्रमाण है। उस मनोरमा मेदनीमें पहुंचकर जम्बीलबेगको बिदा करनेके वास्ते बुलाया और बिदा करनेसे पहले यही चाहा कि स्वयं साथ रहकर उसको यहांके सब सुन्दर और सुरम्य स्थान भी दिखा देवें। इतनेहीमें उस प्यारे भाईके कन्दहार लेनेके इरादेसे पहुंचनेके समाचार लगे जिसका कभी विचार भी चित्तमें न हुआ था। बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक तुच्छ

खानको विजय करनेके लिये आप स्वयं पधारें और ऐसे प्रेम और भाईपनसे आंख छिपावें! सच्चे सावधान लोग यह समाचार बारम्बार भेजते थे तो भी हम विश्वास न करते थे। निदान जब यह बात निश्चय होगई तो हमने उसी घड़ी अबदुलअजीजखांको हुक्म दिया कि उस भाईके राजी रखनेमें कमी न करे। अब भी वही भाई-चारा बना है। हम इस मित्रताको दुनियाभरसे बढ़कर गिनते थे। मित्रताके योग्य तो यह बात थी कि एलचीके लौटने तक सन्तोष करते। शायद वह सफलमनोरथ होकर लौटता। एलची के पहुंचनेसे पहले ऐसा खटकता हुआ काम करनेसे प्रतिज्ञा और प्रीतिके पलड़ेको लोग न जाने किधर झुकावें!

कन्दहार—बादशाहने ईरानके दूतोंको विदा करके कन्दहार के लशकर(१) को दण्ड देनेके लिये खानजहांको आगे जानेवाली सेनाके तौरपर विदा किया जो कई कामोंकी सलाहके लिये बुलाया गया था। उसको हाथी, खासा घोड़ा, तलवार, जड़ाऊ खञ्जर, और खिलअत दिया और कहा कि शाहजादे शहरयारके पहुंचने तक मुलतानमें ठहरकर हुक्म पर कान लगाये रहे। बाकरखांको जो मुलतानका फौजदार था दरगाहमें बुलाकर अलीकुली बेगदर-मनको डेढ़हजारी मनसब दिया और खानजहांकी मदद पर नियत किया। लशकरखां वगेरह कई अमीरोंको दक्षिण दल तथा निज जागीरोंसे आये थे, घोड़े और खिलअत देकर खानजहांके साथ कर दिया।

आगरेके खजाने—आगरेमें मुहरों और रुपयोंका जितना कुछ खजाना अकबर बादशाहके समयसे आजतक जमा हुआ था उसे दरगाहमें लेआनेके लिये बादशाहने आसफखांको आगरे भेजा।

शाह परवेज—शाह परवेजके वकील शरीफको हुक्म हुआ कि जल्दी जाकर परवेजको बिहारकी सेना सहित लेआवे और उसने

(१) ईरानी लशकरसे मतलब है।

साथ खास दस्तखतोंका फरमान भी भेजा। जिसमें उसके आनेकी बहुत ताकीद थी।

मोतमिदखां मुसव्वदा-नवीस—बादशाह लिखता है, कमजोरीके कारण जो दोवर्ष पहले होगई थी और अबभी है दिल और दमाग ने रोजनामचेके मुसव्वदे लिखनेमें साथ न दिया। मोतमिदखां जो दक्षिणसे आगया था मिजाज जाननेवाले बन्दों और बात समझने-वाले शागिर्दोंमेंसे है। पहले भी यह खिदमत और अखबारोंके जमा करनेका सरिश्ता उसको सौंपा हुआ था। इसलिये मैंने हुक्म दिया—जिस तारीख तक मैने लिखा है आगे वह अपने खत से लिखे और मेरे मुसव्वदोंमें दाखिल करे। इसके पीछे जो कुछ हो उसका मुसव्वदा रोजनामचेके तौरपर करके मुझसे सही कराले और बयाज (किताब) में लगाता रहे।

[यहांसे मोतमिदखांके लिखे मुसव्वदे हैं।]

खुर्रमकी कुपात्रता—इन दिनों बादशाह कन्दहारके ईरानी लशकरको सजा देनेके कामोंमें लगा हुआ था। खुर्रमकी तरफकी बुरी बुरी खबरें पहुंचती थीं। उनसे चित्त बिगडता था। इसलिये उसने अपने मिजाज जाननेवाले बन्दोंमेंसे मुसव्विरखांको उस बेदौ-लत (कर्महीन) के पास डराने धमकाने और उपदेश करनेको भेजा। जिससे वह गफलत और घमण्डकी गहरी नींदसे जागे। साथही उसके खोटे इरादों और झूठे मनसूबोंका भी पता लगे। और समयोचित काम करे।

बहमन महीना।

चन्द्र तुलादान—१ बहमन (माघ बदी ४) को चन्द्रतुलादानका उत्सव था, जिसमें महाबतखां काबुलसे पहुंचकर आदाब बजा लाया और बादशाहकी क्षपासे सम्मानित हुआ।

खुर्रमका मांडूसे कूच करना—एतबारखांकी अर्जी आगरेसे पहुंची कि खुर्रमने अपनी अशुभ सेना सहित मांडूसे इधर कूच किया है। बादशाहने यह सोचकर कि खजानेका मंगाना सुनकर

उसके तन बदनमें आग लग गई है और व्याकुल होकर इस विचार से आता है कि शायद रास्तेमें खजाने तक पहुंचकर हाथ मारे, सुलतानपुरकी नदीतक सैर और शिकारके तौर पर जानेका विचार किया इसलिये कि यदि वह मूर्खतासे आगे चलाही आवे तो पूरी पूरी सजा दीजावे। नहीं तो जैसा उचित हो किया जावे।

बादशाहका कूच खुर्रम पर—१७ (माघ सुदी ६) को बादशाह ने शुभ मुहूर्त्तमें कूच किया। महाबतखांको खासा खिलअत दिया। एक लाख रुपये मिरजा रुस्तमको और दो लाख अबदुल्लहखांको मदद खर्चके लिये दिलाये। जैनखांके बेटे मिरजाखांको परवेजके पास भेजकर जल्दी आनेकी ताकीद लिखी।

राजा वरसिंहदेव—राजा सारंगदेवने जो राजा वरसिंहदेवके लानेके लिये भेजा गया था आकर यह अर्ज की कि राजा अपनी सजी हुई सेना सहित थानेश्वरमें आ मिलेगा।

खुर्रम—इन दिनों एतबारखां और दूसरे बन्दोंकी फिर अर्जियां पहुचीं कि खुर्रम सपूतीको त्याग और कपूतीको अङ्गीकार करके अपनी सेना लिये इधर आता है। इस वास्ते हम लोग खजाना निकालना उचित न जानकर किलेकी मजबूतीमें लगे हुए हैं। ऐसे ही आसफखांने भी प्रार्थना की कि वह बेदौलत लज्जा छोड़कर कुमार्गी होगया और उसके आनेमें कुशल नहीं है। इसलिये खजाना लानेका समय न था। मैं उसको ईश्वरकी रक्षामें छोड़कर आता हूं।

खुर्रमका बेदौलत कहलाना—बादशाह लिखता है—मैंने सुल-तानपुरकी नदीसे उतरकर उस कर्महीनको दण्ड देनेके लिये लगा-तार कूच किया और हुक्म फरमाया कि अब उसको बेदौलत कहा करें। इस ग्रन्थमें जहां बेदौलत लिखा जावेगा वह उसीका विशे-षण होगा। उसके साथ जैसे अनुग्रहका बर्ताव हुआ है उससे कह सकता हूं कि अबतक किसी बादशाहने अपने बेटे पर इतनी कृपा न की होगी। जो मेहरबानी मेरे बापने मेरे भाइयों पर की थी

वह मैंने उसके नोकरों पर की और उनको खिताब भण्डे और नक्कारे दिये जैसा कि इस किताबके पिछले पर्वोंमें लिखा जाचुका है। पढनेवालोंसे छिपा न होगा कि कितना ध्यान उसकी परवरिश और तरक्कीमें दियागया है। इसलिये मैंने उसका समाचार लिखनेसे कलमको रोक लिया है। मैं अपना क्या दुःख लिखूं, इस गर्म हवा से जो बीमारी और कमजोरीसे मेरे मिजाजके मुवाफिक नहीं है मजबूरी और सफर करना पड़ा है और इस हालमें ऐसे कुपुत्र पर चढाई करना जरूरी हुआ है। बहुतसे बन्दे जो वर्षों तक पालकर अमीरीके दरजे पर पहुंचाये गये हैं, जो आज उजबक(१) या कजलबाश(२) की लड़ाईमें काम आने चाहियें थे उनको उसके पापसे मना देकर अपने हाथसेही नष्ट करना पड़ा है। खुदाका शुक्र है कि उसने इतनी सहनशीलता और गम्भीरता दी है कि इस सबको सह सकता हूं और एक तौरसे गुजार सकता हूं। यह कष्ट अपने ऊपर झेल लिया है। पर जो बात दिलमें खटकती है और गैरतके मिजाजको तेज करती है वह यह है कि इस समय सपूत शाहजादे और राजभक्त अमीर एक टमरको रोम करके कन्दहार और खुरासानकी खिदमत (लड़ाई) का काम करते जो राजकी लाज रखने वाला है। पर इस कपूतने अपनेही सम्पत्तिके पावमें कुल्हाडी मारकर उस इरादेके रास्तेमें रोड़े डाल दिये और कन्दहारकी लड़ाई खटाईमें पड़ गई। आशा है कि परमेश्वर इस उद्वेगको दिलसे दूर करे।

इसी समय यह अर्ज हुई कि मोहतरिमखां ख्वाजा सरा, खलील बग जुलकदर और फिदाईखां मीरतुजुक उस बेदौलतसे मिले हुए हैं और उसके साथ पत्र व्यवहार करते हैं। बादशाहने ठीकका न टेखकर तीनोंको कैद करके निर्णय किया। मिरजा रुस्तम जैसे अमीरोंके सौगन्द खाकर साखी देनेसे मोहतरिम और खलील अप राधी सिद्ध होकर दण्डित हुए और फिदाईखां निर्दोष साबित

(१) तूरानी। (२) ईरानी।

होकर प्रतिष्ठा पूर्वक कैदसे निकाला गया।

राजा रोजअफजूं—राजा रोजअफजूं डाक चौकी पर शाह पर-वेजको सेना सहित सजावली करके लानेके लिये भेजा गया।

अस्फन्दार महीना।

१ अस्फंदार (फाल्गुण वदी ४) को बादशाह नूरसरायमें पहुंचा। इसी दिन एतबारखांकी अर्जी आई जिसमें लिखा था कि बैदौलत किलेकी मजबूती होनेसे पहले पहुंच जानेकी मनशासे आगरेकी सीमामें बहुत जल्दी आधमका था। पर जब फतहपुरमें पहुंचकर सुना कि किलेका बन्दोबस्त होचुका है तो लज्जित होकर वहीं ठहर गया। खानखानां, उसका बेटा और बहुतसे अमीर जो दक्षिण और गुजरातके सूबोंमें तैनात थे उसके साथ हैं और नमक-हरामीमें शामिल। मूसवीखांने उससे फतहपुरमें मिलकर शाही पैगाम पहुंचाया। उसने अपने नौकर काजी अबदुलअजीजको उसके साथ अरज मारूज करनेके वास्ते दरगाहमें भेजनेकी बात ठहराई है और सुन्दर(१) को लोगोंके खजाने छीननेके लिये आगरे भेजा है। वह लशकरखांके घरमें घुसकर ८ लाख रुपये निकाल लेगया है। इसी तरह दूसरे बन्दोंके घरमें जहां जहां उसको धन माल होनेका खयाल था हाथ मारा है।

खानखानां नमकहराम—बादशाह लिखता है—"जब खान-खानां जैसा अमीर जो अतालीकीके बड़े दरजे पर पहुंचा हुआ था ७० वर्षकी उमरमें अपना मुंह नमकहरामीसे काला करले तो दूसरोंका क्या गिला है ? उसकी सृष्टिही नमकहरामीसे हुई थी। उसके बापने भी अन्तावस्थामें मेरे बापसे यही बुरा बरताव किया था। वह भी बापकी चाल चला और इस उमरमें हमेशाके लिये कलंक लगा लिया। भेडियेका बच्चा आदमीके साथ पलकर भी अन्तमें भेडियाही होता है।"

(१) वही सुन्दर ब्राह्मण जिसे राजा विक्रमाजीतका खिताब दिया गया था।

इसी दिन मुमव्विरखां वेदौलतके दूत अवदुलअजीजको साथ लेकर आया। उसने जो अर्ज कराई थी वह ठीक नहीं थी इस लिये मैंने उसकी बात न सुनी और उसे कैद रखनेके लिये महावत खांको सौंप दिया।

लुधियाने पहुंचना—५ (फाल्गुण वदी ८) को बादशाह लुधियाने पहुंचकर नदीके तट पर उतरा। खानआजमको सातहजार ६००० सवारका मनसब मिला।

राजा भारत बुन्देला—राजा भारत बुन्देला दक्षिणसे आया। बादशाहने उसको डेढ़ हजारी १००० सवारका मनसब दिया।

राजा बरसिंहदेव—१२ गुरुवार (फाल्गुण सुदी १) को थानेश्वर के परगनेमें राजा वरसिंहदेवने अपनी सजी हुई सेना बादशाहको दिखाकर शाबाशी पाई।

राजा सारंगदेव—राजा सारंगदेवका मनसब डेढ़ हजारी ६०० सवारोंका होगया।

आसफखां—करनालके पास आसफखां भी आगरेसे आगया। बादशाहने उसका आना फतहका चिन्ह समझा।

फौजोंका जमा होना—बादशाह लिखता है—"लाहोरसे जब कूच किया गया था तो पहलेसे किसीको खबर न थी और समय भी ठहरने और ढील करनेका न था। कई अमीर जो सवारी और सेवामें थे वही साथ थे। सरहिंद पहुंचनेतक भी थोड़ेसेही लोग सवारी में पहुंचे थे। पर सरहिन्द पहुंचने पर झुंडके झुंड और दलके दल लशकर इधर उधरसे आने लगे। दिल्ली पहुंचने तक इतनी भीड़भाड़ होगई थी कि जिधर देखता था तमाम जंगलको लशकर से पटा हुआ पाता था। जब यह अर्ज हुई कि वेदौलत फतहपुर से निकलकर दिल्लीको गया है। मैंने लशकरको चितला(१) पहनने का हुक्म दिया। इस चढ़ाईमें फौजोंको सजाने और चलानेका काम महावतखांके ऊपर छोड़ा गया था। हिरावल सेनाकी सरदारी

(१) बकतर।

अबदुल्लहखांको दीगई थी। चुने हुए और काम किये हुए जवानों मेंसे उसने जिन जिनको मागा मैंने उनको उसकी फौजमें लिखकर हुक्म फरमाया कि एक दल दूसरी फौजोंसे आगे चला करे। खबरों के पहुचाने और रास्तोंके बन्दोबस्त करनेका भी उसने जिम्मा लिया था। हम इस बातसे गाफिल थे कि वह बेदौलतसे मिला हुआ है और असल मतलब उस बदजातका यह है कि हमारे लश्करके खबार उसको भेजे। इससे पहले भी सच्ची झूठी खबरोंके लम्बे लम्बे तूमार लिखकर लाता था कि मेरे जासूसोंने वहांसे भेजे हैं। जो भोकने वाले बन्दोंमेंसे कितनोंको कलङ्कित करता था कि ये बेदौलतसे मेल रखते है और दरबारकी खबरें उसको लिखते हे। यदि मैं उसके लगाने बुझाने पर धीरता छोडकर आतुरता करता तो ऐसी हलचलमें जबकि झगडे बखेडोंकी आंधिया चल रही थी बहुतसे सुसेवकोंको उसके दोष लगानेसे नष्ट करना पडता। यद्यपि कई शुभचिन्तक स्पष्ट और सकेतसे उसके बुरे विचारकी बातें अर्ज करते थे। पर समय ऐसा न था कि उसका भाडा फोड दिया जावे। बल्कि खास और जवानको भी ऐसे इशारेसे जिसमें उसको कुछ आशङ्का हो, रोकर उस पर अधिक कृपा कीजाती थी कि शायद वह अपने कुकर्मों से लज्जित होकर कुटिलता छोडदे। पर उस दुष्टकी दृष्टिहीमें छल छिद्र था। उसे होश न आया। उसने जो किया वह उसीके योग्य था। उसका वर्णन आगे आता है—

"कडवे स्वभावके वृक्षको यदि बहिश्तके बागमें लगाओ और शहदसे सीचो तोभी उसका फल कडवाही होगा।"

दिल्ली पहुचना—दिल्लीके पास सैयद बहवा बुखारी, सदरखां और राजा कृष्णदासने शहरसे आकर रकाब चूमी। सरकार प्रबधका फोजदार बाकरखां भी आगया।

जमना पर डेरे—२५ (फाल्गुण सुदी १४) को बादशाह दल्लीमें होकर जमना पर आया और वहां छावनी सजाई।

गिरधरको राजाकी पदवी—रायसाल दरबारीके बेटे गिरधरने

दक्षिणसे आकर भूमि चूमी। दो हजारी डेढ हजार सवारके मनसब और राजाके खिताबसे सम्मानित हुआ।

जबरदस्तखां मीर तुजुकको झंडा मिला।

१८ वा नौरोज।

फरवरदीन महीना।

२०(१) जमादिउलअव्वल सन् १०३२ मंगलवार (चैत्र वदी ५) की रातको सूर्य्यने मेष राशिके उच्चभवनमें प्रवेश किया बादशाहके राज्यशासनका १८ वा वर्ष प्रारम्भ हुआ।

खुर्रम मथुरामें—इसी दिन बादशाहने सुना कि बेदौलत मथुरा की तलहटीमें पहुंचा। उसका लशकर परगने शाहाबादमें उतरा था १७ हजार सवार देखने गये थे।

राजा जयसिंह—राजा मानसिंहके पोते राजा जयसिंहने अपने वतनसे आकर रकाब चूमी।

राजा बरसिंहदेव—बादशाह लिखता है—"मैंने राजा बरसिंहदेवको जिससे अच्छा कोई अमीर राजपूतोंकी जातिमें नहीं है महाराजाका खिताब देकर उच्च पद पर पहुंचा दिया और उसके बेटे राजा जुगराजको दो हजारी २००० सवारके मनसबसे सरफराज किया।"

बेदौलतका आना—बादशाहसे अर्ज हुई कि बेदौलत जमनाके किनारे किनारे चला आता है। बादशाहने भी उसी तरफ कूच करना ठहराया। हिरावल, बरनगार, जुरनगार, अलतमश, तरह और चपावल वगैरह दस्ते फौजकी दशा और स्थानके अनुसार सजाई गई। इतनेमें फिर खबर पहुंची कि बेदौलत खानखाना समेत सीधे रास्तेसे मुडकर परगने कोलको जो २० कोस बायें हाथको है गया है। और सुन्दर ब्राह्मणको जो उसका वकील है खानखानाके बेटे दाराब, हिम्मतखां, सरबुलन्दखां, शिरजाखां, शाविदखां, जादूराय, उदाराम आतिशखां, मनसूरखां आदि

(१) जहांगीरके हिसाबसे १८।

बादशाही अमीरों और मनसबदारोंके साथ जो दक्षिण और गुजरातमें तैनात थे और नमकहरामीमें उसके शामिल होगये थे और रानाके बेटे राजा भीम रुस्तमखां, बैरमबेग, दरियापठान और तकी आदि अपने सब नौकरोंको बादशाही लशकरके मुकाबिलेपर छोड़ कर पांच सेनाएं कर गया है। उनकी सरदारी कहनेकी तो दाराब के नाम है परन्तु असलमें कर्त्ता धर्त्ता सुन्दर है। वह दुष्ट बलोचपुरेके आसपास आपहुंचे हैं।

लडाईका आरम्भ—८ (चैत्र बदी १३) को बादशाही लशकर कबूलपुरेमें पहुंचा। इसी दिन चन्दावलीकी बारी बाकरखांकी थी। बादशाहने उसको सबके पीछे छोड़ा था। बागियोंका एक झुण्ड रास्तेमें आकर लशकरका सामान लूटने लगा। बाकरखा उनके रोकनेको ठहर गया। ख्वाजा अबुलहसन खबर पाकर सहायताके लिये लौटा। परन्तु वह लोग ठहर न सके पहुंचनेसे पहले ही भाग गये।

९ बुधवार (चैत्र बदी १४) को बादशाहने २५ हजार सवार छांटकर आसफखां ख्वाजा अबुलहसन और अबदुल्लहखांकी अफसरी में बागियोंके ऊपर भेजे। कासिमखां, लशकरखां, इरादतखां और फिदाईखां वगैरह ८००० सवार लेकर आसफकी फौजमें नियत हुए। बाकरखां, नूरुद्दीनकुली और इब्राहीमहुसैन काशगरी आदि आठ हजार सवारों सहित ख्वाजा अबुलहसनकी सहायता पर गये। नवाजिशखां, अबदुलअजीजखां, अजीजुल्लह और बहुतसे सैयद बारह और अमरोहेके अबदुल्लहखांके साथ लिखे गये। इस फौज में दसहजार सवार गिने गये। सुन्दर इस समय आगे बढ़ा। बादशाह लिखता है—"मैंने अपना खासा तरकश जबरदस्तखां मीरतुजुकके हाथ अबदुल्लहखांके वास्ते भेजा जिससे उसे और उत्साह हो। जब दोनों लशकर भिड़े तो वह इस लोक और परलोकका कालमुंह कलंकी भागकर शत्रुओंसे जामिला। खानजहांका बेटा अबदुलअजीजखां न जाने जानकर वा बेजाने उसके साथ चला

गया। नवाजिशखां, जबरदस्तखां और शेरहमला जो उस निर्लज्ज की फौजमें थे उसके जानेसे विचलित नहीं हुए। खुदा सदा मेरे सानुकूल है इसलिये उस समय भी जबकि अबदुल्लहखां जैसा अमीर दसहजार फौजको उलट पलटकर शत्रुसे जामिला था और बादशाही फोजको कोई धक्का लगनेवाला था, अकस्मात एक गोली सुन्दरके मर्मस्थानमें लगी और वह गिरा। उसके गिरतेही दुश्मनों के छक्के छूट गये। इधर अबुलहसनने अपने सामनेकी फौजको हटा कर भगा दिया और उधर आसफखांने बाकरखांके पहुंचतेही बहादुरीसे काम पूरा कर दिया। ऐसी जीत हुई कि जो पृथिवीकी सब जीतोंमें शिरोमणि कही जासकतीहै। जबरदस्तखां, शेरहमला, उसका बेटा शेरबच्चा, असदखां मामूरीका बेटा, ख्वाजाजहांका भाई मुहम्मदहुसैन और बहुतसे बारहके सैयद जो अबदुल्लहखांकी फौजमें थे शहीद होकर सदाके लिये जी गये। हुसैनखांका पोता अजीजुल्लह गोलीसे घायल हुआ पर बच गया। इस समय उस कपटीका नजाजाना भी अच्छाही हुआ। वह यदि लड़ाईके बीचमेंसे जाता तो लश्करके सरदार या तो बागी होजाते या पकड़े जाते। दैवयोगसे आमलोगोंमें वह 'लानतुल्लह' के नामसे मशहूर होगया और यह नाम गैबसे उसको मिला। इसलिये मैंने भी उसका यही नाम रख दिया। आगे जहां जहां लानतुल्लह लिखा जावे वह उसीका नाम होगा।"

बागी जो लड़ाईसे भागे थे वह फिर नहीं सम्हल सके। लानतुल्लह भी उन सबके साथ भगा ही चला गया। बेदौलतके पास पहुंचने तक जो २० कोस पर था कहीं न रुका।

सुन्दरका सिर—बादशाह लिखता है–"जब इस फतहकी खबर मेरे पास पहुंची तो मैंने खुदाकी इस नई इनायतका बहुत धन्यवाद किया। शुभचिन्तकोंको जिन्होंने अच्छी सेवा की थी अपने पास बुलाया। दूसरे दिन सुन्दरका सिर मेरे सामने लाया गया। ऐसा विदितहुआकि गोली लगतेही उसने अपने प्राण नरकके दूतोंको

सौंप दिये थे। उसकी लाश जलानेके लिये पासके एक गांवमें ले गये थे। उसमें आग लगानाही चाहते थे कि एक फौज दूरसे दिखाई दी। जलानेवाले पकड़े जानेके भयसे इधर उधर भाग गये। उस गांवका पटेल अपने मुजरेकेलिये उसका सिर काटकर खानआलमके पास लेगया क्योंकि यह गांव उसीकी जागीरसे था। खानआलम उसे मेरे पास लाया। वह अशुभ चेहरा दुरस्त दिखता था। उसके कान कोई मोतियोंके लालचसे काट लेगया था। कुछ बिगड़ा न था। कुछ न मालूम हुआकि किसकी गोली उसके लगी। उसके मिट जानेसे बेदौलतने फिर कमर न बांधी। मानो उसकी दौलत हिम्मत और अक्ल यही हिन्दू कुत्ता था। जब वह मुझ जैसे बापके साथ, जिसने उसे पैदाकिया और पालकर बादशाह बनाया, किसी चीज को उससे अच्छा न समझा, ऐसा करे तो खुदाके इनसाफसे कभी बेहतरीका मुंह न देखेगा।

अमीरोंका मनसब बढना—जिन लोगोंने इस लड़ाईमें अच्छा काम किया था उन्होने अपने दरजेके मुवाफिक ज्यादासे ज्यादा मेहरबानियोंसे सरफराजी पाई। ख्वाजा अबुलहसनका मनसब पांचहजारी होगया। नवाजिशखांने चार हजारी ३००० सवारका और बाकरखाने तीन हजारी ५०० सवारोंका मनसब और नक्कारा पाया।

इब्राहीमहुसैन काशगरीका मनसब दोहजारी १००० सवार, नूरुद्दीनकुलीका दो हजारी ७०० सवार, राजा रामदासका दो हजारी १००० सवार, लुतफुल्लहका डेढहजारी ५०० सवार और परवरिशखांका हजारी ५०० सवारका हुआ। सबका समाचार लिखनेसे बहुत तूल होगा।

उस दिन वहीं मुकाम रहा, दूसरे दिन कूच हुआ। खानआलमने इलाहाबादसे आकर चौखट चूमी।

सरबुलन्दराय—१२ (चैत्र सुदी २ संवत् १६८०) को गांव भासी

के पास डेरे हुए। इस दिन सरबुलन्दराय(१)ने दक्षिणसे आकर चौखट चूमी। वह फूलकटारे सहित जड़ाऊ खासा खञ्जर पाकर और सरबुलन्द हुआ।

अबदुलअजीजखां तथा अन्य कई अमीर जो खानखानाके साथ चले गये थे, बेटौलतसे पीछा छुड़ाकर बादशाहकी खिदमतमें आ गये। उन्होंने कहा—जब खानखाना दौड़ा तो हमने जाना कि लड़नेके वास्ते घोड़ा बढ़ाया है। फिर जब हम बागियोंमें पहुंच गये तो उनको राजी रखनेके सिवा और कोई उपाय न था। हमने बेटौलतसे २००० मोहरें मदद खर्चके वास्ते लेली थीं। तो भी काबू पाकर भाग आये हैं। बादशाह लिखता है—"विशेष पूछताछ करनेका समय न था इसीसे उनकी बात सच समझ ली गई।"

१८ (चैत सुदी ८) को शरफेआफताब (मेष संक्रान्ति) का दिन था। बहुतसे अमीरोंके मनसब बढ़े और उनके ऊपर उचित इना-यतें भी हुईं।

मीर अजदुद्दौलाका कोष—अजदुद्दौलाने आगरेसे आकर एक कोष बादशाहको दिखाया। बादशाह लिखता है—बेशक बड़ी मेहनत की है। खोज खोजकर सामयिक शब्द पुराने विद्वानोंकी कविताको साक्षीसे संग्रह किये हैं। कोषका ऐसा ग्रन्थ न देखा था।

राजा जयसिंह—राजा जयसिंहका मनसब तीन हजारी १००० सवारोंका होगया।

अमानुल्लहको खानाजादखांका खिताब—महाबतखांके बेटे अमा-नुल्लहको खानाजादखांका खिताब और चारहजारी ४००० सवार का मनसब इनायत हुआ।

उर्दी बहिश्त।

१ (बैशाख बदी ७) को बादशाहके डेरे फतहपुरके तालाब पर हुए।

एतबारखांको मुमताजखांका खिताब—एतबारखां आगरेसे

(१) रावरतन हाड़ा।

हाजिर हुआ। उसने आगरेके किलेकी रखवाली बहुत मेहनत और नमकहलालीसे की थी। इसलिये बादशाहने उसको मुमताज खांका खिताब, ६हजारी५०००सवारका मनसब, खिलअत, जड़ाऊ तलवार घोड़ा और खासा हाथी देकर उसी खिदमत पर बिदा किया। मुकर्रमखां आदि कई अमीरोंके मनसब बढ़े जो आगरेसे आये थे।

मनसूर फरंगी—४ (वैशाख बदी १०) को मनसूर फरंगी और नौबतखां दक्षिणी बेदौलतको छोड़कर बादशाहकी खिदमतमें हाजिर होगये।

हिण्डोन—१० (वैशाख वदी १) को बादशाहकी सवारी हिण्डोनमें उतरी।

परवेजका आना—११ को भी वहीं मुकाम हुआ। इसी दिन परवेजके उपस्थित होनेका मुहूर्त था। इस लिये बादशाहने सब शाहजादों, अमीरों और बन्दोंको हुक्म दिया कि फौजों सहित पेशवाईमें जाकर उस प्रतापी पुत्रको उचित आदरसे हुजूरमें लावें। दो पहर दिन आने पर उसने शुभमुहूर्तमें जमीन चूमनेका सौभाग्य पाया। जब वह कोरनिश, तौरे और तस्लीमके आदाब अदाकर चुका तो बादशाहने उसको प्रेम पूर्वक छातीसे लगाया और बहुत कृपा और प्रीति प्रगट की।

बेदौलत—इन दिनों खबर पहुंची कि बेदौलतने आम्बेरके पास से निकलते हुए जो राजामानसिंहका वतन है, बहुतसे बदमाशोंको भेजा। उन्होंने उस बस्तीको लूट लिया।

सारवाली—१२ (वैशाखसुदी ३) को गांव सारवालीमें डेरेहुए। बादशाहने हवशखांको अजमेरके महल दुरुस्त करनेके लिये पहले से भेज दिया।

शाह परवेज—बादशाहने परवेजको ४० हजारी ३००००सवार का मनसब दिया।

जगतसिंह—बादशाह यह सुनकर, कि बेदौलतने राजा बासूके

बेटे जगतसिंहको कहा है कि अपने वतनमें जाकर पंजाबके पहाड़ों में बलवा करे। उसको दण्ड देनेके लिये सादिकखां मीर बख्शी को पंजाबकी सूबेदारी पर भेजा। खिलअत हाथी तलवार तोग और नक्कारा देकर मनसब चार हजारी ३०००सवारोंका करदिया।

मिरजा बदीउज्जमांका मारा जाना—बादशाह लिखता है— मिरजा शाहरुखके बेटे मिरजा बदीउज्जमांको जो फतहपुरी कह- लाता था उसके छोटेभाई बेखबरीमें मारकर दरगाहमें आगये और उसकी मा भी आई। परन्तु जैसा कि चाहिये था अपने बेटेके खूनकी दावेदार न हुई और न शरईसबूत(१) पहुंचा सकी। उसका मिजाज ऐसा खराब था कि उसका मारा जाना अफसोस करनेके लायक न था वरञ्च समय और राज्यके विचारसे मुनासिब था। पर इन बेदौलतोंसे अपने पितातुल्य बड़े भाईके साथ ऐसा अनाचार हुआ जिसकी अदालत नहीं सह सकती थी। इसलिये मैंने हुक्म दिया कि अभी यह लोग कैद रहें। पीछे जैसा उचित होगा किया जायगा।

राजा गजसिंह—२१ (बैशाख सुदी १२) को राजा गजसिंह और राय सूरजसिंहने अपनी अपनी जागीरोंसे आकर रकाबचूमी।

बेदौलत पर परवेज—२५ (ज्येष्ठ बदी १) को बादशाहने शाह- जादे परवेजको सेना संहित बेदौलतके पीछे जाने और दण्ड देने पर नियत किया। कामोंका पूरा अधिकार महाबतखांको दिया। खानआलम, महाराजा गजसिंह(२), फाजिलखां, रशीदखां, राजा गिरधर, राजा रामदास कछवाहा, ख्वाजा मीर अबदुलअजीज, मजीजुमह, असदखां, परवरिशखां, इकरामखां, सैयद हुजबरखां, लुतफुलह, राय नारायणदास आदिको ४०००० सवार, एक बड़े तोपखाने और २० लाख रुपयेके खजाने सहित साथ किया। शुभ

(१) मुसलमानी धर्मशास्त्रके अनुसार साक्षी।

(२) यहांसे जोधपुर वालोंको महाराजाकी पदवी होना जाना जाता है। तुजुकजहांगीरी पृष्ठ ३६०

मुहूर्तमें शाहजादेको विदा किया। फाजिलखां इस लशकरकी बख्शीगरी और विकायेनवीसी पर मुकर्रर हुआ। खासा खिलअत जरीकी सिली हुई नादिरी सहित, जिसके दामन और गिरीबानोंमें मोती टके हुए थे और ४०००० रुपयेकी लागतसे सरकारमें तय्यार हुई थी, जड़ाऊ तलवार खासा हाथी रतनगज नाम, हथनी और खासा घोड़ा बादशाहने शाहजादेको इनायत किया। यह सब सामान ७७०००) का था।

ऐसेही नूरजहां बेगमने भी खिलअत घोड़ा और हाथी दस्तूरके मुआफिक उसको दिया। महाबतखां और दूसरे अमीरोंको भी उनके लायक हाथी घोड़े और खिलअत मिले। शाहजादेके जिन जिन नौकरोंको बादशाह पहचानता था वह भी उचित इनायतसे सरफराज हुए।

इसी दिन मुजफ्फरखांने भी मीरबखशीका खिलअत पहना।

खुरदाद महीना।

दावरबखशको गुजरातकी सूबेदारी।

१ खुरदाद (ज्येष्ठ वदी ८) को खुसरोके बेटे शाहजादे दावरबख्शको गुजरातकी सूबेदारी इनायत हुई। खानआजम उसका अतालीक हुआ। शाहजादेको हाथी घोड़ा खिलअत जड़ाऊ खासा खञ्जर तोग और नकारा मिला। खानआजम और दूसरे बन्दों पर भी यथायोग्य कृपा हुई।

फाजिलखांके बदले जानेसे इरादतखां बखशी हुआ।

बङ्गाले और उड़ीसेकी सूबेदारी—आसफखांको बङ्गाले और उड़ीसेकी सूबेदारी खासा खिलअत और जड़ाऊ तलवार सहित इनायत हुई। उसका बेटा अबूतालिब भी बापके साथ बिदा किया गया और उसको दो हजारी १००० सवारका मनसब मिला।

बादशाह अजमेरमें—८ मङ्गलवार(१) २८ रजब (ज्येष्ठसुदी १)

(१) असलमें लेखकके दोषसे मंगलकी जगह शनि और २८ की जगह १८ रजब लिखी है। तु० पृष्ठ ३६१ में।

को बादशाह अजमेर पहुंचकर आनासागर तालाव पर उतरा। शाहजादा दावरवख्श आठ हजारी ३००० सवारके मनसबसे सरफराज हुआ। दो लाख रुपये खजानेसे उसके साथ जानेवाले लशकरकी मदद खर्चके वास्ते मिले और एक लाख रुपयेकी मदद खानआजमको दीगई।

गवालियर—तातारखां गवालियरके किलेकी हिफाजत पर भेजा गया।

राजा गजसिंह—राजा गजसिंहको पांच हजारी ४००० सवार का मनसब मिला।

सरसयजमानीकी मृत्यु—आगरेमें बादशाहकी मा मरयमजमानी का देहान्त होगया।

जगतसिंह—रानाके बेटे जगतसिंहने वतनसे आकर जमीन चूमी।

बङ्गालेके हाथी—बङ्गालेके हाकिम इब्राहीमखां फतहजङ्गने ७४ हाथी भेजे थे वह बादशाहको भेट हुए।

दाकरखां अवधकी और सादातखां मयानदुआवकी फौजदारी पर नियत हुए।

तीर महीना।

गुजरातमें बादशाहकी फतह—१२ तीर (आषाढ सुदी ७) को गुजरातके मुतसद्दियोंकी अर्जीसे बादशाहको फतह होनेकी खबर पहुंची। वह लिखता है—मैंने रानाकी फतह करनेके इनाममें गुजरातका सूबा जो बडे बडे बादशाहोंका स्थान है बेदौलतको इनायत किया था और उसकी तरफसे उस मुल्ककी हुकूमत सुन्दर ब्राह्मण करता था। जब उसने खोटी मनशासे उसको हिम्मतखां, शिरजहखां, सरफराजखां वगैरहको बहुतसे बादशाही बन्दों सहित जो उस सूबेके जागीरदार थे अपने पास बुला लिया तो उसके भाई कन्हरको उसकी जगह रहने दिया। फिर सुन्दरके मारे जाने पर मडूवा रास्ता लेकर गुजरातका मुल्क लानतुल्लहकी जागीरमें दे

दिया। कन्हरको उस सूबेके दीवान आसफखां खजाने, तथा जड़ाऊ तख्त और परदले सहित जो मेरी भेटके लिये ५ लाख और दो लाएमें तय्यार हुए थे बुलाया। तब सफीखांने बहुत अच्छा काम किया जो जाफरबेगका भाई है और जिसने मेरे बापसे आसफखां का खिताब पाया था। एक लड़की मेरे इस आसफखांकी बेदौलत के घरमें है और दूसरी उससे छोटी इसके घरमें। बेदौलत इस प्रसंगसे अपनी तरफदारीकी उम्मेद उससे रखता था। परन्तु उसकी किस्मतमें नमीर होना लिखा था इसलिये जब लानतुल्लहका गुलाम वफादार नाम थोड़ेसे आदमियोंके साथ अहमदाबादमें आ बैठा तो सफीखांने कुछ नौकर रखे और कुछ लोगोंको राजी करके साथ लिया। वह कन्हरके निकलनेसे थोड़े दिन पहले शहरसे निकल कर कांकरिया तालाब पर जा उतरा और वहांसे महमूदाबादमें चला गया। यह मशहूर किया कि बेदौलतके पास जाता हूं। फिर ताहिरखां, सैयद दिलेरखां, नानूखां पठान और दूसरे खैरख्वाह बन्दोंसे जो अपनी अपनी जागीरोंमें थे लिखापढ़ी करके उन्हे गांठ लिया और मौका देखने लगा। पर बेदौलतके नौकर सालह को जो सरकार फलादका थानेदार था आशङ्का हुई कि सफीखांका औरही इरादा है। कन्हरने भी यह भेद पा लिया। सफीखां लोगोंको तसल्ली देकर ऐसी होशियारीसे रहता था कि वह लोग कुछ नहीं कर सकते थे। सालह यह सोचकर कि कहीं सफीखां खजाने पर हाथ न मारे १० लाख रुपये मांडूमें बेदौलतके पास ले गया। कन्हर भी उसके पीछेही परदला लेकर चल दिया। पर तख्त न लेजा सका जो बहुत भारी था। सफीखां अवकाश पाकर महमूदाबादसे 'करीज' के परगनेमें जो सीधे रास्तेसे बायेंको है नानूखांके पास चला गया। नाहरखां आदिको चिट्ठियां लिखकर यह बात ठहराई कि जागीरोंसे अपने अपने आदमियोंके साथ सवार होकर तड़केही अपनी अपनी तरफके शहरके दरवाजों पर पहुंच जावें। 'आप अपनी औरतोंको उसी परगनेमें छोड़कर

नानूखांके साथ दिन निकलनेसे पहले शहरके पास पहुंच गया। कुछ देर बागशाबानमें ठहरा। अभी नाहरखां आदि पहुंचे भी न थे कि दरवाजे खुलतेही वह सारंगपुर दरवाजेसे शहरसे घुस गया। साथही नाहरखां भी दूसरे दरवाजेसे दाखिल हुआ। खानतुलहकके खुाजासराने बादशाही इकबालका यह पलटा देखा तो मियां वजीहुद्दीनके पोते शैख हैदरकी शरण गया। बन्दोंने विजय के बाजे बजाकर किला सजाया और कुछ लोगोंको बेदौलतके दीवान तकी और बखशी हसनबेगके घरों पर भेजकर उन्हें पकड़ा। शैख हैदरने खुद आकर सफीखांसे कह दिया कि खानतुलहकका खुाजासरा मेरे घरमें है। वह भी वहांसे बंधवा मंगवायागया। इसी तरह बेदौलतके सब नौकरोंको कैद करके शहरका बन्दोबस्त किया। वह जड़ाऊ सिंहासन, दो लाख रुपये और सब सामान बेदौलत और उसके लोगोंका जो शहरमें था बादशाही बन्दोंके हाथ आया।

बेदौलतको जब यह खबर पहुंची तो खानतुलहकको हिम्मतखां, शिरजाखां, सरफराजखां, काबिलबेग, रुस्तमबहादुर, सालहबदखशी और दूसरे बागी बादशाही बन्दों और अपने नौकरों सहित पांच हजार सवार देकर अहमदाबाद पर भेजा। सफीखां और नाहरखां ने यह सुना तो सिपाहियोंको तसल्ली देकर फौज जमा की। जो रुपये हाथ आये थे वह और वह तख्त तोड़कर नये पुराने सिपाहियोंको बांट दिया। ईडरके राजा कल्याण, लालकोलीके बेटे और आसपासके सब जमींदारोंको शहरमें बुलाकर अच्छी भर्ती करली। खानतुलहक मददका रास्ता न देखकर ८ दिनमें मांडूसे बड़ौदे पहुंचा। बादशाही बन्दोंने शहरसे बाहर आकर कांकरिया ताल पर छावनी डाली। खानतुलहकने अपने मनमें यह जाना था कि जल्दी पहुंचनेसे शुभचिन्तक बिखर जायंगे। परन्तु जब उनका बाहर निकलना सुना तो बड़ौदेमेंही मदद पहुंचने तक रुक गया। जब सब बागी उससे आमिले तो आगे बढ़ा। शुभचिन्तक भी

काकरियासे कूच करके गाव तेवेमें कुतुबआलमकी कबरके पास जा उतरे। लानतुल्लह तीन दिनका रास्ता दो दिनमें काटकर वडोदेसे महमूदाबादमें पहुंचा। सईद दिलेरखा, गिरजाखाको ओरसे वडोदेसे पकडकर शहरमें लेआया था और सरफराजखाको ओरसे भी शहरमें थी इसलिये सफीखाने दोनोके पास पोशीदा आदमी भेजकर कहलाया कि जो भाग्यवलसे कलङ्कका टीका अपने ललाट परसे मिटाकर शुभचिन्तकोंमें आजाओगे तो दोनो लोकमें मुंह उजला रहेगा नही तो तुम्हारे बालबच्चोको पकडकर तरह तरहसे कष्ट दूगा। लानतुल्लहने इस बातकी खबर पाकर सरफराजखाको एक बहानेसे बुलाकर कैद कर दिया और गिरजाखा, हिम्मतखा तथा सालह बदख्शी आपसमें मिलेजुले रहते थे और एक जगहही उतरा करते थे इस वास्ते गिरजाखाको न पकड सका।

२१ शाबान (आषाढ वदी ८) को लानतुल्लहने सवार होकर अपनी फौजें सजाई। शुभचिन्तकोने भी परे जमाये और लडनेको तैयार हुए। लानतुल्लह अपने दिलमें यह समझे हुए था कि मेरे आनेसे यह लोग हिम्मत हार देंगे और बिना लडेही इधर उधर चले जायगे। परन्तु जब उसने इनको अपनी जगह पर जमा हुआ देखा तो ठहर न सका और बायें हाथकी तरफ घोडेकी बाग मोड कर बोला कि यहा तो जमीनके नीचे बारूद बिछी हुई है अपने आदमी मारे जायगे। सरखीजमें चलो वहा लडेंगे। इसमें भी बादशाही इकबालकी खूबी थी क्योंकि उसके बाग फेरतेही उसके भागने की अवाई उड गई और बादशाही बहादुरोंने उसका पीछा कर दिया। जिससे वह सरखीचमें तो नही पहुंच सका गाव मरीचेमें उतर पडा। यह लोग सालोदेमें जो ७ कोस पर था रहे। दूसरे दिन फौजें सजाकर लडनेको गये। हिरावलमें नाहरखा इडरका राजा कल्याण और दूसरे बहादुर लोग थे। चरनगारमें सयद दिलेरखा सयद मीठू और दूसर बन्दे थे। बरुनगार मे नाहरखा, सैयद याकूब सैयद गुलाममुहम्मद वगैरह थे। कौलमें सफीखा किफायतखा

पखग्रो श्रीर दूसरे सेवक थे। लानतुल्लह जहां उतरा था वहां नीची ऊंची जमीन थी थूहरका वन श्रीर रास्ता तङ्ग था। इस सबबसे उसके लश्करका पूरा ठीक तरहसे न जमा। उसने कितनेही कामके आदमियोंको रुस्तम बहादुरके साथ आगे कर दिया था। हिम्मतखां श्रीर सालहबेग भी अगली अनीमें थे। पहले नाहरखां श्रोर हिम्मतखांकी मुठभेड़ होकर खूब लड़ाई हुई। हिम्मतखां बन्दूकसे मारा गया—सालहबेगका मुकाबिला नाहरखां, सैयद याकूब, सैयद गुलाममुहम्मद श्रोर दूसरे बन्दोंने किया। उन लड़ाकोंमें सैयद गुलाममुहम्मदके हाथोंने तुहरा करके सालहको घोड़ेसे गिरादिया। वह जखमोंसे चूर होकर मरा श्रौर १०० आदमी उसके बचानेमें काम आये।

बागियोंकी फौजके आगे जो हाथी था वह इस समय दागकी गर्जना श्रोर बन्दूकोंकी बाड़ोंसे भड़ककर पीछेको मुड़ा श्रोर श्रपनी ही तङ्ग गलीमें फंसकर उसने बहुतसे नालायकोंको मारडाला। लानतुल्लहको हिम्मतखां श्रोर सालहबेगके मारे जानेकी खबर न थी। इसलिये उसने उनकी मददके इरादेसे घोड़े उठाये। फिरा बलके सिपाही जो अकसर जखमी होगये थे उसके आनेसे घबरा कर पीछेको हटे श्रोर नजदीक था कि कोई बड़ी हानि पहुंचे परन्तु ईश्वरने सहायता की। सफीखां गोलमेंसे फिराबलकी मदद को दौड़ा। इतनेमेंही हिम्मतखां श्रोर सालहके मारेजानेकी खबर लानतुल्लहको लगी श्रोर उधरसे सफीखां श्रोर गोलकी फौजको आते हुए देखा तो उसका जमा हुआ पांव उखड़ गया। भागतेही बना। सैयद दिलेरखांने एक कोस तक पीछा करके बहुत आदमी मारे। नमकहराम काबिलबेग बहुतसे नदमाशों सहित अपने लश्कर को पहुंचा।

लानतुल्लहको सरकारजहांका भरोसा न था इसलिये उसे बेड़ियोंसे जकड़कर एक हाथी पर बैठाया था श्रोर अपने एक गुलामसे कह दिया था कि जो हार होती देखे तो उसको मार डाले श्रोर

ऐसेही सुलतान अहमदके बेटे बहादुरके पावमें बेडी डालकर दूसरे हाथी पर चढाया था और उसके मार देनेका भी हुक्म देदिया था। जब भागड पडी तो सुलतानके बेटे पर जो आदमी रखा गया था उसने तो उसको जमधरसे मार डाला पर सरफराजखा हाथीसे कूद पडा। उस गडबडमें उस गुलामने उसके एक जखम तो लगाया पर कारी न लगा। सफीखाने उसको रणमें पडा पाकर शहरमे भेज दिया।

लानतुल्लहने बडौदे तक घोडा न रोका। मिरजाकी ओरते शुभचिन्तकोकी कैदमें थी इसलिये वह आकर सफीखासे मिला।

लानतुल्लह बडोदेसे भिरोचको गया। हिम्मतखाके बेटोने जो किलेमे थे उसे अन्दर तो नही आने दिया परन्तु पाचहजार महमूदी खर्चके वास्ते उसके पास भेज दी। वह तीन दिन बुरी हालत मे किलेके बाहर पडा रहा, चोथे दिन दरियाके रास्ते सूरतमेंपहुचा। यह बन्दर बेदोलतकी जागीरमें था इस लिये ४ लाख महमूदी तो उसके मुत्सद्दियोंसे ली और जो कुछ जुल्म ज्वरदस्तीसे हाथ लगा वह लेकर फिर अभागे बागियोको जमा किया और बुरहानपुरमे बेदौलतसे जा मिला।

सफीखा और दूसरे नमकहलाल बन्दोसे जो गुजरातमें थे ऐसी अच्छी खिदमत बन आई। वह तरह तरहकी इनायत और नवाजिशसे सरफराज हुए। सफीखाका मनसब सातसदी तीनसो सवारोका था मेने तीन हजारी दो हजार सवारोका करके उसे सैफखा जहागीरशाहीके खिताब, भडे और नक्कारेसे सरफराजी बखशी। नाहरखाका मनसब हजारी दोसो सवारका था वह भी तीन हजारी दो हजार सवारोका करके शेरखाके खिताब, घोडे, हाथी और जडाऊ तलवारकी इनायतसे उसकी इज्जत बढाई।

शेरखा—शेरखा रायसेन और चदेरीके हाकिम पूर्णमलके भाजरसिंह टेवका पोता था। जब शेरखा पठानने किले रायसेनको

(१) गुजराती मोहर।

घेरा और उसे वचन भंग करके मारा जैसा कि मशहूर है तो उस की रानियां हिन्दुओंके दस्तूरके मुआफिक जौहर करके आगमें जल मरीं। जिससे उनका पतिव्रत परपुरुषके हाथसे नष्ट न हो। उसके बेटे और बिरादरीवाले इधर उधर चले गये। नाहरखांका बाप जिसका नाम खानजहां था आसेर और बुरहानपुरके हाकिम मुहम्मदखां फारूकीके पास जाकर मुसलमान होगया। जब मुहम्मद खां मरा और उसका बेटा हसन छोटी उमरमें उसकी जगह बैठा तो मुहम्मदखांका भाई राजीअलीखां उस बालकको कैदकरके राज्य करने लगा। कुछ दिन पीछे उसे खबर लगी कि खानजहां और मुहम्मदखांके बहुतसे नौकरोंने एका करके यह बात ठहराई है कि उसे तो मार डालें और हसनखांको किलेसे निकालकर हुकूमत पर बैठा दें। राजा अलीखांने फुरती करके हयातखांको बहुतसे बहादुरों सहित खानजहांके घर पर भेजा कि उसे या तो जीता पकड़ लावें या मार डालें। वह अपनी इज्जतके वास्ते लड़नेको खड़ा हुआ और जब काम कठिन देखा तो जौहर करके अपनी जानसे गुजर गया। उस वक्त नाहरखां बहुत छोटा था हयातखां हबशीने राजीअलीखांसे अर्ज करके उसे अपना बेटा बनाया और मुसलमान कर लिया। उसके मरने पर राजीअलीखांने नाहरको पाला। जब मेरे बापने आसेरका किला फतह किया तो नाहरखां उनकी खिदमतमें पहुंचा। उन्होंने उसको लायक देखकर एक लायक मनसब दिया और मुहम्मदपुरका परगना जो गुजरातमें है उसकी जागीरमें इनायत किया। फिर हमने मेरी खिदमतमें ज्यादा से ज्यादा तरक्की की। अब अपनी नमकहलालीका इनाम जैसा कि चाहिये था पाया।

बारैके सैयद—सैयद दिलेरखां बारैके सैयदोंमेंसे है। पहले इस का नाम सैयद अबदुलवहाब और मनसब एकहजारी ८०० सवारों का था। अब दो हजारी १२०० सवारोंका मनसब और झण्डा दाकर सरफराज हुआ है। मयान दोआब (गङ्गा जमनाके बीच)

के १२ गावोंमें जो पास पास बसते हैं इन सैयदोंका वतन है जिससे बारहके सैयद मशहूर हैं। बाजे लोग इनके सच्चे सैयद होनेमें बातें बनाते हैं मगर इनकी बहादुरी सैयद होनेकी पक्की दलील है। इस सलतनतमें कोई ऐसी लड़ाई नहीं हुई है जिसमें इन सैयदोंने अपना नाम न किया हो। मिरजा अजीज कोका हमेशा कहा करता था कि बारहके सैयद इस बादशाहतके बलागरदानान (बलिदान) हैं। सचमुच ऐसाही है।

नाहरखां पठानका मनसब ८ सदी ८०० सवारोंसे डेढ़हजारी १२०० सवारोंका कर दिया गया। ऐसेही दूसरे नमकहलाल बंदे अपनी अपनी खिदमतके बमूजिब बड़े बड़े मनसब पाकर मुरादको पहुंचे।

खानजहानका बेटा असालतखां शाहजादे दाराबख्शकी मदद पर गुजरातके सूबेमें तैनात हुआ और नूरुद्दीनकुली, शिरजाखां सरफराजखां तथा बागी लश्करके दूसरे सरदारोंके लानेको भेजा गया जो पकड़े गये थे।

शाहनवाजखांका बेटा मनूचहर बेदौलतको छोड़कर शाहपरवेज से आ मिला।

शेरका शिकार—बादशाह एक शेरकी खबर सुनकर शिकार गाहको गया। जंगलमें ३ शेर और मिले चारोंको मारकर दौलतखानेमें आगया। वह लिखता है—"मेरी तबीयत शेरके शिकार पर ऐसी लगी हुई है कि जबतक वह न होजाय दूसरा काम नहीं करने देती। सुलतान महमूद गजनवीके बेटे सुलतान मसऊदको भी शिकारकी बड़ी लत थी। उसके शेर मारनेकी तवा रीखमें अजब अजब बातें लिखी हैं। 'तवारीख बौहकी'के कर्त्ताने जो बातें इस सम्बन्धमें आखोंसे देखी वही रोजनामचेके तौर पर लिखी है। वह लिखता है—एक दिन सुलतान हिन्दुस्थानकी सरहदमें शिकारको गया। हाथी पर सवार था। बहुत बड़ा शेर जंगलसे निकलकर हाथी पर आया। सुलतानने एक ईंट फेंक

कर उसकी छाती पर मारी। दर्द और गुस्से शेर हाथीकी पीठ पर चढ गया। सुलताननें घुटनोंके बल खड़े होकर ऐसी तलवार मारी कि दोनों हाथ शेरके कट गये। शेर पीठकी गिरा और मर गया—' मुझे भी शाहजादगीके दिनोंमें ऐसाही इत्तफाक पड़ा। मैं पञ्जावकी सरहद्में शिकारको गया था। एक बड़ा शेर जङ्गलसे निकला। मैंने हाथी परसे बन्दूक मारी। शेर गुस्से होकर उछला और हाथीके पुट्ठे पर आचढा। मुझे इतनी फुरसत न मिली कि बन्दूक रखकर तलवारका वार करूं। बन्दूककी नाल सम्हाल कर मैं घुटनोंके बल खड़ा हुआ। दोनों हाथोंसे इस जोरसे नाल उसके सिर पर मारी कि उसकी चोटसे वह जमीन पर गिर पड़ा और मर गया। इससे भी अजब बात यह है कि कौलके पहाड़में एक दिन भेड़ियेके शिकारको गया। हाथीपर सवार था। एक भेड़िया आगेसे निकला। मैंने उसके कानकी नोक पर तीर मारा। जो बेतभर घुस गया। वह उसी तीरसे गिरा और मरा। बहुत ऐसा हुआ है कि कई कमानोंके खैंचनेवाले जवानोंने बीस बीस तीस तीस तीर मारे हैं और शिकार नहीं मरा है। पर अपनी बात आपही लिखना अच्छा नहीं लगता है इसलिये मैं ऐसे हत्तान्तोंसे कलम रोकता हूं।

जगतसिंह—२८ (सावन बदी ८) को राना करणके बेटे जगतसिंहकी मोतियोंकी माला इनायत हुई।

पगली—पगलीका जमींदार सुलतानहुसेन मर गया था। बादशाहने उसकी जागीर उसके बड़े बेटे शादमानको देदी।

अमरदाद महीना।

खुर्रम पर फतह—७ अमरदाद (सावन सुदी ३) को शाह परवेजके लशकरसे उसके नोकर इब्राहीमहुसेनने पहुंचकर फतहकी खुशखबरी सुनाई और परवेजकी अर्जी जिसमें सब हाल लिखा था बादशाहकी खिदमतमें पेश की। उसका खुलासा यह है—जब परवेज घाटी चांदासे उतरकर मालवेमें पहुंचा तो वैदोलत बीस

हजार सवार ३०० जङ्गी हाथी और एक बड़े तोपखानेके साथ संडू से लड़नेको आया। उसने दक्षिणके बरगियोंको जादूराय उदयराम और आतशखां वगैरहके साथ पहलेसे विदा करदिया था कि बादशाही लशकरमें पहुंचकर लूट मार करें। महाबतखांने परा जमाकर शाहजादेको गोलमें रखा और सारी फौज सजाकर उतरने चढनेमें खूब खबरदारी बरती। बरगी दिखाई तो देते थे परन्तु सामने नहीं आते थे। एक दिन मंसूरखां फरंगीको बारी चन्दावलीकी थी। लश्कर उतरनेके समय महाबतखां सावधानीके लिये पराजमाकर लशकरके बाहर खड़ा होगया। जिससे सब लोग दिलजमईसे उतर जावें। मंसूरखां रास्तेमें प्याला पीकर झूमता हुआ मंज़िल पर आपहुंचा था कि इतनेमें दूरसे एक फौज दिखाई दी। उसको नशेकी तरंगमें धावा करनेकी सूझी। उसने न तो भाइयों से कहा न अपने लोगोंको खबर की और सवार होकर दौड़ गया। दो तीन बरगियोंको मारता मारता वहां जापहुंचा जहां जादूराय और उदाराम दो तीन हजार सवारोंसे परा जमाये खड़े थे। जैसा कि इन लोगोंका कायदा है इन्होंने हर तरफसे उसको घेर लिया। वह जबतक जीता रहा लड़ा। आखिर नमकहलाली करके काम आया।

बेदौलतने बरगियोंको भेजे पीछे रुस्तमखां, तकी, बरकन्दाज खांको तोपचियोंके साथ भेजा था। फिर दाराबखां, भीम, बैरम, और दूसरे कामके लोगोंको रवाने किया। उसका इरादा मैदान की लड़ाई लड़नेका न था। हमेशा पीछेको देखा करता था इसलिये मस्त और जंगी हाथियोंको नर्बदाके पार उतारकर छड़ी सवारीसे दाराब और भीमके पीछे पीछे आता था। जब बादशाही लशकर कालियादहमें पहुंचा तो बेदौलत अपना तमाम लशकर बादशाही फौजके मुकाबिलेमें भेजकर खानखानां सहित एक कोस पीछे रह गया।

महाबतखांने बेदौलतके कई अमीरोंको मिला लिया था। इस

लिये लश्करोंका सामना होतेही वरकन्दाजखां बहुतसे बन्दूक चियों सहित दौड़कर महाबतखांके पास आगया। महाबतखांने शाहजादेके पास लेजाकर उसकी खातिर करादी। इसका नाम बहाउद्दीन था, जैनखांका नौकर था। उसके मरे पीछे बादशाहके हमी तोपचियोंमें नौकर हुआ। आदमी मेहनती था और कुछ जमाअत भी साथ रखता था इसलिये बादशाहने परवरिश करके वरकन्दाजखांका खिताब दिया था। जब बेदौलत दक्षिणको जाता था तो उसको उस लश्करका मीरआतिश करके भेजा था। उसने पहले तो कलंकका टीका अपने माथे पर लगा लिया था परन्तु पीछे सम्हल गया और ठिकाने आगया।

उसी दिन बेदौलतका भरोसेवाला उमदा नौकर रुस्तमखां भी उसकी बात बिगड़ती देखकर महाबतखांसे वचन लेके मुहम्मद मुरादबदख्शी वगैरह अपने साथके मनसबदारों समेत शाहजादे परवेजके लश्करमें चला आया। बेदौलत यह खबर सुनतेही ऐसा घबराया कि उसे बादशाही बन्दोंका क्या अपने नौकरोंकाही भरोसा न रहा। वह अपने लोगोंके लौटालानेको आदमी भेजकर रातों रात नर्बदासे पार उतर गया। उस समय फिर उसके कई एक साथी सुभीता देखकर अलग होगये और शाहपरवेजके पास पहुंचकर उसकी मेहरबानीमें दाखिल हुए।

नर्बदासे उतरते हुए बेदौलतको एक कागज महाबतखांका लिखा हुआ हाथ आया जो उसने जाहिदखांके जवाबमें लिखा था कि बादशाहकी इनायत और मेहरबानीका उम्मेदवार होकर जरूर चले आओ। उसे पढ़तेही उसने जाहिदखांको उसके तीन बेटों सहित पकड़कर कैद कर दिया। बादशाह लिखता है—जाहिद खां शुजाअतखांका बेटा है जो मेरे बापके विश्वासपात्र बन्दोंमेंसे था। मैंने इस नालायकको हकदार और खानाजाद होनेसे परवरिश करके खानके खिताब और डेढ़हजारी मनसब पर चढ़ाकर बेदौलतके साथ दक्षिणमें भेजा था। अब जो उस सूबेके अमीरोंको

तनवार बख्शी। महाबतखांको इस उत्तम सेवाके लिये सातहजारी जात और सवारका मनसब इनायत किया।

मैयद सलाबतखां वेदौलतको छोडकर बादशाहके पास आगया।

बादशाहने परवेजके वास्ते नादिरी सहित खिलअत और महाबतखांके लिये पगडी, दफतरखानेके दारोगा लालखांके हाथ भेजी।

सांपकी करतूत—बादशाह लिखता है—एकदिन मैं नीलगायकी शिकारसे दिल बहला रहा था। एक सांप देखनेमें आया जो २॥ गज लम्बा और ३ गिरह चौडा था। वह आधे खरगोशको निगल गया था और आधेको निगल रहा था कि किरावल लोग उसे मेरे पास उठा लावे। खरगोश उसके मुंहसे गिरपडा। मैंने फरमाया कि फिर इसके मुंहमें डाल दो। लोगोंने बहुत जोर किया मगर न डाल सके। बहुत जोर करनेसे उसका जबडा भी फट गया। तब मैंने कहा कि इसके पेटको चीरो। चीरा तो दूसरा खरगोश समूचा उसके पेटसे निकला। ऐसे सांपको हिन्दुस्थानमें चीतल कहते हैं। यह इतना बडा होता है कि कोतापाचाको समूचा निगल जाता है। पर जहर इसमें नहीं होता है और न काटता है। एक दिन इसी शिकारमें मैंने एक नीलगाय बन्दूकसे मारी। उसके पेटमेंसे दो पूरे बच्चे निकले। सुना था कि नीलगाय के बच्चोंका मास बहुत मजेदार होता है इसलिये सरकारी बावरचियोंको दुम्पाजा पकाकर लानेको कहा। खाया तो नर्मी और मजेसे खाली न था।

शहरेवर महीना।

१५ (भादो सुदी १४) को रुस्तमखां, मुहम्मद मुराद और वेदौलतके कई नौकर उससे फटकर शाहजादे परवेजके पास आगये। बादशाहने रुस्तमखांको पांच हजारी ४०० सवारका और मुहम्मद मुरादको हजारी जात ५०० सवारका मनसब दिया। रुस्तमखां बदखशांका रहनेवाला था उसका नाम यूसुफवेग था। रानाकी लडाईमें काम अच्छा देनेसे वेदौलतने उसको अपने सब नौकरीसे

चुनकर अमीरोंके टब्जे पर पहुंचाया और बादशाहसे रुस्तमख़ांका ख़िताब दिलवाया था।

नमकहरामोंकी सजा—नूरुद्दीनकुली ४१ नमकहरामोंको बेड़ि योंमें जकड़कर अहमदाबादसे लाया जिनमेंसे बादशाहने मिरज़ाख़ां और क़ाबिलबेगको मस्त हाथीके पांवमें डालकर मरवा दिया।

शहरयारके बेटी होना—२० शहरेवर ८(१) ज़ीक़ाद (आश्विन वदी ४) को शहरयारके एतमादुद्दौलाकी नवासी(२)से लड़की पैदा हुई।

२२ (आश्विनवदी द्वितीय ५) को सौर तुलादानका उत्सव हुआ। बादशाह मामूलके मुआफ़िक़ सोने वगैरहमें तुला। ५५वां वर्ष लगा। तुलादानकी जमामेंसे २०००) शेख़ अहमद सरहिन्दीको इनायत किये।

मेहर महीना।

१ मेहर (आश्विन वदी ३०) को मीर जुमलाने तीनहज़ारी ३००० सवारका मनसब और गुजरातके बख़शी मुक़ीमने किफ़ायत ख़ांका ख़िताब पाया।

मरफ़राज़ख़ांके बेअसर होनेका यकीन बादशाहके दिलमें हो गया। उसे जैलखानेमेंसे बुलवाकर उसका सलाम लिया।

शहरयारके घर जाना—बादशाह शहरयारकी अर्ज़से उसके घर गया। उसने एक बड़ी मजलिस सजाकर उत्तम नज़र दिखाई। अकसर बन्दोंको सिरोपाव भी दिये।

बैदौलतका बादशाही सरहद्दसे निकल जाना।

आसेरका क़िला जो मजवृतीमें मशहूर है पहले तो ख़्वाजा फ़तहुल्लहके बेटे ख़्वाजा नसरुल्लहको सौंपा हुआ था। फिर बैदौलतको अर्ज़से मीर हिसामुद्दीनको सौंपा गया। यह नूरजहां बेगमके तुगाद का जमाई था। इसलिये जब बेदौलत दिल्लीके पास लड़ाईमें हार

(१) पचाङ्गके हिसाबसे १६ ज़ीक़ाद २० शहरेवरको थी।

(२) नूरजहांकी बेटी।

कर मांडूकी तरफ भागा तो नूरजहां बेगमने उसको ताकीदें लिख कर भेजी थी कि हरगिज बेदौलत और उसके आदमियोंको किले के पास मत फटकने देना, बल्कि किले और कोटको सजाकर अपना फर्ज अदा करना, अपनी इज्जतमें बट्टा न लगाना।" किलेमें सामान भी बहुत था और उसका जल्दीसे फतह होजाना भी सम्भव न था। परन्तु जब बेदौलतने अपने नौकर शरीफाको उसके पास भेजा तो वह तुरत उसको किला सौंपकर बेटों समेत बेदौलतके पास चला गया। बेदौलतने उसको चार हजारी मन-सब भण्डा नक्कारा और सुरतिजाखांका खिताब देकर दीन और दुनियामें बदनाम किया। फिर खानखानां, दाराब और उसकी सब औलादको लेकर किले पर चढ़ा और तीन चार दिन वहां रहा। जब अनाज और किलेदारीके सब सामानोंसे दिलजमई होगई तो गोपालदास नाम राजपूतको जो पहले सरबुलन्दरायका नौकर था और दखन जाते वक्त उसका नौकर होगया था किला सौंपा। औरतों और फालतू असबाबको वहां छोड़ा तीनों ब्याही बीबियां, बेटों और जरूरी लौंडियोंको साथ लिया। खानखाना और दाराबको पहले तो किलेमें छोड़नेका इरादा था पर फिर मत बदल गई और साथ लेकर बुरहानपुरको कूच किया।

लानतुल्लह भी सूरतसे आकर उससे मिल गया। उसने बड़ी घबराहटसे रायभोज हाड़ाके बेटे सरबुलन्दरायको बीचमें डालकर सुलहकी बात चलाई। महाबतखांने जवाब दिया कि जबतक खानखानां न आवे सुलह नहीं होसकती इससे उसका मतलब उस कपटियों और फसादियोंके सरदार खानखानांको बेदौलतसे अलग कर लेनेका था।

बेदौलतने लाचार खानखानांको कैदसे छोड़ा और उससे कुरान की कसम लेकर तसल्ली और वचन पक्का करनेके लिये उसको महल में लेगया। अपनी जोरू बच्चोंको उसके सामने लाकर बहुतसी लाचारी और आजजी की और कहा कि हमारे ऊपर बुरा वक्त

आपड़ा है काम मुशकिल होगया है मैं अपनेको तुम्हें सौंपता हूं। अब मेरी इज्जत आबरू बचाना तुम्हारे हाथ है। वह काम करना चाहिये कि जिसमें इससे ज्यादा खराबी न हो और मुझे फिर भट-कना न पड़े।

खानखानां सुलहके इरादेसे बेदौलतसे विदा होकर बादशाही लशकरमें आया। यह बात ठहरी कि वह नदीके उधर रहकर सुलहकी लिखा पढ़ी करे। परन्तु खानखानांके नदी तक पहुंचने से पहलेही बादशाही लशकरके कुछ बहादुर जवान रातको काबू पाकर जिधर बागी लोग गाफिल थे उधरके घाटसे उतर गये। इससे बागियोंमें घबराहट पड़ गई और बैरमबेग उनके सामने न ठहर सका। उसके भागतेही सब लशकर बेदौलतका रातोरात भाग गया। खानखानांको बड़ी हैरानी हुई। न जा सकता था न ठहर सकता था!

शाहजादे परवेजने लगातार कई कागज तसल्ली और मेहरबानी के भेजकर खानखानांको अपने पास बुलाया। खानखानांभी बेदौलत की हार और कमबख्ती देखकर महाबतखांकी मारफत परवेजसे जा मिला।

बेदौलत बादशाही फौजके नर्बदासे उतरने, बैरमबेगके भागने और खानखानांके चले जानेकी खबर सुनकर बरसते मेहमें मर-हट(१) के रास्तेसे दक्षिणको चल दिया। इस गड़बड़में बादशाही बन्दे और उसके नोकर साथ छोड़कर अलग होगये। जादूराय उदाराम और आतिशखांके घर रास्तेमें थे इसलिये वह कई मंजिल तक सङ्ग रहे परन्तु जादूराय उसके लशकरमें न गया। एक मंजिल पीछे रहता था और लोगोंके असबाबकी मालिकी करता था जिसको वह जानके डरसे छोड़ते जाते थे।

बेदौलत जिस दिन नर्मदासे उतरता था तो उसने अपने निज खिदमतगार जुलफिकारखां तुरकुमानको सरबुलन्दखां पठानके

(१) महाराष्ट्र देश।

लानेके लिये भेजकर उससे कहलाया था—"तू अबतक नटोंसे क्यों नहीं उतरा है यह बात तेरी भलमनसी और सचाईसे बहुत दूर है जितनी तेरी बेईमानी मेरे दिलमें खटकती है उतनी और किसीकी नहीं खटकती।" तुरकमानने जाकर जब यह सन्देसा उससे कहा तो उसने पूरा जवाब नहीं दिया और कडवाईसे कहा कि मेरे घोडे का रास्ता छोडदो। तुर्कमानने तलवार सूत कर उसकी कमर पर मारी। पर उस पठानने बरछा बीचमें देकर झेल ली। तलवार के निकलनेही पठानोंने उमडकर तुरकमानके टुकडे टुकडे कर डाले। बेदौलतके खजानची सुलतानमुहम्मदका बेटा भी मारा गया जो तुरकमानकी दोस्तीसे बेदौलतको पूछे बगैर साथ आया था।

बेदौलतका पीछा करनेका हुक्म—जब बादशाहने बेदौलतके बुरहानपुरसे निकलने और परवेजके बुरहानपुरमें पहुंचनेकी खबर सुनी तो खवासखांको परवेजके पास दौडाकर कहलाया कि कि इतने परही बस न करे बल्कि उसको जीता पकड ले या बाद शाही सरहदसे निकाल दे। बादशाह यह भी सुना करता था कि जब बेदौलत इधरसे भागेगा तो कुतुबुलमुल्ककी अमलदारीमें होकर उडीसे और बङ्गालेमें आवेगा, यह बात सिपाहगरोंके ख़यालमें ठीक भी थी। इसलिये बादशाहने होशियारीसे मिरजा रुस्तमको इलाहाबादकी सूबेदारी देकर विदा किया कि यदि ऐसा हो तो यह उस समय बड़ा कुछ काम दे।

खानजहां—खानजहांने मुलतानसे आकर १००० मुहरें, लाख रुपयेका एक लाल एक मोती और दूसरी चीजें भेंट की।

बीसवां वर्ष।

सन् १०३३ हिजरी।

कार्तिक सुदी ३ संवत् १६८० तारीख १६ अकतूबर सन् १६२३ से कार्तिक सुदी १ संवत् १६८१ तारीख १३ अकतूबर सन् १६२४ तक।

आबान महीना।

बैटोलतका कुतुबुल्मुल्कके मुल्कमें जाना—८ आबान (कार्तिक सुदी ८।१०) को खवासखां, शाहजादे और महाबतखांकी अर्जी लाया और बादशाहसे अर्ज की कि जब शाहजादा बुरहानपुर पहुंचा तो बहुतसे आदमी मेंहके मारे पीछे रह गये थे तो भी उसने हुक्म के मुताबिक फौरन नदीसे उतरकर बैदोलतके पीछे कूच करदिया। बैटोलत यह खबर सुनकर घबराया और जल्दी जल्दी चलने लगा। मेंह, कीचड, पानी और लगातार कूच करनेसे बारबरदारीके जानवर थक गये। जो आदमी रास्तेमें रह जाता था वह फिर नहीं लौटता था। ऐसेही जो चीज जहां रह जाती थी फिर नहीं मिलती थी। बैटोलतको अपनी, अपने बेटों और कबीलोंकी जानके आगे मालकी कुछ परवा न थी। बादशाही लशकर भगारके घाटेसे उतर कर रनकोट तक जो बुरहानपुरसे ४० कोस है उसके पीछे गया। वह इस हालसे माहूरके किले तक पहुंचा और यह जानकर कि उदाराम वगैरह दखनी सब यहांसे आगे उसके साथ नहीं जायगें उनको बिदा किया। हाथी और दूसरा बोझ भार माहूरके किलेमें छोडकर उदारामको सौंपा और आप कुतुबुल्मुल्ककी विलायतको तरफ चल दिया। जब उसका बादशाही सरहदसे निकल जाना भलीभांति मालूम होगया तो शाहजादा परवेज, महाबतखां आदि सब खैरख्वाहोंकी सलाहसे लौटा और १ आबान (कार्तिक सुदी १) को बुरहानपुरमें पहुंच गया।

बादशाहने मेहरखानीसे राजा सारंगदेवको फरमान समेत परवेजके पास भेजा।

कासिमखांका मनसब चारहजारी २००० सवारोंका होगया।

खलिफखां कयामखानी पटनेसे आया। बादशाहने उसे भण्डा टेकर किले कांगड़ेकी रखवाली पर भेजा।

आजर महीना।

कश्मीरको कूच—२ आजर (अगहन सुदी ३।३) को बादशाह ने अजमेरसे कश्मीरको कूच किया क्योंकि वेदौलतकी लड़ाई पूरी होचुकी थी और हिन्दुस्थानकी गर्मी उससे सही नहीं जाती थी।

आसफखां भी बंगालेसे आगया। उसकी बातोंके बिना बादशाह का जी नहीं लगता था इसलिये उसके बुलानेका हुक्म भेजदिया था।

जगतसिंह—राणा करणका बेटा जगतसिंह खिलअत और जड़ाऊ खंजर पाकर अपने देशको बिदा हुआ।

परवेजकी अर्जी—राजा सारंगदेव, परवेज और महाबतखांकी अर्जी लेकर आया जिसमें लिखा था कि वेदौलतकी मुहिमसे दिलजमई होगई है और दक्षिणके दुनियादारोंने भी तावेदारी कबूल कर ली है इसलिये हजरत इधरकी फिक्र छोडकर सैर और शिकार करें। बादशाही मुल्कोंमें जहांकी हवा मिजाजके मुवाफिक हो वहां तशरीफ लेजाकर अपना दिल खुश करें।

२० (पौष बदी ५) को मिरजावाली सिरोंजसे आया।

राजा गिरधरका मारा जाना—इन दिनों सूबे दक्षिणके बख्शी अकीदतखांकी अर्जी पहुंची जिसमें राजा गिरधरके मारे जानेका हाल लिखा था। परवेजके नौकर सैयद कबीर नाम बारहके एक सैयदने अपनी तलवार बाड रखने और उजली करनेके लिये सीकलगरको दी थी जिसकी दुकान राजागिरधरके घरके पास थी। दूसरे दिन जब लेनेको आया तो मजदूरी देने पर तकरार होगई। सैयदके नौकरोंने सीकलगरके कई लाठियां मारदीं। राजाके आदमियोंने उनकी हिमायत करके उन लोगोंको पीटा। दो तीन

वारहके सैयद उधर रहते थे वह हल्ला सुनकर सैयदको मददको आये। सैयदों और राजपूतोंमें बात बढ़कर लड़ाई छिड़ गई। तीर और तलवार चलनेकी नौवत पहुंची। सैयद कवीर खवर पाकर तीस चालीस सवारों सहित मददको पहुंचा। राजा गिरधर और उसके भाईबन्द राजपूत जैसा कि हिन्दुओंमें दस्तूर है हवेलीके अन्दर नंगे वदन खाना खारहे थे। राजाने सैयद कवीरके आने और सैयदोंकी जियादतीसे वाकिफ होकर अपने आदमियोंको हवेलीमें वुला लिया और किवाड़ लगा दिये। सैयद कवीर किवाड़ोंको आगसे जलाकर अन्दर घुस गया। लड़ाई हुई। यहां तक कि राजा गिरधर २६ नौकरों सहित मारा गया। ४० आदमी दूसरे जखमी हुए। ४ सैयद भी मारे गये। फिर सैयद कवीर राजाके तवेलेके घोड़े लेकर अपने घर चला गया।

राजपूत अमीर राजा गिरधरके मारे जानेकी खवर सुनतेही सेना लेकर अपने अपने डेरोंसे चढ़े। उधर वारहके तमाम सैयद, सैयदकवीरकी मददको दौड़े। किलेके मैदानमें वड़ा घमसान मचा। दोनो दलोंमें मुठभेड़ होनेवालीही थी कि महावतखां खवर पाकर फौरन वहां पहुंचा। सैयदोंको तो किलेमें छोड़ आया और राजपूतोंको जैसा कि उस वक्त मुनासिव था तसल्ली देकर कई सरदारों को खानआलमके डेरे पर लाया जो पासही था और फिर उसको समझाकर सैयदोंको सजा देनेका जिम्मा लिया। शाहजादा भी यह हाल सुनकर खानआलमके डेरोंमें आगया और राजपूतोंको तसल्ली देकर घर भेजा।

दूसरेदिन महावतखांने राजागिरधरके घरपर जाकर उसके वेटोंको दिलासा दिया और सैयद कवीरको तदवीर और स्थानपनसे पकड़ कर कैद किया। मगर राजपूतोंकी उसे मारे विना तसल्ली न होती थी इसलिये कई दिन पीछे उसको कतलकी सजा देदी गई।

अजमेरकी फौजदारी—२३ (पौष वदी ८) को मुहम्मदमुराद सरकार अजमेरकी फौजदारी पर नियत हुआ।

दे महीना।

१० (पौष सुदी १०) को बादशाह रहीमाबादके परगनेमें शेर की खबर पाकर शिकारको गया। हाथी बढ़ाकर शेरको बन्दूकसे मारा। वह लिखता है—शाहजादगीसे अबतक जितने शेर शिकार हुए उनमें ऐसा बड़ा और सुडौल शेर कोई न देखा गया था। ७०॥ मन जहांगीरी तोलमें उतरा। लम्बा साढ़े तीन गज और २ तस्‌ हुआ। मैंने चितेरोंको हुक्म दिया कि इसकी तसवीर डील डौलके मुवाफिक खेंचदें।

१६ (माघ बदी १) को अर्ज हुई कि आगरेका हाकिम मर गया। उसने ५६ साल बादशाही नौकरी की। बादशाने मुकर्रिब खांको उसकी जगह नियत करके आगरे भेजा।

मथुरा—बादशाह फतहपुर होकर मथुरामें आया। वहां २२ (माघ बदी ७) को चन्द्र तुलादानका उत्सव हुआ। इस पचसे ५७ वां वर्ष लगा।

मथुराके निकट बादशाह नावमें बैठा और यमुनाके मार्गसे चला। मार्गमें शिकारकी खबर लगी। एक शेरनी तीन बच्चों सहित निकली। बच्चे बहुत छोटे थे। वह बादशाहने हाथसे पकड़ लिये और शेरनी बन्दूकसे मारदी।

गंवारोंको सजा—बादशाहसे अर्ज हुई कि जमना पारके गंवार और जमींदार चोरीधाड़ा नहीं छोड़ते हैं और बने जंगलोंकी आड़ में रहकर जागीरदारोंको माल भी नहीं देते हैं। बादशाहने खान-जहांको उनके दण्ड देनेका हुक्म दिया। दूसरे दिन फौज जमना से उतरकर दौड़ी गई। वह भागनेकी फुरसत न पाकर लड़नेको सामने आये और जमकर लड़े। बहुतसे मारे गये। उनकी औरतें और बच्चे कैद हुए। फौजको खूब लूट हाथ आई।

बहमन महीना।

कन्नौज—१ (माघ बदी ३०) को रुस्तमखां सरकार कन्नौजकी फौजदारी पर भेजा गया।

अवदुल्लहको सजा—२ (माघ सुदी १।२) को बादशाहने हकीम नूरुद्दीन तुहरानीके बेटे अवदुल्लहको अपने रूबरू बुलाकर सजादी। जब शाह ईराननें इसके बापको माल और जरके वास्ते पकडकर तकलीफ दी थी तो यह वहासे भाग आया था। बादशाहने इसको ५ सदी मनसब देकर रख लिया था। बहुत खातिर और परवरिश करता था। परन्तु वह बादशाहकी बुराई किया करता था। सबूत होने पर सजाको पहुचा।

शिकार—किरायलीने अर्ज की कि इस इलाकेमें एक शेर रहता है जिससे यहांके लोग बडी तकलीफमें हे। बादशाहने फिदाईखांको हुक्म दिया कि हाथियोके हलके लेजाकर उस शेरको घेरे। पीछे बादशाहने जगलमें जाकर उसे एकही गोलीमें मार डाला।

तीतरके पेटमें चूहा—एकदिन बादशाहने शिकारमें एक काला तीतर बाज्से पकडवाया। उसका पेट चिरवाकर देखा तो उसमें एक पूरा चूहा निकला जो गला न था। बडी हेरत हुई कि इतनी पतली नालीमें समूचा चूहा कैसे उतर गया। बादशाह लिखता हे—"यही बात कोई दूसरा कहता तो सच न मानीजाती। जब खुद देखी तो अनोखी होनेसे लिखी गई।"

दिल्ली पहुचना—६ (माघसुदी ६) को बादशाह दिल्लीमें दाखिल हुआ।

माधवसिहको राजाका खिताव—राजा बासूके बेटे जगतसिहने बेदोलतके कहनेसे पजाबके उत्तरी पहाडोमें ऊधम मचा रखा था और सादिकखा उसे दण्ड देनेको गया था। अब बादशाहने जगत सिहके छोटे भाई माधवसिहको राजाका खिताव देकर घोडा और खिलअत इनायत किया और हुक्म दिया कि सादिकखाके पास जाकर उधरका फसाद मिटावें।

सलीमगढमें बादशाह—दूसरे दिन बादशाह दिल्लीसे कूच करके सलीमगढमें उतरा। राजा कृष्णदासका मकान रास्तेमें पडता था।

उसने बहुतसी प्रार्थना की। इससे बादशाह उस पुराने नौकरके घर गया और उसका मन बढ़ानेको उसकी कुछ भेट भी लेली।

दिल्लीकी हुकूमत—२० (फाल्गुणवदी ४) को बादशाहने सलीम गढ़से कूचकरके सैयद भवा बुखारीको दिल्लीकी हुकूमत दी। उसका घर भी दिल्लीमें था और यह काम पहले अच्छी तरह करचुका था।

तिब्बतके अलीरायका बेटा—तिब्बतके हाकिम अलीरायके बेटे अलीमुहम्मदने अपने बापके कहनेसे दरगाहमें आकर जमीन चूमी। अलीरायको इससे बहुत प्यार था और इसको अपनी जगह बैठाना चाहता था। दूसरे बेटे इस लिये नाराज हुए। बड़े बेटे अबदाल ने जो सबमें लायक था काशगरके खानका वसीला पकड़ा कि बूढ़े अलीरायके मरने पर वह खानकी मददसे तिब्बतका हाकिम हो। अलीरायने इस आशङ्कासे कि कहीं उसके बड़े बेटे, छोटे अलीमुहम्मदको मार न डालें और उस देशमें फसाद न बढ़े उसको दरगाहमें भेजा था। असल मतलब उसका यह था कि वह इस दरगाहके वसीलेदारोंमें होजावे और यहांकी हिमायतसे उसका काम बन सके।

असफन्दार महीना।

१८ (फाल्गुण सुदी १) को अम्बालेके परगनेमें सवारी पहुंची।

आदिलखां—इमामवर्दीका बेटा लशकरी जो बेदौलतके पाससे भागकर परवेजकी खिदमतमें आगया था वहांसे परवेज और महाबतखांकी अर्जी आदिलखांकी सुफारिशमें लेकर बादशाहके पास आया। अर्जीके साथ आदिलखांका खत भी था जो उसने महाबतखांके नाम भेजकर ताबेदारी और खैरख्वाही जाहिर की थी। बादशाहने उसीको वापिस भेजकर, शाहजादे, खानआलम और महाबतखांके लिये खिलअत भेजे। शाहजादेका खिलअत मोतीके तुकमोंकी नादिरी समेत था। शाहजादेकी अर्जसे आदिलखांके नाम फरमान लिखा और उसके लिये भी खिलअत नादिरी सहित भेजा और लिखा कि जो मुनासिब समझें सो इसी (लशकरी) को आदिलखांके पास भेजें।

जगतसिंहकी माफी—५ (फाल्गुण सुदी ५) को बादशाह सरहिन्द पहुंचकर बागमें ठहरा। व्यास नदीके किनारे पर सादिकखां मुखतारखां, असफन्दारखां, राजा रूपचन्द गुलेरी और दूसरे अमीरों ने जो उत्तरके पहाड़ोंमें काम करके आये थे मुजरा किया। जगतसिंह जो बेदौलतके इशारेसे उन पहाड़ोंमें मैदान खाली पाकर लूट मार कर रहा था सादिकखांके जानेपर किलेमार(१)में जाबैठा। जब काबू पाता कुछ फौजसे बाहर निकलकर बादशाही बन्दोंसे लड़ता और भाग जाता था। जब अनाजकी कमी और दूसरे जमींदारोंकी मददसे नाउम्मेदी हुई, जिनको सादिकखांने लालच और धमकी देकर गांठ लिया था, साथही भाईको राजाकी पदवी मिल जानेसे वह घबराया, उसने नूरजहां बेगमका वसीला उठाया। बादशाहने बेगमकी सुफारिश और खातिरसे उसके कुसूर माफ कर दिये।

बेदौलत उड़ीसेमें—दक्षिणके मुखबिरोंकी अर्जियां पहुंची कि बेदौलत लानतुल्लह और दाराब वगैरहके साथ कुतुबुलमुल्ककी सरहद से उड़ीसे और बंगालेको गया। रास्तेमें उसको बहुत तकलीफें हुईं। उसके बहुतसे साथी जगह जगहसे भाग गये। उनमें उसके दीवान अफजलखांका बेटा मिर्जा मुहम्मद भी था। बेदौलतने कुछ आदमी उसके लानेको भेजे परन्तु वह न गया और लड़कर जानसे जाता रहा।

जब बेदौलत दिल्लीसे भागकर गया था तो अफजलखांको मदद मांगनेके लिये आदिलखांके पास भेजा। आदिलखांके लिये बाज़ और अम्बरके लिये हाथी घोड़ा और जड़ाऊ खांड़ा भेजा था। परन्तु अम्बरने यह चीजें नहीं लीं। कहा कि मैं आदिलखांके ताबे हूं। वही दक्षिणके दुनियादारोंमें बड़ा है। तुम पहले उसके पास जाओ और अपना मतलब कहो। वह कबूल करे तो मैं भी करूंगा और जो कुछ तुम लाये हो लेलूंगा नहीं तो नहीं।

(१) मऊ।

अफजलखां आदिलखांके पास गया। वह बहुत बुरी तरह पेश आया। बहुत दिन तक शहरके बाहर पड़ा रखा। बात भी न पूछी और जो कुछ वह उसके और अम्बरके लिये लेगया था वह भी सगाकर रख लिया। इतनेहीमें अफजलखांको बेटेके मारजाने की खबर पहुंची तो वह जीताही मर गया।

बेदौलत इस हैसियतसे लम्बा सफर करके मछलीपट्टनमें पहुंचा जो कुतुबुलमुल्कके इलाकेमें था और आदमी भेजकर कुतुबुलमुल्कको अपनी मदद पर बुलाया। उसने कुछ रुपये और सामान भेजकर अपनी सरहदके हाकिमको लिख दिया कि अपने इलाकेसे सला-मत निकल जाने दो और बनियों तथा जमींदारोंको दिलासा देकर कह दो कि इनके लशकरमें अनाज और दूसरी जरूरी चीजें पहु-चाते रहें।

खोई वस्तुका मिलना—२७ (चैतबदी १२) को बादशाह शिकार से आता था। नदीमें उतरतेहुए एक खिदमतगारके हाथसे सोनेका सरकारी मजकादान पानीमें गिर पड़ा जो एक थैलेमें था और जिस में एक थाल तोर ५ प्याले ढकने समेत थे। लोगोंने ढूंढा तो बहुत परन्तु पानी गहरा और तेज था न मिला। दूसरे दिन बादशाहसे अर्ज हुई तो उसने मल्लाहों और किरावलोंको हुक्म दिया कि जहां गिरा है वहीं ढूंढें। शायद मिल जावे। वहीं मिला। उथल पुथल न हुआ था बल्कि पानीकी एक बून्द भी प्यालोंमें न पहुंची थी। बादशाह लिखता है—यह बात वैसीही है कि जब हादी खलीफा हुआ था तो उसने अपने भाई हारूनसे एक अंगूठी याकूतकी मंग बाई थी जो उसे बापसे मालसे मिली थी। जब हादीका आदमी अंगूठी मांगनेको गया तो हारून दजला नदीके तटपर बैठा था। उसने खफा होकर जवाब दिया कि मैंने तो बादशाही तेरे पास रहने दी। तू एक अंगूठी मेरे पास नहीं रहने देना चाहता है। यह कह कर अंगूठी दजलेमें फेंक दी। कई महीने पीछे जब हादी मरा और हारून खलीफा हुआ तो गोते

लगानेवालोको हुक्म दिया कि मैने जहा अगूठी डाली है वहा गोता लगाकर उसे ढूढो। उसके प्रतापसे पहलेही गोतेमे अगूठी उनके हाथ आगई और उन्होने लाकर हारूनके हाथमे दी।

नर और मादा तीतरकी पहचान—इन दिनो शिकारमें इमाम वर्दी किरावलजखशी एक तीतर बादशाहके पास लाया। उसके एक पावमें काटा था दूसरेमे नही। उसने परीक्षाके तौर पर पूछा कि यह नर है या मादा ? बादशाहने फौरन कहा कि मादा है। उसका पेट चीरा गया तो उसमेंसे अण्डा निकला। जो लोग खिद मतमे खडे थे उन्होने अचम्भा करके बादशाहसे पूछा कि हजरतने किस पहचानसे ऐसा कहा ? बादशाहने फरमाया कि मादाकी चोंचकी नोक नरसे कुछ छोटी होती है इससे और बहुत देखनेसे ऐसी पहचान होगई।

पक्षियोंकी शारीरिक दशा—बादशाह लिखता है—अजीब बात यह है कि सब जानवरोंका नरखडा गलेसे पेट तक एकही होता है मगर जरजके गलेमे ४ उगल तक एक नाली है फिर दो शाखा होकर पेटमे गई है और जहासे कि दो शाखा हुई है ढकी हुई है। हाथ लगानेसे वह गाठसी मालूम होती है। कुलगमें इससे भी अजब बात है कि उसके गलेकी नाली सापकी तरह लह-राती हुई छातीकी हड्डियोंमेंसे पूछ तक गई है और वहासे लौट कर फिर गलेमे आमिली है। जरज दो तरहका होता है। एक चितकबरा दूसरा बोरता। पर इन दिनों मालूम हुआ कि दो तरहका नही है। जो चितकबरा है वह नर है और जो बोरता है वह मादा है। इसकी यह दलील है कि चितकबरेमें पोतेआल और बोरतेमें अडे पाये गये है। कई बार इसका इमतिहान किया गया है।

मछली—मछलियोकी बाबत बादशाह लिखता है—मछलियो का मुझे बहुत शौक है। मेरे वास्ते तरह तरहकी मछलिया लोग लाते है। हिन्दुस्थानकी मछलियोंमें सबसे अच्छी रोहू है। उससे

उतरकर ग्रेन है। दोनोहीमें छिलके होते हैं। दोनोकी शकल मिलती जुलती होती है। उनके मांसमें भी बहुत थोड़ा भेद है। जिसको पहचान है वही जान सकता है कि रोझका मजा कुछ अच्छा है।

उन्नीसवां नौरोज।

फरवरदीन महीना।

१८ जमादिउलअव्वल सन १०३३ (चैत सुदी १ संवत् १६८१) बुधवारको एक पहर दो घड़ी दिन चढ़े सूर्य्य मेष राशिमें आया। बादशाहने अपने बन्दोंके मनसब बढ़ाये। यसावलों (अरदलीवालों) को हुक्म दिया कि सवारी और दौलतखानेसे बाहर आते वक्त काने कोढ़ी नकटे और कनकटे आदमियोंको सामने न आने दें।

१८ फरवरदीन (बैशाख बदी ५) को मेष संक्रांतिका उत्सव हुआ।

बेदौलत पर परवेज—बादशाहने बेदौलतका उड़ीसेकी सरहद में आना सुनकर शाहजादे और महाबतखांको ताकीद लिखी कि वहांका बन्दोबस्त करके सूबे इलाहाबाद और बिहारको रवाने हों। बंगालेका सूबेदार उस बेदौलतको राह न रोक सके तो अपनी सेना से उसे रोकदो।

उर्दीबहिश्त महीना।

२ (बैशाख सुदी ४) को बादशाहने खानजहांको आगरेके सूबे में रवाने किया कि वहां रहकर हुक्मकी राह देखता रहे और जब कोई हुक्म पहुंचे उसको मुनासिब तामील करे। उसको मोतीके तुकमेंकी नादिरी समेत खिलअत खासा जड़ाऊ तलवार खासा और उसके बेटे असालतखांके घोड़ा और खिलअत इनायत हुआ।

परवेजका विवाह—सूबे दकनके बखशी अकीदतखांकी अर्जी पहुंची कि शाह परवेजने गजसिंहकी बहनसे हुक्मके मुवाफिक ब्याह कर लिया है। जब बेदौलत बुरहानपुरसे भागा तो मीर हिसामुद्दीन भी अपने बेटों सहित भागकर आदिलखांके पास

जाता था। जानसुपारखां खबर पाकर उसे महाबतखांके पास पकड़ लाया। महाबतखांने उसे कैद करके एक लाख रुपये उससे लिये।

वैटीलत जो हाथी बुरहानपुरकी किलेमें छोड़ गया था उनको जादूराय और ऊदाराम शाहजादे परवेजके पास लेआये।

दक्षिणियोंकी ताबेदारी—काजी अबदुलअजीज जो वैदौलतका भेजा हुआ दिल्लीमें बादशाहके पास आया था और बादशाहने उसे महाबतखांको सौंप दिया था वह पहले कई वर्ष तक खानजहांकी तरफसे बीजापुरमें वकील रहा था और आदिलखांका पुराना मुलाकाती था। इसलिये महाबतखांने उसको वकील करके आदिलखांके पास भेजा। दक्षिणके दुनियादारोंने देश काल और अपना काम निकलता देखकर बन्दगी और खैरख्वाही दिखलाई। अंबरने अपने भले नौकर अलीशेरको भेजकर बहुत आजिजी और ताबेदारी जताई। उसने महाबतखांको नौकरकी तरह अर्जी लिखकर यह बात ठहराई थी कि देवगांवसे आकर आपसे मिलूंगा। अपने बेटेको बादशाही नौकर कराके शाहजादेकी बन्दगीमें रखूंगा

आदिलखां—उधरसे काजी अबदुलअजीजने लिखा कि आदिल खांने सच्चे दिलसे ताबेदारी कबूल करके इकरार किया है कि अपने मुखतारकार मुल्ला मुहम्मद लारीको जो यहां मुल्लाबाबा कहा और लिखा जाता है ५००० सवारोंसे खिदमतमें रहनेके लिये भेजूंगा। उसे पहुंचा समझें।

परवेजका कूच—परवेजको वैदौलतकी रोक थामके लिये इलाहाबाद और बिहार जानेकी ताकीदें हुई थीं। इसलिये वह ६ फरवरदीन (चैत्र सुदी ६) को फौज समेत कूच करके लालबागमें उतरा और महाबतखां मुल्ला मुहम्मद लारीसे मिलनेके लिये बुरहानपुरमें ठहर गया। लशकरखां जादूराय ऊदाराम और दूसरे बन्दोंसे कहा कि बालाघाटमें जाकर जफरनगरमें ठहरें। असदखां मामूरी को एलचपुरमें और शाहनवाजखांके बेटे मनूचहरको खानपुरमें

रखा रजवीहाको थानेश्वरमें सूबे खानदेशकी रखवाली पर भेजा।

आदिलखांका बरताव—इसी दिन खबर पहुंची कि जब लश्करी फरमान लेकर आदिलखांके पास पहुंचा तो आदिलखां शहर सजाकर ४ कोस तक फरमान और खिलअत लेनेको आया। तसलीमात और आदाब बजालाया।

२१ (ज्येष्ठ वदी ८) को बादशाहने दावरबख्श खानआज़म और मकीमखांको खिलअत हाथी देकर लाहोरकी हुकूमत पर बिदा किया।

सांपके मुंहमें सांप—एक दिन शिकारमें अर्ज हुई कि एक काला सांप दूसरे सांपका फन निगलकर बिलमें घुस गया है। बादशाहके हुक्मसे बिल खोदकर वह सांप निकाला गया। वह इतना बड़ाथा कि अबतक वैसा सांप बादशाहने न देखा था। उसका पेट चीरा तो दूसरे सांपका फन साबित निकल आया। वह भी वैसाही था पर कुछ पतला और छोटा था।

महाबतखांका आरिफको मारना—दक्षिणके वाकयानवीसने बादशाहको अर्जी लिखी कि आदिलके बेटे आरिफने बेदौलतकी अपनी ओर अपने बापकी तावेदारी और खैरख्वाहीकी अर्जी लिखी थी। वह महाबतखांके हाथ लग गई उसने आरिफको बुलाकर दिखाई तो वह ठीक जवाब न देसका और क्या देता जबकि उसकी लिखी थी। इसलिये महाबतखांने उसको मारकर उसके बाप और दो भाइयोंको कैद करदिया।

खुरदाद महीना।

बेदौलत उड़ीसेमें—इब्राहीमखां फतहजंगकी अर्जी बादशाहके पास पहुंची जिसमें लिखा था कि बेदौलत उड़ीसेमें पहुंच गया है। उड़ीसे और दकनके सरहदमें एक घाटा है जिसके एक तरफ तो बड़ा पहाड़ है और दूसरी तरफ भील और नदी है। गोलकुंडेके हाकिमने वहां दरवाजा और किला बनाकर उसको तोपों और बन्दूकोंसे सजा रखा था। उसकी आज्ञा बिना कोई

आदमी उधरसे नहीं निकल सकता था। वेदौलत कुतुबुल्मुल्ककी इजाजत और मददसे उसी घाटेसे उतरकर उड़ीसेके सूबेमें आगया। उस वक्त इब्राहीमखांका भतीजा अहमदबेग जो गढ़ेके जमींदारों पर गया हुआ था एकाएकी इस खबरको सुनकर आश्चर्य्यमें आ गया। वह उस मुहिमको छोड़कर उस सूबेके सदरमुकाम बलवलीमें आया और अपनी औरतोंको लेकर कटक चला गया, जो बलावलीसे १२ कोस बङ्गालेकी तरफ है। वक्त तङ्ग होनेसे फौज जमा करने और वेदौलतसे लड़नेकी फुरसत न पाकर कटकसे भी चल दिया और वर्द्दवानमें जाकर ठहरा। वहां मृत आसफखां का भतीजा सालह जागीरदार था। उसने पहले तो वेदौलतका आना सच न माना पर जब खानतुक्लहका कागज उसके पास पहुंचा तो वरदवानको मजबूत करके बैठगया। इब्राहीमखां भी इस खबरको सुनकर घबराया। क्योंकि उसकी फौजवाले और मददगार लोग मुल्कमें बिखरे हुए थे। तो भी अकबर नगरमें जमकर लड़ाईका समान और फौज जमा करने लगा। इतनेमेंही वेदौलतका निशान (१) उसको पहुंचा जिसमें लिखा था कि जो बात मेरे लायक न थी वही तकदीरसे आगे आई है और यह मुल्क मेरी नजरमें तिनकेके बराबर भी नहीं है किन्तु इधर आ निकला हूं तो योंही नहीं जासकता।

"वह जो दरगाहमें जाना चाहता हो तो उससे और उसकी इज्जत आबरू और घरबारसे कुछ रोक टोक नहीं है खुशीसे चला जावे और जो ठहरनेकी सलाह हो तो इस मुल्कके जिसकोनेमें रहना चाहे वही उसको बखश दिया जावेगा।

[यहां तक मोतमिदखांका लिखा हुआ है
आगे मुहम्मद हादी(२)ने लिखकर
किताब पूरीको है।]

(१) शाहजादेके हुक्मनामेको निशान कहते थे।

(२) मुहम्मद हादीका यह लेख शाहजहांके समयमें लिखा

धाया। इब्राहीमखाने आदमी भेजकर कोटमेंसे मदद मगवाई। वहुतसे वहादुर सिपाही उसके पास आगये दरियाखा यह सुनकर कई कोस पीछे हटगया।

वेडा इब्राहीमखाके हाथमे था जिस्से शाहजहाका लशकर नावों वगेर गगासे नही उतर सकता था। आखिर वलिया राजा नाम एक जमीदारने आकर कहा कि कुछ फौज मेरे साथ करो तो मे अपने इलाकेसे नावोमे वेठाकर पार उतार दू।

शाहजहाने अवदुल्लहखाको १५०० सवारोसे उसके साथ किया। वह उसके रास्ता वतानेसे गगाके पार होकर दरियाखासे जामिला।

जव इब्राहीमखाको यह खवर लगी तो घवराकर लडनेको गया। आप तो १००० सवारोके वीचमें रहा हिरावलमें नूरुल्लह सेयदजादेको रखा। अपने और उसके वीचमें अहमदवेगको रखा। इन दोनोके पास भी हजार हजार सवार थे। दोनो फौजोके भिडने पर वडी लडाई हुई। अवदुल्लहखाने हिरावल पर हमला करके नूरुल्लहको भगा दिया और अहमदखाको जा लिया। वह वहादुरीसे जमकर लडा और जखमोसे चूर होगया। यह हाल देख कर इब्राहीमखासे रहा न गया उसने भी अपनी सवारी वढाई। उधरसे अवदुल्लहखा वढा। इस वक्त इब्राहीमखाके साथी भाग निकले। उसके पास थोडेसे आदमी रहगये मगर वह अपनी जगह पर जमा रहा। लोगोने वाग पकड कर उसको भी रणसे निकाल लेजाना चाहा मगर उसने कहा कि यह काम हिम्मत और मरदानगीका नही है। वादशाहकी वन्दगीमें जान जानेसे अच्छी और क्या वात होगी। अभी ये शब्द पूरे भी न हुए थे कि दुशमनों ने चारो तरफसे आकर उसको घेर लिया और अवदुल्लहखाके नोकर नजरवेगने उसे कतल करके उसका सिर शाहजहाके पास भेजदिया। जो लोग मकवरेके कोटमें घिरे हुए थे वह इब्राहीमखा फतहजग का मारा जाना सुनकर घवरागये। रूमीखाने जो सुरग कोटके नीचे पहुचा दी थी वह अव आगसे उडाई गई। उससे ४० गज

दीवार गिर पडी। कोट टूटगया, उसमें जो लोग थे वह भाग भाग कर गंगामें गिरते थे और जो कोई नाव हाथ आजाती थी उसपर भीड करके डूब जाते थे। मीरक जलायर, जो उस सूबेका बड़ा आदमी था पकड़ा गया। शाहजहांके साथियोंमेंसे आबिदखां दीवान, शरीफखां बख्शी, सैयद अबदुस्सलाम बारह, और हसन बदख्शी आदि कई आदमी काम आये।

अहमदबेगखां कई एक मनसबदारोंके साथ बंगालेके सदर मुकाम ढाकेको चला गया था। जहां इब्राहीमखांका सामान और खजाना था। इसलिये शाहजहांका लश्कर उधरही रवाने हुआ। जब ढाकेमें पहुंचा तो अहमदबेगखां लाचार होकर शाह जहांकी खिदमतमें हाजिर हुआ। शाहजहांने ४० लाख रुपये इब्राहीमखांके और ५ लाख जलायर वगैराके मालमेंसे लिये। ५०० हाथी ४०० गोट घोडे जो उस विलायतमें होते हैं लूटमें आये। कपडा और दूसरा माल भी बहुत था। बेडा और तोपखाना तो बडे बादशाहोंके योग्य हाथ लगा। शाहजहांने अबदुल्लहखांको ८ लाख राजा भीमको २ लाख दाराबखां और दरियाखांको एक एक लाख, वजीरखां, शुजाअतखां, मुहम्मदतकी और बैरमबेगको पचास २ हजार रुपये बख्शे और ऐसेही थोडे बहुत दूसरे आदमियोंको भी उनके दरजेके मुवाफिक दिये।

दाराबखां बंगालेमें—शाहजहांने बङ्गालेमें कबजा करके खान खानाके बेटे दाराबखांको जो अबतक कैदमें था छोड दिया और उसको कसम देकर बङ्गालेका मुल्क सौंपा। मगर उसकी जोरूको एक बेटी और एक बेटे शाहनवाजखां सहित अपने साथ रखकर बिहार लेनेके लिये कूच किया।

रानाके बेटे राजा भीमको जो इस हरज मरजमें उसके पाससे अलग न हुआ था कुछ फौजके साथ आगे रवाना कर दिया था। आप अबदुल्लहखां और दूसरे बन्दोंके साथ उसके पीछे पीछे जाता था।

शाहजहां बिहारमें—बिहारका सूबा शाहजादे परवेजकी जागीरमें था। उसने अपने दीवान मुखलिसखांको वहांकी हुकूमत और हिफाजत पर छोड़ा था। इफ्तखारखांके बेटे अलहयार और बैरमखां पठानको फौजदारी पर रखा था। मगर यह लोग राजा भीमके पहुंचतेही हिम्मत हारगये। इनसे इतना भी न होसका कि पटनेके किलेको सजाकर बादशाही लश्करके आनेतक कुछ दिन वहां जमें रहें। यह ऐसे भागे कि इलहाबाद तक पीछे फिरकर न देखा। राजा भीमने पटनेमें अमल करलिया। कुछ दिनों पीछे शाहजहां भी वहां पहुंच गया। बङ्गालेके बहुतसे मददगार साथ थे। बिहारके अफसर तइनातियों और जागीरदारोंने भी उसके साथ चलनेका इकरार किया। इधर उधरसे पांच हजार सवार आकर नौकर होगये। रुहतासके किलेदार सैयद मुबारकने किला मजबूत और सब तरहका सामान होने पर भी सौंप दिया। उज्जेनिया और उस जिलेके दूसरे जमींदार भी आमिले।

इलाहाबादको कूच—शाहजहांने अबदुल्लहखां और राजा भीम को इलाहाबादकी तरफ बिदा किया। पीछेसे आप भी रवाने हुआ। अबदुल्लहखां जब जोसा नदी पर पहुंचा तो जौनपुरके हाकिम आजमखांका बेटा जहांगीरकुलीखां मिरजा रुस्तमके पास इलाहाबादमें चला गया। अबदुल्लहखां उसके पीछे-जाकर झूसीमें उतरा जो गङ्गाके किनारे इलाहाबादके सामने है। भीम इलाहाबादसे ५ कोस पर ठहरा। शाहजहां जौनपुर जाकर ठहरा।

इलाहाबादको घेरना—अबदुल्लहखांके साथ बहुत बड़ा बेड़ा था। वह उससे गोले मारकर गङ्गाके पार होगया और इलाहाबादके पास डेरा करके किलेके घेरनेमें मशगूल हुआ। मिरजा रुस्तमने अन्दर से लड़ाई शुरू की। दोनो तरफसे तोप और बन्दूकोंके दूत सिपाहियोंको मौतके पैगाम पहुंचाने लगे।

दक्षिणका हाल—अम्बर-हबशीका मतलब अलीशेरको महाबत

खांके पास भेजने और बहुत जोर डालनेसे यह था कि दक्षिण के सूबेका काम उसकी जिम्मेदारी पर छोड़ दिया जावे और यह शाहजादे बन्दोंकी मददसे आदिलखांके ऊपर अपना जोर जमावे। क्योंकि इन दिनोंमें उससे बिगाड़ होगया था। ऐसेही आदिलखां भी उसको दबानेके लिये उस सूबेका इखतियार अपने कब्जेमें लेना चाहता था। आखिर उसका मन्त्र चल गया और महाबतखांने अम्बरको छोड़कर आदिलखांकी उम्मेद पूरी कर दी। अम्बर बीजापुरके रास्तेमें था और आदिलखांके मुखतार मुल्ला मुहम्मदको उसका खटका था इसलिये महाबतखांने बादशाही लशकरसे कुछ फौज बालाघाटमें उसके लानेको भेजी। अम्बर इस खबरके सुनने से घबराकर निजामुलमुल्कको खिड़कीसे कन्दहारमें लेगया जो गोलकुंडेके पास है और खिड़की शहरको खाली करके सब माल असबाब और बालबच्चे दौलताबादके किलेमें भेजदिये। यह मशहूर किया कि कुतुबुलमुल्कसे अपना ठहराया हुआ रुपया लेनेके लिये गोलकुंडेकी सरहदमें जाता हूं।

जब मुल्ला मुहम्मद लारी बुरहानपुरमें पहुंचा तो महाबतखांने शाहपुर तक पेशवाई करके उसकी बहुत खातिर और तसल्ली की तदः उसको लेकर शाहजादे परवेजकी खिदमतमें रवाना हुआ। बुरहानपुरकी हुकूमत और हिफाजत पर सरबुलन्दरायको छोड़ गया। जादूराय और ऊदारामको उसकी मदद पर रखकर दोनोंके बेटे और भाईको अपने साथ लेगया।

जब मुल्ला मुहम्मद शाहजादेसे मिला तो यह बात ठहरी कि वह ५००० सवारों सहित बुरहानपुरमें रहकर सरबुलन्दरायके साथ उस सूबेका काम करे और उसका बेटा अमीनुद्दीन १००० सवारों सहित शाहजादेके साथ चले। यह कौल करार होकर शाहजादेने मुल्लाको खिलअत, जड़ाऊ तलवार हाथी और घोड़ा देकर विदा किया और मुहम्मद अमीनको भी हाथी घोड़ा खिलअत और पचास हजार रुपये देकर अपने साथ लिया। महाबतखांने भी

अपनी तरफसे ११० घोड़े २ हाथी ७० हजार रुपये नकद और ११० थान कपड़ोंके मुल्लामुहम्मद, उसके बेटे और जमाईको दिये।

बादशाह काश्मीरमें—१८ खुरदाद (आषाढ़ बदी ८) को बादशाह काश्मीरमें पहुंचा। यहां अर्ज हुई कि नजरमुहम्मदखांका सिपहसालार यलंगतोश उजबक काबुल और गजनीन पर आनेका इरादा कर रहा है। महाबतखांके बेटे खानाजादखांने उसके रोकनेके लिये शहरसे बाहर निकलकर डेरा किया है। बादशाहने सच्ची खबर लानेके लिये गाजीखांको डाकचौकीमें भेजा।

अबदुलअजीजखांने मदद न पहुंचनेसे कन्दहारका किला शाह अब्बासको सौंप दिया था और यह बात बादशाहको बहुत बुरी लगी थी। इसलिये अब उसको सीदू मनसबदारके हवाले करके हुक्म दिया कि सूरत बन्दरसे जहाजमें बिठाकर उसे मक्के भेजदे। फिर दूसरा हुक्म मार डालनेका भेजा। वह बेचारा रास्तेहीमें मारा गया।

तीर महीना।

७ (आषाढ़ सुदी १२।१३) को बादशाहकी बहन आरामबानू बेगम दस्तोंकी बीमारीसे मरगई। अकबर बादशाह इसका बहुत लाड और प्यार करते थे। यह ४० वर्षकी होकर दुनियामें जैसी आई थी वैसीही गई।

उजबक काबुलकी सरहदमें—गाजीबेगकी अर्जीसे मालूम हुआ कि यलंगतोश हजारा लोगोंके बन्दोबस्तको आया था जो गजनीके इलाकेमें रहते हैं और कदीमसे गजनीनके जागीरदारको हासिल देते है। पर यलंगतोशने गाव खारमें किला बनाकर अपने भतीजेको कुछ फौज सहित रख दिया जिसमें हजारोंके सरदारोंने खानाजाद खांके पास आकर पुकार की कि हम कदीमसे काबुलके हाकिम की प्रजा और मालगुजार हैं। यलंगतोश हमें जबरदस्ती अपना ताबेदार किया चाहता है। आप हमें उससे बचालें तो हम आपके ताबेदार हैं। नहीं तो उससे मेल करके उजबकोंके जुल्मसे अपना बचाव करेंगे।

खानेजादाखाने हजारावालोंकी मदद पर फौज भेजी। पल्गतोशका भानजा लडा। बहुत उजबक मारे गये। फौज उसके किलेको गिराकर लौट आई। तब पलगतोशने खिसियाकर तूरान के बादशाह इमामकुलीखांके भाई नजरमुहम्मदखांसे काबुलको सरहदमें लूट मार करनेकी इजाजत मांगी। पहले तो वह और उसके फौजी अफसर मंजूर नहीं करते थे मगर फिर उसने बहुत कह सुन कर आज्ञा लेली और १० हजार सवार उजबक और अल्मानची से चढ़ाई की। खानाजादखाने थानेके आदमियोंको बुलाकर लड़ने को कूच किया और गजनीनसे १० कोस पर गांव शेरगढ़में जाकर छावनी डाली। वहांसे फौज कमर बांधकर आगे हुई। बीचकी फौजमें खानजादाखां अपने बापके मनसबदारों सहित था और हिरावलमें मुबारजखां पठान, अनीराय सिंहदलन और सैयद हाजी वगैरह थे। ऐसेही दहने और बायें हाथकी फौजें बहादुर सरदारों से सजाई गई थी। दूसरे दिन लड़ाई होनेकी उम्मेद थी। उजबकों का डेरा गजनीनसे ३ कोस उधर सुना जाता था। पर शेरगढ़से ३ कोस आगे बढ़नेही उजबकोंके किरावल दिखाई दिये। इधरके किरावल भी उनके सामने गये। फौज तोपखाने और हाथियोंको लिये धीरे धीरे रान मारती हुई जाती थी। पलगतोश एक टीले के पीछे इस इरादेसे दबा खड़ा था कि फौज जो रास्तेसे थकीमांदी चली आती है जब पास आवे तो घातसे निकलकर हमला करें। मगर मुबारजखाने जो हिरावलके लशकरका सरदार था दुश्मनों को देखकर कुछ लोग किरावलोंकी मदद पर भेजे। तब तो उधरके किरावलोंने भी पलगतोशके पास आदमी भेजकर मदद मांगी। उसने अपनी फौजोंमेंसे एक फौज हिरावल पर भेजी और आप दूसरी फौज सहित एक गोलीके टप्पे पर आकर खड़ा होगया। उसकी फौज हिरावलसे ज्यादा थी इस लिये बीचका लशकर फौरन हिरावलकी मददको बढ़ा। पहले बहुतसे बाण, बन्दूक जंबूरकें और तोपोंके गोले मारे गये फिर जंगीहाथी दौड़ाये गये। लड़ाई बडी

सख्तीसे होने लगी। पलंगतोश अपनी फौजकी मददको आया मगर कुछ कर न सका पीछे हटा। उजबकोंके भी पांव उखड़ गये। बादशाही बन्दे उनको मारते गिराते 'हमाद' के किले तक भगा लेगये जो लड़ाईके मैदानसे ६ कोस पर था।

जब इस बड़ी फतहकी खबर बादशाहको पहुंची तो जैसी जिसकी खिदमत थी वैसे सबके मनसब बढ़ाये। पलंगतोश भी उजबक था पलंगके मानी नंगा और तोश मानी छातीके हैं। वह एक लड़ाईमें नङ्गीछातीसे लड़ा था उस दिनसे उसका नाम पलंग-तोश पड़ गया। यह कन्दहार और गजनीनके बीच रहता था और दो एक दफे खुरासानमें लूट मार कर चुका था जिससे शाह अब्बास को भी उसका खटका रहता था।

दक्षिणका हाल—दक्षिणके वकायेनवीस फाजिलखांकी अर्जीसे बादशाहको मालूम हुआ कि जब मुल्ला मुहम्मद लारी बुरहानपुरमें पहुंच गया और उस सूबेके बन्दोबस्तसे बेफिकरी हुई तो शाहजादे परवेजने महाबतखां और दूसरे अमीरोंके साथ बङ्गालेको कूच किया। खानखानांके छल कपटका खटका रहता था और उसका बेटा दाराब भी शाहजहांके पास था इसलिये दौलतख्वाहोंकी सलाह से उसको नजरबन्द करके यह तजवीज की कि उसके वास्ते दौलत-खांनेके पास डेरा लगाया जाय और उसकी बेटी जानाबेगम जो शाहजादे दानियालकी बेवा और अपने बापकी लायक शागिर्द है बापके पास रहे। कुछ आदमी उसके डेरे पर माल असबावकी जबतीके लिये भेजे गये। वह उसके बहादुर और कारगुजार गुलाम फहीमको जो उसके उमदा सरदारोंसे था पकड़ने लगे। उसने अपनेको दूसरेके हाथमें योंही मुफ्त पड़ने न दिया और बहादुरीसे पांव जमाकर जानको आबरू पर कुरबान कर बैठा।

शाहजहांका दीवान अफजलखां बीजापुरसे बादशाहके पास आगया बादशाहने उसके ऊपर बहुत मेहरबानी की।

शाहजादोंकी लड़ाई—इतनेमें शाहजादोंके आपसमें लड़नेकी

खबर पहुंची जिसका बयान यह है। जब सुलतान परवेज और महाबतखां इलाहाबादके पास पहुंचे तो अबदुल्लहखां किलेका घेरा छोड़कर भूसीको लौट गया। दरियाखांने नावोंको अपनी तरफ खेंचकर दरियाका किनारा मजबूत कर रखा था। इससे बादशाही लशकरको पार उतरनेमें कई दिनकी ढील होगई। शाहजादे पर वेज और महाबतखांने इस किनारे पर छावनी डालदी। दरिया खां उधर मजबूती करता रहा। आखिर बेसवे जमींदारोंने जो उस जिलेमें मोतबिर थे इधर उधरसे ३० नावें जमा करके कई कोस ऊपरकी पानीमें रास्ता निकाला। दरियाखां तो उधर उनके रोकनेको गया और इधरसे बादशाही लशकर पार उतर गया। तब तो दरियाखां भी वहां ठहरना ठीक न समझकर जौनपुरको चल दिया। अबदुल्लहखां और राजा भीमने भी जौनपुरका रास्ता लेकर शाहजहांसे बनारसमें आनेकी अर्ज कराई। शाहजहां बेगमों को रुहतासके किलेमें भेजकर बनारसको रवाने हुआ। अबदुल्लह खां, राजा भीम और दरियाखां रास्तेमें आमिले। शाहजहां बनारस में गंगासे उतरकर तोनस नदीपर ठहरा। उधरसे शाहजादा परवेज और महाबतखां दमदमेमें पहुंचे और आका मुहम्मदजमान तुहरानी और कुछ फौजको वहां छोड़कर गंगासे उतरे। तोनससे भी उत तरनाही चाहते थे कि बैरमबेग जिसका खिताब खानदौरा था शाह जहांके कहनेसे गंगा पार होकर मुहम्मदजमानके ऊपर गया। उस वक्त तो मुहम्मदजमान झूसीमें चला गया मगर जब चार दिन पीछे खानदौरा बड़े घमण्डसे वहां भी जा पहुंचा तो मुहम्मदजमानने उसके सामने जाकर बड़ी बहादुरीसे लड़ाई की। खानदौराकी फौज भाग गई तो भी वह अपनी जगहसे न हटा। अकेला हर तरफ दौड़ दौड़कर लड़ता रहा आखिर मारा गया। उसका सिर शाहजादे परवेजके पास पहुंचा तो वह भालेसे पिरोया गया। रुस्तमखांने जो पहले शाहजहांका नौकर था और फिर परवेजके पास भाग आया था कहा कि खूब हुआ जो हरामखोर मारागया।

आजमखांका बेटा जहांगीरकुलीखां भी वहां हाजिर था। उसने कहा कि इसको हरामखोर और बागी नहीं कह सकते। इससे बढ़कर कोई आदमी नमकहलाल नहीं होगा जिसने अपने मालिकके वास्ते जान दी है और इससे ज्यादा वह क्या कर सकता था ? देखो अब भी उसका सिर सबके सिरोंसे ऊंचा है। शाहजादा परवेज, खानदौरा के मारे जानेसे बड़ा खुश और आका मुहम्मदजमान पर बहुत मेहरबान हुआ। उधर शाहजहांने अपने सरदारोंसे सलाह पूछी। अकसर सरदारोंने और खासकर राजा भीमने तो मैदानकी लड़ाई लड़नेकी सलाह दी मगर अबदुल्लहखां बिलकुल इस बातपर राजी न हुआ। वह कहता था कि बादशाही लश्करमें ४० हजार सवार हैं और अपने पास नये पुराने मिलाकर सात हजार भी नहीं हैं। इसलिये यह मुनासिब है कि जहांगीरी लशकरको यहीं छोड़कर अवध और लखनऊके रास्तेसे दिल्लीको चलें और जब यह भारी लशकर भी उधर मुड़कर पास आपहुंचे तो दक्षिणको कूच करदें। तब यह आपही इतना बोझ भार लादे फिरनेसे थककर सुलह कर लेगा। सुलह न होगी तो जैसा मुनासिब हो वैसा कर लिया जायगा। पर शाहजहांने गैरत और बहादुरीसे इस बातको कबूल न करके लड़नेकी ठानली। सवार होकर अपने लश्कर का इस तौर पर परा बांधा—बीचमें तो आप खड़ा हुआ, दहनी अनीमें अबदुल्लहखांको, बाईं में नुसरतखांको, हिरावलमें राजा भीम को रक्खा। राजाके दहने हाथ पर दरियाखांको पठानों समेत, बांये हाथ पहाड़सिंह वगैरह बरसिंहदेवके बेटोंको और अलतमश (अगली अनी) में शेरखांजाको जगह दी। तोपखानेकी मीरआतिश (अफसर) रूमीको आगे रवाने किया।

उधरसे शाहजादा परवेज और महाबतखां भी परे बांधकर लड़नेको आये। बादशाही लशकर इतना अधिक था कि उसने शाहजहांकी फौजको तीन तरफसे घेर लिया। रूमीखांने तोपखाना बढ़ाकर गोले मारे मगर एक गोला भी किसीके न लगा।

तोपें गर्म होकर बेकार होगई। शाहजहांका हिरावल तोपखाने से बहुत दूर रह गया था इसलिये बादशाही हिरावल बेफिकरीसे तोपखाने पर जापड़ा। तोपखानेवाले उसके सामने न ठहर सके। भाग निकले। तोपखाना बादशाही नौकरोंके हाथ आगया यह हाल देखकर दरियाखां जो हिरावलके दहने हाथ पर था बिना लड़ेही भाग गया। उसके मुंह मोड़तेही हिरावलके बायें हाथकी फौज भी भाग खड़ी हुई। मगर राजा भीमने बादशाही फौजके बहुत होनेकी कुछ परवा न करके अपने थोड़ेसे पुराने राजपूतोंके साथ घोड़ा उठाया और बादशाही फौजके बीचमें पहुंचकर तलवार बजाई। जटाजूट हाथी जो आगे था तीरों और गोलियोंके जखमोंमें चूर होकर गिर पड़ा मगर उस शेरमर्दने अपने राजपूतो समेत लड़ाईके मैदानमें पांव जमाकर ऐसी बहादुरी दिखाई कि जब चुने हुए सिपाहियों और लड़ाइया जीते हुए जवानोंने जो सुलतान परवेज और महावतखांके आसपास खड़े हुए थे हर तरफसे दौड़कर उस बहादुरको तलवारोंसे मार गिराया तोभी जब तक उसके दममें दम रहा लड़ा किया। अन्तको अपनी जान अपने मालिक पर कुरबान की। भीम राठौड़ पृथ्वीराज राठौड़ और अचलराज राठौड़ आदि कई रणबांके राजपूती सहित जखमों से चूर होकर गिरे।

राजा भीमके काम आने और हिरावलके उजड़ जानेसे मुल्ला अलतखां भी जो अलतमाशमें था भाग गया। मगर शेरख़्वाजा अपनी जगह न छोड़कर कतल हुआ। जब हिरावल और अलतमशकी फौजें आगेसे उठ गई तो लड़ाई कोल (बीचकी फौज) में आकर पड़ी। तब नुसरतखां जो बाई अनीका धनी था हिम्मत हारकर अलग होगया। शाहजहांके पास ५०० सिपाही रह गये और वह दुश्मन दहनी अनीमें, तो भी शाहजहां जगमें जमकर डटी होगा। लड़ता रहा। इन इनमेंसे भी बहुतसे कतल और जखमी हो गये तो अफजलखां और खासा हथियारखानेके हाथियों या अबदुल्लाखां

के सिवा जो कुछ फासिले पर दहने हाथकी तरफ खड़ा था और कोई नजर नहीं आता था। ऐसे वक्तमें एक तीर शाहजहांके वक्तर पर लगा। पर खुदाने उसे एक हिकमतके लिये बचा लिया। फिर एक तीर शेख ताजुद्दीनके मुंह पर लगकर कानकी लौमेंसे निकल गया। शाहजहांने यूसुफखांको अबदुल्लहखांके पास भेजकर कहलाया कि अब काम नाजुक होगया है हम इन्हीं थोड़ेसे आदमियोंसे जो साथ रह गये हैं खुदाकी मेहरबानीका भरोसा करके बादशाही लशकरके कलब (बीचकी फौज) पर हमला करना चाहिये। अबदुल्लहखांने पास आकर कहा कि अब वक्त नहीं रहा। हमला करनेमें कुछ फायदा नहीं है अमीर तैमूर और हजरत बाबर जैसे बादशाहों पर भी ऐसीही वक्त आपड़े हैं। वह मैदान छोड़कर अपना बचाव कर गये तो फिर उनकी फतह भी हुई। आखिर वह लोग जो सवारीमें हाजिर थे घोड़ेकी बाग पकड़कर शाहजहांको वहांसे निकाल लेगये। बादशाही लशकरने आकर उनका लशकर तो लूट लिया पर पीछा न किया।

हारकर लौटना—शाहजहां ४ कूचसे रुहतासके किले पर पहुंचा। तीन दिन रहकर वहांका बन्दोबस्त करता रहा। फिर सुलतान मुरादबख्शको जो उन्हीं दिनों पैदा हुआ था दाइयों खिलाइयोंके साथ वहां छोड़कर दूसरे शाहजादों और बेगमों सहित पटनेको कूच कर गया।

महाबतखां खानखानां—बादशाहने यह खबर सुनकर महाबत खांको खानखानां सिपहसालारका खिताब सातहजारी सातहजार दुअस्पे तिअस्पेका मनसब देकर तुमन और तौग बख्शा।

दक्षिणका हाल—मलिक अम्बरने कुतुबुल्मुल्कको सरहदमें पहुंचकर, अपना दो वर्षका चढ़ा हुआ रुपया उससे लिया और वहांसे विलायत बिदर (विदर्भ देश) में आकर जब आदिलखांके नौकरोंको गाफिल देखा तो उस मुल्कको लूटकर आदिलखां पर चढ़ाई की। आदिलखांके अच्छे अच्छे सिपाही और सरदार मुल्ला

मुहम्मदके साथ गयेहुए थे और अम्बरसे लड़नेके लायक फौज उसके पास न थी इसलिये उसने बुरहानपुरसे आदमी भेजे और बादशाही अमीरोंको लिखा कि मेरी खैरख्वाही सबको मालूम है और मैं अपनेको उस दरगाहके तावेदारोंमेंसे समझता हूं। इस वक्त अम्बर ने मुझसे गुस्ताखी की है मैं चाहता हूं कि सब बादशाही खैरख्वाह जो सूबेमें मौजूद हैं मेरी मददको आवें। जिससे उस गुलामको हटाकर पूरी पूरी सज़ा दी जावे।

महाबतखां जब शाहज़ादेके साथ इलाहाबादको जाता था तो सरबुलन्दरायको बुरहानपुरकी हुकूमत पर छोड़कर कह गया था कि तमाम छोटे बड़े काम मुल्ला मुहम्मद लारीकी सलाहसे करे और दक्षिणके इन्तज़ाममें उसके कहनेसे बाहर न हो। इसलिये सुल्लाने बहुत ज़ोर दिया और तीन लाख हुन जिसके १२ लाख रुपये होते थे लश्करके मददखर्च वास्ते उस सूबेके मुसद्दियोंको दिये, उधर आदिलखाने महाबतखांको अपनी मददके वास्ते लिखा तो महाबतखाने भी इस बातको तजवीज करके दक्षिणके मुसद्दियों को लिख भेजा कि मीरन मुल्ला मुहम्मद लारीके साथ आदिलखांकी मददको चले जावें। तब सरबुलन्दराय लाचार होकर आप तो थोड़े आदमियोंसे बुरहानपुरमें रहा और लश्करखां, मिरज़ा मनूचहर, खञ्जरखां हाकिम अहमदनगर, जांसुपारखां हाकिम बीदर, रज़वीखां, तुर्कमानखां, अकीदतखांखवाफी असदखां, अज़ीज़ुल्लहखां जादूराय, उदाजीराम वगैरह तमाम अमीरों और मनसबदारोंको जो सब दक्षिणमें तैनात थे मुल्ला मुहम्मद लारीके साथ आदिलखां को मदद पर अम्बरकी जड़ उखाड़नेके लिये भेज दिया। जब अम्बरने यह खबर पाई तो उसने बादशाही बन्दोंको लिखा कि मैं दरगाहके गुलामों और आपके कुत्तोंमेंसे हूं। मुझसे कोई बेअदबी भी नहीं हुई है। फिर क्यों आप मुझे खराब करनेको आदिलखां और मुल्ला मुहम्मदके कहनेसे आते हैं? मुझसे और आदिलखांसे तो एक मुल्कके वास्ते जो पहले निज़ामुलमुल्कका था और अब उसने

दबा लिया है झगडा हे। वह बादशाही बन्दोमेंसे है तो मैं गुला-मोमेंसे हूं। उसे मेरे लिये और मुझे उसके वास्ते छोड़ दे। फिर जो खुदाको मंजूर हे हो रहेगा। मगर किसीने उसकी बात न मानी और उस तरफ कूच होता रहा। अंबर जितनी विनय करता था उतनेही यह लोग सख्त होते जाते थे। लाचार वह बीजापुर के पाससे उठकर अपने मुल्कमें चला आया। तोभी इन्होंने उसका पीछा न छोड़ा। वह तो बहुत नर्मी करता था और लड़ाईको टालता था मगर मुल्ला और बादशाही उमरा उसको दबाये चले जाते थे। जब बहुत तंग आगया तो एक दिन बादशाही आदमियोंको गाफिल देखकर बीजापुरवालों पर जापडा उससे और मुल्लासे सख्त लड़ाई हुई। मुल्ला मारागया आदिलखांके लशकरकी हार हुई। उसके २५ अफसर इखलासखां वगैरह पकड़े गये जो आदिलखांकी रियासतके रुकन थे। अम्बरने उनमेंसे फर-हादखांको मार डाला जिसके खूनका वह प्यासा था और बाकी को कैद रखा।

जादूराय और ऊदाजीरामने कुछ काम न किया भागकर चले गये। बादशाही अमीरोंमेंसे लशकरखां मिरजा मनूचहर और अकीदतखां गिरफतार हुए। खञ्जरखां अहमदनगरमें और जांनु-पारखां बीयरमें चले आये दोनोंने अपने अपने किलोंको मजबूत किया। दूसरे लोग जो घातसे बचे उनमेंसे कुछ तो अहमदनगरके किलेमें गये और कुछ बुरहानपुर पहुंचे। अंबरको बड़ी फतह हुई जिसकी उसे उम्मेद भी न थी। उसने कैदियोंको दौलताबाद के किलेमें भेजकर अहमदनगरके किलेको आघेरा और उसके फतह करनेकी बहुत कोशिश की मगर कुछ न हुआ। तब थोडी सी फौज वहां छोड़कर बीजापुर पर कूच किया। आदिलखां फिर किला पकड़कर बैठ गया अंबरने उसका तमाम मुल्क बादशाही सरहद (बालाघाट) तक दबा लिया। बहुतसी फौज जमा करके शोलापुरके किलेको जाघेरा। इसपर निजामुल्मुल्क और

आदिलखांके बीचमें झगडा रहा करता था। याकूतखांको कुछ फौजसे बुरहानपुर भेजा और मलिकअंबरने तोपको दौलताबादसे लाकर शोलापुर फतह कर लिया।

काबुल—इन खबरोंको सुननेसे बादशाहको बडी घबराहट हुई। इसी बीचमें बलखसे नजरमुहम्मदखांका खत आया जिसमें लिखा था कि यलंगतोशने बगैर मेरी इजाजतके जो गुस्ताखी की थी उसकी सजा उसने खूब पा ली। अब मेरी यह अर्ज है कि खानाजादखांको काबुलसे बदलकर किसी दूसरेको उसकी जगह भिजवादें।

बादशाहने मंजूर करके वह सूबा ख्वाजा अबुलहसनको दिया और उसको पांचहजार सवारको तनखाह दोअस्पा और तिअस्पाके जाबतेसे बटाकर उसके बेटे अहसनउल्लहको बापकी नायबीमें काबुल भेजा। उसको भी डेढ हजारी ८०० सवारका मनसब जफरखां का खिताब खिलअत तलवार जडाऊ खंजर और हाथी मिला।

कशमीरसे लौटना—जब जाडेके आनेसे कशमीरकी खूबियां खतम होगईं तो बादशाह २५ सप्तंबर (आश्विन सुदी ४) को वहांसे कूच करके लाहोरमें आया। पञ्जाबका सूबा सादिकखांसे लेकर आसफखांको दिया। खानाजादखांने काबुलसे आकर जमीन चूमी।

महाबतखांकी अर्जी पहुंची जिसमें लिखा था कि शाहजहां पटनेसे और बिहारसे चलकर बङ्गालेको आगया और शाह परवेज [illegible]में जापहुंचा।

शाहजहां दक्षिणको—शाहजहांने दाराबखांको बङ्गालेकी हुकूमत देकर उसकी औरत एक लडके और एक भतीजेको अपने साथ लेलिया था। तोनसकी लडाईके पीछे उसको रुहतासके किलेमें रखकर दाराबखांको लिखा कि गढीमें हाजिर हो। उसने आनेका रस्ता न देखकर अर्जी भेजी कि जमींदारोंने एका करके मुझे घेर रखा है इसलिये खिदमतमें हाजिर नहीं होसकता। शाहजहांको जब दाराबकी तरफसे निराशा हुई और साथ कोई कामका आदमी न था इसलिये गुस्सेसे दाराबके बेटेको अबदुल्लहखांको सौंपा और बाकी सबको साथ लेकर जिस रास्तेसे आया था उसी रास्ते दक्षिणको कूच किया।

इक्कीसवां वर्ष।

सन् १०३४ हिजरी।

कार्तिक सुदी २ संवत् १६८१ ता० ४ अक्तूबर सन् १६२४ से आश्विन सुदी २ संवत् १६८२ ता० २३ सितम्बर सन् १६२५ तक।

अबदुल्लहने दाराबके कासूरसे उसके जवान बेटेको मारडाला। शाहजादा परवेज बङ्गालेको महावतखां और उसके बेटेको जागीरमें देकर लौट आया। बङ्गालेके जमींदारोंके नाम जो दाराब को घेरे हुए थे हुक्म पहुंचा कि उसको यहां भेजदें वह आकर महाबतखांसे मिला।

दाराबका मारा जाना—जब बादशाहको दाराबके आनेकी खबर पहुंची तो महाबतखांको लिखा कि उस नालायकको जिन्दा रखनेमें क्या मसलिहत है चाहिये कि फरमानके पहुंचतेही उसका सिर दरगाहमें भेजदें। महाबतखांने ऐसाही किया।

खानाजादखां बङ्गालेमें—बादशाहने खानाजादखांको खास्म खिलअत जड़ाऊ खञ्जर फूलकटारे समेत और खासा घोड़ा देकर बङ्गालेकी सूबेदारी पर भेजा। अबदुर्रहीमके बुलानेके लिये लिखा जिसका खिताब पहले खानखानां था।

परवेजको दक्षिण जानेका हुक्म—दक्षिणके फसादमें बादशाही लशकरके सरदारोंके कैद होजाने और शाहजहांके उधर रवाने होने से बादशाहने मुखलिसखांको हुक्म दिया कि जल्दीसे जाकर शाह-जादा परवेजको अमीरों सहित दक्षिण की तरफ रवाने करे।

आगरेकी सूबेदारी—बादशाहने मुकर्रिबखांकी जगह कासिम खांको आगरेकी सूबेदारी पर मुकर्रर किया।

दक्षिणकी हकीकत—दक्षिणके बख्शी असदखांकी अर्जी पहुंची लिखा था कि याकूतखां हबशी १००० सवारों सहित मलिकापुरमें

जा बुरहानपुरसे २० कोस है पहुंच गया है। सरबुलन्दराय शहर से बाहर निकल आया है और उससे लड़नेके इरादेमें है। बाद शाहने उसको ताकीदी हुक्म लिखा कि मददके पहुंचने तक हर गिज जल्दी न करे और बुरजोंको मजबूत करके शहरमेंही बैठा रहे।

काश्मीरको कूच—असफन्दार सन १०३३ (चेत बदी) को बादशाहने मामूलके मुवाफिक काश्मीरको कूच किया।

शाहजहां दक्षिणमें—शाहजहांके दक्षिणमें पहुंचने पर अम्बरने उसकी तावेदारी शुरू की। जो फौज याकूतखांकी सरदारीमें बुरहानपुर भेजी थी वह उसीकी खैरखाहीसे थी और शाहजहांको लिखा था कि आप जल्दी इधर पधारें। शाहजहां वहां जाकर देवलगांवमें ठहरा। अबदुल्लहखां और मुहम्मद तकीको फौज दे कर कहा कि याकूतसे मिलकर बुरहानपुरको घेरें। उनके पीछे आप भी आकर लालबागमें उतरा जो शहरके बाहर है। रावरतन और दूसरे सरदारोंने जो किलेमें थे शहर और किलेको मजबूत करके मुकाबिला शुरू किया। शाहजहांने फरमाया कि एक तरफ से अबदुल्लहखां और दूसरी तरफसे शाहकुलीखां कोट पर चढ़े। अबदुल्लहखांकी तरफ तो गनीम(१) बहुत थे वहां सख्त लड़ाई हुई और शाहकुलीखां, फिदाईखां और जानिसारके साथ कोटकी दीवार तोड़कर अन्दर घुस गया। सरबुलन्दराय अपने कामके आदमियोंको अबदुल्लहखांके मुकाबिले पर छोड़कर शाहकुलीखांके ऊपर आया। शाहकुलीखां किलेके सामने उससे लड़ा और जब कई उसके साथके बादशाही(२) बन्दे मारे गये तो उसने किलेके अन्दर जाकर दरवाजा बन्द कर लिया। जब सरबुलन्दरायने किले

(१) गनीम यहां बादशाही आदमियोंको लिखा है।

(२) बादशाही बन्दोंसे शाहजहांके नौकरोंसे मुराद है क्योंकि इस किताबका यह हिस्सा शाहजहांके बादशाह होनेके पीछे लिखा गया है।

को घेरकर जीर दिया तो शाहकुलीखां कौल कसम लेकर उससे मिला। शाहजहांने इस हालको सुनतेही फिर अपनी फौज जमा करके हमला करनेका हुक्म दिया। इस हमलेमें मुबारकखां और जांसुपारखां वगैरह बहादुरोंने बहुतही जान मारी मगर कुछ काम न निकला। बल्कि शाहवेग, बरकन्दाजखां, और सैयद शाहमुहम्मद जो शाहजहांके जाने पहचाने हुए सरदारोंमेंसे थे मारे गये।

शाहजहांने तीसरी दफे खुद सवारी करके हल्ला कराया। उसके बहादुर साथियोंने हर तरफसे आगे बढबढकर बहादुरी की। किले वालोंमेंसे बूढनखां भाइयों समेत, बाबा मीरक, लशकरखांका जमांई और बहुतसे राजपूत रावरतनके मारे गये और बाकी लोग भी घबरा उठे थे कि इतनेमें एक गोली सैयद जाफरके गलेसे छिलती हुई निकल गई। जाफर घबराकर भागा। उसको देखकर दक्खिणी सब भाग गये और शाहजहांकी फौजके बहुतसे नामर्दों को भी अपने साथ लेगये। फिर इसी हालतमें यह भी खबर लगी कि शाहजादा परवेज और खानखानां महाबतखां बंगालेसे लौटकर नर्मदा नदी तक पहुंच गये हैं। तब शाहजहां भी लाचार होकर बालाघाटको लौट गया और अबदुल्लहखां उस को छोडकर इन्दौर(१) में जा बैठा। इसी तरह नुसरतखां भी अलग होकर निजामुल्मुल्कके पास गया और उसका नौकर हो गया।

खानआजमका मरना—इन्हीं दिनोंमें खानआजम मिरजाअजीज कोकलताश मर गया। उसका बाप गजनीनके भलेआदमियोंमेंसे था और उसकी माने अकबर बादशाहको दूध पिलाया था। इससे उन्होंने मिरजाअजीजका दरजा सब अमीरोंसे बढा दिया था उससे और उसके बेटोंसे उनको तकलीफें भी अजब अजब तरहकी उठानी पड़ती थीं। मिरजाको तवारीखका खूब इल्म था। लिखने और

(१) यह इन्दौर मालवेका इन्दौर नहीं है दक्खिणका इन्दौर है जो अब हैदराबादके नीचे है।

बोलनेवाला भी बडा था। खुश खत भी ऐसा था कि अच्छे अच्छे लिखनेवाले उस्तादोंसे उसका खत कुछ कम न था। मगर अरबी न जानता था। हाजिरजवाबीमें अपना जवाब न रखता था और शेर भी खूब कहता था। वह अहमदाबाद गुजरातमें मरा उसकी लाश दिल्लीमें निज़ामुद्दीन औलियाके रोजेमें बापकी कबरके पास दफन की गई।

गुजरातकी सूबेदारी—बादशाहने खानआज़मके मरनेसे शाह-जादे दावरबख़्शको हुजूरमें बुलाकर खानजहांको गुजरातकी सूबे दारी पर भेजा।

बीसवां नौरोज़।

१० जमादिउस्सानी गुरुवार सन् १०३४ (प्रथम चैत्र सुदी १२) को सूर्य मेष राशिमें आया और बादशाहके जुलूसका बीसवां वर्ष लगा। बादशाहने भंवरके पहाड़में शिकार करके १५१ पहाड़ी मेंढे तीर और बन्दूकसे मारे। जगरथीमें मेष सक्रान्तिका उत्सव हुआ। भंवरसे यन्तक गुव फूल फूलेहुए थे। पीरपञ्जालकी पहाड़ी बर्फसे ढकी हुई थी इसलिये बादशाह पूणिचके रास्तेसे गया। इन पहाड़ोंमें नारंगी बहुत होती है एक एक दरख्तमें हजार हजार नारंगियां लग जाती हैं।

आमफख़ाका बेटा अबूतालिब लाहौरकी हुकूमत पर बापकी नायबीमें और सरदारखांका बेटा आशिक उत्तर पञ्जाबके पहाड़में अपने बापकी जगह भेजा गया।

२८ फरवरदीन गुरुवार(१) (द्वि० चैत्र सुदी १० सवत् १६८२) को बादशाह भट नदी पर नूराबादमें पहुंचा। जैसे भटके घाटसे पीरपञ्जाल तक रास्तेमें मंजिल दरमंजिल मकान और महल बने थे वैसेही काश्मीर तक भी थे। कभी कुछ जरूरत डेरे खीमें या और किसी तरहके सामान फर्राशखानेकी न पडती थी। मार्गमें जाडे पाले और मेहसे विकट घाटियोंके उतरनेमें बहुत तकलीफ

(१) तुजुकजहांगीरीमें शुक्रवार भूलसे लिखा है।

हुई। रास्तेमें एक सुन्दर भरना मिला जो कश्मीरके अकसर भरनोंसे अच्छा था। ५० गज ऊंचा और ४ गज चौड़ा था। उस पर इमारतके मुसद्दियोंने एक बड़ा चबूतरा बनवाया था। बादशाहने कुछ देर उसके ऊपर बैठकर कई प्याले पिये और हुक्मदिया कि यहां हमारे आनेकी तारीख यादगारीके लिये पत्थरकी तखती पर खोद दें।

इसी जगह लाला, सोसन, अर्गवा और नीलीचमेलीके फूल काश्मीरसे आये।

काश्मीर पहुंचना—१ उर्दी बहिश्त (द्वि० चैत्र सुदी १३) को सवारी बारामूलामें पहुंची जो कश्मीरके बड़े कसबोंमेंसे है। यहां श्रीनगरके काजी, मौलवी, सूबा, सौदागर और सब जातिके लोग पेशवाईमें आये थे। इन दिनों मंजिलोंमें फूलोंकी खूब सैर थी। बादशाह और सब अमीर नावोंमें बैठकर कश्मीरको रवाने हुए। १८ मंगलवार (वैसाख सुदी १) को कश्मीरके दौलतखानेमें उतरे जहां नीली चमेली खूब महक रही थी। शहरके बाहर तरह तरह के फूल खिल रहे थे।

केसरका गुण—यह बात मशहूर थी, तिबकी किताबों और खास करके 'जखीरे खुारज्मशाही(१)' में भी लिखी थी कि केसर के खानेसे हंसी आती है और जो ज्यादा खाई जाय तो इतना हंसे कि मर जानेका खटका होजावे। बादशाहने परीक्षाके वास्ते मारने के लायक एक कैदीको जेलखानेसे बुलवाकर पाव भर केसर अपने सामने खिलाई पर कुछ न हुआ। दूसरे दिन दूनी खिलाई पर वह तो मुस्कराया भी नहीं हंसना तो कहां और मरना किसका।

कांगड़ेमें अनीराय—कांगड़ेकी हिफाजत अनीराय सिंहदलन को सौंपी गई।

दावरबख्श गुजरातसे आया।

---

(१) यह एक बहुत बड़ाग्रन्थ हकीमीका फारसीमें है।

बाईसवां वर्ष।

सन् १०३५ हिजरी।

आश्विन सुदी ३ संवत् १६८२ तारीख २४ सितम्बर सन् १६२५ से आश्विन सुदी २ संवत् १६८३ तारीख १२ सितम्बर सन् १६२६ तक।

सरदारखां ५० वर्षका होकर ११ मुहर्रम सन् १०३५ (आश्विन सुदी १३।१४) को दस्तोंकी बीमारीसे मर गया। बादशाहने यह सुनकर उत्तर पञ्जाबके पहाड़ोंकी फौजदारी अलिफखांको दी जो उसके मददगारोंमेंसे था।

इन्हीं दिनोंमें ठट्ठेका हाकिम मुस्तफाखां भी मरगया। बादशाह ने वह सूबा शहरयारको इनायत किया।

दक्षिणका हाल—दक्षिणके वखशी असदखांकी अर्जी पहुंची कि शाहजहां टेलनगांवमें पहुंच गया और याकूतखां हबशी अम्बरके लश्करसे बुरहानपुरको घेरे हुए है। सरबुलन्दराय किलेमें जमा हुआ बराबर लड़ रहा है पर यह कुछ कर नहीं सकते।

रायराज सरबुलन्दराय—फिर खबर पहुंची कि कुछ दिनों पीछे अम्बरके आदमी भी उठ गये हैं। बादशाहने खुश होकर पांचहजारी ५००० सवारका मनसब और रायराजका खिताब जिससे बढ़ कर दक्षिणमें कोई खिताब नहीं होता, सरबुलन्दरायको दिया।

शाहजहांका माफी मांगना—जब शाहजहां बुरहानपुरका घेरा छोड़कर दक्षिणको लौटा तो रास्तेमें बहुत कमजोर होगया था और उसी कमजोरीमें उसके जीमें यह बात आई कि बापसे अपने कसूरों को माफी मांग लेना चाहिये। इस इरादेसे उसने एक अर्जी बादशाहको भेजी जिसमें लिखा था कि मैं अपनी पिछली तकसीरों में बहुत शर्मिन्दा हूं। बादशाहने उसके जवाबमें अपने हाथसे फर मान लिखा कि जो दाराशिकोह और औरङ्गजेबको हुजूरमें भेजे,

रुहतास और आसेरके किले जो उसके आदमियोंके पास हैं बाद-शाही बन्दोंको सौपे तो उसके क़ुसूर माफ किये जायं और बाला-घाटका मुल्क उसकी इनायत हो।

शाहजहांने इस फरमानकी पेशवाई और ताज़ीम करके बेटोंके साथ अधिक प्रेम होने पर भी उनको जवाहिरात, जड़ाऊ जेवर और बड़े बड़े हाथियोंकी भेट सहित जो १० लाख रुपयेकी थी बापकी खिदमतमें भेजा। सैयद मुजफ्फरखां और रज़ाबहादुर को जो रुहतासके किलेदार थे हुक्म लिखदिया कि जब कोई बाद-शाही फरमान लेकर आवे तो उसको किला सौंपकर शाहजादे मुरादबख्शके साथ यहां चले आवें। ऐसेही हयातखांको भी आसेर का किला बादशाही नौकरोंको सौंप देनेका हुक्म भेज दिया। आप नासिक चला गया।

सुलतान होशंगका आना—बादशाहने अरबदस्तगैबको शाह-जादे दानियालके बेटे सुलतान होशङ्ग और अबदुर्रहीम खानखाना के लानेके लिये शाहजादे परवेजके पास भेजा। वह सुलतान होशंग को लेकर आया। बादशाहने अपने भतीजे पर मेहरबानी करके मुजफ्फरखां बख़शीको फरमाया कि इसकी खबर रखो और जिस चीजकी जरूरत पड़े बादशाही सरकारसे दिला दिया करो। उसकी सरकारको ऐसी बनादो कि किसी बातकी उसको तकलीफ न रहे।

खानखानांका हाजिर होना—इसी अरसेमें खानखानांने आकर चौखट चूमी और बहुत देरतक मारे शर्मिन्दगीके जमीन परसे सिर न उठाया। बादशाहने उसको तसल्लीके वास्ते फरमाया कि इस मुद्दतमें जो कुछ हुआ तकदीरसे हुआ। हमारे तुम्हारे बसकी बात न थी। इसलिये कुछ सोच फिकर न करो। बख़शियोंको इशारा किया कि इसको लाकर मुनासिब जगह पर खड़ा करदो।

महाबतखांको बंगाले जानेका हुक्म—बादशाहने नूरजहांकी बहकानेसे फिदाईखांको शाहजादे परवेजके पास इस गरजसे भेजा

था कि महाबतखांको परवेजसे अलग करके बंगालेको रवाना करे और परवेजकी मुखतारीका काम खानजहां गुजरातमें आकर करेगा। फिदाईखांकी अर्जी आई कि मैंने सारंगपुरमें पहुंचकर शाहजादेको बादशाही हुक्म सुना दिया मगर शाहजादे महाबतखांके अलग करने और खानजहांके साथ रहने पर राजी नहीं है। मैंने बहुतसी अर्ज की मगर मंजूर न हुई। इसलिये मैं शाहजादेके साथ रहनेमें फायदा न देखकर सारंगपुरमें ठहर गया हूं और खानजहांके जल्दीसे बुला लानेके लिये कासिद दौड़ाये हैं।

बादशाहने अर्जी पढ़कर शाहजादेको ताकीदी हुक्म लिखा कि जो पहले हुक्म हो चुका है हरगिज उसके खिलाफ न करो। अगर महाबतखां बंगाले जानेमें राजी न हो तो उसको अकेला हुजूरमें भेज दो और तुम तमाम अमीरोंके साथ बुरहानपुरमें ठहरे रहो।

तेईसवां वर्ष।

सन् १०३६ हिजरी।

आश्विन सुदी ३ संवत् १६८३ ता० १३ सितम्बर १६२६ से
भादों सुदी २ संवत् १६८४ ता० १ सितम्बर
सन् १६२७ तक।

कशमीरसे कूच—१८ मुहर्रम सन् १०३५ (कार्तिकवदी ७) को वादशाह कशमीरसे लाहोरको रवाने हुआ।

हुमाकी जांच—यह कई दफे अर्ज होचुकी थी कि पीरपंचालके पहाड़ोंमें एक जानवर होता है जो हुमाके नामसे मशहूर है। वहांके आदमी कहते हैं कि यह हड्डियोंके टुकड़े खाता है और हमेशा उड़ता हुआ दिखाई देता है बैठता कम है। बादशाहको ऐसी बातोंकी तहकीकातका बहुत शौक था। हुक्म दिया कि जो कोई शिकारी उसको बन्दूकसे मारकर हुजूरमें लावेगा एक हजार रुपये इनाम पावेगा। जमालखां किरावल बन्दूकसे मारकर हुमा को लाया। गोली पैरोंमें लगी थी जिससे वह ताजाही बादशाहके देखनेमें आगया। बादशाहने फरमाया कि इसका पोटा चीरकर देखो क्या खाया है। चीरा तो उसमें हड्डियोंका चूरा निकला। उन पहाड़ियोंकी बात सच्ची हुई जिन्होंने अर्ज की थी कि इसकी खुराक हड्डियोंका चूरा है। वह हमेशा उड़ता हुआ जमीनपर नजर रखता है। जहां कहीं हड्डी पड़ी देखता है चोंचमें उठाकर ऊपर को उड़ जाता है और वहांसे उसको पत्थर पर पटक देता है। जब वह टूटकर चूर चूर होजाती है तो चुन चुनकर खाजाता है। इससे जो हुमा मशहूर है वह यही है। जैसा कि शेख सादीने कहा है—

"हुमा सब जानवरों पर इसलिये बड़प्पन रखता है कि हड्डी खाता है और किसी पखेरूको नहीं सताता।"

उसका सिर कन्नसे मिलता हुआ था। मगर कलमुर्गके सिरमें पर नहीं होते, इसके सिरमें काले पर थे। बादशाहने अपने सामने तुलवाया तो ४१५ तोलेका हुआ।

बादशाह लाहोरमें—३०(१) गुरुवारको बादशाह लाहोर पहुंचा और एक लाख रुपये अबदुर्रहीम खानखानाको दिये।

ईरानका एलची—शाह अब्बासका एलची आकामुहम्मद ईरान से खत और तुहफे लेकर आया जिनमें एक जोडा सफेद शाहीनका भी था।

शेर और बकरीकी मुहब्बत—शाहजादे दादरबख्शने एक शेर बादशाहके नजर किया जो बकरीसे हिलमिल गया था। दोनो एक पिञ्जरेमें रहते थे और शेर उस बकरीको गोदमें बेठाकर प्यार किया करता था। बादशाहके हुक्मसे जब वह बकरी छिपादी गई तो शेर घबराने और चिल्लाने लगा। तब दूसरी बकरी उस पिञ्जरे में डाली गई मगर शेरने सूंघकर उसकी कमर मुहमें पकडी और तोड डाली। फिर एक मेंड उसके पास लेगये वह भी फाड डाली। आखिर वही बकरी उसके पास लाई गई तो पहलेकी तरह उससे प्यार किया। आप लेट गया और उसको छाती पर लेकर मुंह चाटने लगा। बादशाहने अबतक किसी जगली और पलाज जान वरको अपनी मादाका मुंह चूमते नहीं देखा था।

दक्षिणका दीवान—बादशाहने फाजिलखांको दक्षिणका दीवान करके डेढहजारी डेढहजार सवारोंका मनसब दिया और उसके हाथ वहांके ३२ अमीरोंके वास्ते खिलअत भेजे।

महाबतखांसे तकरार—महाबतखांने अबतक जो हाथी बगाले वगैरहसे जमा किये थे दरगाहमें नहीं भेजे थे और बहुतसे रुपये सरकारी हिसाबके उसमें निकलते थे। ऐसेही जागीरोंकी अदला बदलीमें उसने दूसरे बन्दोंकी भी जमा दबा रखी थी इसलिये बाद

(१) महीनेका नाम नहीं लिखा है और इकबालनामेमें जहांगीरीमें इआजर लिखी है। पर वह भी गुरुवारको न थी।

शाहने अरब दस्तगैबको इन दोनो कामोंके वास्ते महावतखांके पास भेजा कि वह हाथी और रुपये दे तो ले आवे नहीं तो कहदे कि दरगाहमें आकर दीवानोंको हिसाब समझा जावे।

महावतखांका बंगाले जाना—फिदाईखांकी अर्जी पहुंची कि महाबतखां शाहजादे परवेजके पाससे बंगालेको रवाने होगया और खानजहां गुजरातसे शाहजादेकी खिदमतमें आपहुंचा है।

अबदुल्लहखांके कुसूरोंकी माफी—इन्हीं दिनों खानजहांने अबदुल्लहखांकी अर्जी भेजकर उसके कुसूरोंकी माफी चाही। बादशाहने खानजहांकी खातिरसे माफी देदी।

तहमुर्स और होशंगका विवाह—शाहजादे दानियालका बडा बेटा तहमुर्स भी शाहजहांका साथ छोडकर हाजिर होगया उसका छोटा भाई होशंग पहलेही आगया था। बादशाहने मेहरवानी करके दोनोंको गोरकां(१) (जमाई) बनाया। तहमुर्सको तो अपनी बेटी बहारबानू बेगम दी और सुलतान खुसरोकी बेटी होशमन्दबानू बेगमकी सगाई होशंगसे की।

मोतमिदखांका बखशी होना—इन्हीं दिनों मोतमिदखांको बखशीका ओहदा मिला।

बादशाहका काबुल जाना—बादशाह १७ असफन्दार (फाल्गुण सुदी १०) को कूच करके कई दिन तक लाहोरके बाहर रहा फिर २३ शुक्रवार (फाल्गुण सुदी १५) को काबुलकी तरफ रवाने हुआ।

अहदादका सिर—अहमदवेगखांका बेटा इफतखारखां अहदादका सिर काटकर लाया। बादशाहने माथा जमीन पर टेक कर खुदाका शुक्र किया और शादियाने बजानेका हुक्म देकर फरमाया कि इस सिरको लाहोरमें लेजाकर किलेके दरवाजेपर लटका दो। जब ख्वाजा अबुलहसनका बेटा जफरखां काबुलमें पहुंचा तो यलंगतोश उजबकका गजनीनके इलाकेमें आना सुनकर उस सूबेके

(१) मुगल बादशाहोंमें जमाईको गोरकां कहते थे।

लश्कर समेत उससे लड़नेको निकला तो अहदाद भी पलंगतोशके इशारेसे तिराहमें आकर लूटमार करने लगा था। फिर पलंगतोशने अपने एक रिश्तेदारको जफरखांके पास भेजकर माफी मांग ली। वह लश्कर जो उसके मुकाबिलेको जमा हुआ था अहदादके ऊपर गया। वह अवागर नाम पहाड़में जहां उसका अड्डा था जाछिपा और घाटेमें भीत चुनकर लड़नेको तय्यार होबैठा। बादशाही लश्कर ७ जमादिउलअव्वल (माघसुदी ८) को नक्कारा बजाकर चढ़ा। सवेरेसे तीसरे पहर तक लड़ाई होती रही। वह अड्डा फतह होगया। अहदाद बन्दूकसे मरा पड़ा था। एक अहदी उसकी तलवार छुरी और अंगूठी जफरखांके पास लेगया। जफरखां जाकर उसका सिर काट लाया जो सरदारखांके हाथ दरगाहमें भेजा गया था। गोली जिसके हाथसे लगी उसका कुछ पता नहीं चला।

बादशाहने जफरखां और दूसरे बन्दोंके जैसी जिसकी खिदमत था मनसब बढ़ाये इनाम भी दिये।

बादशाहकी बड़ी माकी मृत्यु—इन्हीं दिनों खबर पहुंची कि रुकैया सुलतान बेगम जो मिर्जा हिन्दालकी बेटी और अकबर बादशाहकी बड़ी बेगम थी ८० वर्षकी होकर आगरेमें मर गई। इससे कोई औलाद न हुई थी। जब शाहजहां पैदा हुआ था अकबर बादशाहने उसे इसको सौंप दिया था और इसने उसको पाला था।

खानखाना पर फिर मेहरबानी—इसी अरसेमें बादशाहने बैरम खानके बेटे अबदुर्रहीम पर भांति भांतिसे कृपा करके खानखानाका सा खिताब फिर उसे देदिया और घोड़ा सिरोपाव देकर कन्नौज का जागीरी पर बिदा किया।

महाबतखां पर कोप—महाबतखांके सात हाथी आकर बादशाही फीलखानेमें दाखिल होगये। महाबतखांने अपनी बेटी ख्वाजा बरखुरदार नाम एक नकशबन्दी शख्सको बादशाहसे

अर्ज किये विना व्याह दी थी। इस नाराजीसे वादशाहने शैखको हुजूरमें बुलाकर पूछा कि क्यों तूने ऐसे बड़े अमीरकी वेटी हमारी इजाजत विना लेली? वह इसका कुछ जवाब न देसका बादशाहने उसको पिटवाकर कैद कर दिया।

मिरजा रुस्तम सफवीके वेटे मिरजा दखनीको शाहनवाजका खिताब मिला।

२८ असफन्दार ८ (चैतवदी ६) को वादशाहकी सवारी चिनाव नदी पर उतरी।

इक्कीसवां नौरोज।

२२ जमादिउस्सानी सन् १०३५ शनिवार(१)(चैत्र वदी ८) को सूर्य्यनारायणके मेष राशिमें आने पर इक्कीसवां नौरोज लगा। बादशाह चिनाव नदी पर उसका उत्सव करके रवाने होगया।

वादशाहने शाह ईरानके एलची आकामुहम्मदको खिलअत जड़ाऊ तलवार और ३० हजार रुपये देकर विदा किया। शाहके खतके जवावमें खत और एक लाख रुपयेके हीरोंसे वना हुआ एक गुर्ज उसके हाथ शाहके वास्ते भेजा।

महावतखांका आना—महावतखांने हाथी तो पहले भेजही दिये थे अब वहभी बुलाया हुआ आया। उसका आना आसफखांकी कारस्तानीसे हुआ था जो उसे वेइज्जत और खराब करना चाहता था। वह भी इस वातको समझ गया था। इसीलिये चार पांच हजार इकरंगी खूनखार(२) राजपूत अपने साथ लाया था जिनमें बहुतोंके जोरू बच्चे भी साथ थे। इसलिये कि जब मरनेकी नौवत पहुंचे तो खूब तलवारें मारकर वालवच्चों समेत मर जावें।

---

(१) पञ्चांगमें शनिवार है और इकवालनामयेजहांगीरीसे भी शनिकी रातको सूर्य्यका मेषमें आना लिखा है मगर भूल इसमें भी है कि २२ तारीखकी जगह २ लिखी है।

(२) लहूके पीनेवाले अर्थात् बहुत क्रूर।

उसके इस तरह आनेकी खबरें पहलेसे उड गई थी मगर आसफखाने गफलतसे कुछ परवा न की। जब बादशाहसे उसके आनेकी अर्ज हुई तो हुक्म हुआ कि जबतक सरकारी हिसाबकी सफाई दीवानोंसे न करे और मुद्दइयोंके दावे अदालतके बमूजिब न चुकावे दरबारमें न आवे। फिदाईखांको हुक्म हुआ कि कोटी बरखुरदारसे वह सब माल असबाब भी छीनले जो महाबतखाने उस शादीमें दिया था।

बादशाहका डेरा भट नदीके पार था। आसफखां ऐसे बडे दुश्मनसे गाफिल होकर अपने बालबच्चों और माल असबाब समेत पुल परसे इधर उतर आया। बादशाही कुल कारखाने और पास रहनेवाले बन्दे भी सब उतर आये थे। महाबतखाने जब देखा कि अब जानपर आ बनी है तो लाचार पांच हजार जंगी राजपूतोंको लेकर (जिनसे पहले वचन लेचुका था) तडकेही अपने डेरेसे निकला। २००० राजपूतोंको पुलपर खडा करके छोडा कि पुलको जला डालें और जो आना चाहे उसको रोकदें। आप बादशाही दौलतखानेको गया जिसमें बादशाह अकेला रह गया था। महाबतखाने दरवाजेमें मोतमिदखांके पेशखानेमें पहुंचकर हाल पूछा तो मोतमिदखां तलवार बांधकर डेरेसे निकला। महाबतखाने उसको देखतेही बादशाहका हाल पूछा। उस समय १०० राजपूत तलवार और बरछे लिये उसके साथ थे और धूलधक्कडसे आदमीका चेहरा अच्छी तरह नहीं पहचाना जाता था। वहांसे वह बडे दरवाजेकी तरफ गया। उस वक्त दौलतखानेके चौकीमें थोडे से पहरेवाले थे और तीन चार नाजिर दरवाजेके आगे खडे थे। महाबतखां दौलतखाने तक बढा चला गया। फिर पैदल गुसलखानेको चला। अब उसके साथ २०० राजपूत होगये थे। मोतमिदखाने उसके सामने जाकर कहा कि हैं। यह कैसी गुस्ताखी और बेअदबी है? जरा ठहरो मैं जाकर अर्ज करता हूं। मगर उसने न माना और गुसलखानेके दरवाजेपर पहुंचकर किवाड तोड

डाले जो दरवानोंने बन्द करदिये थे। फिर दौलतखानेके चौकमें घुस गया। बादशाहके आसपास जो खवास थे उन्होंने बादशाहसे उसकी गुस्ताखीकी अर्ज की। बादशाह डेरेसे निकलकर पालकीमें बैठा। महाबतखाने बादशाह बजा लाकर पालकीकी परिक्रमा की और अर्ज की कि जब मुझे यह यकीन होगया कि आसफखांकी दुश्मनीसे छुटकारा न पाकर बुरी तरह मारा जाऊंगा तो लाचार यह जुरअत और दिलेरी करके हजरतकी पनाहमें आया हूं। यदि स्वतनसे लायक हूं तो अपने हुजूरमें सजा दीजिये। इतनेमें उसके सशस्त्र राजपूतोंने आकर बादशाही कनातोंको घेर लिया। उस हालतमें सिवा दस्तगैब अरब, मीरमनसूर बदखशी, ख्वाजिस्वां खानासरा, बुलन्दखां, खिदमतपरस्तखां, फीरोजखां, खिदमतगार खानासरा, फसीहखां मअनिसी और तीन चार दूसरे अहदीयोंके और कोई हाजिर न था। बादशाहका मिजाज उसकी बेअदबीसे बिगड़ा हुआ था। उसने दो बार तलवारकी मूठ पर हाथ डाला मगर मीरमनसूर बदखशीने दूर दफा तुर्की बोलीमें कहा—"असी वक्त नहीं है, इस कमबख्तको खुदा पर छोड़ देना चाहिये। आपही इसके सजा पानेका वक्त आजावेगा।" उसका यह कहना ठीक था। इस लिये बादशाह चुप होरहा। फिर तो राजपूतोंने आकर दौलतखानेको बाहर और भीतरसे ऐसा घेरा कि उनके और महाबतखांके सिवा और कोई नजर नहीं आता था। तब उसने फिर अर्ज की कि यह स्वारीका वक्त है मामूली जाबतेके मुवाफिक सवारी फरमावें तो यह गुलाम खिदमतमें रहे और सब लोगोंको मालूम होजावे कि यह गुस्ताखी हुक्मसे हुई है।" महाबतने अपना घोड़ा आगे करके बहुत जिद और आजिजी की कि इसी पर सवार हों। बादशाहने मंजूर न करके अपना खासा घोड़ा मंगवाया और सवारीके कपड़े पहननेको अन्दर जाने लगा। महाबतखांने जाने नहीं दिया। इतनेमें खासा घोड़ा आगया। बादशाह सवार होकर दो तीरके

टपे पर गया होगा कि महाबतखांने अपना हाथी लाकर अर्ज की कि इस वक्त गड़बड़ और भीड़भाड़ होरही है हजरत हाथी पर सवार होकर शिकारको तशरीफ लेचलें। बादशाह हाथी पर सवार होगया। महाबतखांका भरोसेवाला एक राजपूत हौदेके आगे बैठा और दो पीछे। फिर मुकर्रिबखां आकर महाबतखांकी रजामन्दीसे हौदेमें बादशाहके पास बैठ गया। इस हलचलमें एक जखम भी उसके माथेमें लग गया था।

खिदमतपरस्तखां खवासके पास बादशाहकी शराब और प्याला था। वह दौड़कर हौदेसे जा लिपटा। राजपूतोंने उसको धक्के तो बहुत दिये और भालोंसे भी हटाया पर उसने हौदेको न छोड़ा। बाहर तो जगह न थी जैसे तैसे हौदेमें घुस बैठा।

आध कोस चले होंगे कि फीलखानेका दारोगा गजपतखां सवारीकी खासा हथनी लेकर आया। आप आगे और उसका बेटा पीछे बैठा था। महाबतखांके इशारेसे वह दोनों बेगुनाह मारे गये।

महाबतखां शिकारके बहाने बादशाहको अपने डेरेपर लाया। बादशाह उसके घरमें उतर पड़ा। उसने अपने बेटोंको बादशाहके आसपास खड़ा कर दिया। वह नूरजहां बेगमकी तरफसे गाफिल था। अब बेगमके लानेके लिये बादशाहको फिर दौलतखानेमें ले गया। पर बेगम इस फुरसतमें बादशाही महलोंके नाजिर जवाहिरखांके साथ नदीसे उतरकर अपने भाई आसफखांके डेरेमें चली गई थी। महाबतखां इस भूलसे बहुत पछताया। शहरयारको बादशाहसे अलग रखना ठीक न समझकर बादशाहको उसके डेरे पर लेगया। बादशाह उसके काबूमें था जो वह कहता था वही करता था। इस वक्त शुजाअतखांका पोता कब्जू साथ होगया। उसे शहरयारके डेरे पर पहुंचतेही महाबतखाने राजपूतों द्वारा मरवा डाला।

नूरजहां बेगमने भाईके डेरे पर पहुंचतेही सब अमीरोंको

बुलवाया और खफा होकर कहाकि तुम्हारी गफलत और नादानीसे यह हाल हुआ। जो बात किसीने न सोची थी वह हुई। तुम खुदा और खल्कके सामने बदनाम हुए। अब इसका क्या बन्दोबस्त करना चाहिये सब सलाह करके अर्ज करो।

सबने कहा कि सलाह यही है कि कल फौजें तय्यार करके आपकी अर्दलीमें नदीसे उतरें और बदमाशोंको सजा देकर हज-रतकी चौखट चूमें।

जब बादशाहसे इस सलाहकी अर्ज हुई तो बादशाहने रातहीको मुकर्रिबखां, सादिकखां बखशी, मीरमनसूर और खिदमतखांको लगातार भेजकर आसफखां तथा दूसरे अमीरोंको कहलवाया कि नदीसे उतरना और लड़ना ठीक नहीं है। कभी भूलकर ऐसी खोटी बात न करना। इससे सिवा पछतानेके और कोई नतीजा न होगा। जब हम इधर हैं तो तुम किसके भरोसे और किस आशा पर लड़ते हो? पूरा यकीन दिलानेके लिये अपनी अंगूठी भी मीरमनसूरके हाथ भेज दी कि यदि आसफखां आदिको सन्देह हो कि यह बातें महाबतखांकी बनाई हुई हैं और हजरतने उसके दबानेसे हुक्म देदिया है, तो दूर होजाय।

फिदाईखांको जब इस गदरका हाल मालूम हुआ तो सवार होकर नदी पर आया और पुलके जलनेसे पार उतरना मुशकिल देखकर तैरकर पार होनेके लिये बादशाही दौलतखानेके सामने घोड़ा पानीमें डाला। पर तीर बरसने लगे। ६ आदमी उसकी फौजके मारे गये और कुछ पानीके जोरसे गोते खाकर अधमुये किनारे पर जालगे। तोभी वह घोड़े पर चढ़ाहुआ पार उतर गया और खूब लड़ा। यहां उसके चार आदमी और मारे गये। जब उसने देखा कि दुशमन घिर आये और हुजूरमें पहुंचनेका रास्ता नहीं है तो लौटकर नदीसे उतर आया।

बादशाह उस दिन और उस रात शहरयारके डेरेमें रहा।

नूरजहां बेगमका लड़नेको आना—८ फरवरदीन शनिवार २६

जमादिउस्सानी (चैत सुदी १ संवत् १६८३) को आसफखां और ख्वाजा अबुलहसन वगैरहने लड़नेके इरादेसे नूरजहां बेगमको अर्दलीमें एक घाटसे जिसे नवाड़ेके दारोगा गाजीवेगने पायाब देखा था उतरना चाहा। पर सब घाटोंसे बुरा वही था। तीन चार जगह चौड़े और गहरे पानीमें उतरना पड़ा जिससे लशकरका सिलसिला टूट गया। फौजें बिखर गईं। आसफखां ख्वाजा अबुलहसन और इरादतखां बेगमकी अम्मारी (१) के साथ दुशमन की बड़ी फौजके सामने जा निकले जहां उसने नदीके घाटोंको अपने जंगी हाथियोंसे मजबूत कर रखा था। फिदाईखां एक तीरके टप्पे पर उनसे नीचे दुशमनकी दूसरी फौजके आगे जा उतरा। उससे भी नीचेको आसफखांका बेटा अबूतालिब शेरख्वाजा अलहयार और बहुतसे आदमी उतरे। अभी दूसरे लोग किनारे परही पहुंचे थे और कुछ पानीके बीचमें थे कि दुशमनकी फौज हाथियोंको आगे करके बढ़ी। उस समय आसफखां और ख्वाजा अबुलहसन पानीमेंही थे और मोतमिदखां एक धारसे उतर कर दूसरी पर खड़ा भाग्यके हेर फेरका तमशा देख रहा था। सवार पैदल ऊंट घोड़े पानीमें एक दूसरेसे भिड़ भिड़ कर पार उतरनेकी कोशिश कर रहे थे। इतनेमें बेगमके ख्वाजासराने नदीमें आकर कहा कि महद उलिया(२) फरमाती हैं कि यह जगह क्या ठहरने और ढील करनेकी है। पांव आगे रखो गनीम तुम्हारे जातेही भाग जायगा। इस हुक्मके सुनतेही ख्वाजा अबुलहसन और मोतमिदखांने घोड़े पानीमें डालदिये। मगर गनीमके सिपाही और राजपूत इधरके आदमियोंको हटाते हुए नदीमें आगये। बेगमकी अम्मारीमें शहरयार और शाहनवाजखांकी बेटियां भी थी। एक तीर शहयारकी बेटीकी भुजामें लगा जिसे बेगमने अपने हाथसे खेंच कर बाहर फेंका। सबके कपड़े खूनमें रंग गये। महलका

(१) गुमटीदार हौदा।

(२) यह बेगमोंका खिताब होता था।

नाजिर जवाहिरखा ख्वाजासरा, बेगमका ख्वाजासरा नदीम, और एक दूसरा ख्वाजासरा, तीनो हाथीके आगे काम आये। दो तल वारें बेगमके हाथीकी सूडपर भी लगी। हाथीका मुह फिरगया। फिर दो तीन जखम बरछेके उसकी पीठ पर लगे। महावत हाथी को जल्दी जल्दी चला रहा था कि गहरे पानीका एक दह आगया। घोडे उसमें तैरने लगे सवारोंने डूब जानेके डरसे बागें मोडलीं। मगर बेगमका हाथी पार होगया बेगम बादशाही दौलतखानेमें जाकर उतर गई।

राजपूत जब इधर आये तो आसफखा अपने साथियोंके ओघट रास्ते जानेसे बुरा नतीजा पेदा होनेका गिला करके एक तरफको चलदिया। साथवालोंने पूछा किधर जाते हो मगर कुछ पता न बताया। ख्वाजा अबुलहसनने घबराकर पानीमें घोडा डाला पानी गहरा था घोडा तैरने लगा। वह जीनसे अलग होगया गोता खाया सास भूलगया मगर काठीका डंडा न छोडा। आखिर एक कश मीरी मल्लाहने पहुच कर उसको निकाल लिया। मगर फिदाईखा अपने नोकरों और कुछ बादशाही बन्दोंके साथ जो उससे मुहब्बत रखते थे नदीसे उतर कर गनीमकी फौजसे लडा जो उसके सामने थी और उसे हटाकर शहरयारके घर तक जा पहुचा जहा बादशाह मोजूद था। मगर कनातके भीतर सवार और पैदल भरे हुए थे। उनपर वह दरवाजेसे तीर मारने लगा। अकसर तीर दौलतखानेके चौकमें बादशाहके पास जाकर गिरते थे। उस वक्त मुखलिसखा तख्तके आगे खडा था।

फिदाईखा देरतक तीर मारता रहा और उसके साथियोंमेंसे सैयद मुजफ्फर जो एक बहादुर जवान था और फिदाईखाका जमाई अताउल्लह तथा सैयद अबदुलगफूर बुखारी मारे गये। चार जखम फिदाईखाके घोडे के भी लगे। आखिर वह भी बाद शाहके पास पहु चना मुशकिल देखकर लोट गया और दूसरे दिन नदीसे उतरकर रुहतासमें अपने बेटोंके पास पहुचा। वहासे बाल

बच्चोंको उठाकर गरचाक टडेमें लेगया जहांका ज़मीदार बदरव एश उसका पुराना मुलाकाती था। उनको वहां छोड़ कर छड़ा हिन्दुस्तानको रवाने हुआ।

शेरख्वाजा, अलहवरदीखां किरावलबाशी और इफ़तखारखांका बेटा अलहयारखां बिखर कर अलग अलग जापड़े। आसफखां महाबतखांके हाथसे अपना बचाव न देखकर अपने बेटे अबूतालिब और दो तीन सौ बारगीर सवारों और खिदमतगारोंसे अटकके किलेको चल दिया जो उसकी जागीरमें था। जब रहतासमें पहुंचा और सुना कि इरादतखां यहां छुपा हुआ है तो आदमी भेजकर बुलाया और साथ चलनेको बहुतसा कहा मगर राजी न हुआ। तब आसफखां तो अटकके किलेमें जा बैठा और इरादतखां लश करमें आगया। फिर ख्वाजा अबुलहसन प्रतिज्ञा कराके महाबत खांसे मिला। उसने इरादतखां और मोतमिदखांके नाम भी जान माल और इज्जतमें नुकसान न पहुंचानेका कौल नामा लेकर उनको महाबतखांसे मिलाया। उसी दिन महाबतखांने शेख चाट ज्योतिषीके जवान पोते अबदुस्समदको आसफखांसे मेल मिलाप रखनेके कुसूरमें अपने सामने मरवा डाला।

बलख्वका एलची—इसी दिनोंमें बलखके खान नजर मुहम्म दखांके एलची शाहख्वाजाने बादशाहके हुजूरमें वहांके मासूलके मुवाफिक बादाब बजा लाकर नजर मुहम्मदखांके भेजे हुए तुकी घोड़े और गुलाम नजर किये। फिर अपनी पेशकश भी गुजरानी नजर मुहम्मदखांके तुहफे ५००००) के आंके गये शाह ख्वाजाको ३००००) इनामके मिले।

आसफखांका कैद होजाना—महाबतखांने कुछ बादशाही पहदी, कुछ अपने सिपाही, और कुछ उधरके जमीन्दार अपने बेटे बहरोज और शाहकुलीके साथ आसफखांपर भेजे। उन्होंने जल्दी से पहुंचकर अटकका किला लेलिया। आसफखां प्रतिज्ञा लेकर

उनसे मिला उन्होंने महावतखांको हाल लिखा इस अरसेमें बन्द शाहकी सवारी भी गटकसे उतर आई थी। महावतखां बादशाह से रुखसत लेकर। अटकके किलेमें गया और आसफखां, उसके बेटे अबूतालिब, और मीरमीराके बेटे खलीलुल्लाहको पकड कर किला अपने मोतमिदोंको सौंप आया। उसने आसफखांके मुसाहिब अबदुलखालिक, और शाहजहांके वखशी मुहम्मद तकी, को जो बुरहानपुरके घेरेमें उसके हाथ आगया था मरवा डाला। आसफखांके उस्ताद मुल्ला मुहम्मदके पावोंमें भी बेडी डाली थी पर वह ढीली रह जानेसे खुलगई। इस बातसे उसको जादूगरी समझ कर उसको भी उसने कतल करा दिया। यह मुल्ला मुहम्मद हमेशा कुरान पढा करता था और उसके होठ हिलते थे। जिससे उसका डर होगया था कि कहीं जादूसे मुझे न मार डाले।

काफिरोंका हाल—जब सवारी जलालाबादमें पहुंची तो कुछ काफिरोंने आकर बन्दगीकी। उनका हाल मिर्जा हादीने इस तौर पर लिखा है—इनका मजहब तिब्बतके काफिरोंसे मिलता है। वे आदमीकी सूरत पर एक मूर्त्ति सोने या पत्थरकी बनाकर पूजते हैं। एकसी औरत करते हैं मगर जो वह बांझ हो या खसमसे मेल न रखे तो दूसरी भी कर लेते हैं। जो किसी दोस्त या रिश्तेदारके घर जाना चाहें तो छतों पर होकर जाते हैं। शहरका दरवाजा एक रखते हैं। सूअर, मछली, और मुर्ग. को छोडकर सब जानवरोंका मास खाते हैं। मछलीके वास्ते कहते हैं कि जिस किसीने हमारी कोममेंसे खाई वह अन्धा होगया। मास उबालकर खाते हैं। लाल कपडेको बहुत पसन्द करते हैं। मुर्देको कपडे और हथियार पहनाकर शराब को सुराही और प्याले समेत गाडते हैं। सौगन्द खानेका यह दस्तूर है कि हरन या बकरेकी सिरीको आगमें रखते हैं फिर वहांसे उठाकर पेडमें टांगते हैं और कहते हैं कि जो कोई हममेंसे यह सोगन्द झूठी करता है वह जरूर किसी बलामें फसता है।

बाप जो अपने बेटेकी जोरू बसन्द करे तो लेलेता है बेटा कुछ नहीं कहता।

बादशाहने उनसे फरमाया कि हिन्दुस्थानकी चीजोंमेंसे जिस चीजको तुम्हारा दिल चाहता हो अर्ज करो। उन्होंने घोड़े तलवार नकद रुपये और सुरख रंगके खिलअतकी अर्ज की और अपनी मुरादको पहुंचे।

जगतसिंहका भागना—इसी अरसेमें राजा बासूका बेटा जगतसिंह बगैर रुखसतके बादशाही लशकरसे अपने घर पंजाबके पहाड़ोंमें चला गया। बादशाहने सादिकखांको पंजाबका सूबा देकर जगतसिंहकी सजाका हुक्म दिया।

काबुल पहुंचना—रविवार २० उर्दीबहिश्त (बैशाख सुदी १४) को बादशाह काबुल पहुंचकर हाथी परसे रुपये लुटाता बाजारसे निकला और किलेके पास जहांआरा बागमें उतरा।

१ खुरदाद (ज्येष्ठ बदी १२) शुक्रवारको बादशाह बाबर बादशाह, मिरजा हिन्दाल और अपने चचा मिरजा मुहम्मदकी कबरोंकी जियारत करनेको गया।

महाबतखांके राजपूतोंकी हार—महाबतखांके राजपूत जो इत्तिफाकसे इतना जोर और गलबा पागये थे मारे घमण्डके किसीको कुछ खयालमें न लाते थे रैयतको लूटते और गरीबोंको सताते थे गैबकी मारमें पड़ गये। उनमेंसे कुछ लोग काबुलकी शिकारगाह इलकामें जाकर घोड़े चराने लगे। वहां बादशाहके शिकार खेलनेके लिये बन्दोबस्त होकर अहदियोंका पहरा लगा था। एक अहदीने उन राजपूतोंको रोका तो उसको सारे तलवारोंके टुकड़े टुकड़े कर डाला। उसके घरवालों और दूसरे अहदियोंने दरगाहमें जाकर फरियाद की। बादशाहने फरमाया कि मारनेवालेको पहचान लो तो उसे हुजूरमें बुलाकर तहकीकात करें। खून साबित होने पर सजा दी जाय। इस हुक्मसे नाराज होकर अहदी लौट आये। राजपूत उनके पासही ठहरे हुए थे। दूसरे दिन लड़नेके

इराटेमे चढकर राजपूतोके डेरो पर गये। थोडीसी लडाइमे आठ नौसो राजपूत मारे गये। क्योंकि अन्दी अच्छे तीरन्दाज और बन्दूकची थे। महाबतखा जिन राजपूतोको अपने सगे बटोसे भी ज्यादा समझता था वह सब वही खेत रहे। ५०० राजपूतोको जिनमें अकसर अपनी कौमके सरदार और बहादुरीमें नाम पाये हुए थे काबुल और हजाराकी कौमोके लोग पकडकर हिन्दूकुश पहाडके ऊपर लेगये और बेच आये।

महाबतखा यह खबर सुनतेही अपने नोकरोकी मददको चढा था, पर हाल बिगडा देखकर मारेजानेके भयसे रास्तेसे लौटआया। दौलतखानेकी पनाह पकडकर बादशाहसे झगड मिटानेकी अर्ज करने लगा। बादशाहने हवशियो, कोतवालखा और जमाल खवास को हुक्म दिया। उन्होंने जाकर वह फसाद मिटा दिया। फिर बादशाहसे अर्ज हुई कि इस फसादका उठानेवाला ख्वाजा अबुल हसनका जमाई बदीउज्जमा और उसका भाई ख्वाजा कासिम है। बादशाहने दोनोको हुजूरमें बुलवाकर पूछताछ की वह कोई जवाब महाबतखाकी तसल्लीके लायक न दे सके। उसके बहुत आदमी तीर बन्दूकोसे मारे गये थे इसलिये बादशाहने उसकी खातिर से दोनोको उसके हवाले कर दिया। वह उन्हें नगे पाव नगे सिर बडी ख्वारीसे खेंचता हुआ अपने घर लेगया और वहा कैद करके उनका माल असबाब जब्त कर लिया।

अम्बर हवशीका मरना—इन्ही दिनो अर्जहुई कि अम्बर हवशी ८० वर्षका होकर स्वाभाविक मृत्युसे दक्षिणमें मर गया। सिपाह गरी सरदारी और बन्दोबस्तके जोड तोडमें इका था। उसने वहाके बदमाशोको जैसा चाहिये वैसा दबा रखा था। आखीर वक्त तक इज्जतसे रहा। किसी इतिहासमें नही देखा गया कि कोई गुलाम हवशी उसके दरजेको पहुचा हो।

अबदुर्रहीम खानखानाका लाहोरमें आना—इसी अरसेसे दिल्ली के हाकिम सैयद बहवाने महाबतखाके लिखने पर अबदुर्रहीम

खानखानाको जो अपनी जागीरको जाता था लौटाकर लाहौरमें भेज दिया।

दाराशिकोह और औरंगजेबका आना—इन्हीं दिनों बादशाहने सुलतान दाराशिकोह और औरंगजेबके आगरे तक पहुंचनेकी खबर सुननेसे बहुत खुशी हुई। मगर महाबतखांने आगरेके किले दार मुजफ्फरखांको लिखा कि शाहजादोंको नजरबन्द करले और अपने साथ दरगाहमें लावे।

शिकारके वास्ते रस्सा—बादशाहको शिकारकी ऐसी लत थी कि कूच और मुकाममें एक दिन भी बिना शिकारके नहीं रहता था। इस लिये अनहदखांने किरावलबेगीने कमरगोके शिकारके वास्ते एक बड़ा रस्सा बटकर नजर किया जिसको हिन्दुस्थानी नावर कहते थे। बादशाहने उसका नाम नूर रक्खा। २५०००) इस पर खर्च हुए थे। वह बादशाहके हुक्मसे गाव अरगन्देकी शिकारगाहमें खड़ा किया गया और जानवर हर तरफसे घेरकर उसमें लाये गये। बादशाह बेगमोंको लेकर शिकार खेलने गया। गाव मीर मालूममें शाह इसमाइल हजारा जिसको हजाराके लोग गुरु मानते थे बालबच्चों समेत उतरा हुआ था। बादशाह उससे मिलने गया। नूरजहांने शाहके बेटोंको मोती जवाहिर और जड़ाऊ गहने दिये। फिर बादशाहने शिकारगाहमें जाकर ३०० के करीब जंग, पहाड़ी मेढ़े, रीछ और जरख शिकार किये। इन सबमें जो बड़ा था वह तोला गया तो जहांगीरी तोलसे ३ मन ३ सेर हुआ।

शाहजहांका ठट्ठे जाना—शाहजहांको जब महाबतखांकी गुस्ताखीकी खबर पहुंची तो थोड़ासा लश्कर और सामान पास होने पर भी बापकी खिदमतमें पहुंचकर महाबतको सजा देनेके इरादे से २३ रमजान सन् १०३५ (आषाढ़ बदी १०) को १००० सवारोंके साथ नासिक त्रिम्बकसे रवाना हुआ। उसने यह ख्याल किया था कि इस सफरमें और भी फौज जमा होजावेगी। मगर जब अजमेरमें पहुंचा तो महाराजा भीमका बेटा राजा कृष्णसिंह जिसके

दास ५०० सवार थे मर गया। उसके मरने और उसके सवारोंके बिखर जानेसे कुल ५०० सवार शाहजहांके पास रह गये। वह भी खराब हाल और खर्चसे तङ्ग थे। शाहजहांने वह इरादा पूरा होता न देखकर ठट्टेमें कुछ दिन आराम लेनेके लिये अजमेरसे नागोर, नागोरसे जोधपुर और जोधपुरसे जेसलमेरको कूच किया। इसी रास्तेसे हुमायूं बादशाह भी अपने गिरे दिनोंमें सिन्धको गया था। दादा पोतेका एक हालतमें इधर जाना काल नालका विचित्र चक्र था।

काबुलसे कूच—जब बादशाहका दिल काबुलकी सैर और शिकारसे भर गया तो १ शहरेवर सोमवार (भादों सुदी ३) को आगरेको तरफ कूच किया।

परवेजकी बीमारी—इसी दिन अर्ज हुई कि शाहजादे परवेज के पेटमें वायगोलेका दर्द होजानेसे उसे बहुत देर तक बेहोशी रही। फिर इलाज करनेसे कुछ होश आया है। इसके साथही खानजहां की अर्जी पहुची जिसमें लिखा था कि शाहजादा फिर बेहोश हो गया। ५ घडी बेहोश रहा। हकीमोंने दाग देनेकी तजवीज करके ५ दाग उसके सिर ललाट और कनपटियोंमें लगाये तो भी होशमें न आया। एक घण्टे पीछे कुछ होश हुआ और फिर बेहोश होगई। हकीम इस बीमारीको सिरगी बताते हैं और यह जियादा शराब पीनेका फल है। इसी बीमारीसे इनके दोनों चचा शाहजादे मुराद और शाहजादे दानियालने अपनी जान खोई थी।

दाराशिकोह और औरंगजेबका आना—इन्ही दिनों सुलतान दाराशिकोह और औरंगजेब अपने दादाकी खिदमतमें पहुंचे। उनके साथ जो १० लाख रुपयेकी पेशकश हाथियो और जवाहिर के जडाऊ सामानोंको थी बादशाहकी नजरसे गुजरी।

वायसनकर सुलतान दानियालका बेटा—फाजिलखांकी अर्जी पहुंची कि दानियालका बेटा वायसनकर उमरकोटसे शाहजहांका साथ छोडकर राजा गजसिंहके मुल्कमें आगया है। शाहजादे

परवेजके पास पहुंचनेवाला है।

महाबतखांका निकाला जाना—महाबतखांने बादशाहके साथ जो इतनी बडी गुस्ताखी करके दरबारमें दखल पाया था इससे उसका मिजाज बिगड गया था। उसने सब अमीरोंके साथ बदसलूकी करके बहुतसे दुशमन पैदा कर लिये थे। मगर बादशाह इन पर भी बुर्दबारीसे उस पर अपनी पूरी इनायत और मेहरबानी दिखाता था। जो कुछ नूरजहां बेगम अकेलेमें उससे कहती थी वह सब उसे कह देता था। कई बार कह चुका था कि बेगम तेरे फिकरमें है तू खबरदार रहना। शाहनवाजखांकी बेटी जो अबदुर्रहीम खानखानाकी पोती और आसफखांके बेटे शाइस्ताखांकी जोरू है कहती है कि जब मैं काबू पाऊंगी महाबतखांको बन्दूकसे मार दूंगी।

बादशाहकी इन बातोंसे महाबतखांके दिलका खटका कम हो गया था। जैसे वह पहले बहुतसे राजपूतोंके साथ लेकर दरगाहमें आता था और उनको दौलतखानेके आसपास खडा करके अन्दर जाता था अब उतना सामान साथ नहीं लाता था। उसके अच्छे अच्छे नौकर भी अहदियोंकी लडाईमें मारे जाचुके थे।

इधर नूरजहां बेगम उसके घातमें लगी हुई थी। वह अपनी फौज भी बढाती जाती थी और बहादुरसिपाहियोंका दिलभी बढाती थी। उसका खुानसरा हुशयारखां उसके लिखने पर लाहोरसे २००० सवार नौकर रखकर लाया था और यहां उसके पास भी एक अच्छी फौज जमा होगई थी। अब उसने रुहतासके एक मञ्जिल आगे अपने सवारोंकी हाजिरी लेनेकी तजवीज करके हुक्म दिया कि तमाम नई पुरानी सिपाह वर्दी पहनकर रास्तेमें खडी रहे। बुलन्दखां खवाससे कहा कि हजरतकी तरफसे महाबतखांके पास जाकर कहे कि आज बेगम अपने नोकरोंकी हाजिरी बादशाह को देगी। तुम अपना पहला मुजरा मोकूफ रखो जिससे तुम्हारे उसके बीच कोई झगडा न पड सके।

बुलन्दखांके पीछेही ख्वाजा अनवरको भेजा कि यह बात महाबतखांको खूब सोचा दे कि हुक्मके मुवाफिक अमल करके इस वक्त मुजरा करनेको न आवे।

दूसरे दिन बहुतसे बादशाही बन्दे दरगाहमें भर गये और हजरतने महाबतखांको हुक्मभेजा कि उर्दू से एक मंजिल आगे चला करे। महाबतखां भी असल भेद पागया था। पर अहदियोंकी लड़ाईमें उसे बड़ा सदमा पहुंच चुका था इसलिये लाचार होकर आगेको कूच कर गया। तब बादशाह भी उसके पीछेही सवार होकर ऐसी गर्मागर्मीसे गया कि वह फिर अपनेको सम्हाल न सका और आगेकी मंजिलसे भी कूच करके भटके पार उतर गया। बादशाहने इधर नदी पर अपना लशकर डालकर अफजलखांको महाबतखांके पास भेजा और यह चार हुक्म कहलावे—

१—शाहजहां ठट्ठेको गया है वह भी उसके पीछे जाकर इस मुहिमको पूरी करे।

२—आसफखांको हुजूरमें भेज दे। न भेजेगा तो बादशाही फौज उस पर भेजी जायगी।

३—शाहजादे दानियालके बेटे तहमुर्स और होशंगको हुजूरमें रवाने करे।

४—मुखलिसखांके बेटे लशकरीको हाजिर करे जो अबतक हुजूरमें नहीं आया है क्योंकि वह उसका जामिन है।

अफजलखांने शाहजादे दानियालके बेटोंको लाकर अर्ज की कि वह आसफखांके वास्ते यह अर्ज करता है कि मैं बेगमकी तरफ से बेखटके नहीं हूं। डर है कि आसफखांको अपने हाथसे जाने दूं तो बेगम मेरे ऊपर फौज भेजेगी। इसलिये हजरत चाहें जिस खिदमत पर मुझे मुकर्रर फरमादें। मैं लाहोरसे गुजरतेही आफस खांको बड़ी खुशीसे हुजूरमें भेज दूंगा।

यह सुनकर बेगम बहुत गुस्से हुई। अफजलखांने फिर जाकर जो कुछ देखा सुना था महाबतखांसे साफ साफ कह दिया।

कहा कि आसफखांके भेजनेमें ढील करना भला नहीं है। अन्यथा अन्तमें पछताना पड़ेगा। महाबतखां भी समझ गया। उसने आखिर आसफखांको लाकर माफी मांगी और कौल कसम लेकर उसको दरगाहमें भेज दिया। मगर उसके बेटे अबूतालिबको कुछ दिनोंके वास्ते अपने पास रखकर ठट्ठेको तरफ कूच कर गया।

भटसे उतरना—१३ (आश्विनवदी १०) को बादशाहकी सवारी भटसे उतरी। अजब बात यह है कि महाबतखांको चढ़ाई इसी नदीके किनारे पर हुई थी और अब इसी नदीपर उसकी कमबख्ती भी आगई। उसमें कुछ दिन पीछे अबूतालिब, बदीउज्जमा और ख्वाजा कासिमको भी दरगाहमें भेज दिया।

जब जहांगीरबादमें सवारी पहुंची तो दावरबख्श, खानखाना, मकर्रिबखां, मीरजुमला और शहर लाहोरके बड़े बड़े आदमियोंने पेशवाईमें आकर जमीन चूमी।

लाहोरमें पहुंचना—७ आबान (कार्तिक सुदी १०) को बादशाह लाहोरमें पहुंचा। इसी दिन आसफखांको पंजाबका सूबा और वकालतका बड़ा ओहदा मिला और हुक्म हुआ कि दीवान (कचहरी) में बैठकर अपने इख़तियारसे मुल्क और मालके कुल काम किया करे। दीवानका ओहदा ख्वाजा अबुलहसनको, मीर सामानीका अफजलखांको और बखशीका मीरजुमलाको इनायत हुआ।

महाबतखांका खजाना जब्त होना—इन्हीं दिनों अर्ज हुई कि महाबतखां ठट्ठेका रास्ता छोड़कर हिन्दुस्थानको रवाने हुआ है और उसके वकीलोंने बंगालेसे २० लाख रुपये भेजे हैं जो दिल्ली तक पहुंच गये हैं। बादशाहने सफदरखां, सिपहसालारखां, अलीकुली दरमन, नूरुद्दीनकुली और अनीराय सिंहदलनको १००० अहदियों सहित उस खजानेको लानेके लिये भेजा। यह लोग शाहाबादके पास महाबतखांके नोकरोंके सामने जापहुंचे जो खजाना लाते थे। उन्होंने रुपयोंको सरायमें लेजाकर मुकाबिला करना शुरू किया।

बादशाही बन्दे बहुतसी लडाईके पीछे सरायमें आग लगाकर अन्दर घुस गये और खजाना ले आये। अब उनको बादशाहका हुक्म पहुंचा कि रुपयोंको दरगाहमें भेजकर महाबतखांके पीछे जावें।

खानखानां महाबतखां पर—फिर बादशाहने खानखानांको ७ हजारी जात और ७ हजार सवार दुअस्पे तिअस्पेका मनसब, खिलअत, तलवार, जड़ाऊ जीनका पंचाक घोड़ा और खासा हाथी इनायत करके दरगाहके कुछ बन्दोंके साथ महाबतखांके मारनेको बिदा किया और अजमेरका सूबा उसकी जागीरमें लिख दिया।

जगतसिंह—जगतसिंहकी मुहिम सादिकखांसे पार नहीं पड़ी थी और बादशाह उसको महाबतखांका दोस्त समझता था इस लिये उसके नाम दरबारमें न आनेका हुक्म भेज दिया।

मुखलिसखां और जगतसिंहने कांगड़ेके पहाड़ोंसे आकर बन्दगी की।

मुकर्रमखांको बंगालेका सूबा—मुकर्रमखांको जो मुल्क कोचमें हाकिम था बादशाहने हुक्म भेजा कि हमने तुमको बंगालेका सूबेदार किया है। वहां जाकर बन्दोबस्त करो और खानेजादखांको दरगाहमें भेजदो।

शाहजादे परवेजका मरना—शाहजादे परवेजको बहुत शराब पीनेसे मिरगी होगई थी खाना नहीं भाता था। ताकत सब टूट गई थी। हकीमोंने बहुत इलाज किया मगर अखीर वक्त आजानेसे कुछ फायदा न हुआ। यह ७ सफर सन् १०३६ बुधवारकी रात को ३८ सालकी उमरमें मर गया। पहले तो उसकी लाश बुरहान पुरमें जमीनको सौंपी गई थी पीछे आगरे लाकर उसके बनाये हुए बागमें दफ़न की गई।

बादशाहने यह सुनकर बहुत रंज किया। अन्तमें सन्तोष करके खानजहांको लिखा कि परवेजके बेटों और आदमियोंको हुजूरमें रवाने कर दे।

बलखके वकीलोंकी बिदा—इन्हीं दिनों बादशाहने नजरमुहम्म-

इन्दाके एल्चो शाहख्वाजाको रुखसत किया। उसको जो कुछ पहले दस दफे करके मिल चुका था उसके सिवा ४००००) और इनायत किये। खानके वास्ते भी कुछ नमूना हिन्दुस्थानकी तुहफा चीजोंका भेजा।

शाइस्ताखा—आसफखाके बेटे अबूतालिबको शाइस्ताखाका खिताब मिला।

बिहारकी सूबेदारी मिरजा रुस्तम सफवीको इनायत हुई।

दखनियोंकी तावेदारी—सूबेदक्षिणके मुतसद्दियोंकी अर्जी पहुची कि याकूतखा हबशीने जिससे बडा कोई सरदार अम्बरके पीछे उस देशमें न था और अम्बरकी जिन्दगीमें भी वही सिपहसालार था, खानजहाके पास आकर सरबुलन्दरायको लिखा कि मैं अम्बरके बेटे फतहखा और निजामुल्मुल्कके दूसरे सरदारोंके साथ बादशाही बन्दगी किया चाहता हूं। आगे मै आया हूं बाकी लोग पीछे आते हैं।

सरबुलन्दरायने खानजहाको लिखा। खानजहाने तसल्लीकी बहुतसी बाते लिखकर याकूतखाको अपने पास बुलाया। एक चिट्ठी सरबुलन्दरायको भी लिखी कि उसकी खूब खातिर और मेहमानदारी करके उसे बुरहानपुरको रवाना करे।

शाहजहा—शाहजहा ठट्ठेको इस मतलबसे गया था कि ईरानके बादशाह शाह अब्बाससे नजदीक रहे। उसके साथ पहलेसे दोस्ती और चिट्ठीपत्री थी। शाह भी इन हरज मरजके दिनोंमें हाल पूछता रहता था। इससे शाहजहाको शाहसे मदद की बहुत कुछ आशा थी। पर जब ठट्ठेके पास पहुचा तो वहाके सूबेदार शरीफुलमुल्कने ८०० सवार और १२००० पैदल जमा करके मुकाबिलेकी तयारी की। शाहजहाके साथ तीन चारसौही जान देनेवाले बन्दे थे तो भी सूबेदार सामने नही आया किलेमें जा बैठा। किला उसने तोपो और बन्दूकोंसे सजा लिया था। शाहजहाने अपने नौकरोंसे कह दिया था कि किले पर न जावें और अपनेको तोपो

और बन्दूकोंसे मुफ्तमें तबाह न करें। इस पर भी कई दिलचले जवान दौड़कर शहरके कोट पर चढ़ गये मगर किलेकी मजबूतीसे कुछ कर न सके लाचार लौट आये। कुछ दिनों पीछे फिर किले पर गये और किलेका मैदान साफ होने और किसी दीवार और दरख्तकी आड़ न होनेसे ढालें अपने मुंहके आगे करके आगे बढ़े। एक बड़ी लम्बी चौड़ी खाई पानीसे भरी हुई मिली। वह उससे न तो उतर सके और न पीछे फिर सके। चौचमेंही रामभरोसे बैठ गये।

इतनेहीमें शाहजहां बीमार होगया। और भी दूसरी कई बातोंसे हैरान जाना मुलतवी रहा। इधर परवेजकी बीमारीकी खबरें भी पहुंची थीं जिससे उसके बचनेका यकीन न था। इसके सिवा नूर-जहां बेगमका भी खत पहुंचा था जिसमें लिखा था कि महाबतखां बादशाही लश्करके धावेका शोर सुनकर बहक गया है कहीं रास्ते में तुम्हारे लड़कोंको कुछ तकलीफ न दे, इसलिये सलाह दौलत यही है कि दक्षिणको लौटकर कुछ दिनों जमानेकी हवा देखो कि क्या होता है। शाहजहां बीमारी और कमजोरीसे पालकीमें बैठ कर गुजरात और भाराके मुल्क (काठियाड़) से दक्षिणको लौटा। रास्तेमें शाहजादे परवेजके मरजानेकी खबर सुनी तो जानेमें जल्दी की। गुजरातमें अहमदाबाद(१)से २० कोस पर चांपानेरके नीचे नर्बदासे उतरकर छपराईके घाटेसे जो बुगलानेके राजाकी अमल-दारीमें था नासिक चिम्बकमें आगया जहां अपने आदमियोंको छोड़ा था। पर वहां कोई इमारत न थी इस लिये जुनेरमें जाकर रहने लगा।

आसफखांको मनसब—महाबतखांकी कैदसे छूटे पीछे आसफ के पास न कोई मनसब था न जागीर थी। उसका हाल खराब था

(१) सुलतान महमूद गजनवीने इसी रास्तेसे आकर सोमनाथ फतह किया था।

इसलिये बादशाहने उसको सातहजारी सातहजार सवार दुअस्पे और तिअस्पे का मनसब इनायत किया।

दक्खिणियोंका फसाद—दक्खिणके मुतसद्दियोंकी अर्जी पहुंची कि निजामुल्मुल्कने फतहखां और अपने दूसरे सरदारोंको बादशाही सरहदमें भेजकर लूट मार कराना शुरू किया था जिस पर खानजहां लशकरखांको बुरहानपुरमें छोड़ बालाघाटको गया और खिड़की तक जो निजामुल्मुल्कके रहनेकी जगह थी न रुका। मगर निजामुल्मुल्क दौलताबादके किलेसे बाहर न निकला।

मीरमोमिनको सजा—सैयद मीर मोमिन ईरानसे हिन्दुस्थान में आया था और अकबर बादशाहने नकीबखांके चचाके पोते मियादतखांकी बेटीसे उसका विवाह किया था। शाहजहांके पूर्बदेशमें आनेपर जहां उसकी जागीर थी वह शाहजहांके साथ चलागयाथा। सियादतखांने जो परवेजके साथ था बहुतसी लिखापढ़ी करके उस को अपने पास बुला लिया था। बादशाहने यह सुनकर उसको हुजूरमें बुलाया। परवेजने उसकी बहुत सिफारिश लिखी थी तो भी हाथीके पावमें डालकर मरवा दिया।

खानजहांका निजामुल्मुल्कको बालाघाट देदेना—निजामुल्मुल्क ने हमीदखां हबशीको अपना पेशवा(१) बनाकर मुल्कका कुल अधिकार सौंप दिया था। बाहरसे वह और अन्दरसे उसकी जोरू दोनों मिलकर निजामुल्मुल्कको जानवरके मुवाफिक पिंजरेमें बन्द रखते थे। जब खानजहांके आनेकी खबर सुनी तो हमीदखांने १२ लाख रुपयेकी ३ लाख हुन उसके पास भेजकर कहलाया कि यह रकम लेलें और बालाघाटका सारा मुल्क अहमदनगरके किलेसमेत निजामुल्मुल्कको सौंप दे। उस बेईमान पठानने बादशाहके इतने वर्षों से पालनेका हक भूलकर सिर्फ ३ लाख हुनके लालचसे ऐसा

(१) दक्खिणके बादशाह अपने बड़े वजीरको पेशवाकी पदवी देते थे जो पीछेसे शिवाजीके राजा भी अपने प्रधानोंको देने लगे थे। पूनाके पेशवा शिवाजीवालोंके प्रधान थे।

मुल्क हाथसे खोकर थानेदारोंको लिख दिया कि वह अपने दो सुन्नान निजामुल्मुल्कको सौंपकर हुजूरमें आजावें। ऐसाही हुक्म अहमदनगरके किलेदार सिपहदारखांको भी लिखा था। पर जब निजामुल्मुल्कके आदमी किला लेनेको उसके पास गये तो उसने कहा—मुल्क पर भलेही तुम कब्जा करलो, किला मैं बगैर फरमान दिखाये तुमको नहीं दूंगा।

निजामुल्मुल्कके वकीलोंने बहुत हाथ पांव पीटे मगर उसने कुछ न सुना। बहुतसा सामान खाने पीने और लड़नेका किलेमें जमा करके अपना पांव जमा लिया। दूसरे नामर्दों ने बालाघाटका कुल मुल्क निजामुल्मुल्कके वकीलोंको सौंप दिया और बुरहानपुरमें चले आये।

हमीदखां हबशी और उसकी औरत—इस गुलामकी औरत इसी मुल्कके गरीब घरानेकी थी। पहले जब निजामुल्मुल्क शराब और औरतोंके फन्दमें पड़ गया था तो यह औरत जनानेमें दखल पाकर उसके वास्ते चोरी छुपे शराब लेजाती थी बाहरवालोंको खबर भी न होनेदेती थी। ऐसेही लोगोंकी जोरू और बेटियोंको भी फुसलाकर उसके पास पहुंचाती थी। होते होते बाहरका अधिकार तो उसके खाविन्दके हाथमें आगया और अन्दर वह निजामुल्मुल्ककी जान मालकी मालिक होगई। वह जब सवार होती थी तो बड़े बड़े सरदार उसकी अर्दलीमें चलते थे और अपना मतलब अर्ज करते थे। यहांतक कि आदिलखांने निजामुल्मुल्क पर फौज भेजी और इधरसेभी ऐसीही जरूरत हुई तो इस औरतने बड़ी चाह और मजबूतीसे निजामुल्मुल्कसे फौज मांगी और स्वयं लड़नेको तय्यार हुई। उसके दिलमें यह बात बिठाई कि जो मैं आदिलखां की फौजको हरादूंगी तो यह एक औरतका बड़ा काम समझा जायगा और हारजाऊंगी तो औरतकी हार कुछ बड़ी बात न होगी।

यह उस लड़ाईमें घूंघट निकाले घोड़े पर सवार होती थी। जड़ाऊ तलवार और खञ्जर कमरमें बांधती थी। जड़ाऊ कड़े

हाथोंमें पहनती थी। इनाम देने और घोड़े बखशनेके बहाने ढूंढा करती थी। कोई दिन न जाता था कि किसी सरदारपर कुछ इनयत न करती हो। सिपाहियोंको खूब रुपये देती थी। जब आदिलखांकी फौजसे मुठभेड़ हुई तो बड़ी हिम्मत और बहादुरीसे लड़ी और अपने सिपाही तथा सरदारोंको खूब उभारकर लड़ाया। आखिर ऐसे बड़े दुश्मनको हराकर उसके तमाम हाथी और तोप-खाने छीन लाई और सही सलामत लौट आई।

तूरानके वकीलका आना—तूरानके बादशाह इमामकुलीखांने बादशाहके वकील सैयद बिरकाको बहुत दिनोंतक ठहराकर अच्छा सलूक कियाथा। अब उसने बादशाह और शाहजहांके बिगाड़काहाल सुना तो अबदुर्रहीमख्वाजा और अरकानख्वाजाको खत और तुहफे देकर भेजा। ख्वाजाका बड़ा घराना था और उसका दादा ख्वाजा जूयबारी तूरानके बादशाह अबदुल्लहखां उजबकका गुरु था। इस लिये बादशाहने उसकी बहुत इज्जत की। बादशाही अमलदारीमें उसकी जगह जगह पेशवाई और अतिथिसत्कार हुआ। दरगाहमें आनेपर उसको तसलीम और कोर्निशकी तकलीफ नहीं दीगई, सिर्फ हाथ चूम लेनेमें सब कुछ मान लिया गया। तख्तके पास बैठनेका हुक्म हुआ ५० हजार रुपये दिये गये। दूसरे दिन १४ थाल खांसे खानेके सोने चान्दीके बरतनोंमें भेजे गये। वह सब बर्तन भी उसी को दे दिये गये।

मुकर्रमखांका डूबना—बादशाहने मुअज्जमखांके बेटे मुकर्रमखां सूबेदार बंगालेके नाम फरमान भेजा था। उसके लेनेके लिये वह नावमें बैठकर आता था। नाव हवासे उलट गई और मुकर्रमखां कई आदमियों समेत पानीमें डूब गया।

खानखानांका मरना—इन्हीं दिनोंमें बैरमखांका बेटा खानखानां ७२ वर्षका होकर मर गया। वह जब दिल्ली पहुंचा तो उसके बदनमें बहुत कमजोरी आगई थी इसलिये वहां ठहर गया। सन् १०३६ में मर गया और उस मकबरेमें दफन हुआ जो उसने अपनी

[illegible] बीबीके वास्ते बनाया था। यह इस सल्तनतके बड़े अमीरोंमेंसे था। अकबर बादशाहके वक्तमें इसने अच्छी अच्छी खिदमतें और बड़ी बड़ी फतहें की थी। इसके बढ़िया कामोंमेंसे पहला गुजरातकी फतह और मुजफ्फरकी शकस्त था। उससे वह गया हुआ मुल्क फिर बादशाही बन्दोंके हाथमें आया था।

दूसरी फतह सुहेलकी लड़ाईमें की थी। शत्रुके पास दक्षिणका लशकर जङ्गी हाथियों और सङ्गीन तोपखाने सहित था। सत्तर हजार सवार जमा होगये थे। खानखानां बीसहजार सवारोंसे उनसे भिड़ा। दो दिन एक रात बड़े घमसानकी लड़ाई लड़कर फतह पाई। इसमें राजीअलीखां जैसा सरदार काम आया था। तीसरी फतह ठट्टा और सिन्धकी थी।

इस बादशाहके वक्तमें उसके बड़े बेटे शाहनवाजखांने थोड़ेसे आदमियोंसे अम्बरको हराया था। यह बड़ा सपूत खानाजाद था। यदि मौत उसे समय देती तो उसकी भी दुनियामें अच्छी यादगार रहती। खानखानां योग्यतामें अपने समयका एकही पुरुष था। अरबी तुर्की फारसी और हिन्दी जानता था। तरह तरहके अकली और नकली इल्म जानता था। हिन्दी शास्त्रके जाननेमें पूरा था। बहादुरी और सरदारीमें तो बहुतही बढ़ाहुआ था। फारसी और हिन्दी जबानोंमें अच्छी कविता करता था। उसने अकबर बादशाहके हुक्मसे "वाकआते-बाबर"का फारसीमें अनुवाद किया।

बांधोका राजाअमरसिंह—बांधोके राजाअमरसिंहने बन्दगी स्वीकार करके अर्ज कराई थी कि मेरे बाप दादे चौखट चूमनेकी इज्जत पाते रहे हैं मैं भी वही इज्जत हासिल करनेकी उम्मीद रखता हूं। इस पर बादशाहने तहव्वुरखांको जो जबान (बात) समझनेवाले खिदमतगारोंमेंसे था हुक्म दिया कि आगवानी होकर राजाको दरगाहमें लेआवे। राजाकी सरफराजीके लिये भी तसल्लीका फरमान खिलअत और घोड़ा भेजा।

सूर्य्यके मेषमें आने पर बाईसवां वर्ष बादशाहके जुलूसका लगा। नौरोजका जश्न चिनाव नदीके किनारे पर हुआ। इसके वास्ते बादशाह एक दिन ठहरा था। फिर कूच दरकूच शिकार खेलता हुआ कशमीर पहुंचा।

फिदाईखांको बंगालेकी सूबेदारी—मुकर्रमखांके डूबनेपर फिदाई खांको बंगालेकी सूबेदारी मिली। बादशाहने उसको पांचहजारी ५००० सवारका मनसब, बढ़िया खिलअत और शाह ईरानका भेजा हुआ अबलक ईराकी घोड़ा देकर उस तरफको रुखसत किया। नियत किया कि वह हरसाल ५ लाख रुपये बादशाहको और ५ लाख बेगमको पेशकशके खज़ानेमें भेजा करे।

एतमादुद्दौलाका पोता अबूसईद पटनेकी और बहादुरखां इला-हाबादकी सूबेदारी पर जहांगीरकुलीखांको जगह नियत हुआ और मोहतशिमखांको कालपीमें जागीर मिली।

बादशाहकी बीमारी—कशमीरमें बादशाहकी बीमारी बढ़गई। इतना कमजोर होगया कि नालकीमें बैठकर बाहर निकलता था। घोड़े पर सवार नहीं होसकता था। एक दिन दर्द इतना बढ़ा कि जीनेकी आशा न रही। बादशाह निराशाकी बातें करने लगा। लशकरमें बहुत हलचल मच गई। पास रहनेवाले घबरा गये। पर कुछ दिनोंकी जिन्दगी और बाकी थी आराम होगया। फिर कुछ दिनों पीछे भूख बिलकुल बन्द होगई। अफीमसे नफरत होने लगी जिसे ४० वर्षसे खाता था। अब सिवा काई एक प्याले अंगूरी शराबके किसी चीजको दिल नहीं चाहता था।

शहरयारका बीमार होना—इन्हीं दिनों शहरयारको एक ऐसी बीमारी होगई थी कि उसकी मूछें भवें और पलकोंके बाल गिर पड़े थे। इससे शर्माकर उसने इलाजके वास्ते लाहौर जानेकी रुख-सत ली। खुसरोके बेटे दावरबख्शको जो नूरजहांकी तजवीजसे शहरयारके पास कैद था बादशाहने शहरयारकी अर्ज पर उससे लेकर इरादतखांको सौंप दिया।

घेनेसे राजौर गया। वहांसे नियमानुसार पहर दिन रहे कूच किया। रास्तेमें प्याला मांगा। पर ज्योंही मुंहसे लगाया उलटा आपडा। दौलतखानेमें पहुंचने तक यही हाल रहा। रात मुश्किलसे कटी। सवेरे कई सांस बडी सख्तीसे आये और पहरदिन चढेके लगभग २८ सफर सन १०३७ ता० १५ आवान सन २२ जुलूसी (कार्तिक बदी ३० संवत १६८४) को ६० वर्षकी उमरमें दम निकल गया। लशकरमें बडा कुहराम मचा। सब लोग रोने पीटने लगे।

दावरबखशको तखतपर बिठाना—आसफखांने जो शाहजहांको बादशाह बनाया चाहता था उस वक्त यही मसलिहत समझी कि इरादतखांसे सलाह करके खुसरोके बेटे दावरबखशको बादशाह बनानेके लिये कैदसे निकाला। दावर इस बातका विश्वास न करता था। अन्तमें शपथ खाकर उसकी तसल्ली की और उसके सिरपर छत्र रखकर आगेको कूच कर दिया। शाहजहांको खबर देनेके लिये बनारसी नाम हिन्दूको डाकचौकीमें भेजा।

नूरजहांने भाईके बुलानेको लगातार आदमी भेजे। पर आसफ खां बहाने करके बहनके पास नहीं गया। तब लाचार वह बादशाहकी लाश आगे रख अम्मारीमें बैठी और शाहजादों (दाराशिकोह और औरंगजेब) को पास बिठाकर उसके पीछे रवाने हो गई। उस दिन रातको नौशहरेमें पडाव हुआ। अगले दिन पहाडसे उतरकर बंभरमें। वहां बादशाहको कफन पहनाया गया और उसकी लाश मकसूदखां और दूसरे बन्दोंके साथ लाहोर भेजी गई। वहां जुमेके दिन रावी नदीके पार नूरजहां बेगमके बनाये हुए बागमें दफन की गई।

सब अमीर आसफखांसे मिल गये। आसफखांने शाहजहांके शाहजादोंको बहनसे लेकर बहनके ऊपर पहरे बिठा दिये कि कोई उससे मिलने जुलने न पावे। क्योंकि वह शहरयारको तख्त पर